# मैक्सिम गोर्की

रूस की समाजतान्त्रिक क्रान्ति के नामी उद्योगी और रूसी साहित्य
के आदर्शवादी लेखक

श्री महेन्द्रचन्द्र राय एम० ए०

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

[प्रथम संस्करण] १९४७ [मूल्य ३)

# भूमिका

रूस की समाजतान्त्रिक क्रान्ति और रूसी साहित्य के इतिहास में मैक्सिम गोर्की का नाम विख्यात है। समाज के अत्यन्त निम्न स्तर से आपका उत्थान हुआ और केवल आत्मशक्ति के बल से ही आप रूस के एक महान् आदर्शवादी साहित्यिक हो गये। मैक्सिम गोर्की की यह जीवनी बँगला में प्रकाशित हो चुकी है। मैंने हिन्दी में भी इसे लिखने का प्रयास किया है। इसमें मैंने कहानी के रूप में इस विचित्र जीवनी को लिखने की चेष्टा की है, परन्तु यथार्थ बातों के आधार पर ही। इस दृष्टि से यदि यह पुस्तक अंशतः भी सार्थक हो तो मेरा श्रम सफल होगा।

मेरे मित्र श्री कृष्णदेवप्रसाद जी गौड़, बेढब-बनारसी ने अस्वस्थ होते हुए भी इस पुस्तक को देखा और कुछ संशोधन भी किये। इसके लिए मैं उनका बहुत ही आभारी हूँ।

इस पुस्तक का अन्तिम अंश बँगला से कुछ भिन्न है। गोर्की की मृत्यु के सम्बन्ध में इसमें कुछ विशेष बातें लिखी गई हैं। वैसे यह ग्रन्थ बँगला ग्रन्थ का ही अनुवाद है।

—लेखक

# शैशव

## १

एक सोलह वर्ष का घुमक्कड़ नवयुवक चार साल पहले निजनीनोवगोरोट शहर में आ पहुँचा। मकान छोड़कर भागने का यह पहला मौक़ा न था। पाँच बार वह ऐसा कर चुका था। बाप भी सीधा आदमी न था, सम्राट् निकोलस का वह सिपाही था; भागे हुए लड़के के पीछे एक शिकारी कुत्ता लगाकर एक बार साइबीरिया के जङ्गल में उसको पकड़ा था और उसके बाद जो मार पड़ी थी! केवल तक़दीर का ज़ोर था कि बच गया था। फिर भी वह भाग आया; अनेकानेक विचित्र घटनाओं का सामना कराते हुए, भाग्य देवता अन्त में उसे यहाँ पर लाये हैं। किसी काम की जानकारी विशेष कुछ नहीं है, है केवल एक बलिष्ठ सुन्दर देह, प्रफुल्ल स्वभाव और सरल हृदय। चार साल तक एक बढ़ई के पास काम सीखकर अब वह एक अच्छा कारीगर बन गया है; शय्या सामग्री और गृह-सज्जा के उपकरण बनाने के काम में वह निपुण है। मैक्सिम पिर्येश्कौभ अब बीस साल का नौजवान है।

कोभालिख स्ट्रीट में उसकी दूकान के पास ही काशिरिन का मकान है। काशिरिन अब नितान्त साधारण पुरुष नहीं है। हाँ, पहले वह ‚वाल्गा नदी में बजरा चलाता था, लेकिन बाद को धीरे-धीरे उसने उन्नति की है। अब वह बुड्ढा हो गया है; छोटा-सा आदमी है, आँखों में हरे रंग की आभा है, नाक गिद्ध-जैसी और दाढ़ी का रङ्ग सुनहला है। काशिरिन की बुड्ढी स्त्री उसे 'लाल-दाढ़ी का बकरा' कहकर प्यार करती है! अब उसने रँगरेज़ का कारख़ाना खोला है और अपनी भाई-बिरादरी में उसकी पर्याप्त प्रतिष्ठा भी है। चार-चार मकानों का मालिक होना छोटी सी बात नहीं है। इसके अलावा उसकी और एक सम्पत्ति है—वह है सुन्दरी लड़की वार्वारा काशिरिना। पिता के मन में आशा है कि इस लड़की का ब्याह किसी अभिजात वंश में होगा।

समाज में जिन लोगों की वंश-मर्यादा नहीं है, धनवान् होने पर उनका मन स्वभावतः उस ओर दौड़ता है।

एक दिन की बात—काशिरिन की पत्नी अपनी लड़की के साथ अपने बगीचे में फल तोड़ रही है। अकस्मात् दीवार के ऊपर से टपककर वहाँ पर मैक्सिम पियेश्कौभ का अप्रत्याशित आविर्भाव हुआ! (अवश्य लड़की के लिए यह घटना अप्रत्याशित न थी)। उसके सिर के लम्बे-लम्बे बाल चमड़े के फ़ीते से बँधे हुए थे; शरीर पर सफ़ेद ब्लाउज़, पाँव में पायजामा, नङ्गे पैर, नङ्गा सिर। आते ही, बिना किसी हिचकिचाहट के, बिना किसी भूमिका के, माता के पास एकदम सीधा, सुन्दरी लड़की से ब्याह करने का प्रस्ताव! इतने में लड़की तो चेहरा लाल बनाकर एक पेड़ की आड़ में जा खड़ी हुई। थोड़ी ही कसर थी, नहीं तो उस युवक को दो-चार मुक्का तो खाना ही पड़ता। साइबीरिया का, न जाने कहाँ का, एक आवारा, उसका इतना बड़ा हौसला! परन्तु बीच में लड़की आ पड़ी। उसने क़बूल कर लिया कि हम दोनों में जान-पहिचान पहले ही हो गई है, कहिए तो वास्तव में ब्याह भी हो ही गया है, अब केवल पादरी पुरोहित से उस ब्याह का एक क़ानूनी सर्टिफ़िकेट चाहिए। भीतर-भीतर माता का हृदय गल जाता है, तब भी क्रोध का बहाना करती हुई बुड्ढी ने पहले तो दोनों की मरम्मत की। बुढ़िया राज़ी हो गई। छिपाकर, काशिरिन को न कहकर, ब्याह स्थिर हो गया।

इस सुन्दर संसार में हिताकांक्षियों की कुछ भी कमी नहीं है। ऐसे ही किसी एक व्यक्ति ने जाकर काशिरिन को ख़बर दे दी कि तुम्हारी लड़की बढ़ई पियेश्कौभ से ब्याह करने के लिए गिरजा में गई है। गरजते-गरजते काशिरिन अपने दो लड़कों को साथ लेकर घोड़े की गाड़ी में गिरजे की ओर दौड़ा। बुढ़िया माँ झटपट गाड़ी के साथ घोड़े को बाँधने की जो रस्सियाँ थीं, उन्हें इस प्रकार काट आई कि बीच ही रास्ते में वह टूटकर गाड़ी अचल हो जाय। हुआ भी ऐसा ही; गाड़ी उलटते-उलटते बच गई। पिता-पुत्र जब गिरजाघर पहुँचे तब नवदम्पति का ब्याह समाप्त हो चुका था। कुरुक्षेत्र का दृश्य नज़र आने लगा। परन्तु बलवान् पियेश्कौभ के सामने उन लोगों को हटना पड़ा।

पियेश्कौभ ने कहा, 'ईश्वर को साक्षी मानकर मैंने जिसको ग्रहण किया, प्राण जाने से भी उसे न छोड़ूँगा। मेरा अनुरोध है कि आप मुझे मारने की चेष्टा न करें। मैं झगड़ा करना नहीं चाहता। आपसे मैं केवल स्त्री के सिवा और कुछ भी नहीं चाहता।' क्या किया जाय! वृद्ध काशिरिन लड़की के साथ सारा सम्बन्ध तोड़कर घर लौट आया। परन्तु बुढ़िया माता जानती थी कि 'लाल दाढ़ी' का ग़ुस्सा अधिक दिन नहीं रहेगा। अन्त में अपने बग़ीचे में जो अलग घर था उसमें बुड्ढे ने नवदम्पति को रहने का स्थान दिया।

१८६८ ई० का १४ मार्च, दुपहर का समय था। सूर्य ठीक सिर के ऊपर था। ठीक उसी समय नवदम्पति के संसार में पहली सन्तान आलेक्सी पियेश्कौभ का जन्म हुआ। उस समय कौन जानता था कि भावी काल में इस शिशु की यशोप्रभा उस मध्याह्न-सूर्य ही की किरण की तरह रूस के साहित्य-गगन को उद्भासित कर देगी।

## २

मैक्सिम पियेश्कौभ के दिन आनन्द से बीतने लगते हैं। नृत्य-गीत और हास्य-कौतुक के द्वारा उसने केवल अपने जीवन को ही आनन्दमय नहीं किया, परन्तु चारों ओर के लोग भी उसके आनन्द के संस्पर्श से उल्लसित होने लगे। घुमक्कड़ जीवन में यह पहला मौक़ा है जब उसने स्थिति के आनन्द का अनुभव किया। उसकी बुढ़िया सास उसे ऐसी अच्छी लगती है कि कहने की बात नहीं है; उन्हीं के हृदय की उदारता और अनुकम्पा से ही तो उसका जीवन आज वार्वारा को पाकर सार्थक हुआ है। इसी लिए कभी-कभी बुढ़िया को गोदी में उठाकर वह वार्वारा को चिढ़ाता है और कहता है कि मैं तो अपनी इस नई माँ को तुमसे भी अधिक प्यार करता हूँ।

मैक्सिम की इस लोकप्रियता और प्रफुल्लता से दो व्यक्तियों के मन विपाक्त होने लगते हैं। माइखेल और याकौभ किसी तरह अपने मकान में इस परदेशी बहनोई की उपस्थिति को बरदाश्त नहीं कर सकते। सम्भवतः

काशिरिन की जायदाद में वह भी एक हिस्सेदार बन बैठेगा इस दुश्चिन्ता से उनका जीवन असह्य प्रतीत होने लगता है। जाड़े का समय है। नदी और जलाशय बर्फ के आवरण से ढक गये हैं, 'स्केटिंग' खेलने का मौसम है। खेलने के नाम पर मैक्सिम को डिउका-जलाशय में ले जाना कठिन काम न था। बर्फ के आवरण में गड्ढा खोदकर उन दोनों ने मैक्सिम को अकस्मात उसमें गिरा दिया। गड्ढे के किनारे को पकड़कर मैक्सिम प्राणपण से अपनी प्राण-रक्षा करने की चेष्टा करने लगा, परन्तु नशे में चूर उसके दोनों साले उसके हाथों के ऊपर बूट की ठोकर मार मारकर उसके हाथों को कुचलने लगे। मैक्सिम गड्ढे के नीचे हिमशीतल पानी में गिर गया। इसी प्रकार अपना उद्देश्य पूरा करके दोनों पापिष्ठ घर लौट गये।

परन्तु मैक्सिम की मृत्यु न हुई। बड़ी कठिनाई से उसने अपने को डूबने से बचाया। उन दोनों के चले जाने के बाद अवसन्न शरीर को घसीटकर पास के थाने में गया। पुलिस उसके सारे देह पर ब्राण्डी मालिशकर उसे थोड़ा स्वस्थ करने के बाद उसको घर पर ले आई; उसकी उँगलियाँ रक्ताक्त हो गई थीं, कपाल के दोनों किनारे पर के बाल मृत्यु की विभीषिका से सफ़ेद हो गये थे। पुलिस ने पूछा कि ऐसी दशा कैसे हुई। मैक्सिम ने असल मामले का भेद कुछ भी नहीं बताया; कहा, अचानक पैर फिसलकर गिर गया था।

मैक्सिम के शरीर पर उतनी चोट नहीं थी जितनी उसके हृदय पर लगी। अपनी सास-माँ को उसने यथार्थ घटना बताई और अपने ही मन में सरल-हृदय मैक्सिम बार-बार यह प्रश्न करने लगा, अच्छा, माँ, मेरे ऊपर इन लोगों ने ऐसा व्यवहार क्यों किया? मैंने तो उनका कुछ भी अनिष्ट नहीं किया! क्यों माँ, कह सकती हो?

बुढ़िया क्या कहेगी? अपने गर्भ से उत्पन्न पापिष्ठों की बात याद कर बुढ़िया की आँखों में पानी भर आता है। बार्वारा और बुढ़िया ने उन दो नराधमों को दो-चार झापड़ मारा और काशिरिन ने उनसे माफ़ी भी मँगवाई। मैक्सिम ने तुरन्त क्षमा कर दिया; उसका स्वभाव ही ऐसा है, अधिक देर तक किसी का दुष्कृत्य मन में नहीं रख सकता।

एस्ट्राखान शहर में सम्राट् के आने के उपलक्ष में विजय-तोरण बनाना होगा; इसी काम को लेकर मैक्सिम थोड़े ही दिन बाद निजूनीनौवगोरोट छोड़कर चला गया। मार्टयेल और याकौभ की जान में जान आई। वार्वारा भी मन में आनन्दित हुई।

चार साल के करीब एस्ट्राखान में आनन्द से ही बीती, गोद का बच्चा आलेक्सी धीरे-धीरे बड़ा हो उठता है। उसके बाद नियति की निष्ठुर पुकार आई; आलेक्सी को हैज़ा हो गया। उसके अच्छा होते ही मैक्सिम की बारी आई। मैक्सिम फिर अच्छा न हुआ।

विश्वसंसार की परम रहस्य मृत्यु के साथ शिशु आलेक्सी का यही प्रथम परिचय है। माता की ओर ताककर वह कुछ भी समझ नहीं पाता कि मामला क्या है। हास्यकौतुकप्रिय, प्रफुल्ल-मूर्ति पिता की आँखों में हँसी नहीं है, शरीर में कोई भी स्पन्दन नहीं है; ज़मीन पर पिता का शरीर लेटा हुआ है। जो माता उसकी अपनी वेशभूषा के बारे में बहुत ही सचेत रहा करती थी, उसका भी आज उस ओर ज़रा-सा ध्यान नहीं है; अस्त व्यस्त वेश में वह मैक्सिम के बिछौने के पास बैठी हुई है और आँखों से अश्रुपात हो रहा है। मृत्यु की शोकपूर्ण निस्तब्धता से गृह परिपूर्ण है। शिशु-चित्त की त्रस्त विह्वलता अवर्णनीय है।

नानी भी आई हैं; आलेक्सी को गोद में बैठाकर साठ वर्ष की बुढ़िया इधर-उधर की बातों से उसको भुलाने की कोशिश करती है। दफ़न करने के लिए शव ले जानेवाले आये हैं; इधर उसकी माता की अवस्था भी कुछ विचित्र सी है, उसको लेकर नानी कुछ परेशान हो रही है। कुछ न समझने के कारण आलेक्सी एक 'ट्रंक' के पीछे जाकर छिप जाता है और आड़ से आलेक्सी अपने भाई का जन्म देखता है। यह एक दूसरा अद्भुत रहस्य था। एक ओर जन्म और दूसरी ओर मृत्यु! इन दो महाविस्मयों के बीच में शिशु चित्त की क्या दशा हुई थी कौन कहेगा!

## ३

स्टीमर पर चढ़कर वाल्गा नदी के ऊपर से नानी के साथ आलेक्सी और वार्वारा लौट रही हैं निजूनीनौवगोरोट में। वाल्गा के दोनों तट पर के

कितने ग्राम, नगर, कितने प्रान्तर और पहाड़ों के प्राकृतिक दृश्य देखते-देखते वे जा रहे हैं। रास्ते पर फिर और एक दुर्घटना हुई; स्टीमर ही पर नवजात भाई की मृत्यु हो गई।

वार्वारा बाप तथा भाई के आश्रय में लौट आई है। सम्भवतः केवल माता को छोड़कर और कोई भी इससे ख़ुश नहीं है। चार साल के नाती के चेहरे को देखकर काशिरिन को साइबीरिया के घुमक्कड़ युवक के चेहरे का डौल—वही ऊँची गाल की हड्डियाँ नज़र आती हैं। सम्भवतः मन में काशिरिन प्रसन्न न हुआ। और माइखेल, याकौभ? उन्हें तो विपत्ति नज़र आने लगी; पिता की सम्पत्ति का कुछ हिस्सा हाथ से बाहर हो जायगा यही उनकी शङ्का है। वार्वारा के आने के साथ ही साथ माइखेल और याकौभ पिता से यह ज़िद करने लगे हैं कि जायदाद बाँटकर उन्हें दे दी जाय। पिता की सम्मति के बिना वार्वारा ने ब्याह किया था इसलिए काशिरिन ने उसका प्राप्य दहेज उसे नहीं दिया था; अब सम्भव है कि आलेक्सी को सामने रखकर वार्वारा अपना दहेज अदा कर लेगी। परन्तु भाइयों की इच्छा है कि वार्वारा को कुछ भी न मिले। इस मामले का फ़ैसला इसी लिए जल्दी-जल्दी कर लेना ही अच्छा है। आलेक्सी के आने के थोड़े ही दिन बाद एक दिन दोनों भाइयों में हिंस्र पशुओं की तरह मारपीट हो गई; एक दूसरे के ख़ून करने की नौबत आ गई।

नैहर में आकर वार्वारा को सुख नहीं है! एस्ट्राखान में वह अपने पति और शिशु सन्तान को लेकर परम आनन्द से दिन बिताती थी। मैक्सिम हँसमुख प्रकृति का था। आलेक्सी उसकी पहली प्यारी सन्तान थी, उसको वह स्वयम भी मारता न था और वार्वारा को भी मारने के लिए मना करता था। परन्तु काशिरिन परिवार में मारपीट, गाली-गलौज, इतर आचरण तो नित्य प्रतिदिन का व्यापार है। काशिरिन अब बुड्ढा हो गया है; लड़कों के पाशविक आचरण से वह पीड़ित है, परन्तु वह अब निरुपाय है। और, काशिरिन जिस समाज में पालापोसा गया है वहाँ पर मारपीट करना कुछ भी अन्याय नहीं समझा जाता, परन्तु यह एक विशेषरूप से आवश्यक बात समझी जाती है।

यह केवल काशिरिन के घर की बात नहीं है, उन दिनों में काशिरिन जिस समाज में रहता था, वहाँ पर नृशंसता, नीचता, परस्पर का अविश्वास और नाना प्रकार से दूसरों को आघात करने की और उनकी क्षति करने की प्रवृत्ति—ये सब सर्वव्यापक थे। पड़ोसी के कुत्ते को ज़हर देकर मार डालना, किसी की बिल्ली की दुम काट देना, मुर्गों के बच्चों को मार डालना अथवा खाने के सामान पर केरोसिन डाल देना—ये सब वहाँ के साधारण आमोद-प्रमोद के नमूने थे। समाज के इस वातावरण में माइखेल, याकौभ पाले-पोसे हैं। इसलिए निर्दयता में इनको जो आनन्द मिलता है, वह इनका कोई व्यक्तिगत अपराध नहीं है।

काशिरिन परिवार में दो बाहरी आदमी हैं। उनमें से एक बुड्ढा ग्रेगरी है। इसी के साथ काशिरिन ने रँगरेज़ का काम शुरू किया था। बाद को चालाकी से काशिरिन मालिक बन बैठा है और भलामानुस ग्रेगरी अब उसके कारखाने में एक कारीगर मात्र है। अन्धप्राय ग्रेगरी किसी प्रकार से अभी काम कर रहा है! किसी दिन काशिरिन उसे बेकार समझकर विदा कर देगा। उसके बाद ग्रेगरी को द्वार-द्वार पर भिक्षा माँगकर जीविका निर्वाह करना पड़ेगा। माइखेल ने याकौभ के लड़के साशा को यह सिखलाया कि ग्रेगरी के अंगुश्ताने को ख़ूब गरम कर उसके बग़ल में रख दे। इसका उद्देश्य निष्ठुर आनन्द का उपभोग करना था। दुर्भाग्य वश बूढ़े काशिरिन ही ने उसे पहन लिया और यन्त्रणा के मारे पागल की तरह नाचने लगा। यह देखकर भी माईखेल और याकौभ को आनन्द! परन्तु माईखेल ही ने अपराधी साशा को पकड़वा भी दिया!

मार शनिवार के लिए ताक पर रख दी गई। प्रति शनिवार को काशिरिन सारे सप्ताह के अपराधों का विचार करता है। उसकी यह धारणा है कि अपराध की सज़ा देना एक आवश्यक कर्तव्य है। बेत मारकर बेहोश कर देना ही सज़ा की उचित मात्रा है।

उसी हफ़्ते में आलेक्सी भी दैवात् एक अपराध कर बैठता है। कपड़ा रँगा कैसे जाता है इसे जानने के लिए शिशु के मन में कौतूहल जग उठता है और साशा की सलाह से वह एक काम कर बैठता है। आलेक्सी एक मेज़पोश

लाकर रङ्ग के गमले में बोर देता है। यह देखकर काशिरिन-परिवार के आश्रित उन्नीस वर्ष का कारीगर त्सिगानक दौड़कर आता है। वह जानता है कि आलेक्सी को इसका कठोर पुरस्कार मिलेगा क्योंकि काशिरिन का भगवान् जिहोवा हैं उनके पास दण्ड ही है, क्षमा नहीं। नानी इस घटना को छिपाने की कोशिश करती है परन्तु साशा इस अवसर को कैसे छोड़ सकता है? क्या वह अकेला ही शनिवार को मार खायगा? साशा जाकर काशिरिन को सब कह देता है।

शनिवार की पहली मार पड़ी साशा पर। एक कमरे में बेंच के ऊपर उसको अपनी छाती के बल लेटना पड़ता है, इसके बाद अनावृत अङ्ग पर निर्मम प्रचण्डता के साथ बेंत पड़ने लगता है। आलेक्सी के गुप्त अपराध की खबर उसी ने दी है। इसके बदले साशा रिहाई माँगता है। परन्तु काशिरिन उस चुग़लखोरी के पुरस्कार-स्वरूप और भी अधिक बेंत मारता है।

बालक आलेक्सी बग़ल में खड़ा-खड़ा काँपता हुआ हतबुद्धि होकर यह देखता है। इसके पश्चात् उसकी बारी आती है। बुढ़िया नानी का आर्त प्रतिवाद जब निष्फल होता है तब वह अपनी लड़की को रोकने के लिए पुकारती है। काशिरिन का क्रोध और भी बढ़ जाता है।

निरुपाय शिकार के पशु की तरह ज्ञानशून्य होकर बालक आलेक्सी क्रोधित हो जाता है। हिंस्र क्रुद्ध जङ्गली बिल्ली की तरह वह बूढ़े काशिरिन की दाढ़ी नोचने लगा और दाँत से उँगली काटने लगा। इतने से बालक का इतना दुस्साहस! कल्पनातीत व्यापार है! काशिरिन का चेहरा क्रोध से लाल हो गया। वार्वारा दूर से निष्फल बिनती करने लगती है परन्तु डर के मारे निकट नहीं जाती। मार की उग्रता से तेज़ बुखार होने के कारण आलेक्सी शय्याशायी हो जाता है। बुढ़िया नानी तीव्र कण्ठ से अपनी लड़की को उसकी भीरुता के लिए धिक्कारने लगती है।

वार्वारा अपनी भीरुता को मानती है। उसके लिए काशिरिन-परिवार की यह घृणित, नीचतापूर्ण जीवनयात्रा असहनीय है। केवल उस शिशु आलेक्सी ही के लिए आज तक वह यहाँ पर है। नहीं तो वह चाहती है

कि इस नरक से दूर भाग जाऊँ। निर्मल भद्रजीवन के लिए उसकी अन्तरात्मा छटपटाती है।

इसके थोड़े दिन बाद, सचमुच वार्वारा अपना मायका छोड़कर कहीं चली जाती है।

## ४

शय्याशायी आलेक्सी को काशिरिन देखने आता है, भीतर-भीतर बूढ़ा कुछ दुःखित है। संभवतः अनुतप्त भी है। हाँ, गुस्से में मार की मात्रा कुछ अधिक हो गई है। अगर छोकरा वैसा न करता तो क्या हम कभी ऐसा मारते ? परन्तु ऐसा कुछ अन्याय तो नहीं हुआ। काशिरिन ने स्वयं बालकपन में जो मार खाई थी, वह मार देखने से ईश्वर को भी रुलाई आती। परन्तु उसका परिणाम देखकर आज उस मार के लिए वह तनिक भी दुःखित नहीं है। मार खाई थी उसी लिए तो दरिद्र माता का पुत्र काशिरिन आज केवल एक श्रेष्ठ कारीगर ही नहीं है बल्कि आज वह अपनी मण्डली का सर्दार हो सका है। इसके बाद काशिरिन अपने दुःख विघ्नों से परिपूर्ण अतीत जीवन की कहानी कहता जाता है। काशिरिन की आत्मकहानी सुनते-सुनते न जाने कैसे आलेक्सी अपने निर्दय दण्डदाता को कुछ प्यार की दृष्टि से देखने लगता है। परन्तु उसके अन्याय दण्ड को वह कभी क्षमा नहीं कर सकता। बूढ़ा काशिरिन भी सम्भवतः इस अनाथ बालक को प्यार करने लगता है।

युवा कारीगर त्सिगानक भी आलेक्सी को देखने आता है। इसको शिशु अवस्था में पथ पर से उठा लाकर नानी ने पाला है, अब इसकी उम्र उन्नीस साल है। काम-काज में यह युवा अत्यन्त पटु है, यह पटुता ही उसका काल हो रहा है। इसी लिए माइखेल और याकौभ इसे बरदाश्त नहीं कर सकते। परन्तु काशिरिन इसके काम के लिए इसके प्रति सन्तुष्ट है। आलेक्सी के पास आकर त्सिगानक आस्तीन उठाकर अपनी बाँह दिखलाता है; बेंत की चोट से बाँह फूलकर लाल हो गई है। आलेक्सी को बचाने के लिए इस युवा ने अपने ऊपर काशिरिन का बेत्राघात ले लिया है।

युवा के प्रति बालक का प्रेम तीव्र होता जाता है। आलेक्सी फुसफुसाकर पूछता है, नाना और नहीं मारेगा, क्या कहते हो? युवा उत्तर देता है, यह तुम्हारी भूल है, अवश्य ही मारेगा। समझाकर युवा कहता है, चुपचाप सामने बढ़कर मार खाओगे तो बूढ़ा बहुत ज़ोर से नहीं मारेगा, लेकिन अगर विरोध करोगे तो अवश्य ही भयानक मार खानी पड़ेगी। आलेक्सी निर्वाक् होकर सोचता है।

वास्तविक, आलेक्सी इसके बाद भी मार खाता है। और वह युवा बन्धु भी उस मार का कुछ भाग अपने ऊपर लेता है। प्रत्येक बार वह कहता है, 'कैसा गदहा हूँ मैं भी! तुमको तो वह मार खानी ही पड़ती और बीच में मैं भी खाता हूँ, क्या लाभ है इसमें! नहीं, अब से तुमको अकेले ही मार खानी होगी।' लेकिन इसके बाद भी निर्बोध युवक आलेक्सी को बचाने के लिए दौड़कर आता है और मार भी खाता है।

## ५

लड़के ही केवल मार खाते थे ऐसी बात नहीं है। घर की स्त्रियाँ भी प्रहार-प्रसाद से वञ्चित न होती थीं। केवल काशिरिन के परिवार में नहीं, उस समय रूस के अशिक्षित इतर और निम्न-मध्यवित्त श्रेणी में भी स्त्री को नित्यनियमित प्रहार करना गृहस्थधर्म का एक अनिवार्य अङ्ग समझा जाता था। प्रहार न करना कापुरुष का लक्षण था।

एक दिन मामी नातालिया के छिले हुए और फूले मुँह को देखकर आलेक्सी ने नानी से उसका कारण पूछा। नानी ने कहा, 'यह कुछ नहीं है, तेरे माइखेल मामा की कीर्ति है। अरे, आज कल लोग अपनी स्त्रियों को मारते कहाँ! आज-कल तो तुम लोग थोड़ी-सी मार खाकर ही व्याकुल हो जाते हो। उन दिनों घण्टों तक मार चलती थी। एक बार तेरे नाना ने मुझको प्रार्थना के समय से सन्ध्या तक मारा था। मारते-मारते थक जाता था, फिर विश्राम करने के बाद मार शुरू होती थी। एक बार तो इसी तरह मारते-मारते मुझको अधमरा कर दिया था। उसके बाद भी पाँच दिन तक खाने को नहीं दिया था। मैं किसी प्रकार से बच गई थी।'

आलेक्सी ने पूछा, क्यों तुम्हारे शरीर में ताक़त नहीं थी ? नानी ने उत्तर दिया, अरे नहीं, उसकी ताक़त अधिक नहीं थी; लेकिन वह मेरा पति है न ! अपने कर्मों के लिए उसको भगवान के पास जवाब देना पड़ेगा। धैर्य के साथ सब सहना मेरा कर्तव्य है।'

अद्भुत यह नारी ! काशिरिन परिवार की सारी कदर्यता और नृशंसता के बीच यदि यह सरला हृदयवती नारी न होती तो इस अनाथ शिशु का क्या होता, कौन जाने ! समस्त दुःख, अत्याचार, अपमान और निर्यातन को यह नारी निःशब्द होकर सहती है इतना ही नहीं, परन्तु अद्भुत क्षमा और प्रेम से इस नारी का हृदय परिपूर्ण है। माता जिस प्रकार से शिशु को क्षमा करती है, उसी तरह वह अपने निष्ठुर पति को भी क्षमा करती है। यह धैर्य और क्षमा दुर्बल की असहायता का नामान्तर नहीं था। इसका प्रमाण बुढ़िया की निर्भीक स्पष्टवादिता में मिलता था।

बुढ़िया का भगवान् पर विश्वास ही सबसे आश्चर्यजनक है। जीवन उसका सुख से बीता है ऐसी बात नहीं। दरिद्र माता की लड़की थी, कठोर परिश्रम से उनकी जीविका होती थी। बाद को माता जिस हाथ से काम करती थी वह भी टूट गया। तब से भीख माँग-माँगकर बड़े ही दुःख से उसका जीवन व्यतीत हुआ। फिर काशिरिन के साथ यह दीर्घजीवन व्यतीत हुआ है। अठारह सन्तानों की माता वह है परन्तु आज केवल दो ही बच्चे हैं। और वे दो लड़के भी पशु से भी निकृष्ट हुए हैं। चारों ओर निर्दयता और अमानुषिक आचरण देखते हुए भी उसके मन में ईश्वर के मंगलमयत्व पर तनिक भी अविश्वास नहीं है, संशय नहीं है। वह सोचती है कि भगवान् के संसार में सभी सुन्दर है, अच्छा है।

आलेक्सी अपनी नानी के पास सोता है। नानी सोने के पहले प्रार्थना करती है, और तब तक आलेक्सी नानी से सुन्दर-सुन्दर कहानियों को सुनने के लिए जागता रहता है। नानी प्रतिदिन के सब दुःख, अभाव, अभियोग, आशा और अकांक्षाओं को ईश्वर के पास निवेदन करती है। हर रात को वह ईसा के पास, ईसा की माता मेरी के पास आँसू-भरी आँखों से यह कहती है कि कौन कहाँ पर दुःख पा रहा है। काशिरिन को सुमति देना, वार्वारा को

सुखी करना, लड़कों की अच्छी बुद्धि हो, बूढ़े ग्रेगरी की आँखें दिन-दिन खराब हो रही हैं, यदि वह अन्धा हो जायगा तो उसका रहने का स्थान न रहेगा। इसी प्रकार परम विश्वास के साथ वह सब कहती जाती है मानो ईश्वर उसका घनिष्ठ आत्मीय है! काशिरिन से छिपाकर कभी-कभी वह वार्वारा को पैसा देती है। बुढ़िया यह भी ईश्वर से कहती है। नानी की इस प्रकार की प्रार्थना सुनने में आलेक्सी को अच्छी लगती है। वह नानी से ईश्वर की बात पूछता है। नानी कहती है, हमारे परम पिता स्वर्ग से इस पृथ्वी की ओर ताककर कभी-कभी रो उठते हैं और कहते हैं, मेरे प्यारे मनुष्य, तुम्हें देखकर मुझको दया आती है। यह कहते-कहते, मनुष्यों के अनाचार, अत्याचार और मूर्खता की बातों को स्मरण कर नानी का हृदय करुणा से विगलित हो जाता है और वह रोने लगती है।

आलेक्सी के मन में भी उस करुणा का स्पर्श लगता है। ग्रेगरी अन्धा हो जाने पर आलेक्सी भी उसके साथ निकल जायगा। उसके हाथ पकड़ कर वह द्वार-द्वार पर भीख माँगेगा। परन्तु नानी की तरह वह कभी भी निःशब्द रहकर अत्याचार और यातना बरदाश्त नहीं कर सकेगा, वह बदला लेने की कोशिश करेगा अवश्य।

## ६

दोनों रत्न हैं—माइखेल और याकौभ। काशिरिन आजकल मना करता है, बहुओं को न मारना। परन्तु बूढ़े काशिरिन ने सारे-जीवन जिस आदर्श का पालन किया है, उसके लड़के उस आदर्श को अस्वीकार नहीं कर सकते। इसी लिए रात को वे शय्यागृह में गुप्त रूप में इस महान् कर्तव्य को सम्पन्न करते थे। ऐसा ही करते-करते एक दिन रात को याकौभ ने सालभर पहले अपनी स्त्री को मार डाला है। कभी-कभी शराब के नशे में उसके मन में पश्चात्ताप की याद आती है। माइखेल अभी तक नाटालिया को खतम नहीं कर पाया। सम्भव है कि याकौभ के बाद अब अधिक मारपीट करने का साहस भी नहीं होता।

याकोभ ने एक प्रकाण्ड और भारी लकड़ी का क्रॉस ( Cross ) ख़रीद रक्खा है। उसने स्त्री की वार्षिक मृत्यु के दिन पर इसे कन्धे पर लेकर स्त्री की क़ब्र पर स्थापित करने का इरादा किया है। सम्भव है कि इससे दुष्कर्म का कुछ प्रायश्चित्त हो। मृत्यु की वर्षगाँठ आई। काशिरिन परिवार गिरजा को गया है, माइखेल और याकोभ भी जायेंगे। क्रॉस ढोकर ले जाने की बात है, परन्तु वह प्रकाण्ड क्रॉस बहुत ही भारी है। इसलिए उन दोनों ने हुक्म दिया कि त्सिगानक को वह क्रॉस ले जाना होगा। ग्रेगरी बार-बार कहता है कि ख़बरदार हो जाओ। परन्तु याकोभ और माइखेल ज़बरदस्ती क्रॉस को उसके कन्धे के ऊपर लाद देते हैं। सरल युवक किसी भी काम में 'नहीं' नहीं कहता। रास्ते पर दोनों भाइयों ने क्या किया कौन जाने, अकस्मात् वह बोझ के झोंके को सँभाल न सका और गिर गया। भारी क्रॉस के दबाव से आहत होकर युवक त्सिगानक बेहोश होकर लौट आया। बस, यहीं पर उसका शेष हो गया, त्सिगानक फिर उठा नहीं! माइखेल और याकोभ के मन में उससे डाह तो थी ही, इतने दिनों बाद सम्भवतः इन लोगों को चैन मिला। नानी ने इस युवक को सन्तान की तरह पाला-पोसा था। पापिष्ठों की ओर ताककर उसने केवल इतना ही कहा, अरे अभिशप्त, हट जा, मेरे सामने से हट जा!

इसके थोड़े दिन बाद इस मकान में आग लगी। सब लोग विकल और हतबुद्धि हो रहे थे, उस समय केवल बूढ़ी नानी का ही दिमाग़ ठण्डा रहा। अद्भुत साहस और तत्परता के साथ उसने सब की रक्षा की। नाटा लिया इस भयानक उत्तेजना के धक्के को सह न सकी; अकस्मात् प्रसव-वेदना हुई और सन्तान प्रसव करने के बाद ही मर गई।

इसके पश्चात् दो लड़कों के उपद्रव असह्य होने पर काशिरिन ने उन्हें अलग कर दिया है और स्वयं पोलेवाय स्ट्रीट में एक प्रकाण्ड मकान ख़रीद लिया है। किरायेदारों से भरपूर मकान के ऊपर के कमरे में काशिरिन रहने लगा है और छत पर की एक कोठरी में आलेक्सी और उसकी नानी। मकान के नीचे शराब की दुकान है; बालक आलेक्सी ऊपर की खिड़की से प्रतिदिन मतवाले लोगों के प्रमत्त आचरण देखता है और उनके असंयत प्रमत्त कलह

और मारपीट का शोर-ग़ुल सुनता है। जगत् और मनुष्य सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञान अर्जन करने का क्या ही सुन्दर स्थान बालक आलेक्सी को मिला है!

थोड़े ही दिनों के अन्दर काशिरिन का मकान उस मुहल्ले में एक दूसरे कारण से विख्यात हो उठा है। काशिरिन ने लड़कों को अलग दुकान कर दी है, परन्तु उनके काम करने के ढङ्ग को देखकर वृद्ध के मन में तनिक भी शान्ति नहीं है। लड़के पिता के सञ्चित धन को हस्तगत करना चाहते हैं, इसी को लेकर अशान्ति और कलह चल ही रहा है। ख़ासकर, माइखेल ने तो भयानक उपद्रव करना शुरू कर दिया है। प्रति रविवार की शाम को इस मकान के सामने एक छोटा-मोटा युद्ध लग जाता है। दर्शक भी आते हैं। सन्ध्या होते ही माइखेल शराब पीकर उन्मत्त-प्राय होकर कभी अकेला, कभी और भी दो चार मतवाले मित्रों के साथ इस मकान के ऊपर चढ़ाई करता है। इसका उद्देश्य बाप-माँ को मार-पीटकर बाक़ी सम्पत्ति को हस्तगत करना है।

काशिरिन अपने अदृष्ट को अभिशाप देता है। कभी-कभी पागल की तरह लड़के के सामने अपनी छाती खोल देता है, कहता है, मार डाल मुझको। परन्तु साधारणतः काशिरिन भी आदमियों के साथ आदर्श पुत्र की युयुत्सा को मिटाने के लिए तैयार रहता है। बुढ़िया तैयारी देखकर भयभीत होती है, सोचती है शायद काशिरिन लड़के को मार ही डालेगा। इसलिए वह काशिरिन को विरत करने की चेष्टा करती है। काशिरिन बुढ़िया को समझाकर कहता है, क्या मैं जङ्गली जानवर हूँ? बूढ़ा अपने साथियो को हुक्म देता है। मारना हाथ-पैर पर, लेकिन सिर पर नहीं। हाय, पुत्र स्नेह!

नियत समय पर मकान की खिड़की और दरवाज़ों पर ढेला-चौथ शुरू होती है; मदमत्त पुत्र की जिह्वा से नाना प्रकार गाली-गलौज की वृष्टि होने लगती है। किसी-किसी दिन ज़बरदस्ती घर के अन्दर घुसकर पिता-माता को प्रहार करने में भी वह हिचकता नहीं। एक दिन तो बुढ़िया माँ के हाथ को क़रीब तोड़ ही डाला। तब भी, बुढ़िया कहती है कि इस मकान में आकर वह कुछ शान्ति ही में है।

इस मकान में आलेक्सी अपनी नानी के आठों पहरों का साथी है। मकान में किरायेदार बहुत से हैं, नानी सभी की माँ है। सब प्रकार की विपत्ति-

ापत्ति में नानी साथ देती है। सुँघनी लेते-लेते बुढ़िया सब को कितने प्रकार ी सलाह देती है। आलेक्सी साथ-साथ उपग्रह की तरह घूमता रहता है ौर सब प्रकार की बातों को उग्र कौतूहल के साथ सुनता है।

## ७

नाटालिया के पास आलेक्सी ने प्रार्थना-मन्त्र सीखना शुरू किया था। उसकी मृत्यु के पश्चात् आलेक्सी की शिक्षा और अधिक दूर अग्रसर नहीं हुई। इस मकान में आने के बाद नाना का समय बीतना नहीं चाहता, इसी लिए उसने अब आलेक्सी को पढ़ाना शुरू किया है। मकान के साथ सटा हुआ बग़ीचा एक खाई के किनारे जाकर खतम हुआ है; उस खाई के दोनों किनारे पर बेत का जङ्गल है। उस बेत-वन की ओर ताककर, इस मकान में आने के पहिले नाना आलेक्सी को परिहास करते हुए कहा था, जल्दी ही वह बेत का वन ख़ूब काम आवेगा अर्थात् आलेक्सी को पढ़ना पड़ेगा और पढ़ाने के लिए पीठ पर बेतों का तोड़ना भी अनिवार्य है, यह तो एक स्वतःसिद्ध सी बात है। परन्तु बूढ़े नाना का हाथ अब उतना नहीं चलता। कभी-कभी वह ग़ुस्सा होता है लेकिन पहले की तरह नहीं। आलेक्सी की स्मरणशक्ति को देखकर वृद्ध विस्मित और आनन्दित होता है। बूढ़े को यह चिपटी नाकवाला लड़का अब प्यारा मालूम हो रहा है। इसी लिए बेत का प्रयोग भी कम होता जाता है। और नानी भी उसे इस काम में यथाशक्ति बाधा देती है। अब काशिरिन अधिक कुछ नहीं करता, घुड़कता है, कभी-कभी घूँसा उठाकर डरवाता है। एक दिन आलेक्सी साफ़-साफ़ नाना से कहता है कि पहले उसको अन्याय रूप से मारा गया है। अवश्य इस विषय में नानी और नाना के मत भिन्न हैं।

कभी-कभी पढ़ने-लिखने के बीच-बीच आलेक्सी नाना से कहता है, 'कहानी कहो न?' पहले-पहले नाना क्रोध का बहाना कर कहता है, 'जा, आलसी, पढ़ जाकर, क़िस्सा तो बहुत अच्छा लगता है और प्रार्थनाओं को सीखने की कोई परवाह नहीं है, न?" धीरे-धीरे वृद्ध का हृदय नरम हो जाता

है। 'अच्छा, सुन तब' कहकर वह अतीत जीवन की कहानी कहने लगता है। नेपोलियन ने जब रूस पर चढ़ाई की थी उस समय का वृत्तान्त कहते-कहते काशिरिन का मन गत दिनों की स्मृति में मग्न हो जाता है। नानी जो क़िस्से कहती है वह सभी कहानियाँ हैं; उनमें, कल्पना राज्य में शिशु मन का स्वच्छन्द विहार है। परन्तु नाना की जो कहानी है उसमें कल्पना नहीं है। काशिरिन द्रष्टा की तरह अपने वास्तव जीवन की विचित्र अभिज्ञता और स्मृति के वर्णन करता जाता है। दीर्घकाल के व्यवधान से काशिरिन अपने विगत जीवन को निरासक्त और निष्पक्ष दृष्टि से देख सकता है; इसी लिए उसका वर्णन व्यक्तिगत अनुभव के आवेग से मुक्त है। कभी-कभी नानी भी वहाँ आ बैठती है। वह भी इस वर्णन में सहयोग देती है। भूतकाल के 'यह' 'वह' पूछती जाती है। तब दोनों मिलकर अतीत का वर्णन करने लगते। वे उनके पास के छोटे उत्सुक श्रोता का अस्तित्व तक भूल जाते हैं। परन्तु वह छोटा श्रोता अदम्य कौतूहल के साथ काशिरिन की स्मृति-कथा सुनता जाता है।

स्मृति का प्रवाह धीरे-धीरे उनके अनजाने ही वर्तमान की मरुभूमि में प्रविष्ट होता है। अपने अपदार्थ और मनुष्यत्वहीन लड़कों की बात करते-करते दुःख, क्रोध और अपमान से काशिरिन पागल सा हो जाता है। वृद्धा बड़ी होशियारी से समझाने की चेष्टा करती है, कहती है, तुम कहते हो कि दूसरों के लड़के इनसे अच्छे हैं, लेकिन मैं तुमसे सच कह रही हूँ कि सर्वत्र इसी प्रकार के लड़ाई-झगड़े और अशान्ति हैं। सभी पिता-माता को आँसू से अपने पापों का प्रायश्चित्त करना पड़ता है। तुम अकेले नहीं हो। सुनकर कभी-कभी वृद्ध शान्त होता है, कभी नहीं। एक दिन बुढ़िया इसी तरह सान्त्वना देने जा रही थी, बूढ़ा काशिरिन ग़ुस्से में बुढ़िया को ऐसा मार बैठा कि उसके मुँह से ख़ून गिरने लगा।

नाना के हाथ आलेक्सी ने यह पहली बार नानी को अकारण मार खाते देखता है; उसका हृदय असीम घृणा से पूर्ण हो जाता है। परन्तु आश्चर्यजनक है यह क्षमामयी मातृमूर्ति! आलेक्सी को नींद नहीं आती, उद्वेलित दुःख से उसकी छाती फटने लगती है। परन्तु क्षमामयी नानी उसे धीरज देकर सो जाने को कहकर नीचे बूढ़ा काशिरिन के पास चली जाती है। बुढ़िया

जानती है कि कितने भयानक दुःख से पागल होकर काशिरिन ने उसे भी मार दिया। मातृहृदय की अन्तर्दृष्टि कितनी सूक्ष्म होती है! आलेक्सी को समझाती हुई वह कहती है, 'वह गुस्सा हो जाता है, इस वृद्धावस्था में वह इतना दुःख नहीं सह सकता है। आजकल उसका कुछ भी अच्छी तरह नह चल रहा है न?'

यही नारी है जिसने आलेक्सी के शिशु हृदय में मनुष्य के प्रति सहानुभूति का बीज बोया।

## ८

माता से आलेक्सी की भेंट नहीं ही के समान है। वार्वारा कहीं चली गई। बीच-बीच में अकस्मात् कहाँ से वह आती है, फिर चली जाती है। इसलिए आलेक्सी का जीवन अब नाना और नानी ही के साथ बीतता है। आलेक्सी थोड़ा-थोड़ा लिखता-पढ़ता है; नाना दण्ड देकर कभी-कभी उसे मकान के अन्दर बन्द रखता है। फिर उसको बग़ीचे के अन्दर जाने को कहता है।

आलेक्सी का मित्र एक भी नहीं है। नाना से छुट्टी लेकर बाहर बग़ीचे में निकलते ही मुहल्ले के सब लड़के चिल्ला उठते हैं, 'वह, आया है' और साथ ही साथ ढेला फेंकना शुरू करते हैं। बालक आलेक्सी अकेला उस झुण्ड को ढेला से परेशान कर देता है। लड़कों को झाड़ियों की आड़ में आश्रय लेना पड़ता है। उम्र के लिहाज़ से आलेक्सी का पराक्रम असामान्य है। वह अकेला होकर भी इतने लड़कों को भगा सकता है यह सोचते हुए उसको अच्छा लगता है। ख़ास कुछ शत्रुता नहीं है, तब भी यह युद्ध उसको बहुत अच्छा लगता है। मित्रहीन जीवन से यह शत्रुमय जीवन भी अच्छा है।

नाना उसको रास्ते पर जाने के लिए मना करता है। परन्तु रास्ते पर लड़कों की आहट मिलते ही किस प्रकार से उसके पैर उसको बग़ीचे के बाहर ले जाते हैं वह उसे मालूम भी नहीं होता। परन्तु मुहल्ले के लड़के सब उसके दुशमन हैं। दूर से उसे देखते ही वे कहने लगते हैं, 'वह आ रहा है काशिरिन छोकरा।' बस, आलेक्सी चिढ़ जाता है; वह तो काशिरिन नहीं

है। वह है पियेश्कौभ। मारपीट होने लगती है। उम्र के मुक़ाबिले में उसके शरीर में इतनी ताकत है कि उसके उम्र के लड़कों में से एक भी अकेला आगे बढ़ने का साहस नहीं करता। जभी आलेक्सी को वे रास्ते पर पाते हैं, दल-बद्ध होकर उस पर आक्रमण करते हैं। इसी लिए युद्ध के नाना प्रकार के चिह्न नाक, मुख और आँखों में, कपड़े और पोशाक में अङ्कित कर वह घर लौटता है। तब भी करीब छः साल का लड़का किसी तरह अपने को बाहर जाने के नशे से मुक्त नहीं कर सकता। सम्भव है, मकान की वैचित्र्यहीन नीरसता से वह घबरा जाता है। सम्भव है उसके घुमक्कड़ पिता का ख़ून उसे चञ्चल करता है। किसी प्रकार की उत्तेजना और चञ्चलता के बिना वह बच नहीं सकता। पथ पर मार खाने के बाद फिर घर पर भी उसको मार खानी पड़ती है। फिर इसका बदला लेने के लिए दूसरे रोज़ रास्ते पर आकर पहले से भी अधिक मारपीट करता है।

लेकिन केवल उत्तेजना के दुर्दमनीय आकर्षण से ही वह इस प्रकार मार-पीट करता है ऐसी बात नहीं है। दुखी, असहाय और आर्त जनों के प्रति समवेदना और सहानुभूति इस बालक की हड्डी में है। सम्भवतः नानी की करुणा-प्रवणता बालक के मन में अनजाने सञ्चारित हुई है। कहीं भी कोई असहाय मनुष्य मार खा रहा है ऐसा देखने से नानी अकेली अत्याचारियों के विरुद्ध लड़ने को खड़ी हो जाती है। बालक आलेक्सी भी जब कभी देखता है कि बदमाश लड़के कुत्तों में झगड़ा लगाकर तमाशा देख रहे हैं अथवा किसी की बिल्ली को सता रहे हैं, अथवा भिक्षुक या मतवाले लोगों को लेकर निर्दय परिहास कर रहे हैं, तभी आलेक्सी के लिए स्थिर रहना असम्भव हो जाता है। प्रतिवाद करने के लिए वह आगे बढ़ जाता है। कितनी बार उसने इसी कारण मारपीट की है और प्रबल दल के हाथ मार खाकर घर लौटा है। तथापि यही इसकी विधिदत्त प्रकृति है। यह अद्भुत सहानुभूति उसके जीवन का साथी है।

बूढ़ा ग्रेगरी उसको बहुत प्यार करता था। लेकिन अब वह बिलकुल अन्धा हो गया है। इसलिए काशिरिन ने भी उसे बिदा कर दिया है। ग्रेगरी अब पथ-पथ पर भीख माँगता है। काशिरिन के इस मकान के पास

से जब वह जाता है, बुढ़िया नानी उसको पुकारकर उसके साथ बातचीत करती है, जो कुछ बनता है देती भी है। उसके सामने आने में आक्लेसी को लज्जा-सी लगती है, शायद उसके साथ-साथ भीख माँगने की मानसिक प्रतिश्रुति की रक्षा नहीं कर सका इसी लिए। नानी से वह प्रश्न करता है, नाना ग्रेगरी को अपने पास क्यों नहीं रखता? लम्बी साँस खींचकर नानी जवाब देती है, मेरी आज की यह बात याद रखना, ईश्वर इसके लिए हम लोगों को कठिन दण्ड देंगे।

दस साल के बाद वास्तविक काशिरिन को भी द्वार-द्वार पर भीख माँगकर फिरना पड़ा था। उस समय नानी इस संसार में नहीं थी।

## ९

पोलेवाय स्ट्रीट के मकान में एक साल बीत गया। इसके बाद अकस्मात् काशिरिन ने उस मकान को बेचकर कानाटाराय स्ट्रीट में एक सुन्दर मकान ख़रीदा है। एक क़तार छोटे-छोटे मकानों के बाद यह मकान है। इस मकान के बाद कुछ खेत हैं। खेतों के पीछे एक खाई है। खाई के उस पार जङ्गल दिखाई देता है। मकान के सामने का बग़ीचा बड़ा न होने पर भी निहायत छोटा भी नहीं है, झाड़ी और बङ्किम पथों के कारण यह विचित्र सा है। मकान की बाईं ओर घनी एलूम और नीबू की झाड़ियों का अन्धकार-पूर्ण रहस्य विराजमान, बग़ीचे की बाँईं ओर कॉर्नेल आभूसियानिक का मकान है और दाहिने है 'बेट्लेंगा-भवन'—वारवनिताओं का निवास।

इस मकान में भी बहुत से किरायेदार हैं। नीचे रहते हैं एक तातार और उसकी स्त्री। अस्तबल के ऊपर के कमरे में मालगाड़ी खींचनेवाला एक मज़दूर, बूढ़ा पीटर चचा और उसका गूँगा भानजा स्टेपान रहते हैं। परन्तु मकान के पिछले हिस्से में एक विचित्र मनुष्य रहता है। उसके कमरे के अन्दर नाना प्रकार के जञ्जालों का समारोह है; विशृंखल, अस्त-व्यस्त कमरे को देखकर मालूम नहीं होता कि उसमें कोई मनुष्य रहता है। नाना प्रकार की रासायनिक परीक्षा में मग्न रहकर वह अकेले दिन बिताता है, सामने भी

कोई खड़ा रहने से सब समय उसको नज़र नहीं आता। आलेक्सी का अदम्य कौतूहल उसको उसकी ओर खींच ले जाता है। इस विचित्र मनुष्य का पागल-सा आचरण केवल काशिरिन ही को ख़राब नहीं मालूम होता, नानी भी उसे पसन्द नहीं करती। परन्तु आलेक्सी उस आदमी को प्यार करने लगता है। नाना के मारने पर भी आलेक्सी का यहाँ आना बन्द नहीं होता।

एक दिन काशिरिन उस आदमी को मकान छोड़ देने को कहता है। बहाना,—लड़की वार्वारा आ रही है, उसके लिए यह कमरा चाहिए। जाने के समय यह आदमी आलेक्सी को छाती लगा लेता है और रोते हुए चल देता है। जाने के समय वह कहता है, 'मैं दूसरे क़िस्म का आदमी हूँ इसी लिए ये लोग मुझको नहीं चाहते, समझते हो?' काशिरिन और नानी के भी जान में जान आई, मानो कोई आनेवाली विपत्ति हट गई। परन्तु आलेक्सी के हृदय में यह बन्धु-विच्छेद की पहली वेदना की चोट लगती है। वह किसी तरह समझ नहीं सकता कि इसका बदला वह किससे लेगा। ग़ुस्से में आकर चम्मच ही को तोड़ डालता है।

किसी को भी बालक के मन की यह उचाट अवस्था समझ में नहीं आती।

## १०

सङ्गीविहीन, बन्धु-हीन आलेक्सी। उसके दिन अकेले ही बीतते हैं। कभी कभी मामों के लड़के साशा माइखेलभ और साशा याकौभ आते हैं, नहीं तो आलेक्सी को बिना साथी ही रहना पड़ता है।

बग़ल के मकान में रहते हैं एक कॉर्नेल। उनके तीन लड़के हैं—शान्त, शिष्ट, भद्र। मकान के सामने आँगन में वे खेलते हैं। भाई-भाई में कभी झगड़ा—मारपीट—नहीं होता। इनके रङ्ग-ढङ्ग, चाल-चलन आलेक्सी को अद्भुत मालूम होते हैं, उनका शिष्ट भद्र आचरण सुन्दर प्रतीत होता है। परन्तु वह इन लोगों के पास कैसे जायगा! अदृश्य, तथापि दुर्लंघ्य सामाजिक व्यवधान शिशु-चेतना को भी उन लड़कों की ओर बढ़ने में बाधक होता है।

इसी लिए पेड़ के ऊपर बैठकर उत्सुक नेत्रों से वह केवल उन्हें देखता रहता है। इसके बाद एक दिन 'चोर-चोर' खेलते समय बड़े दो भाइयों के अनजाने छोटा लड़का एक कुएँ में गिर जाता है। देखकर आलेक्सी दौड़ जाता है और उस लड़के को बचाता है।

इसके बाद आलेक्सी उन लड़कों के पास जाता है। आलेक्सी लड़कों को नानी से सुनी हुई कहानियाँ सुनाता है। छपी हुई पुस्तकों में इन लड़कों ने ये कहानियाँ नहीं पढ़ी हैं। राबिन्सन क्रूसो की कहानी बिलकुल इस क़िस्म की नहीं है। इन लड़कों की अपनी माँ नहीं है; सौतेली माँ के पास बड़े भय से इन लोगों के दिन बीतते हैं। कहानियों से सबूत देकर सरल आलेक्सी उन्हें समझाता है कि उनकी माँ फिर लौट भी सकती है; वह एक क़िस्से में सुना है न ?

एक दिन संयोग से कॉर्नेल अपने लड़कों के साथ आलेक्सी का मेल-मिलाप देख लेते हैं। उन्होंने बहुत डाँट-फटकार किया, कहा, सावधान, फिर कभी इधर क़दम बढ़ाओगे तो...! आलेक्सी चिढ़ जाता है, कहता है, बूढ़ा, तुम्हारे पास कौन आता है! बस, अब कहाँ जायगा! नीचों के लड़के के मुँह में यह स्पर्धा की बात! कार्नेल उसे मज़बूती से पकड़कर काशिरिन के पास लाते हैं। आलेक्सी के ऊपर यथारीति मार पड़ती है। काशिरिन पीटर ये सब भी कॉर्नेल और उनकी श्रेणी के कुलीनों के नाम तक बरदाश्त नहीं कर सकते। दोनों ओर से आलेक्सी की विपत्ति है। परन्तु वह इन बाधाओं को मान नहीं सकता। चुराकर वह इन्हीं लड़कों के साथ मिलता-जुलता है और एक निभृत स्थान में बैठकर उन लोगों को नानी की कहानियों को सुनाता है।

## ११

आलेक्सी को चिड़िया पकड़ने का नया शौक़ हुआ है। जङ्गल से चिड़िया पकड़कर वह उन्हें पिंजड़ों में पालता है। एक दिन जब चिड़िया पकड़ने के व्यर्थ प्रयास के बाद वह घर लौटता है तब बड़ी व्यस्तता के साथ नाना ख़बर देता है, तेरी मा आई है। बहुत दिन हुए माँ से उसकी भेंट

नहीं है, इसी लिए माँ कुछ दूसरी-सी लगती है। उसे देखते ही माँ कहती है, अरे, इतना बड़ा हो गया है! क्या, मुझे पहचानता नहीं क्या! अरे ठण्ढ से तो बिलकुल सफ़ेद हो गया!

वार्वारा सदा से साफ़ सुथरा रहना पसन्द करती है, वह कुछ शौक़ीन मिजाज की है भी। इसलिए, लड़के को गन्दा देखकर उसको दुख होता है। लड़के को गोदी पर बैठाकर माता स्नेहपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर ताकते हुए न जाने क्या सोचती है और अन्यमनस्क हो जाती है। शायद मन में वह अपने को अपराधी ठहराती है; शायद सोचती है कि अब से फिर वह लड़के की अवहेलना न करेगी। आहा, इस छोटे शिशु को कौन देखता है? कैसा गन्दा होकर रहता है! कौन इसको साफ़ करता है!

परन्तु वार्वारा एक जटिल समस्या का बोझ सिर पर लेकर आई है। इतने दिन वार्वारा कहाँ थी, कहाँ-कहाँ घूमी, कोई नहीं जानता। इस बीच उसे एक बच्चा हुआ है। किसी दूसरी जगह पर उसे रखकर वह जानने आई है कि पिता के पास आश्रय मिलेगा कि नहीं। वार्वारा अत्यन्त गम्भीर प्रकृति की लड़की है; उसने जो कुछ किया है उसके लिए उसको कुछ लज्जा नहीं है। परन्तु उसके बच्चे की बात सुनकर काशिरिन क्रोध से लाल हो जाता है, समाज में उसको नीचा देखना पड़ा, अपमान में बाक़ी ही क्या रहा?

बुढ़िया कहती है, क्षमा करो उसको। तुम सोचते हो कि यह सब कुलीनों के घर नहीं होता? वहाँ भी होता है। कोई भी मनुष्य निर्दोष नहीं है। बूढ़ा काशिरिन चुप होकर सुनता है, उसके मन में ऐसा होता है कि जो अन्याय मैंने किया है, उसकी सज़ा मिलने का दिन आ गया है; कहता है, हाँ जी, हमारी तक़दीर में और सुख शान्ति नहीं है। सुन रखो, मरने के पहले भीख माँगना भी तक़दीर में है। क्या जाने, शायद निराश्रय, अन्धा भिक्षुक ग्रेगरी की याद आती है। नानी धीरज देकर कहती है, नहीं जी, तुम उसकी परवाह मत करो, मैं ही तुम्हें भीख माँगकर खिलाऊँगी।'

बूढ़ा काशिरिन असहाय शिशु की तरह बुढ़िया को गले लगाकर कहता है, तुम्हारे सिवा अब मेरा है ही कौन?

इस सुन्दर दृश्य को देखकर आलेक्सी अपने को रोक नहीं सकता, दौड़कर खुशी के मारे वह उनसे लिपट जाता है।

बूढ़ा कहता है, क्यों, अब तो माँ को पाया न? अब क्या! बूढ़ा नाना और बुढ़िया नानी की अब कौन ज़रूरत है! क्यों, यही है न? सभी हम लोगों को त्याग देंगे। कोई नहीं रहेगा....अच्छा, उसे भीतर ले आओ।

बूढ़ा काशिरिन, पिता काशिरिन अपनी लड़की को क्षमा करता है!

## १२

अब वार्वारा ने आलेक्सी को रूसी भाषा सिखलाना शुरू किया। इसमें एक अद्भुत बाधा की सृष्टि हुई। वार्वारा उसे कविता कण्ठ करने को कहती है, परन्तु अपनी माँ के पास एक भी कविता शुद्ध रूप में नहीं कह सकता, नाना प्रकार से कविता को विकृत कर देता है। वार्वारा इससे बहुत चिढ़ जाती है, परन्तु आलेक्सी स्वयं भी समझ नहीं सकता कि क्यों ऐसा होता है। वह कहता भी है। नाना को उसकी इस स्वाभाविक अयोग्यता की बात पर किसी तरह विश्वास नहीं होता, वह कहता है, यह सब उसका बहाना है, नहीं तो उसको याद करना ख़ूब आता है। माँ भी प्रायः इसी ख़याल से आलेक्सी को मारने को उद्यत हो जाता है। परन्तु उसका फल कुछ भी नहीं होता। लेकिन रात को नानी के पास सोकर वह उन्हीं कविताओं की ठीक-ठीक आवृत्ति कर जाता है। आलेक्सी को भी इससे कम विस्मय नहीं होता। क्या जाने क्या होता है, माँ को वह चिढ़ाता है, दुःख भी देता है। परन्तु वह तो कभी ऐसा नहीं चाहता। तब भी वह क्यों ऐसा करता है उसका कारण कुछ भी समझ में नहीं आता। एक स्नेहविहीन निस्सङ्ग शिशु की मग्नचेतना में उसका दारुण मान इस छद्मरूप में प्रकाशित होता है। आलेक्सी यह कैसे समझेगा! वह माँ को चाहता है, परन्तु माँ को न पाने के कारण मग्नचेतना के अन्दर उस उग्र कामना ने आत्मगोपन कर लिया है। वह स्पष्ट समझता है कि पढ़ाते-पढ़ाते माता अन्यमनस्क हो गई है; माता का मन उसके प्रति नहीं है, न जाने माँ को क्या हुआ! बालक-चित्त अपने मन का साथी चाहता है, आश्रय चाहता है, लेकिन पाता नहीं! सम्भवतः इसी लिए उसका क्रोध इस रूप में प्रकट होता है।

काशिरिन कहीं वार्वारा की शादी करना चाहता है। समाज में लड़की का इस प्रकार से कलङ्क फैलाना कोई भी बाप नहीं चाहता। परन्तु नानी लड़की की असम्मति से कुछ करना नहीं चाहती। इसलिए बुढ़िया बूढ़े काशिरिन की गुप्त अभिसन्धि की बात लड़की से पहले ही कह देती है। बुढ़िया की इस विश्वासघातकता का प्रमाण पाकर काशिरिन पागल की तरह बुढ़िया को केवल मारता ही नहीं, वरन् बाल बाँधने की कँटियाँ को सिर में चुभो देता है। यह देखकर आलेक्सी यथाशक्ति तकिया इत्यादि चीज़ों को काशिरिन के ऊपर फेंकना शुरू करता है। उसकी तक़दीर अच्छी थी कि क्रोधोन्मत्त काशिरिन को यह मालूम नहीं हुआ।

आलेक्सी जब नानी के सिर में चुभी हुई कँटियों को देखता है तब वह अपने मन में बदला लेने का सङ्कल्प करता है। परन्तु वह कोई उपाय नहीं निकाल सकता। अन्त में नाना के अत्यन्त प्रिय साधु-सन्तों के चित्र युक्त कैलेंडर को लेकर उसमें से उन साधु-सन्तों के चित्रों को काटकर वह बदला लेता है। नाना तो मारने दौड़ता है, कहता है, मार ही डालेंगे उसको। परन्तु वार्वारा बीच में आ पड़ती है, झुड़क कर बाप को ठण्ढा करती है। इसके बाद वार्वारा दण्ड देने का भय दिखलाकर आलेक्सी से उस अद्भुत आचरण का कारण पूछती है। तब वार्वारा को काशिरिन की निर्दयता की बात मालूम होती है। माता का गम्भीर प्रेम स्पष्ट हो उठता है; माँ को लिपटकर वार्वारा बोलती है, माँ, माँ, ऐ मेरी माँ! बाहर से मुँह बनाकर काशिरिन कहता है, 'मे-री माँ! जा, तेरी माँ को लेकर जहाँ जाना हो जा!'

## १३

काशिरिन के किरायेदार उस तातार सिपाही की सुन्दरी स्त्री के यहाँ प्रायः प्रति सन्ध्या को मजलिस बैठती है। बेटलेंगा-भवन से सुन्दरियाँ वहाँ आती हैं और सरकारी अफ़सर भी आते हैं। वार्वारा भी प्रायः नित्य वहाँ जाना शुरू करती है। काशिरिन यह बिलकुल बरदाश्त नहीं कर सकता, झुड़ककर कहता है, फिर शुरू हुई है?

थोड़े ही दिनों में काशिरिन अपने मकान से सब किरायेदारों को निकाल देता है, बैठका सजाकर स्वयं ही बैठ जाता है। सम्भवतः वार्वारा के लिए उपयुक्त पति का संग्रह करना ही इसका निगूढ़ उद्देश्य है। एक व्यक्ति आता भी है, वह काशिरिन को पसन्द होता है। इसलिए वार्वारा को कुछ भी न कहकर वह शादी ठीक कर लेता है।

एक दिन दुलहा मकान के सामने हाज़िर होता है। अन्दर आकर काशिरिन वार्वारा को ब्याहने के लिए तैयार होने को कहता है। अविचल स्वर में वार्वारा कहती है कि मैं किसी तरह यह ब्याह न करूँगी। कलह का अग्निकाण्ड होने लगता है। परन्तु अन्त में वृद्ध ही को हार मानना पड़ता है। विवाह का इच्छुक आदमी विफल होकर लौट जाता है।

परन्तु यह कदर्य कोलाहल, चीत्कार झगड़ा बहुत देर तक के लिए नहीं; थोड़ी ही देर के बाद फिर क्रन्दन और पश्चात्ताप की बारी आती है। उसके बाद हास्य-परिहास भी होते हैं। झगड़ा, मारपीट में आलेक्सी को उतना विस्मय नहीं होता, किन्तु इन लोगों के हास्य परिहास को देखकर वह घबरा जाता है। वह समझ नहीं सकता कि इनमें से कौन सा सत्य है और कौन सा तमाशा।

अब से वार्वारा ही मालकिन बन बैठती है। काशिरिन बहुत शान्त हो जाता है। वार्वारा ने सामने के दो कमरे ले लिये हैं; वार्वारा के वहाँ नाना प्रकार के लोगों का समागम होता है। विशेष रूप से पीटर मैक्सिमौभ नामक एक सरकारी कर्मचारी और उसके छोटे भाई इउजेन मैक्सिमौभ का आगमन होता है। सदा से ही वार्वारा साफ़ सुथरी रहती है, उसकी प्रकृति कुछ शौक़ीन सी है। वह समाज के उच्च स्तर का भद्र जीवन चाहती है। कदर्य नीचता और दैन्यग्रस्त जीवन की सौन्दर्य-हीनता मानो उसका श्वासरोध करती हैं। इसी लिए वार्वारा ने समाज की अपेक्षाकृत भद्र श्रेणी के लोगों के साथ मिलना शुरू किया है। सज-धजकर जब वह उन लोगों के साथ निकल जाती है तब इस मकान का उत्कट निरानन्द और निस्संग निस्तब्धता भयानक मालूम होती है, भय होता है कि यह मकान ज़मीन के अन्दर एकाएक धस जायगा।

आलेक्सी को इतना अकेला और निस्सङ्ग मालूम होता है!

## १४

बड़े दिन का उत्सव समाप्त हो गया है। माइखेल का लड़का काशिरिन ही के पास रहने के उद्देश्य से आया है। माइखेल ने दूसरी शादी की है, सौतेली माँ लड़के के प्रति प्रसन्न नहीं है। इसी लिए नानी के बहुत कहने-सुनने से काशिरिन साशा माइखेलौभ को स्थान देने के लिए राज़ी हुआ है।

वार्वारा यह निश्चय करती है कि साशा और आलेक्सी को स्कूल भेजेगी। महीना भर स्कूल जाने के बाद साशा स्कूल से भागना शुरू करता है। किसी प्रकार से उसका भागना बन्द नहीं होता। स्कूल जाने का रास्ता कैसा गड़बड़ हो जाता है। ठीक इसी समय आलेक्सी को चेचक की बीमारी होती है। बहुत दिनों तक बिछौने ही पर दिन बीतते हैं। इस समय उसका एकमात्र साथी उसकी नानी है। सन्ध्या को नानी बगल में बैठकर कितनी नई-नई कहानियाँ सुनाती है; नानी मानो कहानियों का खजाना है। इसी समय आलेक्सी अपने माता-पिता के प्रथम जीवन की कहानी सुनता है। चुराकर बुढ़िया वोड्का ( Vodka ) पीती है और वार्वारा और पियेश्कौभ के प्रथम जीवन की कहानी कहती जाती है।

इधर वार्वारा इउजेन मैक्सिमौभ के साथ कुछ अधिक मेल-मिलाप करने लगती है। काशिरिन आलेक्सी के सामने ही नानी से पूछता है, देखती हो क्या हो रहा है? संक्षेप में नानी कहती है 'हूँ'। बुढ़िया समझाती हुई कहती है, ये शादी करेंगे। परन्तु काशिरिन वार्वारा के लिए धनवान् पति चाहता है, केवल कुलीनता से होगा क्या! बुढ़िया कहती है, वार्वारा स्वयं समझकर जो चाहे करने दो। आलेक्सी नहीं समझता कि मामला क्या है। वह पूछता है। बुढ़िया कहती, सभी अभी जानना चाहता है? बड़ा होने पर क्या जानेगा? कुछ तो बाक़ी रहने दे। आलेक्सी से कोई भी स्पष्ट कर कुछ कहना नहीं चाहता।

ठीक ऐसे समय पर काशिरिन का सर्वनाश हो गया। उसने बहुत सा धन एक महाशय को उधार दिया था। उसने दिवाला मार दिया। आलेक्सी को यह कहकर नानी चुप हो जाती है और न जाने किस चिन्ता में मग्न

हो जाती है। शायद भविष्य की कल्पना से उसका चित्त शङ्कित हो उठता है। इसके बाद नानी कहानी सुनाना शुरू करती है।

आलेक्सी से माता की भेंट कभी-कभी हो जाती है। अगर कभी आती भी है तो उसके चाल-चलन में आलेक्सी कुछ व्यस्तता देखता है। पहले से माँ देखने में और भी ख़ूबसूरत लगती है, माँ को कुछ हुआ है ऐसा मालूम पड़ता है। वह समझना चाहता है कि वह क्या है, परन्तु नवीन प्रेम के स्पर्श से उसकी माता आज कितनी दूर पर चली गई है वह बालक कैसे समझ सकता है।

बुढ़िया नानी प्रायः आलेक्सी के पिता को स्वप्न में देखती है। आलेक्सी को वह कहती है, तेरे बाप की आत्मा को शान्ति नहीं मिल रही है। अँधेरी रात्रि में वातायन से बालक विनिद्र नयनों से बाहर की ओर ताकता रहता है और अपने विचारे शान्तिहीन पिता की आत्मा के बारे में सोचकर उसका हृदय विषाद से पूर्ण हो जाता है, फिर नींद आना नहीं चाहती।

## १५

बिछौने पर बहुत दिन बीत गये। एक दिन सन्ध्या के समय धीरे-धीरे किसी तरह नीचे उतरकर वह माता के कमरे के द्वार पर जा खड़ा होता है। माता से भेंट तो बहुत ही कम होती थी। शायद इसी लिए स्नेहार्त बालक आज बिछौना छोड़कर पहले ही माँ के पास जाता है। बालक देखता है कि वहाँ पर एकदल अपरिचित व्यक्तियों को लेकर आनन्द-उत्सव चल रहा है। मैक्सिमौभ और उसकी बुढ़िया माँ भी वहाँ हैं। काशिरिन उस बुढ़िया को दिखलाकर कहता है, यह तेरी दादी है; माँ भी हँसती हुई मैक्सिमौभ को पास लाकर कहती है—यह तेरा पिता है। बालक के पैर के नीचे से धरती खिसकती हुई मालूम पड़ती है, आँख बन्द कर वह विवश-सा हो जाता है। नानी जल्दी से उसे पकड़कर बाहर ले जाती है। आलेक्सी केवल कहता है, तुम लोगों ने पहले मुझसे क्यों नहीं कहा ? तुम सब धोखेबाज़ हो। नानी केवल बिछौने पर लोटती हुई रोती रहती है। परन्तु बालक फिर न रोता है, न कुछ कहता है।

मैक्सिमौभ और उसकी बुढ़िया माता को आलेक्सी बिलकुल बरदाश्त ही नहीं कर सकता। उनके साथ वह कठोर आचरण तो करता ही है, अलावा इसके, उनके बैठने की कुर्सियों में गोंद लगाकर रख देता है। एक दिन वार्वारा रोती हुई आलेक्सी से अच्छा होने की बिनती करती है, कहती है, तुझको मालूम नहीं कि इससे मुझको कितना दुख होता है। माता की वेदना को देखकर बालक वचन देता है कि फिर मै ऐसा नहीं करूँगा। मां .खुश होकर उसे बहुत कुछ कहती है। तुझे मास्को ले जाऊँगी, वहाँ स्कूल में पढ़ाऊँगी; तुझको डाक्टर होना पड़ेगा। इन बातों से बालक को कुछ भी आनन्द नहीं होता; वह कहना चाहता है, माँ तुम ब्याह मत करो, मैं तुमको मजदूरी करके खिलाऊँगा। परन्तु वह कह नहीं सकता। बालक की अकथित इच्छा मन ही में रह जाती है।

उस दिन वाग्दान के बाद ही वार्वारा कहीं चली जाती है। आलेक्सी के लिए घर, विशेष करके बड़ों का सङ्ग, असह्य मालूम होने लगता है। इसलिए वह प्रायः हर समय बग़ीचे में रहता है; एक अकारण क्रोध से वह पागल-सा हो जाता है। उसकी इच्छा होती है कि कुछ तोड़ डाले। उसके विक्षुब्ध मुख को देखकर नानी कहती है, ऐसा क्यों कर रहा है? परन्तु वह इसका क्या उत्तर देगा? उसके भीतर कहाँ पर कौन-सा घाव है, कौन अज्ञात धमनी विच्छिन्न हो गई है उसका पता तो ठीक-ठीक उसको भी नहीं है। केवल एक बात वह जानता है। उसका आत्मीय कोई नहीं है। सभी दूसरे लोग हैं। इसी लिए वह बग़ीचे में एक छोटी-सी कुटिया बनाने लगता है। ग्रीष्मकाल वह यहीं पर बितायेगा, किसी के साथ वह रहना नहीं चाहता।

आलेक्सी बग़ीचे में अपनी छोटी-सी कुटिया बनाने ही में मग्न रहता है। बूढ़ा काशिरिन भी नाती का साथ देता है, छोटी कुटिया को सुन्दर बनाने में मदद करता है। केवल बीच-बीच में गाल पर से आँसू बहने लगता है, कहता है, व्यर्थ के लिए तू यह सब कर रहा है। यह मकान बेच रहा हूँ। तेरी माँ की शादी में दहेज देना पड़ेगा, उसके लिए रुपया चाहिए। लम्बी

साँस खींचकर काशिरिन चुप हो जाता है, उसके बाद कहता है, आशा करता हूँ कि वह सुखी होगी, ईश्वर उसे सुखी करें।

## १६

वार्वारा से मैक्सिमौभ की शादी हो जाती है और इसके बाद वे मास्को चले जाते हैं। जल्दी से लौटने का वादा करके वे तड़के उठकर चले जाते हैं। बालक आलेक्सी फाटक के खम्भे के ऊपर बैठकर माता की ओर ताकता रहता है। धीरे-धीरे गाडी दूर पर रास्ते के मोड से अदृश्य हो जाती है।

नाना कन्धे पर हाथ रखकर आलेक्सी को सुबह का भोजन करने के लिए बुलाकर कहता है, देखता हूँ कि तेरे नसीब में मेरे पास रहना ही लिखा है। दोनों मिलकर दिनभर बग़ीचे में काम करते हैं, पास ही पालतू चिड़ियों के पिजड़े लटकते हैं। काशिरिन कहता है, माँ के साथ तेरा नाता अब टूट गया है; अब उसे और बेटा-बेटी होंगे। उन्हें वह तुझसे भी अधिक प्यार करेगी। इधर तेरी नानी ने भी नशा पीना शुरू किया है। हाँ, काशिरिन के जीवन में सुख का अन्त हो गया है।

फिर भी समय का स्रोत बहता रहता है। ग्रीष्म की सन्ध्या में, बग़ीचे में लेटा हुआ आलेक्सी अनन्त आकाश के नक्षत्रपूर्ण रहस्य की ओर ताकता रहता है। शक्ति लेकर, शान्ति लेकर, माता के आशीर्वाद-चुम्बन की तरह रात्रि आती है। दिवस की तिक्तता, नैराश्य और एकाकीपन न जाने कैसे दूर हो जाती हैं। अन्धकार और भी घना होता जाता है, निस्तब्धता और भी निबिड़ होती है। सुप्त पक्षी की आकस्मिक अस्फुट ध्वनि, कहीं-कहीं पर मनुष्य का मृदु कण्ठस्वर निस्तब्धता को और भी मधुर कर देता है। नानी भी रात को बगीचे में ही आलेक्सी के पास सोती है और छन्दमयी भाषा में कितनी नई-नई कहानियाँ कहती है। कहानियों के विस्मय से रात्रि और भी सुन्दर प्रतीत होती है। किसी एक आश्चर्यजनक भावप्रेरणा से बालक का मन जाग्रत् हो उठता है। बग़ल के मकान के कार्नेल के लड़कों का सङ्ग

अब अच्छा नहीं लगता। अकेले में बालक-चित्त अपनी सुप्तशक्ति के सन्धान को प्राप्त होता है।

## १७

काशिरिन अब पहले की तरह नहीं है। दिन-दिन वह कैसा स्वार्थपर और झगड़ालू होता जा रहा है। आलेक्सी के प्रति भी पहले का वह स्नेह नहीं है। बुढ़िया नानी को भी वह एकदिन कह देता है, देखो, मैंने इतने दिन तुमको खिलाया-पिलाया है, लेकिन अब अपना रास्ता देखना होगा। यह सुनकर बुढ़िया को आश्चर्य नहीं मालूम होता। सुँघनी की डिब्बी हाथ में लेकर नाक में सुँघनी डालकर बुढ़िया कहती है, अगर ऐसा ही होना है तो होगा। बीच-बीच में काशिरिन बुढ़िया को घर से निकाल देता है, बुढ़िया याकौभ या माइखेल के वहाँ चली जाती है। फिर कुछ दिनों के बाद लौट आती है।

हेमन्त ऋतु में काशिरिन का मकान बिक जाता है। बूढ़ा एक छोटी पहाड़ी के नीचे एक पुराने मकान की निचली मञ्जिल में दो कमरों को किराये पर लेता है। इतने दिनों के बाद, बुढ़ापे में दूसरे के घर बुढ़िया किरायेदार बनती है। पहले के माल-असबाब सभी प्रायः बिक जाते हैं। शोकाच्छन्न बुढ़िया आँसू बहाती हुई इतने दिनों के जीवन को बिदा कर देती है। आलेक्सी को न जाने क्यों रुलाई आती है; उसको ऐसा मालूम होता है मानो संसार ने उसे अनावश्यक वस्तु की तरह फेंक दिया है।

इसी के बाद एक दिन वार्वारा अपने पति के साथ लौट आती है। मैक्सिमौभ कहता है कि मास्को में आग लगकर मेरा सब जल गया है। परन्तु सत्य आग से भी प्रचण्ड है, उसे छिपा नहीं सकते। काशिरिन को पता लग जाता है कि वह कौन-सी आग है जिसमें मैक्सिमौभ का सर्वस्व भस्मीभूत हो गया है; वह जुए की आग है। काशिरिन क्रोध में आकर गालीगलौज करना शुरू करता है। वार्वारा बहुत अनुनय-विनय से पिता को शान्त करने की

चेष्टा करती है। काशिरिन मुँह बनाकर कहता है, कुलीन हैं; पाजी बदमाश कहीं का ! नहीं कहा था कि यह शादी ठीक नहीं होगी।'

शहर से पाँच मील की दूरी पर एक कारख़ाने में मैक्सिमौभ को एक नौकरी मिल जाती है। वहीं पर रास्ते के किनारे दो कमरे किराये पर लेकर वह वार्वारा को ले जाता है, इन्हीं के रसोईघर में नानी और आलेक्सी को स्थान मिलता है। नानी को नौकरानी का सभी काम करना पड़ता; रसोई बनाना, घर धोना, लकड़ी काटना, पानी भरना यह सब काम सबेरे से रात तक। तब भी बुढ़िया बीच-बीच में पाँच मील पैदल चलकर बूढ़ा को देखने के लिए शहर चली जाती है।

इन लोगों के डेरे के बग़ल में ही कारख़ाना है, उसके धुएँ से आकाश सर्वदा ढका रहता है। निर्दिष्ट समय पर मनुष्यों की भीड़ कारखाने में बाढ़ के पानी की तरह प्रबल वेग से उसके अन्दर घुसती है, फिर नियत समय पर वही मनुष्य रस निकाली ईख की तरह निकल आते हैं। जीवन का यह दीनता-पूर्ण दृश्य नितान्त नीरस और बैचित्र्यहीन है।

वार्वारा का स्वास्थ्य ख़राब हो गया है, इसके उपरान्त, वह गर्भवती भी है। सुन्दर, निर्मल भद्र जीवन का मोहमय स्वप्न लेकर वार्वारा ने इस अभिजात-वंशीय कालेज के शिक्षा प्राप्त युवक मैक्सिमौभ से ब्याह किया था। वह मोहमय स्वप्न आज सम्पूर्ण रूप से टूट गया है; अब लौटने का पथ नहीं है, चुपचाप दरिद्रता और दुर्दशा को स्वीकार कर वह शेष जीवन को मृत्यु की ओर खींचे ले जा रही है।

वार्वारा आलेक्सी को अब प्यार भी नहीं करती, उससे बात भी नहीं करती; जो कुछ कहती भी है तो वह रूक्ष स्नेहहीन आदेश के स्वर से। आलेक्सी इस वैचित्र्यहीन नीरसता और अकेलेपन से छुटकारा पाना चाहता है। इसी लिए उत्तेजना की खोज में वह रास्तों पर मारपीट करता है; इसी में उसको आनन्द मिलता है। अवश्य घर पर इसके लिए मार खानी पड़ती है। ज़िद और भी बढ़ जाती है; दूसरे दिन वह और भी अधिक मारपीट कर लौटता है। एक दिन घर पर मार खाकर वह माँ से कहता है, यदि मारना बन्द न करोगी तो, दाँत से हाथ काट लेंगे, इसके बाद भागकर बर्फ़ के बीच मरे

पड़े रहेंगे, यह हम कह देते हैं। माँ विस्मित और हक्का-बक्का होकर उसको छोड़ देती है और कहती है, दिन-दिन तू एक जङ्गली जानवर-सा हो रहा है!

## १८

स्नेहहीन, सहानुभूतिहीन, नीरस जीवन के बीच आलेक्सी का चित्त एकाकी है। ज़रा-सा स्नेह और प्यार की प्यास लेकर असहाय आलेक्सी नाना के यहाँ लौट आया है। अब नाना कुनाविन मुहल्ले की एक छोटी-सी कोठरी में रहता है। उसे देखते ही कहता है, क्या? लोग यह कहते हैं न कि माँ से बढ़कर कोई मित्र नहीं है? परन्तु अब तो मालूम होता है, माँ नहीं, बल्कि बूढ़ा नाना ही मित्र है! प्राय: साथ ही साथ नानी और वार्वारा भी नवजात शिशु के साथ वहाँ पर उपस्थित होती हैं। कारण, कारखाने में मैक्सिमौभ की जो नौकरी थी वह छूट गई है।

अस्तु, फिर एक रेलवे स्टेशन के बुकिंग आफ़िस में मैक्सिमौभ को नौकरी मिल जाती है। वार्वारा एक मकान की निचली मञ्ज़िल में रहती है; आलेक्सी फिर स्कूल जाने लगता है। उसके पास कपड़ा नहीं ही के बराबर है। नानी के बॉडिस से कोट बनता है। मैक्सिमौभ की पुरानी कमीज़ और माँ का पुराना जूता पहिनकर विचित्र वेश में आलेक्सी स्कूल पढ़ने जाता है। लड़के सब उसका वेश देखकर हँसी-ठट्ठा करते हैं। अस्तु, लड़कों के साथ मेल करने में देर नहीं होती; परन्तु एक शिक्षक और एक धर्मशिक्षक पादरी इन दोनों को वह किसी तरह सन्तुष्ट नहीं कर सकता। इसलिए आलेक्सी भी उनके साथ नाना प्रकार के क्रियात्मक मज़ाक़ करने लगा।

स्कूल के लड़कों को वह नानी की कहानियों को सुनाता है; यह सुनकर एक दिन कोई लड़का बोल उठता है, राबिन्सन की कहानी इससे कहीं अच्छी है। भीतर-भीतर आलेक्सी चिढ़ जाता है, नानी की कहानी से भी अच्छी कहानी हो सकती है? परन्तु, आलेक्सी को कहाँ से वह कहानी की पुस्तक मिलेगी। अगर मिलेगी तो वह भी उस कहानी को पढ़कर कहेगा, उँ:, क़िस्सा है न और कुछ! एक दिन अकस्मात् मैक्सिमौभ की पुस्तकों में

उसको एक रूबल का एक नोट मिलता है; इससे वह स्कूल के साथियों को अच्छी-अच्छी मिठाई ख़रीदकर खिलाता है और इसके बाद दुकान जाता है राबिन्सन की कहानी खरीदने के लिए। न जाने क्यों पशु चर्म पहिने हुए, लम्बी डाढ़ीवाला राबिन्सन का चेहरा देखकर उसको अच्छा नहीं लगता; उसके बदले में आलेक्सी दो खण्ड एंडारसन की कहानी ख़रीद लाता है। दो एक कहानी के पहले वाक्य को पढ़ते ही उसके मन में आनन्द की हिलोर लहराने लगती है; सुन्दर भाषा का एक अद्भुत मोहावेश उसके मन को आच्छन्न कर देता है। स्कूल में पढ़ नहीं सकता है, सोचता है कि घर पर जाकर पढ़ेंगे। परन्तु घर पर जाते ही सब आनन्द मिट्टी में मिल जाता है। माँ पूछती है, वह नोट? आलेक्सी तुरन्त क़बूल करता है। मैंने लिया है। परन्तु उससे छुटकारा कहाँ! बेधड़क मार तो पड़ी ही, उससे भी प्रचण्ड दण्ड मिला—एंडारसन की कहानी की किताब छीन ली गई। मैक्सिमौभ भी यह ख़बर फैला देता है कि आलेक्सी ने नोट चुराया है। स्कूल के लड़के उसका नाम रखते हैं 'चोर'। यही बालक को मर्मभेदी आघात करता है। उसने तो चोरी नहीं की, लेने की बात से तो उसने इन्कार नहीं किया।...स्कूल जाना ही कठिन हो गया।

आलेक्सी के एक दूसरे छोटे भाई होने के थोड़े ही दिन बाद उसका पहिला भाई अकस्मात् मर गया। ऐसी कोई बीमारी भी नहीं थी उसे। इसके बाद ही एक दिन एक दारुण घटना हुई। इधर कुछ दिनों से ही उसकी माता के दिन सुख से नहीं बीत रहे थे। आलेक्सी को भी यह बात अज्ञात न थी। उसके सामने ही प्रायः मैक्सिमौभ और वार्वारा में झगड़े होते थे। एक दिन कराहने का शब्द सुनकर आलेक्सी दौड़कर जाता है और देखता है कि वार्वारा को ज़मीन पर पटककर मैक्सिमौभ उसकी छाती पर बेधड़क लात मार रहा है। यह दृश्य बालक को असह्य प्रतीत होता है। पलक मारते ही आलेक्सी एक छुरी से अत्याचारी मैक्सिमौभ पर आक्रमण करता है। भाग्यवश, वार्वारा ही मैक्सिमौभ की रक्षा करती है। बालक आलेक्सी माँ से कहता है, उसको मारकर मैं भी मरूँगा।

इसी लिए आलेक्सी को फिर नाना के पास लौटना पड़ता है।

## १९

कुछ दिन पहले से ही काशिरिन के मानसिक विकार का प्रारम्भ हुआ था। अब वह विकार उग्रतर हो गया है। नानी को उसने अलग कर दिया है; सब माल-असबाब का बँटवारा हो गया है और इसमें अपने दीर्घ-जीवन की संगिनी को ठगकर काशिरिन मन में प्रसन्न ही हुआ है। बुढ़िया को टूटे-फूटे बरतन मिले हैं। बुढ़िया को इससे क्रोध नहीं होता, विशेष दुख भी नहीं होता; कहती है, बूढ़े की उम्र अस्सी के क़रीब हुई है, अब सठिया गया है।

लौटे हुए आलेक्सी को देख काशिरिन कहता है, क्यों रे डाकू, क्या चाहता है ! बस, अब फिर मैं तुझको खाना-पीना नहीं दे सकूँगा। अगर हो सके तो नानी खिलावे। नानी कहती है, अच्छा, अच्छा, वही होगा। ओः कैसा नसीब है !

आलेक्सी क्या काम कर सकता है ! छुट्टी के दिन सबेरे और स्कूल के दिन तीसरे पहर कन्धे पर एक झोला लेकर वह गली-गली घूमता है और कूड़ाख़ानों से मुर्दा जानवरों की हड्डी, फटा लत्ता, काग़ज़, कील और इसी तरह की चीज़ों को बटोरता है; इसे बेचकर दो-चार आने कमाता है। वही पाकर नानी परम सन्तोष प्रकट करती है, लेकिन छिपकर, बालक की इतनी तकलीफ की कमाई उस थोड़े से धन को हाथ में लेकर, बुढ़िया रोने लगती है।

आलेक्सी को कमाने का और एक रास्ता मालूम हुआ है। आलेक्सी का शैशव जिस कुनाभिन महल्ले में बीता है वहाँ के लोगों के नैतिक जीवन के बारे में कुछ न कहना ही अच्छा है। निजनीनौभगोरोट के विराट और विख्यात वार्षिक मेले में कई हफ्ते के लिए इन लोगों को काम मिलता है परन्तु साल के बाक़ी हिस्से में इन अर्द्ध-भुक्त लोगों को चोरी से जीविकोपार्जन करना पड़ता है। चोरी एक प्रकार का गर्हित कार्य है ऐसी धारणा इन लोगों में है कि नहीं इसमें सन्देह है। रविवार को यहाँ के प्रौढ़ लोग अपनी मण्डली में बैठकर अपने-अपने चौर्य-शौर्य और चतुराई की डींग हाँकते हैं और लड़के इन किस्सों को परम आग्रह के साथ सुना करते हैं। आलेक्सी के खेल के साथी इसी सामाजिक वातावरण में प्रवीण हो रहे हैं।

आलेक्सी का एक दल बना है। दस साल का लड़का सांका, एक नशेबाज़ भिखमङ्गिन का लड़का है, चोरी करके माँ की शराब के लिए पैसा जुटाना पड़ता है; न जुटा सकने पर भयानक मार खानी पड़ती है। खाबी नाम का जो तातार लड़का है इस दल में, उसके शरीर में अद्भुत शक्ति है। निजनी का मेला उठ जाने पर मेले में इस्तेमाल किये हुए तख़्ते इत्यादि वाल्गा के किनारे पर बड़े-बड़े गुदामों में ढेर लगाकर रख दिये जाते हैं; पहरेदार इन सबों की रक्षा करते हैं। मेले के तख़्तों का चुराना इन लोगों का पेशा है। आलेक्सी और उसके मित्र भी रात के समय, ख़ासकर मूसलधार वृष्टि की रात में, नाना प्रकार के कौशलों से तख़्ते चुराने की कोशिश करते हैं। परन्तु आठ साल के आलेक्सी और उसके बराबर उम्रवाले साथी इस काम को चोरी नहीं समझते हैं। फल के बग़ीचे से फल चुराने की तरह वाल्गा नदी के तट से मेले के तख़्ते इत्यादि को चुपके से हटा लेने को वे अपने चातुर्य, साहस और वीरता का पुरस्कार समझकर मन में प्रचुर गर्व अनुभव करते हैं। परन्तु साधारण गिरहकटों के पेशे को आलेक्सी का दल घृणा की दृष्टि से ही देखता है। इसलिए जब वे मुहल्ले के अन्य लड़कों को गिरहकटी का काम करते देखते हैं, तब वे रोकते हैं। असहाय मत्त अवस्था का लाभ उठाकर यदि कोई गिरह काटने की कोशिश करता है तो आलेक्सी का दल उसे पकड़कर मारने से भी नहीं हिचकता। नीतिज्ञान के भी कितने विचित्र स्तर होते हैं!

## २०

स्कूल में आलेक्सी का जीवन दुःखमय हो उठता है। लड़के उसको 'आवारा', 'कूड़ाख़ाने के व्यापारी' इत्यादि नाना प्रकार के अप्रिय नामों से सम्बोधित कर तङ्ग करते हैं। कभी-कभी लड़के मास्टर के पास यह कहकर शिकायत करते हैं कि उसके शरीर में पनाले की दुर्गन्ध है, कूड़ाख़ाने की बदबू है। लेकिन वास्तव में आलेक्सी ख़ूब साफ़-सुथरा होकर दूसरा वस्त्र पहनकर ही स्कूल जाता है। परन्तु बालकों की उत्पीड़न-प्रवृत्ति से आलेक्सी कभी बच नहीं सकता। इसके बाद आलेक्सी का स्कूल जाना सचमुच कठिन हो जाता है। तथापि पढ़ने-लिखने में आलेक्सी काफ़ी अच्छा लड़का है। तीसरे दर्जे

की परीक्षा वह अच्छी तरह से ही पास करता है और इनाम में बहुत-सी पुस्तकें भी पाता है। परन्तु किताब पढ़ने का अवसर नहीं मिलता। कई दिनों से नानी बीमार पड़ी है; नाना एक पैसा भी ख़र्च नहीं करेगा। बालक आलेक्सी बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी इनाम की पुस्तकों को बेचकर उसके पैसे नानी को देता है।

इधर स्कूल भी टूट जाता है। आलेक्सी को मानो मुक्ति मिल जाती है। वसन्तकाल का मध्य भाग है। अब जाड़ा नहीं है। आलेक्सी अपने साथियों को साथ लेकर कुछ न कुछ कमाता है। आलेक्सी यथार्थ में परित्राण पाता है। चारों ओर मास्टरों और लड़कों के व्यङ्ग और अपमान से छुटकारा पाकर रास्ते के साथी निकम्मे आवारों के दल में आकर मानो उसकी जान में जान आती है। चाहे और जो कुछ हो, यहाँ पर घृणा नहीं है, अपमान नहीं है। यहाँ पर बन्धुत्व की गम्भीर तृप्ति है, सहकारिता का उल्लास है। प्रथम जीवन के इन आवारे पिता-माताओं से परित्यक्त लड़कों के संग और बन्धुत्व में आलेक्सी को ऐसा आनन्द का स्वाद मिला है जिसको वह जीवन भर भूल नहीं सकेगा।

परन्तु यह स्वतन्त्रता अधिक दिनों के लिए नहीं है। मैक्सिमौभ की नौकरी छूट जाने से वह लापता हो जाता है। वार्वारा उसके शिशु सन्तान निकोलाई को लेकर काशिरिन के पास आती है। नानी शहर में एक बनिये के मकान में नौकरी करती है, वहीं पर रहती भी है। इसी लिए छोटे भाई और बीमार माँ की सेवा-शुश्रूषा उसी को करनी पड़ती है। वार्वारा का वह रूप अब नहीं है, स्वास्थ्य गिर गया है। क्षय रोग से वह प्रति पल मृत्यु की ओर अग्रसर हो रही है। वार्वारा अब दो क़दम भी नहीं चल सकती है; ज़बान पर बात भी नहीं है। बालक समझता है कि माता के अब थोड़े ही दिन रह गये हैं।

इसके बाद अगस्त महीने में एक रविवार के दोपहर को अन्तिम बिदाई का घण्टा बज जाता है। मैक्सिमौभ अज्ञातवास से लौट आया है, फिर एक नौकरी भी जुट गई है। स्टेशन ही के पास एक डेरा लिया है; वार्वारा को वहाँ ले जायगा। सबेरे ही नानी निकोलाई को उस नये डेरे पर ले गई है।

उस डेरे से आलेक्सी जब नाना के वहाँ लौट आया उस समय उसकी माँ साफ़ सुथरी होकर और बाल सँवारकर बैठी थी। आलेक्सी के आने में देर हुई है; वार्वारा बड़े वेग से आलेक्सी को मारने के लिए आगे बढ़ती है। कहती है, पाजी, इतनी देर तक कहाँ था? इतने ही से वार्वारा थककर लेट जाती है; आलेक्सी से पानी माँगती है। आलेक्सी पानी पिलाता है; पानी पीकर वार्वारा घर के कोने में जो देवमूर्त्ति ( ikon ) है उसकी ओर निःस्पन्द दृष्टि से ताकती रहती है। वार्वारा ने सदा के लिए डेरा बदल दिया! मृत्यु के हिम-स्पर्श से सन्तापिता के सब सन्तापों का शीतलता में पर्यवसान हुआ।

## २१

माता के समाधिकृत्य हो जाने के कई दिन बाद ही काशिरिन आलेक्सी को पास बुलाकर कहता है, लेक्सी, बस, अब मेरा पिंड छोड़। अब तेरे लिए यहाँ जगह नहीं होगी; दुनिया में अब निकल जा।

जो कुछ भी हो, दिन बीत जाने पर अवसन्न शरीर को फैलाने के लिए थोड़ा-सा स्थान तो था। आज उस स्थान ने भी उसको फेंक दिया है। दो साल पहले से ही प्रायः उसके मन में यह होता आया है कि संसार ने मुझे अनावश्यक कूड़ाख़ाने में फेंक दिया है। उसके मन में केवल यही हुआ है कि मेरा कोई नहीं है, मुझको सारी दुनिया ने त्याग दिया है, फेंक दिया है दुनिया के कूड़ाख़ाने में।

दस साल अभी पूरे नहीं हुए। इसी बीच बहुत ही कड़ुए ज्ञान ने उस शिशु-चित्त को विषाक्त कर दिया है। जीवन ने उसको मनुष्य की स्वार्थ-परता, अनावश्यक निर्दयता और हृदयहीनता दिखाई है। चारों ओर से उसको अपमान, अवज्ञा, उपहास और कठोर शारीरिक निर्यातन मिले हैं। तब भी आलेक्सी का शरीर उसके पिता के शरीर की तरह बलिष्ठ हुआ है। साधारण लड़कों से वह बहुत अधिक बलवान् है, और इस बलिष्ठ शरीर के अन्दर एक विद्रोही मन की सृष्टि हुई है।

बहुत से दुश्चरित्र बदमाशों से उसकी भेंट हुई है, परन्तु उनके अन्दर भी आलेक्सी ने शिव-सुन्दर का साक्षात् पाया है। अत्यन्त ख़राब भी बिलकुल

ख़राब नहीं हैं; उसमें भी कोई न कोई अच्छा गुण है; घने काले बादल को भी ज्योति की रजत-रेखा आलिङ्गन करती है, यह सत्य बालक आलेक्सी की नज़र से छूटता नहीं। और सर्वोपरि, बुढ़िया नानी की अद्‌भुत क्षमा और भगवद्विश्वास ने उसे रक्षाकवच की तरह बचाया है। दुनिया में बहुत कुछ बीभत्स और कुत्सित होने पर भी उसके अन्दर सौन्दर्य और कल्याण का भी अभाव नहीं है, उसके हृदय में यह विश्वास है। बाहर के इस वास्तविक जगत् का—निर्मम, नृशंस, सहानुभूति-हीन और स्वार्थपूर्ण जगत् का—विकट अनुभव भी उसके हृदय में से कहानियों के जगत् को, उसकी स्वप्नमय आशा को किसी तरह निर्मूल नहीं कर सका। उसी स्वप्न को हृदय में धारण कर अब शैशव के नीड़ को छोड़कर आलेक्सी पियेश्कौभ—भविष्यत् काल के मैक्सिम गोर्की—जीवन के कण्टकाकीर्ण पथ पर एकाकी और निस्सहाय होकर यात्रा कर रहा है।

———

# कैशोर

## १

दस वर्ष के बालक आलेक्सी को शहर ही में एक जूते की दुकान में नौकरी मिली है। दस ही साल का लड़का है; शिष्ट, शान्त, संयत और भद्र होकर रहना बहुत ही कठिन है। मालिक कहते हैं, पहले दर्जे की मेरी दुकान है, बिलकुल सड़क के ऊपर, यहाँ पर यह सब असभ्यता नहीं चलेगी; हाथ पैर खुजलाना, मुँह बनाना, यह सब क्या है? चुपचाप, मूर्ति की तरह दरवाज़े पर खड़ा रहेगा। कुनाभिनो मुहल्ले के आवारा लड़कों के साथ जिसका दिन बीतता था, उसको अकस्मात् निश्चल पत्थर की मूर्ति की तरह होने के लिए कहने से वह कभी वैसा हो सकेगा?

रहने के लिए मालिक ही के घर पर स्थान मिला है। रात को आलेक्सी रसोई के चूल्हे के ऊपर सोकर बिताता है। बहुत ही तड़के उठकर सारे मकान के लोगों के कपड़े लत्ते को झाड़-पोंछकर साफ़-सुथरा करना पड़ता है, जूतों में पालिश कर, सामोभार ( चाय की केटली ) को तैयार रखना पड़ता है। सब स्टोभों के लिए लकड़ी भी इकट्ठा करना पड़ता है; सब तश्तरियों को माँज-धोकर रखना भी उसी का काम है। इसके अलावा चिड़चिड़े मिज़ाजवाली रसोई पकाने-वाली के हुक्म के मुताबिक़ इधर-उधर का काम भी करना ही पड़ता है। मामा याकौभ का वह लायक़ लड़का साशा याकौभ भी यहाँ पर आलेक्सी का साथी हुआ है। परन्तु वह दुकान का किरानी है इसलिए उसके मन में काफ़ी घमण्ड है; बड़ों के चाल-चलन, रस्म-रिवाज को अपनाने के महान् कार्य में वह बहुत ही व्यस्त रहता है। इसलिए सभी काम आलेक्सी को करना पड़ता है। मालिक के घर के सब काम कर चुकने पर उसे दुकान के काम में जाना पड़ता है।

वहाँ जाकर उसको एक विचित्र अनुभव का धक्का खाना पड़ता है। मनुष्य की बर्बरता, निष्ठुरता और हृदयहीन आचरण आलेक्सी ने बहुत देखा

है, उन्हें वह समझ सकता है। हिंस्र जन्तुओं की हिंस्रता की तरह इसे भी उसने स्वाभाविक मान लिया है। परन्तु हँसी की आड़ में विषाक्त दंशन—यह आलेक्सी के लिए एक नया अनुभव है। इस नवीन अनुभव के धक्के से आलेक्सी अत्यन्त विह्वल हो जाता है।

दुकानदार और दुकान के कर्मचारियों को जब शिष्टता के आवरण में उसने पहले देखा था, उस समय आलेक्सी ने अपने को बहुत ही निम्न श्रेणी का समझा था। अब उन लोगों के चेहरे का आवरण हट गया है; इनका वीभत्स आत्मप्रकाश आलेक्सी को असह्य मालूम होता है। गाहकों को शिष्टाचार से तृप्त कर, मीठी-मीठी बातें कर, वास्तव में ये लोग उन्हें किस प्रकार ठगते हैं और उसके बाद उनके बारे में, विशेषकर नारियों के बारे में गन्दी और अपमानजनक चर्चा कर ये कैसी तृप्ति और आनन्द का अनुभव करते हैं, देखकर आलेक्सी को इस प्रकार की जीवनयात्रा असह्य प्रतीत होती है। प्रतिहिंसा के लिए कभी-कभी आलेक्सी का हृदय चञ्चल हो उठता है। वह यह भी देखता है कि यह सब प्रतारणा और चोरी मालिक की मौन सम्मति से ही होती हैं। मालिक के ऊपर इसके बदला लेने की इच्छा से एक दिन आलेक्सी मालिक की सोने की घड़ी के अन्दर सिरका डाल देता है; सामान्य बालक को इससे तृप्ति मालूम होती है।

अन्त में आलेक्सी यहाँ से भागने का ही निश्चय कर लेता है। परन्तु भागने के दिन उबलता हुआ शोरबा गिर जाने से आलेक्सी का हाथ जल गया। अस्पताल के बारे में आलेक्सी ने नाना प्रकार की कहानियाँ सुनी थीं, परन्तु तब भी डरते हुए वह वहीं पर जाता है। हाथ जल गया तो हुआ क्या! उस दिन कोई भी डाक्टर उसे देखने के लिए नहीं आता; उसी हालत में पड़ा रहना पड़ा। रात्रि हुई; इधर हाथ जलने की असहनीय यन्त्रणा, उधर अस्पताल के श्रेणीबद्ध रुग्ण-शय्याओं का भयानक दृश्य। रात्रि के अन्धकार में एकाकी बालक का हृदय भय से काँप उठता है; न जाने रात्रि के अन्त में डाक्टर आकर उसके हाथ का क्या कर देगा—हो सकता है कि हाथ ही काट डालेगा, इसमें असम्भव क्या है? उः, तब क्या होगा? यन्त्रणा होने पर भी आलेक्सी चुपके-चुपके भागने के लिए बरामदे में निकल आता

है। परन्तु वह जाने नहीं पाता; एक बीमार आदमी उसको पकड़ लेता और खटिया पर सुला देता है; उसके शरीर पर बड़े प्यार से हाथ फेरने लगता है। यन्त्रणा से श्रान्त बालक अनजान में एक समय निद्रामग्न हो जाता है।

सबेरे चकित होकर आँख खुलते ही वह देखता क्या है कि नानी शय्या के सिरहाने बैठी हुई है। नहीं, आलेक्सी अभी मातृहीन नहीं हुआ है। हाथ पर पट्टी बाँधी गई, उसके बाद नानी के साथ आलेक्सी फिर नाना के डेरे पर लौट आता है। अवश्य उसे देखकर नाना पुलकित होकर आशीर्वाद देने के लिए नहीं आता, यह कहना अनावश्यक है। चाहे जैसा हो, वह अपनी नानी के पास आया है, वाहियात नौकरी से उसको छुटकारा मिला है।

## २

बूढ़े काशिरिन का भाग्य-परिवर्तन भी हुआ है। उसके बहुत से रुपयों का नुक़सान हो गया है। परन्तु जो कुछ है उसे भी वह ख़र्च नहीं कर सकता; कृपणता एक प्रकार के मानसिक विकार में परिणत हो गई है। परन्तु नानी का रुपये पैसे के प्रति कुछ भी ध्यान नहीं है। वह काशिरिन की वर्तमान दरिद्रता को ईश्वर की दी हुई सज़ा समझती है—यह काशिरिन के लोभ और स्वार्थपरता का दण्ड है।

नानी के दुःख की सीमा नहीं है। तथापि वह यथाशक्ति दीन दुखियों की सहायता कर, काशिरिन के पाप का प्रायश्चित्त करती है। आधी रात को आलेक्सी को साथ लेकर बुढ़िया नानी दरिद्र मुहल्ले के बीच से बढ़ती जाती है; जो दीन दरिद्र हैं उनके कमरों की खिड़कियों पर थोड़ा सा पैसा रखकर, ईसा की माता के पास आर्त दरिद्रों के दुःख दूर करने की विनती कर नानी जनशून्य पथ पर से चलती रहती है और अपने दीर्घ अतीत जीवन के विचित्र अनुभव और शिक्षा की बात कहती जाती है। एक गृहहीन कुत्ता भी इनके साथ हो लेता है। चलते-चलते क्लान्त होकर नानी बैठ जाती है किसी मकान के सामने के बेंच पर; आलेक्सी उसके शरीर से लिपटकर न जाने कब सो जाता है।

नानी एक छोटे से लकड़ी के घर में रहती है; एक ढेर चिथड़ों से ही बिछौने का काम चलता है। बग़ल में ही मुर्ग़ी के बच्चे रहते हैं। सबेरे इनके मल की बदबू से कमरे में रहना असम्भव हो जाता है। आलेक्सी उस घर की छत पर चढ़ जाता है और वहाँ से उसके चारों ओर के ग्लानिपूर्ण जीवन के विभिन्न दृश्य उसकी नजर के सामने आते हैं। मनुष्य की कदर्यता, नशाख़ोरी में मनुष्य की आत्मविस्मृति की कुत्सित चेष्टा, व्यभिचार, मनुष्य के प्रति मनुष्य का पाशविक व्यवहार यही सब वह देखता है।

तथापि इन सब के बीच रहते हुए भी न जाने कैसे सुन्दरता का स्वप्न बालक-हृदय में जाग्रत् रहता है। शायद उसकी नानी ही स्वप्नजगत् के आश्चर्य-जनक सेतु को टूटने नहीं देती है। नहीं तो, सम्भवतः आलेक्सी कठोर वास्तविकता के दलदल में कभी का डूबकर निश्चिह्न हो जाता।

सचमुच काशिरिन दरिद्र हो गया है। इसी लिए कभी-कभी वह नानी और आलेक्सी को लेकर निजनी.के निकट ही 'फ़र' और 'बर्च' वृक्षों के वन मे ईंधन संग्रह करने के लिए जाता है। जङ्गल का अद्भुत रहस्य बालक-चित्त को एक अपूर्व स्वप्न से पूर्ण कर देता है। इस वन में वह रहेगा, इस जङ्गल का डाकू होगा, लालची और धनी लोगों को लूटकर दुःखी और दरिद्रों के वह धन बाँट देगा। ऐसा होने से फिर मनुष्य इस प्रकार से कुत्तों की तरह एक दूसरे के साथ मार-काट नहीं करेंगे। यदि एक बार वह भगवान् क दर्शन पाता तो उनसे वह पूछता कि दुनिया में इतना अनावश्यक दुःख क्यो है। इतने दुःख की कुछ ज़रूरत नहीं है। आलेक्सी यह सब एक दिन ठीक कर सकता है, अवश्य यदि सभी लोग उसका कहना सुनें!

## ३

काशिरिन जङ्गल से लकड़ी इकट्ठा करता है। नाती और नानी इस अलावा नाना प्रकार के फल-मूल संग्रह करते हैं; यही सब बेचकर उन दो का किसी प्रकार से निर्वाह होता है। फिर काशिरिन की मङ्गल-कामन करती हुई नानी इसी में से कुछ दान भी करती है। परन्तु काशिरिन क विश्वास है कि आलेक्सी मेरे ऊपर सवार होकर मेरा ख़ून चूस रहा है। कभ

कभी ऐसा कहता भी है। इसी लिए आलेक्सी को विदा करने के लिए काशिरिन की चेष्टा का अन्त नहीं है।

नानी का एक भानजा नक़्शा बनाने का काम करता है। बड़ी कोशिश से काशिरिन उसे वहाँ पर काम दिलाकर कुछ निश्चिन्त होता है। नये मामा के घर आकर फिर कठिन मेहनत शुरू हो जाती है। नानी की बहिन सवेरे आलेक्सी को नींद से उठाकर काम के लिए डाँटने लगती है। लकड़ी काट लाना, सामोभार को ठीक करना, 'स्टोभ' में आग जलाना, घर के फ़र्श और सीढ़ियों को धोकर साफ़ करना, बरतन माँजना, बाज़ार करना, तरकारी काटना, मामा के बच्चे को खेलाना, सारे परिवार का हर हफ़्ते कपड़ा धोना—ये सभी काम उसे करने पड़ते हैं।

काम करने में आलेक्सी की विरक्ति नहीं है, परन्तु इस परिवार का वातावरण उसे असह्य लगता है। इन लोगों के लड़ाई-झगड़े, इन लोगों का झूठा आत्मगौरव, श्रेष्ठता का बहाना और दूसरों की चर्चा करना उसे असह्य है। आलेक्सी को कुनाभिनो मुहल्ले के चोरों, ठगों, बदमाशों और वेश्याओं का जीवन भी इससे कहीं अच्छा मालूम होता है। उनमें इस प्रकार का मिथ्या गौरव और पाखंड नहीं है। यहाँ के अवरुद्ध, आलस्यपूर्ण, आत्मतृप्त जीवन से आलेक्सी घबराने लगता है।

मामा के डेरे के सामने के आँगन के उस पार एक मकान है। वहाँ अधिकांश ही सामरिक कर्मचारियों के परिवार रहते हैं। वहाँ का वातावरण भी कदर्य है। उस मकान में अरदली और नौकर-चाकरों के साथ एक प्रकार खुले आम ही रसोई बनानेवाली, नौकरानी-चाकरानियों के साथ कुत्सित व्यभिचार चलता है। सभी यह देखते हैं, आलेक्सी भी देखता है। उस मकान के लोगों में इस सब के कारण नाना प्रकार के कुत्सित लड़ाई-झगड़े तथा रोना-पीटना मचा रहता है और इस मकान के लोग, जिनको कुलीन कहलाने का बड़ा अभिमान है, दिन भर इन्हीं सब बातों की चर्चा करते हैं। कुलीनता का प्रचण्ड अभिमान है, परन्तु इन विषयों को लेकर कदर्य आलोचना करने के लिए इन लोगों की जिह्वा कैसी लालायित हो उठती है! इस कदर्य वास्तविकता के वायु-मण्डल से आलेक्सी निकलना चाहता है।

निजनी के प्रान्त भाग में अरण्य की निस्तब्धता, वहाँ के प्राकृतिक परिवेष्टन में उसने कुछ दिनों के लिए मुक्ति पाई थी परन्तु यहाँ के अवरुद्ध वातावरण में उसका हृदय क़ैदी की तरह बन गया है, उसकी अन्तरात्मा का निश्वास बन्द हो जाना चाहता है।

## ४

रूढ़ वास्तविकता के बीच में बचने के लिए स्वप्न की आवश्यकता है। इसी लिए आलेक्सी छत पर के कोठे में आश्रय लेता है। वहाँ पर काग़ज़ के नाना प्रकार के नक़्शे काटकर उनको दीवार पर वह लगाता है और एक स्वप्न राज्य की सृष्टि करने की चेष्टा करता है। जब तक वह उस कोठे में रहता है, तब तक उसे कुछ आनन्द मिलता है।

कभी-कभी शनिवार की रात को और छुट्टी के दिनों में उसको भी प्रार्थना के लिए गिरजे में जाने की छुट्टी मिलती है। गिरजे में देवमूर्तियों के चारों ओर जब आरती के प्रदीप जलते रहते हैं, आलेक्सी के मन में एक अपूर्व स्वप्न जाग्रत् होता है। रात्रि की प्रार्थना के समय नानी जिस ईश्वर से आत्मनिवेदन करती है, यहाँ पर आलेक्सी भी उस देवता का सान्निध्य अनुभव करता है। धीरे-धीरे वह अपने मन में एक मर्मभेदी प्रार्थना की रचना करता है। कहता है, हे प्रभु, और दुख नहीं सहा जाता है। कुछ जल्दी-जल्दी मेरी उम्र को बढ़ा दो प्रभु! वह बुढ़िया मुझको बड़ा तङ्ग करती है, प्रभु; उसने मेरे जीवन को दुःखमय कर दिया है। स्वामिन्, मैं फाँसी लगाकर मर जाऊँगा। इसी प्रकार की प्रार्थना के सहारे उसका मन वास्तविक जीवन के कुत्सित घेरे को अतिक्रमण कर न जाने किस ऊर्ध्व स्वप्नलोक की ओर यात्रा करता है।

परन्तु सब दिन वह गिरजा में नहीं जाता। जिस दिन रात को तूफ़ानी हवा गरजती हुई शहर के ऊपर से बहती है, पथ के ऊपर से जब शीतल तुषार-युक्त अन्धड़ बहता है, उस दिन गिरजे में जाकर आलेक्सी अपने शरीर और मन को थोड़ा आराम देता है। परन्तु अन्य दिनों में गिरजा जाने के बहाने से आलेक्सी रात को शहर के निस्तब्ध, निःशब्द रास्तों पर चक्कर लगाता है। चलते-चलते कभी किसी खिड़की से अपरिचित एवं आवेशमय स्निग्ध मधुर

गन्ध आती है, कभी-कभी हास्य और सङ्गीत के शब्द कानों में आते हैं। बालक चित्त एक अनागत सुन्दर जीवन की स्वप्नमयी कामना से विह्वल हो जाता है।

ऊपर की मंजिलों की परदेदार खिड़कियों के भीतर मनोरम जीवन-स्रोत प्रवाहित हो रहा है; हास्य-सङ्गीत-परिपूर्ण, आनन्द और धन की अधिकता से उच्छ्वसित सुन्दर जीवन! उसका लुब्ध चित्त उस अदृश्य जीवन की ओर ताकते हुए स्वप्नमग्न हो जाता है। समाजभवन की ऊँची मंज़िलों के उस सभ्य और शालीन जीवन को आलेक्सी देख नहीं पाता। केवल श्रद्धा, सम्भ्रम और विस्मय के साथ वह उस अदृश्य जीवन की कल्पना ही करता है। कभी-कभी एक मर्मभेदी दीर्घ निःश्वास उसकी छाती को चीरता हुआ निकल आता है।

रास्ते-रास्ते आलेक्सी घूमता रहता है और धनिकों के महलों की ओर निगाह लगाकर खड़ा रहता है। रास्ते के मोड़ पर किसी मकान से भायोलनसेलो की मधुर ध्वनि-तरङ्गें स्वल्प काल के लिए उसके कानों में आती हैं। अधीरता से वह उत्कर्ण हो उठता है, फिर वह सङ्गीत-ध्वनि सुनाई नहीं देती। उसके बाद कितने दिन वह यहाँ पर आता है, उस मकान के पास कान लगाकर बहुत देर तक खड़ा रहता है। मकान लौटने में कितने दिन देर हो जाती है, इसलिए मार भी खाता है। स्वप्नलोक की ओर, सुन्दर जीवन की ओर, बालक आलेक्सी का ऐसा ही प्रबल आकर्षण है।

इस नैश-भ्रमण ने आलेक्सी को जीवन के अनेक विचित्र व्यापार प्रत्यक्ष करने का मौक़ा दिया है! समाज के जिस उच्च स्तर की ओर उसकी उत्सुक दृष्टि दौड़ जाती है वहाँ उसके जाने का कोई भी उपाय नहीं है। परन्तु रास्ते पर से चलते-चलते दोनों ओर के नीचे के परदारहित वातायनों में से दरिद्र जीवन के बहुत से दृश्य उसकी दृष्टि में आते हैं। कहीं पर करुण वियोगान्त दृश्य है तो कहीं सुन्दर मिलनात्मक सुखान्त दृश्य। कितने प्रकार की प्रार्थना, प्रेमालिङ्गन, झगड़ा-लड़ाई और जुए के दृश्यों ने आलेक्सी के वास्तवज्ञान को वैचित्र्यपूर्ण कर दिया है। इन सब की सार्थकता कहाँ है, कौन कह सकता है?

## ५

तथापि मामा के घर की नीरस कदर्यता से यह सब अच्छा मालूम होता है। एक दिन आलेक्सी मामा से कह बैठता है कि जिस काम के लिए मैं आया

उसका तो कुछ भी नहीं हो रहा है। केवल नौकरनी और नौकर का काम करके ही दिन बीत रहे हैं। इस परिवार में यह मामा निहायत ख़राब नहीं है। आलेक्सी की बातें सुनकर वह आलेक्सी को मकानों के नक़्शे इत्यादि बनाने का काम सिखलाना शुरू करता है। परन्तु बुढ़िया बीच में बाधा डालती है। वह सोचती है कि यदि आलेक्सी यह काम सीख लेगा तो उसके छोटे लड़के का भविष्य नष्ट हो जायगा। ईर्ष्या की जलन से बुढ़िया आलेक्सी का काम और भी बढ़ा देती है ताकि नक़्शा बनाने के लिए कुछ भी समय न मिले। केवल इतना ही नहीं, आलेक्सी के बनाये हुए नक्शों के ऊपर बुढ़िया तेल डाल देती है। छोटी-छोटी बातों पर आलेक्सी को पीटकर ऊधम मचा देती है।

छोटे लड़के के ऊपर बुढ़िया का अद्भुत मोह है। बड़े लड़के के रुपयों को चुपके-चुपके बुढ़िया अपने छोटे लड़के विक्टर के हाथ में ला देती है; रात को छिपाकर बुढ़िया उसको अच्छा भोजन देती है। छोटा सब कुछ लेता है, परन्तु लेने का भाव ऐसा है मानो वह अपनी माँ को कृतार्थ कर रहा है। माँ अगर अधिक कुछ कहती है तो वह 'भाग' 'भाग' कहकर उसे भगा देता है। तब भी बुढ़िया उसी लड़के को इतना प्यार करती है मानो वह कोई अमूल्य रत्न हो।

सबेरे बुढ़िया प्रार्थना करती है। उसमें बुढ़िया ईश्वर के पास न्याय-विचार के लिए अर्ज़ी पेश करती है; उसकी नालिशों का अन्त नहीं है। हे परमेश्वर, अमुक का सर्वनाश करो। हे मालिक, बहू का विचार करो! इसी प्रकार की लगातार नालिशों पर न्याय-विचार की प्रार्थना होती है। अवश्य इसके साथ एकमात्र आँख के तारे विक्टर के लिए मङ्गल-प्रार्थना भी रहती है—"हे प्रभु, मेरे विक्टर के पीछे-पीछे लड़कियाँ झुण्ड बाँधकर आवें, जैसा हंस के पीछे-पीछे हंसिनियों के झुण्ड!" आलेक्सी विस्तरे पर लेटे हुए बुढ़िया की इन अद्भुत प्रार्थनाओं को सुनता है और हँसी से उसका पेट फूलता है। न जाने क्यों, कभी-कभी आलेक्सी ग़ुस्सा करना भूल जाता है। आधी रात को जब वह देखता है कि नींद में ही बुढ़िया कह रही है, "हे भगवन्, मुझको कौन प्यार करता है? हे मालिक, मुझे कौन चाहता है!"

आलेक्सी को असह्य सा मालूम होता है। नानी आती है कभी-कभी। आलेक्सी अपने दुःख की बात उसे कहता है। नानी कहती है, बस, और दो साल सब्र कर; और थोड़ा बड़ा हो जा, इसके बाद चले जाना। आलेक्सी को वचन देना पड़ता है। कहता है, अच्छा। परन्तु नानी की तरह सिर झुकाकर, ईश्वर की इच्छा मानकर, सब कुछ बिना विरोध स्वीकार करने के लिए आलेक्सी नहीं आया है। नानी की सहनशीलता के धर्म को आलेक्सी नहीं स्वीकार कर सकता, उसकी समग्र सत्ता अन्याय और अविचार के विरुद्ध विद्रोही हो उठती है।

एक दिन वसन्त के प्रातःकाल रोटी ख़रीदने के बहाने आलेक्सी अज्ञात जगत् में मुक्ति का अन्वेषण करने के लिए रवाना हो गया।

## ६

यह वाल्गा गङ्गा और ब्रह्मपुत्र की ही तरह विशाल नदी है; बहुत दूर से यात्रा कर, कितने जनपदों को पार करती हुई, निजनीनौभगोरोट के पास से होकर यह नदी बहुत दूर चली गई है और अन्त में कास्पियन समुद्र में जाकर समाप्त हो गई है। वाल्गा के मुहाने के पास ही एस्ट्राखान शहर है। यहीं पर आलेक्सी का पिता काम करता था। कितने स्टीमर, कितनी बड़ी-बड़ी नौकाएँ इस नदी पर से हमेशा आया-जाया करती हैं। इसी नदी के रास्ते से, कितने प्रकार के विचित्र दृश्य देखते हुए पाँच वर्ष का बालक, पितृहीन आलेक्सी नानी के साथ लौट आया था उसकी जन्मनगरी निजनीनौभगोरोट में। अब फिर यही नदी उसे मुक्ति के पथ पर ले जायगी; किसी स्टीमर पर चढ़कर वह भाग जायगा। बहुत दूर भाग जायगा इसी उद्देश्य से आलेक्सी निजनी के बन्दरगाह पर आ पहुँचा है।

वाल्गा के तट पर कुली मज़दूरों के साथ थोड़ा-बहुत काम करके आलेक्सी ने कई दिन बिताये। इसके बाद दो रूबल मासिक वेतन पर एक स्टीमर में उसे तश्तरियाँ धोने का काम मिल गया। इसी तरह बारह वर्ष की उम्र में आलेक्सी के घुमक्कड़ जीवन का आरम्भ हो गया।

स्टीमर के ऊपर यह जीवन की एक विचित्र लीला है। पल-पल में केवल बाहर की प्राकृतिक पटभूमि ही नहीं बदल रही है, बल्कि साथ-साथ स्टीमर पर के मनुष्य भी बदलते जा रहे हैं। कितने प्रकार के मानवयात्री उठ रहे हैं, उतर रहे हैं; स्वल्प काल के लिए स्टीमर के ऊपर वे जीवन की क्षणिक लीला को दिखलाकर फिर कहाँ अदृश्य हो जाते हैं। वैचित्र्य के लिए प्यासा आलेक्सी आँखों और कानों से इस नित्य परिवर्तनशील जीवन की विचित्र लीला के रस को पी रहा है—कितना विचित्र सौन्दर्य-समारोह, कितनी विचित्र कथा और कहानियाँ!

स्टीमर पर आलेक्सी जिन लोगों को देखता है वे सभी रूस के अत्यन्त साधारण श्रेणी के मनुष्य हैं; निजनीनौभगोरोट के रास्तों पर जो लोग उसको नजर आये हैं, नाना के मकान की खिड़की से उसने नित्य जिनके कदर्य कार्य-कलाप को देखा है, कुनाभिनो मुहल्ले के जिन आवारे लड़कों के साथ वह घूमा है, जूते की दुकान में, मामा के घर पर जिन हीन प्रकृति के मनुष्यों के कारण उसका जीवन असह्य मालूम होता था, स्टीमर पर भी दिन पर दिन वही सब लोग भिन्न-भिन्न वेश और भिन्न-भिन्न नाम में उसके सामने आकर उसके जीवन के ज्ञान को कटु बना रहे हैं। ये लोग अत्यन्त ही क्षुद्र, हीन, नीच हैं। इनके सुख दुःख तुच्छ हैं; तुच्छ-तुच्छ विषयों को लेकर ये लोग प्रमत्त हैं। परस्पर इनकी न तो श्रद्धा है और न विश्वास ही है; ईर्ष्या-द्वेष इनके शरीर की नस-नस में भरे हैं। जिस प्रकार के नृशंस आमोद-प्रमोद निजनी के रास्तों पर होते हैं, ठीक वैसे ही आमोद-प्रमोद के प्रति इन लोगों की भी वैसी ही आसक्ति है। ये मनुष्य नहीं हैं, मानो ये पशुओं के झुण्ड हैं; व्यभिचार और पापाचार में इनको नाम मात्र लज्जा या सङ्कोच नहीं है। नरनारियों का विषयोपभोग निर्विघ्न रूप से आलेक्सी की आँखों के सामने चलता रहता है। एक बारह वर्ष का बालक इस घृणित पङ्किल जीवन के आवर्त-संकुल स्रोत के ऊपर से बहता हुआ जा रहा है। कौन इसकी रक्षा करेगा! यहाँ के जीवन का आकाश जिस घने मेघ से आच्छादित है, क्या उसमें कहीं ज़रा सा भी छिद्र है जिसमें से नीलाकाश का निर्मल आश्वास, उच्चतर जीवन का उदात्त आह्वान आ सके?

७

इस अद्भुत परिवेष्टन के बीच न जाने किस सौभाग्य से आलेक्सी ने एक व्यक्ति को पाया है; वह जहाज़ का पाचक स्मिउरी है। उसी के अधीन आलेक्सी को काम करना पड़ता है। यह स्मिउरी भयानक मनुष्य है, इसका चेहरा दानव की तरह है और वैसा ही उसका चालचलन और वार्तालाप भी है। सभी लोग उससे सैकड़ों गज़ दूर रहते हैं। उसके पेशियों से युक्त हाथ का मुक्का भयङ्कर है। स्टीमर के लोगों को वह 'गदहा' के सिवा और किसी नाम से नहीं पुकारता। संक्षेप में, स्मिउरी इन मनुष्यों से घृणा करता है। नानी की तरह दया और क्षमा स्मिउरी के लिए नहीं है—आलेक्सी के मन के मुताबिक़ है।

यह माइखेल एंटोनोभिच स्मिउरी सेना विभाग में कॉर्पोरल था। उसके शरीर में जैसी प्रचण्ड शक्ति है, वैसा ही रूखा और रूढ़ उसका आचरण है। परन्तु उसने जो पढ़ा-लिखा है वह बिलकुल तुच्छ नहीं है। स्कूल के और नाना के पढ़ाने के बेंतवाले ज्ञान ने पढ़ने-लिखने की ओर से आलेक्सी के मन को एक प्रकार विमुख ही कर दिया था। इसलिए स्मिउरी एक प्रकार जबरदस्ती से आलेक्सी को पढ़ाना शुरू करता है। स्मिडरी के पास जो पुस्तकें हैं वे कुछ भी सरस नहीं हैं। परन्तु उसको वही सब पढ़ना पड़ता है। उस व्यक्ति के अनुशासन को न मानना अल्प साहस का काम नहीं है। नीरस पुस्तकों को आलेक्सी पढ़ता है और स्मिउरी सुनता है। अस्तु, इसके बाद एक दिन स्मिउरी स्टीमर के कप्तान की स्त्री के पास से गोगोल की 'टारास बाल्बा' ले आता है। इतने दिनों के बाद स्मिउरी भी यथार्थ साहित्यरस का स्वाद पाकर मुग्ध हो जाता है; सुनते-सुनते स्मिउरी हँसी के मारे लोटने लगता है। इतने दिनों के बाद स्मिउरी के पास की अपनी पुस्तकें तुच्छ और नगण्य मालूम होती हैं। अब से कप्तान की स्त्री के पास से और भी नई-नई पुस्तकें आने लगती हैं: नेक्रासौभ, वाल्टर स्कॉट, डूमा, फील्डिंग—इन लेखकों की सुन्दर-सुन्दर पुस्तकें! नानी की कहानियों की तरह ये पुस्तकें भी आलेक्सी को एक दूसरे कल्पना-लोक का पता देती हैं। वास्तव के कुत्सित जगत् से यह जगत्

सम्पूर्ण स्वतन्त्र है। आलेक्सी चाहता है कि संसार भी ऐसा ही हो; क्या मनुष्य वास्तव में ऐसा नहीं हो सकता है? क्या कहीं भी मनुष्य इसी तरह 'रोमांस' उपन्यासों के नायक-नायिकाओं की तरह सुन्दर जीवन यापन नहीं करते हैं? स्काट, डूमा इत्यादि लेखकों ने जिस संसार को रचा है सम्भवतः वह नानी की कहानियों के संसार की तरह झूठा नहीं है। समाज के ऊपर के महलों में, निजनी की अट्टालिकाओं की ऊपरी मञ्ज़िलों में जो लोग रहते हैं, सुन्दर परदे-वाली खिड़कियों के पीछे उन लोगों का जीवन भी संभवतः ऐसा ही है। क्या जाने, आलेक्सी कुछ निश्चित जानता नहीं है। तब भी वह उपन्यास का काल्पनिक जगत् आलेक्सी के चित्त में एक नवीन जीवन का आस्वाद ले आता है, सौन्दर्य के अन्दर मुक्ति का आश्वास मिलता है। असहनीय, कदर्य वास्तविक जीवन के पङ्कस्तूप से निकलने का एक अद्भुत पथ स्मिउरी ने खोल दिया है; उसी रास्ते से वह भागेगा।

परन्तु बीच-बीच में आलेक्सी के मन में एक प्रश्न उठता है; वास्तविक जगत् के मनुष्य क्यों ऐसे—इतने हीन, इतने नीच, कापुरुषता, स्वार्थपरता, ईर्ष्या और अमानुषिकता से परिपूर्ण—हैं? स्मिउरी से वह पूछता है, तब यथार्थ में मनुष्य अच्छा है या बुरा? प्रश्न सुनकर स्मिउरी घबराया हुआ मालूम पड़ता है। वह मनुष्य को दूर ही रखना चाहता है क्योंकि वह जानता है कि यदि मैं अपने चेहरे के रूखेपन को तनिक कोमल कर लूँगा तो चारों ओर से पशुतुल्य मनुष्य मेरे ऊपर सवार होंगे। इसी लिए आलेक्सी के प्रश्न सुनकर वह कुछ घबरा जाता है। परन्तु आलेक्सी मनुष्यों की नीचता देखते हुए भी उनकी ओर बढ़ता है। न जाने क्यों मनुष्य उसको अच्छा लगता है। मनुष्य को वह और भी अच्छी तरह देखना चाहता है, जानना चाहता है। इसी लिए उसके प्रश्नों का अन्त नहीं है। स्मिउरी कहता है, ओफ़, केवल मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य! अरे मनुष्य है क्या! कुछ इनमें बुद्धिमान् होते हैं और बाक़ी सब गदहे हैं। झूठ-मूठ यह सब लेकर माथापची मत कर। किताब पढ़, किताब पढ़!

बहुत दिन बीत गये इस स्टीमर में। एक दिन निजनी पहुँचकर जहाज़ के 'स्टुअर्ड' ने आलेक्सी के ऊपर झूठा इलज़ाम लगाकर उसे छुड़ा दिया।

स्मिउरी के अधीनस्थ कर्मचारी प्रायः यात्रियों को खाने-पीने की चीज़ें देकर जो पैसा पाते थे वह स्वयं ही ले लेते थे। आलेक्सी ने यह उच्च कर्मचारी को बताया नहीं, यही उसका अपराध है। तथापि उसी को 'चोर' बनाकर स्टुअर्ड ने निकाल दिया। आलेक्सी का मन मनुष्य के अविचार से कटु हो उठता है।

आठ रूबल मात्र सम्बल लेकर आलेक्सी स्टीमर छोड़ने को उद्यत होता है। स्मिउरी आलेक्सी से लिपट जाता है और प्रेम से उसे चूमकर कहता है, मनुष्यों के बारे में सावधान रहना और ख़ूब किताब पढ़ना! किताब पढ़ना सबसे अच्छा काम है।

आलेक्सी निजनी के पथ पर उतर जाता है।

## ८

ऐसा मालूम होता है कि आलेक्सी अब बहुत बड़ा हो गया है। जीवन के कटु अनुभव के कारण वह और भी विद्रोही हो गया है। अब किसी की अधीनता को वह स्वीकार नहीं करेगा, नहीं, नाना की भी नहीं। इसी-लिए नाना के सामने ही सिगरेट के बक्स को जेब से निकालकर वह एक सिगरेट पीने लगता है। काशिरिन उसकी बेअदबी देखकर घूँसा तानता है उसको मारने के लिए। आलेक्सी भी बूढ़े के पेट में अपना सिर घुसेड़ देता है और बूढ़ा ज़मीन पर गिर पड़ता है। नाती की यह स्पर्धा देखकर काशिरिन हतबुद्धि होकर उसके ऊपर आँख गड़ाता है। बूढ़ी नानी आकर आलेक्सी को कई झापड़ मारती है; वह चुप रह जाता है।

नहीं; मनुष्य का संग असह्य लगता है। आलेक्सी इसी लिए अकेला रहना चाहता है। गरमी का मौसम निजनी के छोर पर जो वन है उसी में बीत जाता है। सारा दिन वहाँ पर चिड़िया पकड़ने के काम में व्यतीत हो जाता है। वहाँ की निर्जनता, पत्तों की मर्मर ध्वनि, पक्षियों के कलरव ये सब उसके हृदय-क्षत पर स्निग्ध मरहम का काम करते हैं। मनुष्यों के संसार को वह भूल जाता है। बाज़ार में चिड़िया बेचकर वह अपना काम चलाता है।

कभी-कभी आलेक्सी को उपदेश देने के उद्देश्य से नाना अपने जीवन के अनुभव की बात कहता जाता है। नानी की तरह भगवद्विश्वास और प्रेम नाना के जीवन का मूल मन्त्र नहीं है। नाना जानता है कि मनुष्य अत्यन्त नीच है, उसका विश्वास करना महान् भूल है। आलेक्सी का व्यक्तिगत अनुभव भी तो ऐसा ही है। परन्तु यह अविश्वास, अश्रद्धा और घृणा लेकर आलेक्सी नहीं रह सकता। इसी लिए वह फिर मनुष्य के पास जाता है और केवल सुन्दर और सत् मनुष्य का स्वप्न देखता है। बार-बार विश्वास कर वह प्रतारित हुआ है, उसने दण्ड पाया है; फिर भी अनन्त आशा उसे धीरज देती है, मनुष्य की कुत्सित नृशंसता को वह मानो भूल जाता है।

इसी लिए काशिरिन के मकान के सामने जब एक दल सिपाही और कोसाक ( Cossack ) डेरा डालते हैं, आलेक्सी का मन उस ओर आकृष्ट होता है। सिपाहियों के बलिष्ठ और पुष्ट शरीर और उनकी दौड़-धूप देखने में अच्छी लगती है। आलेक्सी भी उन लोगों के साथ खेल में शरीक होता है; उनके स्वास्थ्य, उनकी निर्भीकता, उनकी हँसी-दिल्लगी और गाना-बजाना एक स्वस्थ बलिष्ठ जीवन की ओर इङ्गित कर आलेक्सी को खींचते रहते हैं। सिपाही लोग भी उसे अपने मित्र की तरह मानने लगते हैं। एक दिन एक सिपाही उसे एक प्रकाण्ड सिगार उपहार देता है। पर जलाने के साथ-साथ उसके अन्दर की बारूद प्रचण्ड शब्द के साथ जल उठती है। झुलसा हुआ मुँह लेकर आलेक्सी लौट आता है। इससे सिपाहियों में हँसी का हिल्लोल लहरा उठता है। आलेक्सी को समझ में नहीं आता कि लोग अकारण क्यों ऐसे निष्ठुर होते हैं।

परन्तु आलेक्सी को इतने पर भी समझ नहीं आती, शायद सारे जीवन में भी नहीं होगी। वह फिर बग़ल के कोसाकों के साथ उठना-बैठना शुरू करता है। ये कोसाक सिपाही उन रूसी सिपाहियों से कुछ भिन्न प्रकार के मालूम होते हैं। इन लोगों की बातचीत नाच-गान सभी स्वतन्त्र प्रकार के हैं; सम्भवतः इसी लिए, नवीन विश्वास के साथ आलेक्सी इन लोगों के पास जाता है। सन्ध्या के समय ये लोग चक्राकार मण्डली में गाना शुरू करते हैं। बीच में एक आदमी पहले गाना प्रारम्भ करता है और बाक़ी

सब उसको दोहराते हैं। गाना गाते-गाते ये लोग मानो साधारण मनुष्य नहीं रहते; सभी एक अलौकिक रूप में दिखाई देते हैं। आलेक्सी अपने को खो देता है, देश-काल भूल जाता है, अपने अस्तित्व को भूल जाता है। कोसाकों के सङ्गीत-स्रोत में उसका हृदय प्लावित हो जाता है, उसका हृदय मनुष्य के प्रति सहानुभूति और प्रेम से परिपूर्ण हो जाता है; उसको मालूम होता है कि यह पृथ्वी सुन्दर है, इसके मनुष्य सुन्दर हैं। इसी प्रकार से उसका हृदय फूल उठता है, उसको ऐसा प्रतीत होता है कि इतनी उमङ्ग को धारण करने के लिए और स्थान नहीं है। कोसाक मनुष्य जैसे नहीं मालूम होते, ऐसा मालूम होता है कि ये लोग देवता हैं। कोसाक लोग उसको सुन्दर स्वप्नलोक में फिर ले आये हैं।

परन्तु एक दिन एक विपाक्त घटना के कारण उस कोसाक-देवता के सम्बन्ध में भी उसकी भावना बदल जाती है। एक दिन एक कोसाक के घर जाकर वह देखता है कि वह अपनी स्त्री का अकथ्य अपमान कर रहा है। कोसाक केवल अपनी स्त्री को मारता ही नहीं है, उसके वस्त्र को टुकड़ा-टुकड़ा कर प्रायः नङ्गी कर डालता है और निष्ठुर की तरह उपहास करता है। स्वर्गीय कोसाक अकस्मात् नारकीय दानव के रूप में आत्मप्रकाश करता है।

९

ग्रीष्म ऋतु चिड़िया पकड़ने के पेशे में बीतती है। परन्तु नाना बार-बार कहता है, यह आलसी आदमियों का पेशा है। चिड़िया पकड़ने के काम से कहाँ कौन बड़ा हुआ है! ईश्वर ने मनुष्य को मेहनत करने के लिए बनाया है। दुर्बल का स्थान नरक में भी नहीं है। संसार में टिकने के लिए शक्ति चाहिए, चालाकी चाहिए। आलेक्सी इन बातों पर कान नहीं देता, दिन भर जङ्गलों में घूमता है। परन्तु जाड़े का समय वन-भ्रमण के अनुकूल नहीं है, इसलिए रास्ते और मैदान जब बर्फ़ से ढक जाने लगे, नाना उसे फिर उस नक़शा बनानेवाले मामा के पास ले गया जहाँ से वह भाग गया था।

मामा के वहाँ विशेष कुछ परिवर्तन नहीं हुआ है; केवल और भी दो बच्चों

के आने से परिवार का बोझ बढ़ गया है। आलेक्सी को पहले ही की तरह परिश्रम करना पड़ता है, आलेक्सी इसमें अभ्यस्त है। वाल्गा के स्टीमर से लौटकर यह जीवन क्या पहले ही की तरह लग रहा है? नहीं, इतने दिनों के बाद आलेक्सी का किशोर मन जाग्रत् हो रहा है।

स्मिउरी के पास उसने साहित्य-रस का अपूर्व आस्वादन प्राप्त किया है; कहानियों से उसको एक नवीन जीवन की सम्भावना का समाचार मिला है। उसी के साथ उसकी किशोरावस्था ने उसे नारी के बारे में विशेष रूप से सचेत करना शुरू किया है। यह ठीक यौन-चेतना नहीं है, नारी में जो विशेष माधुर्य और कोमलता है वही अब उसे आकर्षित कर रही है। स्टीमर पर रहने के समय, एक अव्यक्त तृष्णा लेकर, मातृहीन बालक की स्नेह-पिपासा की तरह व्याकुलता लेकर आलेक्सी ने कितनी सुन्दरी स्त्रियों की ओर आँख गड़ाया है। नारी पुरुषों के दैहिक सम्बन्ध भी उसने नहीं देखा ऐसी बात नहीं, बल्कि बहुत देखा है; परन्तु उसका मन उपन्यास में वर्णित प्रेम के स्वप्न में अनुरंजित है। सम्भवतः किशोर अवस्था ही पवित्रता का समय है; किशोर अवस्था के प्रेम में उषा काल की कोमल सुषमा रहती है, उसमें यौवन के प्रेम की लालसा-दीप्त प्रखर ज्वाला नहीं है।

मामा के घर के सामने युद्ध-विभाग के कर्मचारियों की बस्ती है। एक दर्ज़ी की स्त्री भी वहाँ रहती है। उसके साथ कर्मचारियों का एक निर्दय खेल शुरू होता है। दिल्लगी उड़ाने के उद्देश्य से सब लोग मिलकर किसी एक के नाम से उसके पास बड़े-बड़े प्रेमपत्र लिखते हैं। पत्र पाकर जवाब में दर्ज़ी की स्त्री अपनी सहानुभूति और साथ ही साथ व्यक्तिगत अक्षमता प्रकट करती है। यह लेकर कर्मचारियों में ख़ूब हँसी छूटती है। अरदली और मामा के घर के लोग इस मामले को लेकर उस नारी के बारे में नाना प्रकार के के कटुमंतव्य करते रहते हैं। आलेक्सी का मन असहाय नारी की सरलता पर यह अविचार और निष्ठुर परिहास देखकर क्रुद्ध हो उठता है। एक दिन वह उस नारी के पास जाता है, उससे सब हाल बताता है; आलेक्सी बार-बार विनती करता है कि आप इस मुहल्ले से चली जायँ। पहले-पहल आलेक्सी इस नारी को देवी के आसन पर बैठाता है। किशोरावस्था में

नारी देवी ही प्रतीत होती है। परन्तु थोड़े दिनों के बाद ही कैशोर का स्वप्न-मोह टूट जाता है। यह नारी है भी अत्यन्त साधारण, देवीत्व का आवरण कब तक टिक सकता है!

तथापि इस नारी के संसर्ग में आने के बाद आलेक्सी को फिर पढ़ने का मौक़ा मिलता है। यहाँ से वह नाना प्रकार के उपन्यास ले जाता है। अवश्य ही ये उपन्यास अत्यन्त मामूली, रेलवे स्टेशनों के बुक स्टाल के सस्ते उपन्यासों की तरह हैं। परन्तु इसके बाद आलेक्सी जिस नारी के संस्पर्श में आता है, उसी के पास से ही वह यथार्थ साहित्य का रस और आनन्द पाता है। यह महिला एक कुलीन वंश की विधवा है, देखने में यह जैसी रूपवती है, रुचि भी इसकी वैसी ही परिष्कृत है। इसके घर पर जिन कर्मचारियों का आना-जाना है वे भी कुछ दूसरे प्रकार के हैं; यहाँ आकर वे सङ्गीत, साहित्य-चर्चा और काव्यानुशीलन से आनन्द प्राप्त करते हैं।

इस मकान में आलेक्सी का प्रवेश असम्भव ही था। परन्तु किसी प्रकार से इस विधवा नारी की पाँच वर्ष की लड़की के साथ आलेक्सी का मेल हो जाता है। मकान के बाहर के आँगन में आलेक्सी खेलता है और उसको कहानी सुनाकर मुग्ध कर देता है। लड़की ही उसको अन्त में मकान के अन्दर खींच ले जाती है। पहले-पहल 'नीच वंश के लड़के' को आने देने में माता इनकार करती है; परन्तु थोड़े ही दिनों के अन्दर आलेक्सी को न जाने क्यों अच्छा लग जाता है।

## १०

प्राय: यह महिला भद्र पुरुषों को लेकर व्यस्त रहती है, तथापि अवकाश में वह आलेक्सी के साथ सुन्दर स्निग्ध कण्ठ से बात-चीत करती है; बालक के नाना प्रकार के अनुभवों का वर्णन भी ध्यान से सुनती है। पढ़ना आता है सुनकर वह आलेक्सी को पढ़ने के लिए पुस्तक भी देती है। किशोर बालक के लिए इतना ही ख्याल पर्याप्त नहीं है? आलेक्सी के वंचित हृदय की रस-पिपासा इसी से तृप्त होती है; उसके हृदय में देवी का शून्य आसन फिर

पूर्ण हो जाता है। यह महिला जब अन्य भद्र पुरुषों को लेकर कमरे के अन्दर नाना प्रकार की आलोचनाएँ करती है उस समय बाहर के बरामदे में बैठकर बालक का मन ईर्ष्या से व्याकुल हो उठता है; उसके मन में ऐसा होता है मानो कुछ बर्रे उसके प्रिय फूल को घेरे हुए हैं। तथापि कमरे के बाहर उस लड़की के साथ वह बैठा रहता है और दूर से देवीकण्ठ की स्वर-सुधा को आकर्ण पान करता है।

कभी-कभी महिला उसके रूखे और गन्दे हाथों के बारे में बात करती है। अकरुण वचन सुनकर उसके हृदय में वेदना होती है। सारा दिन उसे जिस प्रकार काम करना पड़ता है उससे क्या उसका हाथ मक्खन की तरह कोमल, सुन्दर और चिकना हो सकता है? परन्तु नहीं, उसकी देवी उसकी हालत को समझ नहीं सकती, नहीं तो वह ऐसा नहीं कहती। तथापि आलेक्सी अपनी देवी को अद्भुत प्यार करता है। उसके मन में ऐसा विचार उठता है कि और जिन नारियों को मैंने देखा है, उनके साथ इसका कहीं सादृश्य नहीं है। अन्य नारियों की तरह वह भी पुरुष से प्रेम कर सकती है, यह तो आलेक्सी कल्पना भी नहीं कर सकता। इसी लिए जब आलेक्सी के सामने ही यह महिला अपने सुन्दर, सुगठित, यौवनश्रीपरिपूर्ण शरीर को अनावृत करती है तो बालक के मन में कोई भी विकार नहीं होता, केवल उसका मन गर्व से भर जाता है कि यह मेरी देवी है। परन्तु एक दिन आलेक्सी इनको भी एक सामरिक कर्मचारी के आलिंगन में बद्ध देखता है; साथ-ही-साथ एक रूढ़ आघात से उसके हृदय का एक परम सुन्दर स्वप्न पत्थर पर गिराये हुए दर्पण की तरह चकनाचूर हो जाता है। उसके मन में यही प्रश्न बार-बार उठता है—कवि, गाड़ीवान और कुत्ता—क्या ये सभी एक ही उपादान से बनते हैं? परन्तु वह महिला बालक को निकट बुलाती है और उसके गले पर हाथ डालकर कहती है, जब बड़े हो जाओगे तब तुमको भी ऐसा आनन्द मिलेगा।

शयनगृह में महिला की प्रेम लीला देखकर कुछ समय के लिए आलेक्सी का स्वप्न छिन्न-भिन्न हो गया। तथापि आलेक्सी ने इस सुन्दरी महिला को प्यार किया है; उसकी परिमार्जित रुचि उसको तृप्त करती है। आलेक्सी

ने जो कहानियाँ पढ़ी हैं उनके अन्दर उसने एक सुन्दर जीवन को देखा है। कहानियों में उसने दो प्रकार के मनुष्यों को देखा है; एक प्रकार के मनुष्य बहुत ही अच्छे हैं, उनके अन्तःकरण महत् हैं, उनकी जीवन-यात्रा पवित्र और सुन्दर है, उसमें कुछ भी कलङ्क नहीं है; दूसरे प्रकार के मनुष्य इसके ठीक विपरीत हैं। वास्तविक जीवन में आलेक्सी ने बुरे मनुष्यों को ही देखा है, परन्तु उन बुरे मनुष्यों ही में कभी-कभी अच्छे गुणों का आविर्भाव भी देखा है। परन्तु कहानियों के आदर्श नरनारियों को, उनके चमत्कार रोमान्स ( Romance ) और प्रेम को उसने आज तक कहीं नहीं देखा है; उसे देखने की आशा की है और ऐसा सोचा भी है कि सम्भवतः समाज के उच्च और भव्य स्तर में, ऊपर की मञ्ज़िलों में उस आश्चर्यजनक सुन्दर जीवन का दर्शन मिल सकता है।

सच हो या झूठ, कहानियों का संसार उसको असीम आनन्द देता है। परन्तु उस आनन्द को पाने में भी कितनी बाधाएँ हैं! उसका प्रधान शत्रु मामा की वह बुढ़िया माँ है। इस मकान के सभी लोग किताब पढ़ने को पाप के समान समझते हैं। हँसी-दिल्लगी तो है ही, इसके उपरान्त डाँट-फटकार भी है। मामा साधारणतः कुछ ख़राब नहीं है; परन्तु वह भी उसे भय दिखलाकर सचेत करने के लिए कहता है, सुनते हैं जो लोग किताब पढ़ते हैं वे विप्लवी और क्रान्तिकारी होते हैं, यही शङ्का की बात है।

## ११

आलेक्सी अब भी अत्यन्त अज्ञ किशोर बालक मात्र है। रूस के इतिहास में इसी बीच में विप्लव-देवता का जो पदार्पण शुरू हो गया है उसका कोई भी पता उसको नहीं है। इसी मार्च के महीने में एक अनहोनी घटना हो गई है; विप्लववादियों के हाथों सम्राट् द्वितीय अलेक्ज़ेंडर की मृत्यु हुई है। लोग खुले आम यह कहने में डरते हैं; कहीं-कहीं लोग एक दूसरे के कानों में यह कहा करते हैं। आलेक्सी के लिए यह समाचार अभी निरक्षर के सामने पुस्तक के लेख की तरह तात्पर्य-रहित है।

नाना कारणों से देश में जागरण का प्रारम्भ हो गया है। कुछ युवकों के चित्त-लोक में विप्लव-सूर्य की किरण आ पड़ी है। इसी लिए वे देश की

शासन-प्रणाली को परिवर्तित करने के लिए, 'ज़ार' के अत्याचारों के प्रतिरोध करने के लिए गुप्त समितियाँ स्थापित करने लगे हैं। सरकारी कर्मचारी और सरकार के सहायक पुरोहित सम्प्रदाय इन गुप्त समितियों के पता लगाने के लिए व्यग्र हैं। जो लोग पढ़ते-लिखते हैं वे विप्लवियों की प्रचारित निषिद्ध पुस्तकें पढ़ सकते हैं, इसलिए लिखना-पढ़ना ही एक सन्देहजनक कार्य में परिणत हो गया है। और जो पढ़ते-लिखते हैं उन्हीं के ऊपर पुलिस और पादरियों की तीक्ष्ण दृष्टि रहती है। इसी लिए आलेक्सी का तीव्र पाठानुराग देखकर मामा भी डर गया है। परन्तु आलेक्सी आज भी यह सब कुछ नहीं जानता है; राजनीति, विप्लव का प्रयत्न—ये सब आज भी उसके लिए निरर्थक शब्द मात्र हैं। उसने साहित्य का मधुर स्वाद पाया है, उसी ने उसे व्याकुल किया है।

बुढ़िया उसका पढ़ना बिलकुल नहीं देख सकती। इसलिए वह मोमबत्ती की लम्बाई नाप रखती है जिसमे रात को छिपाकर आलेक्सी बत्ती जलाकर पढ़ न सके। तथापि आलेक्सी का पढ़ने का नशा अत्यन्त तेज़ है। चाँदनी में वह पढ़ने की कोशिश करता है, परन्तु पढ़ नहीं सकता है। तब गृहदेवता के सामने जो प्रदीप जलता है उसके प्रकाश में वह पढ़ने के लिए जाता है। पढ़ते-पढ़ते कठोर परिश्रम से थका हुआ बालक बैठे-बैठे अनजाने ही कब सो जाता है। अकस्मात् बुढ़िया की अस्वाभाविक चिल्लाहट से आलेक्सी चौंक उठता है: बुढ़िया उसके हाथ से किताब छीनकर उसी से उसको मारना शुरू करती है; कभी-कभी पुस्तक जलाकर परम आनन्द पाती है। अन्त में, मोमबत्ती का जो हिस्सा पिघलकर गिर जाता है उसी को बटोरकर एक टीन के बरतन में रखकर उससे एक बत्ती बना लेता है; बुढ़िया गुस्से के मारे गाल-मुँह फुलाकर रह जाती है। आलेक्सी को किसी भी दुःख की परवा नहीं है। दिन भर तो वह परिश्रम करता है लेकिन हृदय में पुस्तक का स्वप्न देखता जाता है, और रात को जो कुछ पढ़ता है उसी के आनन्द में मग्न होकर रहता है। बुढ़िया की आँखें किरकिराती हैं। एक दिन एक तुच्छ अपराध के बहाने ईंधन की लकड़ी से बुढ़िया आलेक्सी को ऐसी मार मारती है कि क़रीब चालीस टुकड़ियाँ उसकी पीठ के चमड़े में चुभ जाती हैं; आलेक्सी को अस्पताल जाना पड़ता

है। परन्तु आलेक्सी पुलिस को यह खबर नहीं देता; बुढ़िया इसी से बच जाती है। इसके बाद मकान के लोग डर के मारे आलेक्सी को पढ़ने की इजाज़त देते हैं।

आलेक्सी ने योरोपीय लेखकों के कुछ उपन्यास पढ़े हैं। मामूली कहानियाँ ही अधिक हैं जिनमें अत्यन्त अच्छे आदमी अथवा अत्यन्त बुरे आदमी के काल्पनिक चित्र हैं। तथापि योरोपीय जीवन-चित्र आलेक्सी को मुग्ध करता है। रूस में वास्तविक जीवन का जो परिचय आलेक्सी को मिला है उसकी तुलना में वह जीवन-चित्र स्वर्गीय है। पेरिस, बर्लिन और लन्दन के नाम से उसके मन के सामने सुन्दर और परिमार्जित जीवन का चित्र उपस्थित होता है। आलेक्सी के आग्रह से मामा भी अन्त में एक पत्रिका का ग्राहक हुआ है। इसमें नई-नई कहानियों को पढ़कर उसे अनेक नये नये शब्दों का ज्ञान प्राप्त होता है। उन शब्दों के अर्थ जानने के लिए उसका मन अधीर हो जाता है; बहुत से शब्दों के अर्थ मामा को भी मालूम नहीं हैं।

दर्ज़ी की स्त्री के पास आलेक्सी ने गँकूर, ग्रीनऊड, बालज़ाक की सुन्दर-सुन्दर रचनाओं का पता पाया था। गँकूर के 'अदर्स जेम्नान्नो', ग्रीनऊड के 'अनाथ शिशु का सच्चा इतिहास', बालज़ाक का 'इउजेनी ग्राँदे' पढ़कर आलेक्सी विस्मय-मुग्ध हो गया था। इनमें वह यथार्थ मनुष्य का दर्शन पाता है—यह मनुष्य देवता भी नहीं है, दानव भी नहीं है। भले-बुरे दोनों के मिश्रण से मनुष्य-जीवन का अपूर्व चित्र बन सकता है, आलेक्सी को यही पहली बार मालूम हुआ। इसके बाद आलेक्सी अपनी देवी प्रतिमा उस महिला के पास से भी अच्छी-अच्छी पुस्तकें लाकर पढ़ता है। इसी महिला के यहाँ वह पुश्किन की कविता को पाता है। पुश्किन की सुन्दर कविता पढ़कर आलेक्सी के मन में यह होता है कि ऐसी सुन्दर भाषा कहीं नहीं है। इस आनन्द में साथ देती है केवल वह महिला, एकमात्र वही उसको रूसी साहित्य पढ़ने में प्रोत्साहित करती है। इसी महिला से आलेक्सी आकासौभ और दुर्गेनियेभ की पुस्तक लेकर पढ़ता है।

सुन्दर साहित्य के कल्पना-राज्य में आलेक्सी का मन परम आनन्द से सञ्चरण कर रहा है, परन्तु इधर वास्तविकता की रूढ़ता और कदर्यता भी

असह्य हो उठती हैं। अन्त में एक दिन एक झूठी चोरी के अपराध में आलेक्सी फँस जाता है और उसकी मामी उसके विरुद्ध गवाही देती है। अवश्य, बाद को आलेक्सी की निर्दोषिता प्रमाणित हो जाती है; परन्तु इस निर्दय अपमान से उसके दिल पर गहरी चोट लगती है। किस प्रकार से वह उस महिला को अपना मुँह दिखलावेगा! यदि वह मन में उसकी निर्दोषिता पर सन्देह करेगी तो? और वह फिर मामा के घर रहेगा भी किस प्रकार से?

फिर वाल्गा नदी का आह्वान घुमक्कड़ पिता के लड़के के रक्त में चञ्चलता उत्पन्न करता है। उस महिला के साथ भेंट किये बिना ही वह फिर परिचित जगत् के बाहर जो अज्ञात जगत् है उसकी ओर रवाना होता है।

## १२

आलेक्सी वाल्गा माता के अङ्क में लौट आया है। अब की बार भी उसने एक स्टीमर के रसोईखाने में काम पाया है। वैचित्र्यहीन बद्धता से मुक्त होकर उसको अच्छा ही मालूम हो रहा है। स्टीमर चल रही है; तट-भूमि के दृश्य भी बदल रहे हैं। हर स्टेशन पर नये यात्री आ रहे हैं। कितने प्रकार के नर-नारियों का जाना-आना चल रहा है; थोड़े समय के लिए यहाँ आकर ये लोग अपने चित्र इस कौतूहली बालक के चित्तपट पर अङ्कित करके जा रहे हैं। निज्नीनौभगोरोट की स्मृति कुछ समय के लिए अस्पष्ट हो जाती है।

स्टीमर का एक व्यक्ति आलेक्सी के हृदय को आकर्षित करता है—वह इंजन घर का फ़ायरमैन याकौभ है। इस व्यक्ति का प्रकाण्ड शरीर है; मूर्ति भी विशाल है, क्षुधा भी वैसी ही प्रचण्ड है। पाशविक तृष्णा भी उसकी उतनी ही प्रबल है और उसको वह अकुण्ठित होकर मिटाता है, इसमें उसे कुछ भी लज्जा नहीं है और इसलिए छिपाने की चेष्टा भी नहीं है। मानो, वह नितान्त आदिम मनुष्य है, उसको कुछ भी नैतिक ज्ञान नहीं है, पशु-धर्म ही उसके लिए स्वाभाविक है। सरल भी है; दया और क्षमा करने की एक

सहज शक्ति उसमें है। याकौभ रूस के बहुत-से स्थानों में घूमा है; नाना प्रकार के विचित्र अनुभवों में नारी-सम्बन्धी कहानियाँ ही अधिक हैं। याकौभ चित्रकार की तरह निरासक्त दृष्टि से उन घटनाओं का वर्णन करता है। उसके लिए 'यह अच्छा' 'यह बुरा' नहीं है। इसी लिए वर्णन में किसी विषय को बढ़ा-चढ़ाकर कहने का भी प्रयत्न नहीं है; और किसी विषय को हीन सिद्ध करने की प्रवृत्ति भी नहीं है।

इतने दिन नाना और नानी के पास उसने जो सच्ची और झूठी कहानियाँ सुनी हैं उनमें सर्वत्र जाने अथवा अनजाने नीतिशास्त्र प्रचार करने का प्रयास था। सभी कहानियों ने उसके सामने जीवन के बारे में कोई न कोई सिद्धान्त उपस्थित किया है। परन्तु याकौभ अपनी कहानियों में किसी भी नैतिक सिद्धान्त का प्रचार नहीं करता; लोभ-लालसा से, छल-कपट अविश्वास से शिशु की सरलता और दया से विचित्र इस मनुष्य-जीवन को आलेक्सी भी केवल द्रष्टा की तरह निरासक्त दृष्टि से, शिल्पी की नीति-निरपेक्ष प्रणाली से देखता जाता है। परन्तु यह तेरह साल का बालक इस विचित्रता-बहुल जीवन का स्वरूप क्या है यही जानना चाहता है। वह जानना चाहता है कि इस जीवन की यथार्थ महिमा और सार्थकता कहाँ है।

कुछ दिन वाल्गा के अङ्क पर रहकर आलेक्सी निजनी में वापस आता है।

## १३

निजनी लौटकर आलेक्सी को एक मूर्ति बेचनेवाले की दुकान पर नौकरी मिलती है। हमारे देश में जिस प्रकार देवताओं की मूर्तियाँ अथवा चित्र लोग अपने घरों में रखकर पूजते हैं, इसी प्रकार यहाँ के लोग भी नाना प्रकार की मूर्तियों की पूजा करते हैं। आलेक्सी इन मूर्तियों को बेचता है; कौन मूर्ति मनुष्यों को किस प्रकार की आपत्तियों से बचाने की अद्भुत शक्ति रखती है, आलेक्सी को वह सब याद रखना पड़ता है, भूलने से बड़ी आफ़त है। ग़रीब किसानों को धोखा देकर उनकी पुरानी मूर्तियाँ संग्रह करना भी इस पेशे का एक अंग है; क्योंकि परीक्षित यंत्र-मंत्रों की तरह पुरानी मूर्तियों की भी माँग बहुत अधिक है। आलेक्सी को इन सब कामों में मदद देनी पड़ती है। अन्य

दुकानों से गाहकों को फुसलाकर अपने मालिक की दुकान पर लाना पड़ता है। यहाँ के व्यवसायियों के चरित्र, उनकी सङ्कीर्णता, असभ्यता, नृशंसता और तरह-तरह की पर-चर्चाओं में प्रकटित होकर बालक के दिनोदिन के अनुभव को विषाक्त कर देता है। मनुष्य को ठगकर उन्हें छिपाने में इन लोगों को अद्भुत आनन्द होता है। ग्रामीण लोगों को ये लोग कभी-कभी ठीक रास्ता नहीं बतलाते; पूरब का रास्ता कहाँ है, पूछने पर ये लोग पच्छिम के रास्ते को दिखला देते हैं। चूहों को पकड़कर दोनों की दुमों को बाँधकर रास्ते में छोड़ मज़ा देखने में इनको बहुत ही अच्छा लगता है। कभी-कभी चूहों को मिट्टी के तेल में भिगोकर उनके शरीर पर आग लगाने में भी उन्हें अत्यन्त आनन्द मालूम होता है। कुत्ते की पूँछ के साथ टूटी बालटी बाँधकर उसको विडम्बित और लाञ्छित करने में इनको मानो ब्रह्मानन्द प्राप्त होता है। इन लोगों के आलस्य-पूर्ण वैचित्र्य-हीन जीवन में इससे उत्तम आनन्द का कोई रास्ता ही नहीं दिखाई पड़ता। सम्भव है इस वैचित्र्य-हीनता ही के कारण ये अनावश्यक नृशंसता करते हैं।

परन्तु दुकान के कारीगर अन्य प्रकार के हैं; उनके चरित्र में दुकानदारों की अर्थ-लोलुपता और रूढ़ कदर्यता नहीं है। सम्भवत: देवताओं की मूर्तियाँ बनाते हैं इसी लिए इनके चरित्र में वह महत्त्व-मिश्रित गाम्भीर्य है जिसका कणमात्र भी उस वणिक् सम्प्रदाय में नहीं है। परन्तु सरल और सांसारिक ज्ञान रहित होने पर भी ये लोग देवता नहीं हैं। इन लोगों का जीवन भी नीरस है; इस आनन्द-रहित जीवन से मुक्त होने की चेष्टा ये भी करते हैं। दुकानदार लोग अपने आनन्दहीन जीवन में नृशंसता के द्वारा विचित्रता लाते हैं, और ये मूर्तिशिल्पी विचित्रता लाते हैं शराब पीकर, मतवाले बनकर और आपस में मारपीट कर। कभी-कभी शराब, भोजन और नृत्य-गीत के स्रोत में ये लोग अपने को बहा देते हैं; चाहे और जो कुछ हो छोटा समझकर ये लोग आलेक्सी की अवहेलना नहीं करते। ये लोग आलेक्सी के साथ भी बराबर उम्रवालों के साथ जैसा बर्ताव करते हैं। परन्तु कभी-कभी इनके अन्दर भी जघन्य व्यापार दिखाई नहीं पड़ता है ऐसी बात नहीं है।

असल में आलेक्सी यहाँ पर भी अकेला है, उसे यह एकाकीपन कठोर मालूम होता है। उसकी अध्ययन स्पृहा ने इन लोगों से स्वतन्त्र कर रक्खा है, इसी लिए आलेक्सी इन लोगों के साथ पूर्ण रूप से मिल-जुल नहीं सकता। पुस्तकों में उसने जीवन का एक उच्चतर, बृहत्तर, सुन्दर और पवित्र चित्र देखा है। उसका चित्त प्रतिदिन उस जीवन का स्वप्न देखता है। इसलिए जो लोग जीवन के पङ्किल पथों पर लोटते रहते हैं उनके साथ वह अपने को मिला नहीं सकता। उन लोगों की ओर ताककर उसको रुलाई आती है। परन्तु कभी-कभी उसका एकाकीपन दुःसह हो उठता है। उस समय सङ्ग की कामना से चारों ओर की घृणित पङ्किलता में ही कूद पड़ने की इच्छा होती है। और चाहे जो हो, उसमें अकेलेपन की यातना तो नहीं है। परन्तु सम्भवतः विधाता का निर्देश और ही कुछ है। आलेक्सी को अन्य पथ पर चलना है। इसी लिए इतनी बीभत्सता के बीच में भी आलेक्सी कीचड़ में कमल की तरह निर्मल रह जाता है।

मूर्ति बनानेवाले कभी-कभी आलेक्सी के पास कविता सुनते हैं, कहानी सुनते हैं। आलेक्सी पढ़ता है और ये लोग चारों ओर बैठकर सुनते हैं। कभी-कभी भावावेग से बालक का कण्ठ रुँध जाता है, आँखों में आँसू भर आते हैं। सुनकर शिल्पी लोग अपना काम भूल जाते हैं, एक अद्भुत नशे से वे विह्वल हो जाते हैं। किसी किसी दिन रात को आलेक्सी लर्मन्टौभ की 'दानव' कविता को पढ़ता है। वे कविता सुनने के लिए नींद छोड़कर आते हैं। नङ्गे बदन होकर जाड़े में काँपते-काँपते वे कविता-पाठ सुनते जाते हैं। कभी-कभी ये लोग छोटा-मोटा अभिनय भी करते हैं, आलेक्सी भी उसमें भाग लेता है। आलेक्सी का कौतुकाभिनय इन लोगों को अच्छा लगता है। ये लोग आलेक्सी को नाटक खेलनेवालों के दल में जाने की सलाह भी देते हैं। मूर्तिशिल्पी और चित्रकारों के बीच उसका दिन एक प्रकार से बीतता है परन्तु उसके हृदय की अतृप्ति का अवसान नहीं होता। उसको यह सब अच्छा नहीं लगता। नानी, वह पागल-सा रासायनिक, स्मिउरी, वह भद्र महिला—इन सभी ने उसको एक सुन्दर जीवन का स्वप्न दिखलाया है। परन्तु वह जीवन है कहाँ ?

इस काम के सिलसिले में बढ़ई मिस्त्री और किसानों के साथ आलेक्सी का घनिष्ठ परिचय होने लगता है। इन लोगों के चरित्र भी अद्भुत हैं। एक ही में इतने विपरीत गुणों का समावेश और कहीं शायद नहीं है। इन लोगों का चरित्र दुर्बोध्य है; कभी इनके आचरण दयार्द्र हैं, फिर कभी अत्यन्त निर्मम और हृदयहीन हैं। काम-काज में इनकी जैसी पटुता है वैसे ही ये आलसी भी हैं; कभी-कभी तो ये बेपरवाह होकर साहस दिखलाते हैं, फिर अन्य समय पर यही लोग कायरता की भी पराकाष्ठा कर देते हैं। एक ओर से जीवन-संग्राम में ये लोग निर्भीक हैं, दूसरी ओर से यही लोग घोर भाग्यवादी और निकम्मे भी हैं। रूस के किसानों और मज़दूरों के साथ गहरे परिचय का प्रारम्भ इसी समय से होता है; ये लोग मानो विधाता की एक रहस्यमय पहेली हैं। इस परिचय से आलेक्सी एक और बात अच्छी तरह समझ जाता है। इतने दिन नाना प्रकार की पुस्तकों में मनुष्यों का जो परिचय मिला है वास्तव में मनुष्य उससे कितना ही भिन्न है! आलेक्सी का पुस्तक पढ़ना बन्द नहीं हुआ है; टुर्गेनियेभ्, डॉस्टयेभस्की, टॉलस्टॉय, स्कॉट, डिकेन्स—इनकी पुस्तकों को संग्रह कर आक्लेसी ने पढ़ा है, टुर्गेनियेभ् और डिकेन्स ही आलेक्सी के विशेष प्रिय हैं।

वार्वारा के द्वितीय पति मैक्सिमौभ के साथ फिर भेंट होती है। अब वह अत्यन्त दरिद्र हो गया है; इसलिए वह भी आलेक्सी के मामा के यहाँ नक़शा बनाने का काम करता है। मैक्सिमौभ आलेक्सी को बहुत से अख़बार ख़रीद देता है; उसमें जो कहानियाँ मिलती हैं वे भी आलेक्सी को अच्छी ही लगती हैं। आलेक्सी इस मैक्सिमौभ को बहुत ही घृणा करता था, अब धीरे-धीरे वह घृणा हट जाती है। वह देखता है कि मैक्सिमौभ भी कुछ ऐसा ख़राब नहीं है। पर थोड़े ही दिनों के अन्दर अस्पताल में उसकी मृत्यु हो जाती है। जीवन के शिक्षा-मन्दिर में आलेक्सी को एक अमूल्य शिक्षा मिलती है। किसी भी मनुष्य के बारे में चरम विचार निश्चित कर लेना कितनी भारी भूल है! छोटी उम्र से वह यह देखता आया है कि मनुष्य कुछ प्रचलित नैतिक सिद्धान्तों से दूसरों का विचार करता है; परन्तु कार्यक्षेत्र में प्रत्येक बार उसने यह देखा है कि उस प्रकार का विचार बिलकुल ग़लत है। मनुष्य का चेहरा एक नहीं

है कि उसे देखने से ही उसको देखना पूरा हो जायगा। आज जिसको हम एक रूप में देखते हैं वही फिर दूसरे समय अन्य अप्रत्याशित रूप में दिखाई देता है।

## १५

आलेक्सी का काम निगरानी करने का है ताकि कुली मज़दूर मिस्त्री ये सब लकड़ी इत्यादि सामान चुरा न सकें। यह काम उसको अच्छा नहीं लगता। जिनके साथ वह घनिष्ठ रूप से मिलना चाहता है, जिनके जीवन में वह अत्यन्त आग्रह के साथ प्रवेश करना चाहता है, उनके ऊपर जासूसी करना उसको कैसे अच्छा लग सकता है? कभी-कभी आलेक्सी मिलियन्स स्ट्रीट में जाता है; यह जगह बिलकुल अच्छे आदमियों का अड्डा नहीं है। यहाँ पर जितने आवारा घुमक्कड़ लोग रहते हैं, यह हतभाग्य मनुष्यों का बन्दरगाह है। जीवन-यापन की प्रचलित पद्धति को इन लोगों ने परित्याग किया है। इस पुरानी और गन्दी सड़क के किनारे ये लोग रहते हैं, इनमें हर तीन मकान में दो मकान भिखमंगे और चोरों से भरे हैं और तीसरा वेश्याओं से। चोर, बदमाश और वेश्याओं के महल्ले में आलेक्सी मनुष्य देखने और उसके चरित्र का अध्ययन करने के लिए जाता है। अ-सामान्य के प्रति उसका घना आकर्षण है। इन "भूतपूर्व मनुष्यों" में भी चिरन्तन मानव सुप्त है, इसी लिए विशेष-विशेष अवसर पर इनमें भी आश्चर्यजनक उद्दीपन और साहस दिखाई देता है। मिलियन्स स्ट्रीट में जाने की बात सुनकर मामा आलेक्सी को सचेत कर देता है; कहता है, वह सड़क जेल और अस्पताल का रास्ता है। परन्तु इससे आलेक्सी नहीं डरता है, अदम्य कौतूहल उसे वहाँ खींच ले जाता है। परन्तु एक दूसरे कारण से आलेक्सी का उस मुहल्ले में जाना बन्द हो जाता है। निष्ठुरता आलेक्सी को विचलित कर देती, यह उसको बरदाश्त नहीं होता। आलेक्सी ने सोचा था, सम्भवतः यहाँ के लोग वैसे न होंगे। परन्तु यहाँ पर भी आलेक्सी देखता है कि लोग वेश्याओं के प्रति कैसा पाशविक आचरण करते हैं। आलेक्सी मन में नारी की पूजा करता है, वह नारी कितनी भी गिरी हुई क्यों

न हो। नारी के प्रति इस नृशंस अत्याचार को वह कैसे सह सकता है? इसी लिए आलेक्सी का जाना बन्द हो जाता है।

चारों ओर के जघन्य वातावरण, मनुष्यों की कुत्सित हीनता, पाशविकता और पङ्किलता की ओर ताककर आसन्न-यौवन स्वप्नप्रिय आलेक्सी को जो असहनीय वेदना होती है वह किसी को समझा नहीं सकता। एक ओर, सभ्यता के वाहन, साहित्यिक और शिल्पियों की कल्पसृष्टियाँ उसको कल्पना के रथ पर बैठाकर एक ऐसे महान् सुन्दर और प्रेममय जीवन के स्वर्गलोक में ले जाती हैं जिसके लिए उसकी समग्र सत्ता अत्यन्त व्याकुल है; दूसरी ओर प्रतिदिन के पल-पल की वास्तविकता का क्रूर व्यङ्ग उसके स्वप्न को धूलिलुण्ठित कर रहा है और कह रहा है, अरे झूठे स्वप्न के पुजारी, इस प्रकार से जीवन को व्यर्थ मत कर। ऐसा कहकर वह कदर्य पङ्किल जीवन आलेक्सी को पङ्कतीर्थ में स्नान करने के लिए पुकारता है। कभी कभी उसका हृदय निराशा से पूर्ण हो जाता है, समग्र विश्वसंसार अन्धकार से आच्छन्न हो जाता है, बीहड़ रास्ते पर चलने का साहस नष्ट हो जाता है, उसके मन में ऐसा होता है मानो एक अतल गह्वर उसे ग्रास कर लेगा। जीवन, मनुष्य—किसी के ऊपर उसका विश्वास नहीं रहता। अन्तस्तल संशय से पूर्ण हो जाता है और सब मनुष्यों के ऊपर करुणा होती है, अपने ऊपर भी। यह करुणा निराशा से म्लान: रूसी चरित्र की चेकौभीय ( Tchekovian ) नैराश्यप्रियता उसको ग्रास करना चाहती है।

तथापि आलेक्सी अपने स्वप्न को बिदा नहीं कर सकता। सभ्यता के देवदूत—बड़े-बड़े शिल्पी साहित्यिकों की कल्प-सृष्टियाँ उसको एक अपूर्व उन्माद से विह्वल करती हैं। पुस्तकों के नशे में वह सब भूल जाता है, शराब इसके सामने कुछ भी मादक नहीं है। नारी-देह इस अद्भुत नशे को जीत नहीं सकती। वास्तविकता का भयानक सङ्घर्ष उसके स्वप्न को चूर्ण-विचूर्ण करना चाहता है परन्तु नहीं कर सकता। उसके हृदय में प्रचण्ड प्रतिवाद जाग्रत् होता है, उसके कण्ठ में विद्रोह का चीत्कार उद्यत होता है। उसका मन कहता है, क्यों नहीं होगा? प्रबल चेष्टा से मनुष्य को सुन्दर आशामय मङ्गलमय जीवन के स्वर्ग में उठा ले जाना क्यों नहीं सम्भव होगा? किशोर

बालक आलेक्सी आज यौवनलोक के द्वार पर आ पहुँचा है। बालक जिस नृशंसता, कदर्यता को निष्क्रिय रहकर सह न सका, युवक उसे कैसे बरदाश्त करेगा ?

नहीं, आलेक्सी अब बहुत दूर निकल पड़ेगा। सभ्यता की, उन्नत जीवन की मोहन बाँसुरी उसे पुकार रही है। पन्द्रह साल का किशोर युवा बन्द नहीं रह सकेगा। आलेक्सी जिस मकान में रहता है उसी की एक छोटी कोठरी में एभ्राइनोभ नामक एक युवा रहता है। उसकी आँखें स्निग्ध कोमल हैं और जिमनासियम में पढ़ता है। आलेक्सी के हाथ में प्रायः पुस्तक देखकर वह लड़का उसके साथ परिचय करता है। उन्नीस वर्ष का युवा उसको उत्साह देता है, कहता है, तुम जैसे लड़के ही तो कालेज में जाने से यथार्थ शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। पाँच ही साल की तो बात है; डिग्री लेकर कालेज से निकलने में पाँच साल लगेंगे। यौवन के उद्दीपन से सभी सहज और सम्भव मालूम होता है।

एभ्राइनोभ की प्रेरणा से उद्दीप्त होकर वह सङ्कल्प करता है: मैं जाऊँगा, काज़ान विश्वविद्यालय में भरती हूँगा। एभ्राइनोभ परीक्षा देकर अपने घर काज़ान शहर को चला जाता है। जाने के समय आलेक्सी को वहाँ जाने के लिए कह जाता है; उसी के मकान पर वह रह सकेगा और एभ्राइनोभ भी पढ़ने में मदद करेगा।

कई दिन बाद, स्टीमर पर चढ़कर आलेक्सी 'यथार्थ शिक्षा' के सन्धान में यात्रा करता है। बुढ़िया नानी उसे स्टीमर पर चढ़ा देने के लिए आती है। अन्तिम बार बुढ़िया आलेक्सी से कहती है, मनुष्यों के ऊपर क्रोध न करना...एक बात याद रखना. ईश्वर मनुष्य का विचार नहीं करते हैं, विचार करना शैतान का काम है। 'अच्छा, विदा !' कहते-कहते बुढ़िया रो देती है; कहती है, फिर हम नहीं मिलेंगे। अरे अशान्त, तू बहुत दूर रहेगा, और मैं—मर जाऊँगी।'

वाल्गा की तटभूमि पर खड़ी होकर उसकी नानी रोती रहती है और स्टीमर आलेक्सी को लेकर धीरे-धीरे अदृश्य हो जाता है।

# यौवन

१

पूर्वी रूस का विद्याकेन्द्र इस काज़ान शहर में है। यह रूस के पुराने शहरों में से एक है। मीनारयुक्त 'क्रेमलिन' और असंख्य गिरजाओं के शिखरों से यह शहर विचित्र श्रीसम्पन्न हो उठा है। यहाँ के धर्मतत्त्व शिक्षण की संस्था ( एकाडेमी ) विख्यात है; केवल ईसाई धर्म का नहीं, मुसलिम विद्या का भी यह केन्द्र है। यह तातारों का भी तीर्थस्थान है। इसके अलावा यह शहर वाणिज्य और संस्कृति का भी केन्द्र हो गया है। ऋषि टॉलस्टॉय इसी काज़ान विश्वविद्यालय के छात्र थे।

निजनीनौभगोरोट में हाईस्कूल की परीक्षा देकर चले आने के समय एभ्राइनौभ आलेक्सी से कह आया था कि छः महीने लिखने-पढ़ने से ही हाईस्कूल परीक्षा पास कर विश्वविद्यालय के ज्ञान-मन्दिर में प्रवेश कर सकेगा। अत्यन्त साधारण घर का लड़का माइखेल लोमनोसोभ भी तो अज मछुए की अवस्था से एक श्रेष्ठ विद्वान् बनकर एकाडेमी का सम्मानित सभ्य तक हुआ था। आलेक्सी का मन भी उस सम्भावना के मोह से मतवाला हो रहा है।

आलोक की तृष्णा से, ज्ञान की दुरन्त पिपासा ने आलेक्सी को एभ्राइनौभ की जन्मनगरी काज़ान में खींच लाया है। एक तङ्ग गली के प्रान्त में एक ऊँची ज़मीन पर एक एकमञ्ज़िले मकान में, एभ्राइनौभ के डेरे पर उसने आश्रय लिया है। इस मकान से सटा हुआ एक खँडहर है: वहाँ पर आग से जला हुआ एक मकान का ध्वंस-स्तूप है; इस ध्वंस-स्तूप के बीच में ज़मीन के नीचे एक छोटा-सा कमरा है। इसमें आश्रय-हीन रास्ते के कुत्ते रहते हैं; कभी-कभी यहीं पर मरे पड़े भी रहते हैं।

एभ्राइनौभ परिवार में एभ्राइनौभ की दरिद्र माता और उसका एक भाई हैं। निकोलाइ एभ्राइनौभ जभी समय पाता है, आलेक्सी को विद्यादान करने की प्रतिश्रुति का पालन करता है; वह बहुत कुछ बतला जाता है, क्योंकि छः महीने के अन्दर तीसरे दर्जे के लड़के को हाईस्कूल परीक्षा के उपयुक्त बनाना है। परन्तु निकोलाइ अपने हृदय में कितनी भी इच्छा क्यों न रखता हो, उसके पास न उतना समय ही है, न उतनी योग्यता। इसके उपरान्त, यहाँ पर आने के बाद ही आलेक्सी को मालूम हो गया है कि कैसे दरिद्र परिवार में आकर मैंने आश्रय लिया है। कभी-कभी माता अपनी घोर दरिद्रता और अभाव की ज्वाला को गोपन नहीं रख सकती, ग़ुस्से में आकर दो-चार बातें कह भी देती है। जो दुःखिनी माता अपनी सन्तानों को ही दो मुट्ठी अन्न नहीं दे सकती, उसके लिए बाहर के निःसम्पर्कीय एक आगन्तुक को अन्न देना कैसा कठिन है! इसी लिए सबेरा होते ही आलेक्सी कुछ उपार्जन करने की आश से काम की खोज में निकल जाता है। भोजन के समय भी प्रायः आलेक्सी घर पर नहीं रहता। बरसात के दिनों में जब वह बाहर नहीं जा सकता उस समय बग़ल के खँडहर में ज़मीन के नीचे के कुत्तों के कमरे में मुर्दा और सड़े-गले कुत्ते और बिल्लियों के बीच में बैठा रहता है। मूसलाधार वृष्टि के शब्द और हवा की सनसनाहट में मानो आलेक्सी अपने हृदय का ही क्रन्दन और दीर्घ निश्वास सुन पाता है। आलेक्सी समझता है कि लिखने-पढ़ने का स्वप्न वास्तव में स्वप्न ही है। हाय, स्वप्न!

फिर भी काज़ान विश्वविद्यालय के अधिकारियों के पास सहानुभूति की आशा से वह जाता है। उसको कहीं स्थान नहीं मिलता। शासकों को इतने ही में मालूम हो गया है कि विद्या का विस्तार अनर्थकारी है, क्योंकि उनको प्रमाण मिल गया है कि शिक्षित युवक लोग ही शासन-तन्त्र के विरोधी और विप्लवी हो उठते हैं। वे समझ गये हैं कि अज्ञता, विद्याहीनता और अधीनता इन्हीं के ऊपर सामाजिक वैषम्य, राष्ट्रीय अत्याचार और शोषण खड़े हैं। इसी लिए सेकंडरी स्कूलों में मृत भाषा की पढ़ाई शुरू हुई है, जिससे किसी प्रकार के विचारों का उन्मेष हो सकता है वह सब बन्द कर दिया गया है। और गोपनीय सर्क्युलर भी जारी हुआ है कि 'निम्न श्रेणी के लड़कों' को स्कूलों में

भरती न किया जाय। महामान्य सम्राट् की इस शुभ परिकल्पना के विषय में आलेक्सी को न तो कुछ मालूम है, और न उसके बारे में वह कुछ समझता ही है। वह केवल इतना ही जानता है कि वह दीन दरिद्र और असहाय है, संसार में उसका कोई भी नहीं है जो उसे उन्नति के मार्ग पर ले जा सकता है। हाँ, लिखने-पढ़ने की आशा व्यर्थ है, उसका यह स्वप्न बिलकुल अलीक है !

## २

परन्तु ज़िन्दा तो रहना होगा। अनाहार से आत्म-रक्षा करने के उद्देश्य से आलेक्सी सारे शहर में घूमता-फिरता है। प्रायः वह वाल्गा की 'जेटी' ( jetty ) में जाता है, वहाँ किसी तरह से पन्द्रह-बीस कोपेक का काम मिल जाता है। आलेक्सी की शारीरिक क्षुधा से भी बड़ी क्षुधा ज्ञान के लिए कौतूहल है। वाल्गा की जेटी में नाना प्रकार के मनुष्यों की भीड़ होती है। कुली-मज़दूरों के अलावा आवारा, चोर, गिरहकट और बदमाशों का वहाँ पर विचित्र समारोह होता है। इन मनुष्यों को देखकर आलेक्सी के हृदय का सुन्दर आदर्श-पिपासु मनुष्य असहाय और आर्त होकर छटपटाता है। इन मनुष्यों का लोभ कदर्य है, इनकी स्थूल लालसा की परितृप्ति की निर्लज्ज चेष्टा अत्यन्त कुत्सित है। संसार के ऊपर इन लोगों का मर्मान्तिक क्रोध है। प्रत्येक कर्म के द्वारा मानो ये लोग जीवन का उपहास करते जा रहे हैं। इस जीवन में इनकी कहीं कुछ भी स्थिति नहीं है। अपने बारे में ये गृहहीन घुमक्कड़ लोग अद्भुत प्रकार से बेपरवाह और उदासीन हैं।

एक दिन बाश्किन के साथ आलेक्सी का आलाप होता है; बाश्किन किसी समय ट्रेनिङ्ग कालेज का छात्र था, उसकी शिक्षक होने की इच्छा थी। भाग्यवश आज वह चोरी का पेशा करता है। वह चोर है, नारी के प्रति उसका लोभ असीम है; वह सर्वदा नारी का ही गीत गाता है। वह कहता है, नारी के लिए मैं सब प्रकार के पाप कर सकता हूँ। बाश्किन सुन्दर गीत बना सकता है; पतिताओं के लिए वह हताश प्रेम का गीत बनाता है; ये गीत वाल्गा के तटों पर फैल जाते हैं। चारों ओर लोगों की ज़बान पर उसका

गीत सुनाई देता है। वह कहता है, पुरुष का फिर चरित्र क्या ? लड़कियों से तू भागता क्यों है ? वाशिकन पढ़ा-लिखा है, सुन्दर भाषा में बात-चीत कर सकता है। चाहे और जो कुछ हो, वह आलेक्सी को प्यार करता है।

और एक आदमी के साथ आलेक्सी का आलाप होता है। उसका नाम है ट्रूसोभ। इसने घड़ी की मरम्मत करने की एक दुकान खोल रक्खी है, परन्तु उसका असल पेशा चोरी का माल बेचना है। वह भी आलेक्सी को प्यार करता है। वह कहता है, लेक्सी, तुम चोरी न करना; यह रास्ता तुम्हारे लिए नहीं है। वह आलेक्सी के अन्दर न जाने क्या देखता है !

वशिकन, ट्रूसोभ और ऐसे ही और कुछ लोग मिलकर बीच-बीच में काजाङ्का नदी के उस पार जाकर रात बिताते हैं। सिगरेट और शराब पीते हुए ये लोग कथोपकथन में रात गँवाते हैं। हर एक आदमी अपने-अपने अतीत जीवन की कथा कहता रहता है क्योंकि इन लोगों का कोई भी भविष्य नहीं है। अतीत सम्बन्धी आलोचना के केन्द्र में नारी ही रहती है। इन लोगों की बात-चीत में मर्मान्तिक क्रोध और दुःख ही टपकता है। जीवन ने इन लोगों को प्रतारित किया है। जीवन से इन लोगों ने जो प्रार्थना की थी, वह पूर्ण नहीं हुई। इसी लिए जीवन के ऊपर इनका असह्य क्रोध है। आलेक्सी इन लोगों की बात-चीत सुनता जाता है और इन लोगों के लिए विषाद से उसका चित्त आच्छन्न हो जाता है; अपने को देखकर कभी-कभी आलेक्सी भी इन्हीं लोगों की तरह विक्षिप्त हो उठता है। उसके मन में ऐसा मालूम होता है मानो वह भी अनायास कोई भी अपराध कर सकता है। भूख से, गुस्से से, हृदय के कठोर दुःख और नैराश्य से उसका चित्त भयानक विक्षिप्त हो जाता है।

परन्तु आलेक्सी अपने को पतन के स्रोत में छोड़ नहीं सकता। उसके हृदय में सुन्दर और महान् जीवन के स्वप्न ने अच्छी तरह जड़ पकड़ ली है। सुन्दर पुस्तकों ने उसकी आदर्श-पिपासा को और भी प्रबल कर दिया है। नवागत यौवन का जीवन-स्वप्न उन सुन्दर आदर्शों से अनुरञ्जित हो गया है। इसी लिए अधःपतन के रास्ते में वह गिर नहीं सकता है। एक अदृश्य प्रेरणा उसे रोकती है।

## ३

केवल वाल्गा नदी के तट के उन मनुष्यों के संसर्ग में रहने से अन्त में आलेक्सी क्या होता कौन कह सकता है? परन्तु विधाता ने उसके पास एक सुन्दर मित्र उपस्थित किया है, वह उन्नीस बीस वर्ष का युवक प्लेटनेभ है। वह भी अत्यन्त दरिद्र है। वस्त्राभूषण में उसकी दरिद्रता सुप्रकट है। एक टूटे-फूटे मकान में वह रहता है। उस मकान में अनाहार-क्लिष्ट, दरिद्र छात्रों, उसी प्रकार की दरिद्र कुछ वारवनिताओं, और वैसे ही भग्न मलिन कुछ मनुष्यों का निवास है। इस मकान का नाम मारुसोभूका है। इस मकान की एक सीढ़ी के नीचे एक छोटा-सा रास्ता है, वहीं पर प्लेटनेभ का रहने का स्थान है। मकानवाली से सीढ़ी के नीचे के इस अंश को प्लेटनेभ ने किराये पर लिया है, परन्तु इसका किराया भी वह नहीं दे सकता। इस-लिए किराये के बदले में वह मकानवाली के साथ हँसी-दिल्लगी कर, गीत सुनाकर, बाजा बजाकर उसको ख़ुश रखता है। आलेक्सी की आर्थिक विपन्नता का पता मिलते ही प्लेटनेभ ने उसको अपना साथी बना लिया है। सीढ़ी के नीचे एक छोटा-सा बिछौना, एक टूटी-फूटी मेज और कुर्सी यही उसकी सम्पत्ति है। रात को प्लेटनेभ प्रेस में 'प्रूफ़' देखने का काम करता है, इस-लिए रात को आलेक्सी इस बिछौने पर सोता है। रात के अन्तिम प्रहर में प्लेटनेभ काम पर से लौटता है और दिन को वह सोता है।

अपूर्व वातावरण में आलेक्सी की रात बीतती है। जिस रास्ते के ऊपर प्लेटनेभ के रहने का स्थान है उसी के बग़ल में के कई कमरों में वारवनिताएँ रहती हैं। एक कमरे में क्षयरोग से ग्रस्त एक उन्माद गणितज्ञ रहता है; वह हिसाब के द्वारा ईश्वर के अस्तित्व प्रमाणित करने के काम में दिन-रात मग्न रहता है। दैन्यदुर्दशा से पीड़ित वेश्याएँ उसको खाना देती हैं। आलेक्सी जहाँ सोता है वहीं पर सीढ़ी है; इसके ऊपर के कमरे में एक कालेज का छात्र रहता है। चालीस साल की एक औरत, धनी व्यापारी की स्त्री प्रायः उस छात्र के पास आती है। इस स्त्री ने धात्रीविद्या की उन्नति के लिए हज़ारों रुपये दान किये हैं; रात को आकर वह उस छात्र से कातर होकर

प्रेम-भिक्षा माँगती है। सीढ़ी के नीचे सोकर आलेक्सी यह सब सुनता है। वेश्याओं का मतवालापन, शोर-गुल, लड़ाई-झगड़ा रात को बहुत देर तक चलते रहते हैं; आलेक्सी को सभी सुनाई देता है। इस विचित्र वातावरण के बीच प्लेटनेभ का रहना निहायत बेतुका मालूम पड़ता है। इस भग्न-भ्रष्ट-जीवन-मेला में प्लेटनेभ मानो आनन्द-देवता है; हास्य-गीति-कौतुक से इस युवक ने मकान के लोगों को जीत लिया है।

कोई नहीं जानता है कि इस अति दरिद्र, कठोर जीवन संग्राम में लिप्त युवक के आनन्द-प्राचुर्य का उद्गम-स्थान कहाँ पर है। प्लेटनेभ ने विप्ल-वियों के साथ योग दिया है, एक महान् आदर्शवाद की प्रेरणा से वह सब दुःखों को तुच्छ समझकर चल रहा है। परन्तु किसी को यह मालूम नहीं है। आलेक्सी का अभी तक विप्लव-आन्दोलन के साथ संस्पर्श नहीं हुआ है। कभी-कभी यहाँ-वहाँ थोड़ी-सी चर्चा, और धीमे कण्ठ की काना-फूसी से वह एक अस्पष्ट अनुमान मात्र करता है। एक दिन इसी मारुसोभका में पुलिस का आविर्भाव होता है। गुप्त छापाख़ाना रखने के अभियोग में एक दल पकड़ा जाता है। आलेक्सी का कौतूहल अब उग्र हो उठता है। परन्तु प्लेटनेभ अभी उसको अपने दल में लेने के लिए उपयुक्त नहीं समझता; कहता है, पहले और कुछ लिख-पढ़ लो।

## ४

एभ्राइनोभ आलेक्सी के साथ एक गुप्त समिति का परिचय करा देता है। इन लोगों का काम ऐसा कुछ भयानक नहीं है। तीन-चार युवक मिलकर चुपके-चुपके ऐडम स्मिथ की अर्थशास्त्र की पुस्तक पढ़ते हैं। रूस में ऐसा काम भी निर्दोष नहीं माना जाता। पता लगने से रूसी शासन-तन्त्र ऐसा काम करनेवालों को मकड़ी के जाले की तरह अदृश्य जाल में जकड़ लेगा; एक न एक दिन इस जाल में फँसाकर इन लोगों को साइबीरिया में दीर्घनिर्वासन दण्ड भोगने के लिए भेज देगा। इसी लिए युवकों का यह पाठचक्र गुप्त रूप से ही चलता है। सम्भव है कि अति-गोपन का रहस्य ही अल्पवयस्क तरुण युवकों को सबसे अधिक आकृष्ट करता है। इस पाठचक्र में बैठकर आलेक्सी घण्टों

अर्थशास्त्र की आलोचना सुनता है। उसके लिए यह आलोचना कुछ भी नवीन नहीं मालूम होती; इसलिए आलोचना में उसे कुछ भी रस नहीं मिलता।

कुछ दिनों के बाद ही आलेक्सी आन्द्रे डेरेंकौभ के छोटे मोदीख़ाने में और एक दल का संधान पाता है; असल में यह दुकान नारौडनिक ( Narodnik ) समाजतन्त्रियों का एक अड्डा है। दुकान के अन्दर पिछले हिस्से में एक अँधेरे कमरे में निषिद्ध राजनीतिक और अर्थशास्त्र की पुस्तकों की लाइब्रेरी है। यहाँ पर 'धर्मतत्त्व एकाडेमी', 'पशुचिकित्सा इन्स्टीट्यूट' और काज़ान विश्वविद्यालय के विप्लवी नारौडनिक छात्र आकर मिलते हैं और आलोचना करते हैं।

रूस के बुद्धिजीवी सम्प्रदाय के साथ आलेक्सी का पहला परिचय यहीं पर होता है। आर्थिक अवस्था के ख़याल से यह सम्प्रदाय मज़दूर और किसानों से विशेष उन्नत नहीं है; परन्तु यह सम्प्रदाय शिक्षित है; ये लोग पढ़े-लिखे हैं, थोड़ा-बहुत स्वतन्त्र विचार इन्हीं लोगों में शुरू हुआ है। इसी लिए रूस के दलित किसानों की दुर्दशा को देखकर इन्हीं लोगों का हृदय रो उठा है। प्रायः छः-सात वर्ष पहिले १८७८ ई० में इसी सम्प्रदाय के युवकों ने एक समिति (Land and Freedom Society ) की स्थापना की है। इसका उद्देश्य यह है कि जो लोग शिक्षित हैं वही 'इन्टेलिजेन्टसिया' किसानों की सेवा के लिए सामूहिक विप्लव आन्दोलन चलायेंगे। समिति की स्थापना के प्रायः साल भर के बाद ही यह समिति दो हिस्सों में विभक्त हो गई है; एक दल किसानों में विप्लव और भूमि का बँटवारा चाहता है परन्तु दूसरा दल ( People's Will Party या Narodnaya Volya ) सन्त्रासवाद के द्वारा शासन-तन्त्र का उच्छेद करना चाहता है। तीन-चार साल हुए, इन्हीं लोगों ने सम्राट् द्वितीय अलेकज़ैंडर की हत्या की थी। असल बात यह है कि 'इन्टेलिजेंटसिया' अर्थात् बुद्धिजीवी सम्प्रदाय जाग उठा है, इन लोगों के हृदय में विप्लव की प्रेरणा जाग्रत् हुई है। साधारण 'जन-समुदाय'—जिसका नाम 'नारौड' है—इन लोगों का देवता है। नारौडनिक सम्प्रदाय के सभ्य विशेष रूप से इसी गण-देवता की सेवा के लिए सङ्घबद्ध होना चाहते हैं।

डेरेंकोभ के अड्डे में आलेक्सी छात्र नारौडनिकों के साथ आकर मिलता है। क्रियात्मक कुछ न करने पर भी इन लोगों की आलाप-आलोचना में सचाई का अभाव नहीं है; इनकी आलोचना और तर्क-वितर्क में स्वदेश-सेवा का ज्वलन्त उद्दीपन परिस्फुट होता है। आलेक्सी के लिए अब जीवन निरर्थक नहीं मालूम होता: गण मानव के इस मुक्ति-आन्दोलन में जीवन की सार्थकता दिखाई देती है। यहाँ के करीब पचीस छात्रों के सङ्ग में सम्मिलित होकर उसका हृदय एक अपूर्व मुक्ति के आनन्द से परिपूर्ण हो जाता है।

शिक्षा देने के उद्देश्य से यहाँ के छात्र सदस्य आलेक्सी को पढने के लिए पुस्तक देते हैं। ये लोग जानते हैं कि आलेक्सी निम्न श्रेणी के लोगों में से है; सम्भवतः इसी लिए ये उसको जैसा प्यार करते हैं वैसा ही अशिक्षित निम्न श्रेणी के होने के कारण उसके प्रति करुणा भी दिखलाते हैं। अगर कभी आलेक्सी अपनी पसन्द से कोई पुस्तक चुनता है तो कोई-कोई छात्र उससे असन्तुष्ट हो जाते हैं। कहते हैं, तुम ये सब नहीं समझोगे। आलेक्सी को अन्य पुस्तक दी जाती है। आलेक्सी के ऊपर छात्रों की यह बड़ाई अच्छी नहीं लगती। समय बीतने के साथ-साथ इस अड्डे के युवकों से उसका व्यवधान भी सुस्पष्ट होता जाता है। आदर्श के लिए पागल ये युवक जिस 'नारौद' या गण-देवता की पूजा करते हैं, आलेक्सी को अच्छी तरह मालूम है कि वास्तविक संसार में वह गण-देवता कहीं नहीं है। ये लोग कहते हैं, किसान सम्प्रदाय सरल, पवित्र और असहाय है। किसानों की मुक्ति के लिए ये अधीर हैं परन्तु आलेक्सी जानता है कि साधारण मनुष्य सरल भी नहीं है, सुन्दर भी नहीं है और पवित्र भी नहीं है। आलेक्सी की समझ में हीनता और नीचता में इन लोगों की तुलना और कहीं भी नहीं है।

कुछ दिनों तक इस नवीन दल के आकर्षण में पड़कर आलेक्सी इतना मत्त हो जाता है कि उसका पैसा कमाने का काम बन्द हो जाता है। प्लेटनेभ की कमाई से ही उसको भी जीविका निर्वाह करना पड़ता है। अवश्य प्लेटनेभ कुछ भी नहीं कहता, उसके मन में भी शायद इसलिए कोई असन्तोष नहीं होता। परन्तु कई दिन के बाद आलेक्सी स्वयं ही लज्जित होता है। नहीं, उसे काम करना पड़ेगा। काम की खोज में वह इधर-उधर घूमता है; कभी

माली का काम करता, कभी दरबान का; फिर कभी-कभी गिरजा में प्रार्थना-सङ्गीत गाने का काम भी करता है क्योंकि उसका गला अच्छा है। अन्त में जब हेमन्त ऋतु आसन्न हुआ एक पावरोटी के कारख़ाने में आलेक्सी को नौकरी मिली। इसलिए डेरेंकोभ के यहाँ जाना-आना बन्द हो जाता है। नीरस जीवन में वैचित्र्य और नवीनता की उत्तेजना से जो आनन्द मिल रहा था, अब उस आनन्द का रास्ता भी बन्द हो गया।

फिर जीवन दुस्सह प्रतीत होने लगा।

## ५

इस कारख़ाने में क़रीब चालीस आदमी काम करते हैं। इन लोगों को तनिक भी मनुष्य की मर्यादा नहीं है। बोझ ढोनेवाले पशुओं की तरह ये लोग केवल पेट के लिए मेहनत करते जाते हैं। आलेक्सी को भी इस प्रकार के जीवन के अन्दर आना पड़ा है। जिन लोगों को जीवन के उच्चतर आनन्द का पता ही नहीं है वे किसी प्रकार से दिन बिताते जाते हैं; उनमें केवल प्राणधारण करने की कोई भी ग्लानि नहीं है। परन्तु जिसको यथार्थ आनन्द का पता मिला है, जिसने नीलाकाश की निर्मल निःसीम मुक्ति का स्वप्न देखा है, उसके लिए इस कारख़ाने का श्वासरोधकारी वातावरण असह्य है। यहाँ के लोग खाते-पीते सोते हैं और कामना-मदिर नारीदेह का स्वप्न देखते हैं। उनकी यही एक इच्छा है; सम्भवतः दुर्लभ होने ही के कारण नारी-देह के प्रति इन लोगों की लालसा नशे की तरह अदम्य है। महीने के अन्तिम सप्ताह में ये लोग इसी आलोचना को लेकर मुखर हो उठते हैं। सात दिन के बाद वेतन मिलेगा, तब ये लोग मदिरालयों अथवा वेश्यालयों में जाकर जुटेंगे। वहाँ एक रात में वे एक महीने की वञ्चित क्षुधा को किस प्रकार परितृप्त करने की चेष्टा करेंगे उसी की विचित्र कल्पना से वे उल्लसित हो उठते हैं। इन लोगों को न तो घर है, न प्रतिदिन के सुख-दुःखों की सङ्गिनी है, न कोई पुत्र-कन्या है; इसी लिए इन लोगों की दृष्टि में नारी एक प्रकार की क्रययोग्य सामग्री मात्र है। दैहिक लालसा इन लोगों को जितना ही रूप-जीविनियों की ओर खींचकर ले जाती है, नारी के

लिए उतनी ही अधिक घृणा भी इन लोगों के हृदय में उद्वेलित हो उठती है। नारी के प्रति जो प्रेम-कामना को सुन्दर बनाता है, जीवन में माधुर्य और सान्त्वना का स्निग्ध स्पर्श का अनुभव कराता है, वह प्रेम तो उन लोगों को मिलता नहीं। इसी लिए व्यभिचार-रात्रि का जब अन्त हो जाता है वे नारी का नाम लेकर घृणा से थूकते रहते हैं। इनमें जो मनुष्य का हृदय था मानो वह उपवास से मर गया है, मानव-चेतना की अन्धकार-गुहा में जो पशु है केवल वही जीवित है। इसके लिए, कौन दायी है? समाज, राष्ट्र। इन लोगों को देखकर करुण वेदना से आलेक्सी का मन उदास हो जाता है। आलेक्सी को भी प्रायः चौदह घण्टा प्रतिदिन मेहनत करना पड़ता है, तब भी वह इन मनुष्यों को एक नवीन जगत् में जाग्रत् करना चाहता है। वह यही सोचता है कि मैं किस प्रकार से इन लोगों को उस नवीन जगत् का सन्धान दूँगा?

पहले-पहल ये लोग इस अद्भुत युवक का उपहास करते हैं। परन्तु धीरे-धीरे आलेक्सी की कहानियों को सुनकर बालकों की तरह ये आलेक्सी के प्रति आकृष्ट होते हैं। आलेक्सी से सुन्दर-सुन्दर कहानियाँ सुनकर प्रायः ये पशु-प्राय लोग भी मोहित हो जाते हैं इन लोगों के चेहरे पर एक अपूर्व दीप्ति छा जाती है, एक अनास्वादितपूर्व सहानुभूति और समवेदना के आनन्द से इनकी आँखों में आँसू भर आते हैं। थोड़े ही दिनों के अन्दर ये आलेक्सी को यथार्थ प्यार करने लगते हैं। जब वे महीने के अन्त में गणिकालय में जाते हैं, शराब खाने में जाते हैं, वे आलेक्सी को भी साथ ले जाते हैं। आलेक्सी कौतूहली दृष्टि से वहाँ के नरनारियों के जीवन का अध्ययन करता है। ये लोग थोड़े ही दिनों के बाद यह समझ जाते हैं कि आलेक्सी उन लोगों के समजातीय नहीं है, वह सम्पूर्ण स्वतन्त्र प्रकार का मनुष्य है। वे जिस प्रकार से नारी की कामना करते हैं, आलेक्सी उस प्रकार से नहीं करता। स्वस्थ, बलिष्ठ युवा आलेक्सी क्यों नारी-देह के प्रति ऐसा निरासक्त और उदासीन है यह उन लोगों की समझ में नहीं आता। आलेक्सी की यह उदासीनता नर और नारी दोनों के उपहास का कारण होती है; मानो यह पुरुष के लिए एक कठिन अक्षमता और अगौरव की बात है। आलेक्सी का हृदय भी निराशा

से पूर्ण हो जाता है। कभी-कभी इन मनुष्यों को यथार्थ सुन्दर जीवन की चेतना देकर, यथार्थ स्वाधीनता और आनन्द के जगत् में ले जाने की जो आशा आलेक्सी अनुभव करता है, इन लोगों की नीचता और कदर्य कामना की उग्रता देखकर वह आशा मिट्टी में मिल जाती है।

कुछ दिनों बाद कारख़ाने के साथी आलेक्सी को उन स्थानों में साथ ले जाने से इनकार करते हैं। उसके साथ रहने से सब मज़ा जाता रहता है। उन लोगों के मन में ऐसा होता है कि मानो कोई पादरी पुरोहित सामने खड़ा रहकर उनके कामों का निरीक्षण कर रहा है। ऐसा कभी अच्छा लग सकता है!

## ६

निरवकाश निरानन्द और वैचित्र्यहीनता में जीवन के दिन किसी प्रकार से बीतते जाते हैं। छुट्टी के दिन भी और कहीं जाने की इच्छा नहीं होती। अथक परिश्रम के बाद छुट्टी के दिन नींद में ही ख़तम करने की इच्छा होती है। इधर डेरेंकोभ ने एक पावरोटी का कारख़ाना खोलने का सङ्कल्प किया है। स्थानीय नारौडनिकों को जितने धन की आवश्यकता है। मोदीख़ाने से उतनी आमदनी नहीं होती। इसलिए एक रोटी का कारख़ाना खोलकर पर्याप्त लाभ करने का सङ्कल्प कर डेरेंकोभ आलेक्सी को भी वहाँ आने को कहता है। बड़े आग्रह के साथ आलेक्सी कारख़ाने में सहकारी का काम लेता है। कारख़ाने में फिर काज़ान के विप्लवी छात्रों का समागम शुरू होता है। घण्टों तक वे नाना प्रकार के तर्कवितर्क में वहाँ समय बिताते हैं।

यहाँ का सरदार कारीगर चरित्रहीन और चोर है। चुराकर वह एक दुश्चरित्र लड़की को पावरोटी देता है। आलेक्सी की आँखों के सामने ही यह सब चलता है, परन्तु आलेक्सी प्रतिवाद नहीं कर सकता; सम्भवतः दरिद्रता के कारण ही वह लड़की सरदार लुटोनिन के पास आती है। यह लड़की रात को आती है; प्रायः लुटोनिन आलेक्सी से विनती करता है, भाई थोड़ी देर के लिए बाहर चले जाओ। जाड़े की रात को आलेक्सी बाहर जाकर बैठा रहता है। थोड़ी देर बाद आलेक्सी के बग़ल से लड़की निकल जाती है

और निम्न स्वर में उसको अन्दर जाने को कहती है। आलेक्सी सोचता है, हाय, नर-नारियों का प्रेम! पुस्तक और जीवन में क्या सदा के लिए ऐसा ही प्रभेद बना रहेगा? क्या प्रेम सर्वत्र ऐसा ही है? क्या मुझको भी एक दिन इसी तरह स्थूल कामना का आश्रय लेना पड़ेगा? इससे भिन्न और मुन्दर जिस प्रेम की बात इतने दिनों से मैं गल्प-उपन्यासों में पढ़ता आया हूँ, क्या वास्तव में वह प्रेम कहीं नहीं है?

आलेक्सी की मेहनत यहाँ भी कुछ कम नहीं है। सन्ध्या छ: बजे से दूसरे दिन के दोपहर तक मेहनत करनी पड़ती है। केवल पावरोटी बनाने का काम ही नहीं; दूर-दूर तक भिन्न-भिन्न स्थानों में पावरोटी दे आने का काम भी उसी को करना पड़ता है। इस उपलक्ष में 'धर्मतत्त्व एकाडेमी', बालिका विद्यालय के बोर्डिंग इत्यादि स्थानों में भी पावरोटी बेचने के लिए आलेक्सी को जाना पड़ता है। इन लिखे-पढ़े सम्प्रदायों के बारे में आलेक्सी की धारणा कुछ ऊँची ही है; यह उसकी कल्पना में भी नहीं है कि यहाँ के लिखे-पढ़े लोगों में भी वह मनुष्य की कदर्य कामना का साक्षात् पावेगा। परन्तु यहाँ भी आलेक्सी वही यौन-कामना का प्रकाश अपनी आँखों से देखता है। पावरोटी बेचने के बहाने वह भिन्न-भिन्न स्थानों पर निषिद्ध विप्लवात्मक ग्रन्थ देने के लिए जाता है। इसी सिलसिले में वह देखता है कि कभी-कभी लड़कियाँ अपनी कुत्सित कामनाओं को पत्र में लिखकर पावरोटी के बक्स में रख देती हैं। कभी-कभी उसी को इन प्रेमपत्रों का वाहक भी बनना पड़ता है। इन व्यापारों को देखकर आलेक्सी के मन में अप्रत्याशित धक्का लगता है। वेश्यालयों में बैठकर उसके मज़दूर साथी जो बातें करते थे उसको वह सब याद आने लगती हैं। वहाँ पर वे लोग कालेज के लड़कों के घृणित आचरणों की बात करते थे। उस समय शिक्षित सम्प्रदाय के लड़कों की उन निन्दाओं पर वह विश्वास नहीं करता था। परन्तु वहाँ की वेश्याएँ भी उन निन्दाओं का ऐसा समर्थन करती थीं कि उन बातों को वह झूठ कहकर उड़ा भी नहीं सकते थे। आज आलेक्सी सोचता है कि सम्भवत: मज़दूरों की बात झूठी नहीं थी। इसी लिए उसके मन में यह प्रश्न उठता है, क्या उच्च श्रेणियों के जीवन में भी कोई उच्चतर विकास नहीं है?

ऐसा सोचते मानो उसकी 'साँस रुक जाती है। जिस स्वर्ग की प्रत्याशा और सन्धान में उसके दिन बीत रहे हैं, वह सुन्दर जीवन केवल मनुष्य की कल्पना की वस्तु है, यह बात वह कैसे मान सकता है ? उसको एक प्रकार का भय होता है, वह सोचता है, क्या मुझको भी उसी लुटोनिन की तरह होना होगा ? एक दिन नशे की हालत में लुटोनिन कहता भी है, जाओ न मारिया डेरेंकोभ के पास ? इस कदर्य इशारे से आलेक्सी अत्यन्त क्रुद्ध हो जाता है, फिर यदि ऐसा कहेगा तो उसका सिर ही फोड़ डालेंगे।

फिर भी, वास्तव में आलेक्सी डेरेंकोभ की बहिन मारिया को भी भूल नहीं सकता; उसकी मूर्ति सदा उसके सामने विचरती रहती है। इस नारी-मूर्ति के साथ-साथ डेरेंकोभ की दुकान की एक मजदूरनी की मूर्ति भी कभी-कभी झाँकती रहती है। उसके मन से किसी तरह इन दो नारियों की छायामूर्ति मिटती नहीं। यौवन के मदिर आवेश मे आलेक्सी विवश हो जाता है, उसके मन में भी सुन्दरी नारी की, प्रेमिका नारी की कामना जाग्रत् होती है। कब अनजाने ही उसकी यौवन-कामना ने उन दो नारियों को स्पर्श किया है, अपनी चेतना के गुप्त कक्ष में उसने इन दो नारियों को प्यार किया है। आज नारी के प्रेमालिङ्गन के लिए उसका चित्त क्षुधातुर हो उठा है। प्रेम चाहिए; यदि नारी का प्रेमालिङ्गन आलेक्सी को न भी मिले तो कुछ परवाह नहीं; परन्तु अन्ततः और कुछ न हो तो मित्र रूप से भी कोई उसको ग्रहण करे, ऐसी व्याकुल कामना उसको चञ्चल करती है। चाहता हूँ, ऐसे किसी को चाहता हूँ जिसके पास मैं अपने को अनायास 'प्रकट कर सकता हूँ। परन्तु वह आत्मीय, वह बान्धवी कहाँ है ?

इस संसार में आलेक्सी का कोई नहीं है !

## ७

ऐसे ही समय आलेक्सी को खबर मिलती है कि नानी इस संसार में नहीं है ! निजनी के स्टीमर-घाट का वह दृश्य उसके सामने उद्भासित होता है, स्मरण आते हैं नानी के अन्तिम शब्द। शैशव और कैशोर में जो उसका परम आश्रय

था, जिसकी स्नेहच्छाया में रहकर नाना प्रकार की विरोधी परिस्थितियों की निर्ममता से वह अपने को बचा सका था, उस सुन्दर स्नेहमयी, कल्याणमयी नानी को वह इस जीवन में फिर नहीं देख पावेगा। अन्तिम जीवन में बेचारी नानी को भिक्षा वृत्ति का आश्रय लेना पड़ा था; आलेक्सी नानी के लिए कुछ नहीं कर सका। वह किसी से इस परम विच्छेद की बात को कहना चाहता है, कहकर अन्तर्वेदना को कम करना चाहता है। वह कहना चाहता है कि मेरी नानी कैसी अच्छी थी, कैसी ज्ञानमयी थी। परन्तु आलेक्सी का कोई नहीं है जो सहानुभूति के साथ आलेक्सी की इस विच्छेद-वेदना में सान्त्वना देगा। अगर मारिया उसके इस दुःख में जरा भी सहानुभूति दिखलाती! दुकान की वह मज़दूरनी लड़की यदि उसकी विषण्ण मूर्ति को देखकर एक बार भी पूछती! नहीं, आलेक्सी के इस दुःख से वे कुछ भी विचलित नहीं हैं; उनमें से एक तो विस्मित होती है, कहती है, सचमुच, नानी तुम्हारी इतनी प्यारी थी !!

इधर 'ज़ार'-तन्त्र के अनुचर पुलिस इस दुकान के बारे में सचेत हो रही है। निकिफोरिच नाम का एक पुलिस कर्मचारी आलेक्सी के साथ परिचय करने आता है, उसके प्रति अनुराग प्रबल होने लगता है! कभी वह आलेक्सी को अपने डेरे पर चाय पीने का न्यौता भी देता है। निकिफोरिच नाना प्रकार से जानने की चेष्टा करता है कि आलेक्सी क्या लिखता-पढ़ता है। क्या पढ़ते हो? बाइबिल या टालस्टाय? इस आग्रह का मूल कारण क्या है आलेक्सी समझता है। सब नारौडनिक सचेत हो जाते हैं, इसी लिए छात्रों का आना-जाना भी कम हो जाता है।

डेरेंकोभ की दुकान की दशा भी अब गिरती जा रही है; अपरिमित व्यय इसका कारण है। नारौडनिक दल की सेवा में इसका सारा धन ख़र्च हो जा रहा है। दुकान को चलाने के लिए भी अब धन नहीं है। निकिफोरिच के चकान्त से आलेक्सी का वह मित्र गुरी प्लेटनेभ षड्यन्त्र-कारी के रूप में पेट्रोग्राड के कैदख़ाने में बन्द हो गया है। चारों ओर से दुर्दैव ने आलेक्सी को घेर लिया है। उसकी सब आशा भरोसा कल्पना धीरे-धीरे मिट्टी में मिल रही हैं। पुलिस-मित्र निकिफोरिच अपने प्रेम-

जाल में अलेक्सी को भी फँसाने की कोशिश में है, यह आलेक्सी को भी मालूम हो रहा है।

इसके थोड़े दिनों के बाद आलेक्सी ने और एक मित्र को खोया। उसका नाम रुबस्टौभ है। लेकिन वह एक दूसरे कारख़ाने में काम करता था। डेरेंकोभ के यहाँ ही उसके साथ परिचय हुआ था। उसकी उम्र अधिक होने पर भी मन उसका तरुण था; वह भी विप्लवी था। सारे रूस की कपड़े की मिलों में वह घूमा था इसलिए उसको बहुत सी ख़बरें मालूम थीं। इसी लिए वैप्लविक कर्मों में आलेक्सी ने इस मित्र से बहुत कुछ उपदेश और परामर्श पाया है। एक दिन रास्ते पर अकस्मात् एक मार-पीट के परिणाम-स्वरूप रुबस्टौभ पकड़ा गया; आलेक्सी भी उसके साथ था। रुबस्टौभ ने कहा—भागो, झूठमूठ पकड़े जाने से क्या फ़ायदा? आलेक्सी भाग जाता है। इसके बाद रुबस्टौभ फिर लौटता नहीं।

एकाकी आलेक्सी का जीवन निरर्थक हो जाता है। पथभ्रान्त हृदय में दिन रात एक ही प्रश्न उठता रहता है—क्या करें? मुझको कौन चाहता है? कोई नहीं; आलेक्सो के दुख में एक बूँद आँसू गिरानेवाला कोई नहीं है। जिस ज्ञान-तृष्णा को लेकर वह निकला था, वह वैसी ही अतृप्त रह गई; विश्वविद्यालय का द्वार उसके सामने सदा के लिए रुद्ध हो गया है। अब भी यदि कोई आकर उससे यह कहे कि अच्छा तुम पढ़ पाओगे लेकिन प्रति रविवार को तुम्हें सबके सामने निकोलेभ्स्की चौक में सबके सामने मार खानी पड़ेगी, तब भी आलेक्सी राजी हो जायगा। परन्तु उसका यह स्वप्न व्यर्थ है! ज्ञानरत्न उसकी पहुँच के बाहर है। और प्रेम, बन्धुत्व, प्यार? मारिया डेरेंकोभ, नादेज़दा श्खेर्बाटोभ—इनमें से कोई ज़रा सा प्यार के साथ भी उसकी ओर नहीं ताकती। उसके प्रति सभी की करुणा और अवहेलन है! वह किसी के प्रेम के योग्य नहीं है; निरर्थक, निष्प्रयोजन है उसका जीवन!

नहीं, जीवन का कोई अर्थ नहीं है। तब वह क्या करेगा? जिस जीवन का कोई प्रयोजन नहीं है, उसे रखने की आवश्यकता और लाभ ही क्या है? उन्नीस वर्ष का यह जीवन दुःसह, दुर्वह हो गया है।

दिसम्बर के महीने में आलेक्सी पिस्तौल ख़रीदकर उसके द्वारा इस संसार से सदा के लिए विदा होने का सङ्कल्प करता है। गोली हृत्पिण्ड में घुस जाती है, परन्तु मृत्यु अभी आलेक्सी को लेने के लिए तैयार नहीं है। प्रायः एक महीना आलेक्सी को अस्पताल में रहना पड़ता है। वह अपनी असफल चेष्टा के लिए अपने मन में लज्जित होता है। छिः छिः! लोग सोचेंगे कि अन्तिम मुहूर्त पर आलेक्सी अपने सङ्कल्प में दृढ़ न रह सका। इस घटना को सुनकर आलेक्सी के सङ्गी-साथी सब उसे देखने को आते हैं, वे इसके लिए आन्तरिक विस्मय और वेदना प्रकट करते हैं; कोई-कोई रो पड़ते हैं। इस आन्तरिक बन्धुत्व के स्पर्श से आलेक्सी फिर जीवन की ओर मुँह फेरता है। इसके साथ साथ आलेक्सी और एक बात समझता है, वह बुद्धिजीवी श्रेणी का कोई नहीं है; उसका यथार्थ आत्मीय पतित, दलित, घृणित और सर्वरिक्त मनुष्यों का समुदाय है। आलेक्सी ने उन्हीं की सेवा में आज से अपना तुच्छ जीवन उत्सर्ग कर दिया। आलेक्सी इस नवीन और सुन्दर सङ्कल्प को लेकर डेरेंकोभ के कारख़ाने में लौट आया।

आज मृत्यु के द्वार पर से नचिकेता की तरह आलेक्सी एक नवीन जीवन का सन्देश लेकर लौट आया है।

## ८

डेरेंकोभ की दुकान के पिछले हिस्से में पढ़े-लिखे बुद्धिजीवी श्रेणी के विप्लवपन्थी नारोडनिकों की जो बैठक होती है उसमें कभी-कभी एक व्यक्ति का आगमन होता है जो चुप-चाप रहने पर भी सभी की दृष्टि को आकर्षित करता है। जैसा लम्बा उसका शरीर है वैसी ही चौड़ी उसकी छाती है। उस व्यक्ति को लोग 'खोखौल' के नाम से पुकारते हैं। बृहत् रूस के रहनेवाले यूक्रेननिवासियों को इस नाम से पुकारते हैं। इसके सिर पर के बाल तातारियों की तरह मुड़े हुए हैं। परन्तु डाढ़ी मुड़ी हुई नहीं है। नारौडनिकों की बैठक में वह प्रायः चुपचाप बैठा रहता है। उसकी दृष्टि स्थिर गम्भीर और

शान्त है। उसने कदाचित् कुछ कहा है; परन्तु अनेकों बार वह आलेक्सी की ओर स्थिर दृष्टि से ताकता हुआ देखा गया है। अस्पताल से लौटने के बाद ही एक दिन यही माइखेल एन्टनोभिच रोमास के साथ डेरेंकोभ की दुकान में फिर भेंट हुई।

नारौडनिक होते हुए भी रोमास काजान के नारौडनिकों से भिन्न प्रकार का मनुष्य है। बुद्धिजीवी श्रेणी के नारौडनिक बड़े कल्पनाविलासी हैं; गण-देवता ( नारौड ) उनकी एक काल्पनिक सृष्टि है, उसके साथ प्रत्यक्ष अनुभव का कुछ सम्बन्ध नहीं है। परन्तु रोमास स्वयं एक लोहार का लड़का है; साधारण मनुष्यों के बारे में उसमें रञ्च मात्र भी कल्पना-विलास नहीं है; इसका कारण उसका वास्तविक अनुभव है। छात्रों के काल्पनिक भावोच्छ्वासों को सुनकर रोमास तङ्ग आ जाता है। कहता है, गण-मानव के प्रति प्रेम! छिः, यह किसी के लिए सम्भव नहीं है। प्रेम का अर्थ क्या है? उसका समर्थन करना, उसके प्रति सदय व्यवहार करना, उसके किसी-किसी बात की उपेक्षा करना, क्षमा करना, यही है न? इस प्रकार के भाव लेकर लोग तो स्त्रियों के पास जाया करते हैं! गण-मानव की अज्ञता की किस प्रकार से उपेक्षा करोगे? उनकी भूलचूकों का कैसे समर्थन करोगे? उनकी नीचता को किस प्रकार से अनुकम्पा की दृष्टि से देखोगे? उनकी नृशंसता को किस प्रकार से क्षमा करोगे?

रोमास पहले कीयेभ स्टेशन पर काम करता था; गाड़ी में तेल लगाना उसका काम था। वहीं पर उसने विप्लवियों का साथ दिया और श्रमिकों के लिए शिक्षा-समिति का सङ्गठन किया था। इस गुरुतर अपराध से उसे दो वर्ष का कारावास और दस वर्ष के लिए साइबीरिया में निर्वासन हुआ था। इसी लिए अब रोमास जल्दी कुछ नहीं बोलता। परन्तु रोमास ने अपने आदर्श को ज़रा भी नहीं छोड़ा है। फिर वह अपने आदर्श की प्रतिष्ठा के लिए काजान से चालीस मील की दूरी पर वालगा के पहाड़ की ओर क्रास्नोभिडोभी नामक ग्राम को जा रहा है। वहाँ पर एक दुकान खोलने के बहाने वह एक शिक्षा-केन्द्र की प्रतिष्ठा करने जा रहा है। इसलिए वह आलेक्सी को भी दुकान में सहकारी के रूप में साथ जाने को कहता है। रोमास कहता है, मैं वहाँ पर इसलिए

नहीं जा रहा हूँ कि मुझको दुकानदारी पसन्द है अथवा यह काम बहुत अच्छा है; मैं वहाँ पर दूसरे काम से जा रहा हूँ। इशारा समझने में आलेक्सी को देर नहीं लगती। आलेक्सी भी तो ऐसा ही काम चाहता है; गण-मानव की सेवा में वह अपने जीवन को उत्सर्ग करना चाहता है।

## ९

गाँव में आकर आलेक्सी को बुरा नहीं लगता। वाल्गा के तट पर यह ग्राम है। यहाँ पर प्रकृति का उन्मुक्त रूप उसके मन में कितने स्वप्नों को, कितनी कल्पनाओं को जाग्रत् करता है। इसके अलावा रोमास का छोटा पुस्तकालय भी उसे कम आनन्द नहीं देता। रोमास के निर्देश के अनुसार ही आलेक्सी अध्ययन कर रहा है। पुश्किन, नेक्रासौभ, गौञ्चारौभ, पिसारेभ इत्यादि रूसी लेखकों की रचनाओं के अलावा बकूल्, हौब्स, लेकी, लबक, टेलर, मिल, स्पेन्सर, डारुइन, माकियाभेल्ली प्रभृति चिन्ताशील लेखकों के भावना राज्य में परम उत्साह के साथ वह विचर रहा है। परन्तु रोमास उसे सावधान कर कहता है, तुमको पढ़ना-लिखना अवश्य ही चाहिए, पर देखना, पुस्तक की विद्या पट्टी की तरह तुम्हारी दृष्टि को इस प्रकार आच्छन्न न कर दे कि तुम मनुष्यों के यथार्थ रूप को देख न सको। मनुष्यों से तुम जो कुछ पाओगे, सम्भव है पुस्तकों से तुमको उससे बहुत अधिक ज्ञान प्राप्त हो, परन्तु मनुष्यों के जीवन से जो प्रत्यक्ष ज्ञान मिलता है मन पर उसका प्रभाव बहुत गहरा होता है। रोमास की यह उक्ति कैसी सुन्दर है!

आलेक्सी ने जो व्रत धारण किया है उसके पालन के लिए पढ़ना-लिखना आवश्यक है। रूस के अशिक्षित जन-समूह को जाग्रत् करना होगा, उन लोगों के कुसंस्कारों से आच्छन्न मन से शिक्षा के प्रकाश से अन्धकार हटाना होगा। प्राणितत्त्व का अध्ययन भी वह करता है। नाना विषयों में आलेक्सी का ज्ञान जितना ही बढ़ता जाता है उतना ही उसके अन्दर आत्मशक्ति का जागरण होने लगता है। शक्तिबोध से उसकी निराशा धीरे-धीरे सम्पूर्ण रूप से दूर हो जाती है।

रोमास की दुकान में गाँव के लोग आकर इकट्ठे होते हैं। इसका प्रधान कारण यह है कि रोमास अन्य दो दुकानदारों से सस्ते में सामान बेचता है। इसी प्रकार से वह गाँववालों को अपनी दुकान में खींच लाता है। रविवार को दुकान में बैठक होती है; नाना प्रकार के लोग आते हैं, नाना प्रकार की बात-चीत और आलोचना भी होती है। आलेक्सी चाहता है कि रोमास इन बैठकों में विप्लववाद का प्रचार करें। परन्तु रोमास कुछ नहीं कहता; वह तमाख़ू पीता जाता है और निःशब्द होकर गाँव वालों की बात-चीत किधर चलती है यही देखता है। ग्रामवासियों को ज्ञान देने के लिए व्याकुल होने के कारण अनभिज्ञ युवक रोमास की इस मूकता से क्षुब्ध होता है; एक दिन आलेक्सी उसकी इस निष्क्रियता का कारण पूछता है। रोमास सीधा जवाब देता है चुप रहता हूँ इसलिए कि मैं फिर साइबीरिया में निर्वासित नहीं होना चाहता।

भीतर-भीतर गाँववाले रोमास के आने से प्रसन्न नहीं हैं, आलेक्सी यह नहीं समझता है, परन्तु अभिज्ञ रोमास की सतर्क दृष्टि में यह बात छिप नहीं सकती। रोमास इस अज्ञ, कुसंस्कारान्ध कृषक सम्प्रदाय के अद्भुत मनस्तत्त्व को जानता है। ये लोग अत्यन्त अविश्वासी और सन्दिग्ध प्रकृति के होते हैं। ये लोग एक दूसरे को सन्देह की दृष्टि से देखने में अभ्यस्त हैं; इसलिए अज्ञात और अपरिचित अजनबी रोमास पर इन लोगों का जो सन्देह होगा इसमें आश्चर्य की बात क्या है; पचीस-छब्बीस साल पहले, १८६१ ई० में सम्राट् से इन लोगों को स्वाधीनता मिली थी। परन्तु वास्तव में इनको कुछ भी स्वाधीनता नहीं मिली है। अन्ध विश्वास से भरपूर किसान सम्राट् को ईश्वर ही की तरह शक्तिशाली समझते हैं। इन लोगों का अविचलित विश्वास यही है कि वही एक दिन यथार्थ स्वाधीनता और सुख देंगे और कोई दे ही नहीं सकता।

जो लोग आतङ्कवादी हैं वे अपने रोमाञ्चकारी हत्याकाण्ड इत्यादि विप्लवकर्मों के द्वारा सम्राट्-भक्ति को नष्ट करना चाहते हैं; परन्तु रोमास अच्छी तरह जानता है कि इस प्रकार से किसानों की अन्ध कुसंस्काराच्छन्न सम्राट्-भक्ति को कभी नष्ट नहीं किया जायगा। ख़ूब धीरे-धीरे इन लोगों

के मन में विचारशक्ति का उद्बोधन करना पड़ेगा, अत्यन्त सावधानी के साथ इन लोगों को यह समझाना होगा कि शासक का शासन करने का कोई भी स्वयं-सिद्ध अधिकार ईश्वर से प्राप्त नहीं है; प्रजा को, किसान सम्प्रदाय को, अपना शासक निर्वाचन करने का अधिकार है। रोमास की राय है कि इस काम में अत्यन्त धैर्य चाहिए। आलेक्सी अधीर होकर कहता है, तब तो यह सौ साल में भी होगा कि नहीं सन्देह है! रोमास कहता है, तो क्या तुम सोचते हो कि देखते-देखते वह दिन लुढकता हुआ हमारे सामने आ जायगा ?

## १०

ग्राम्य जीवन की जो कुछ हीनता, कदर्यता, जो कुछ दुःख, दैन्य और नैराश्य है सभी आलेक्सी की दृष्टि में आते हैं। ग्राम्य समाज में मनुष्यों के जीवन अत्यन्त तुच्छ विषयों को लेकर चलता है। अत्यन्त साधारण विषय को लेकर इन लोगों में कुत्सित गाली-गलौज और मारपीट की अन्त नहीं है। परस्पर भय, अविश्वास और सन्देह—यही यहाँ का जीवन है। इसके अलावा युवक युवतियों में नैतिक दुराचार भी कम नहीं है। आलेक्सी को ऐसा मालूम होता है कि शहर के लोगों का जीवन इससे अच्छा है। यहाँ रास्ते पर जहाँ-तहाँ एकाएक युवतियों को नङ्गी कर देना एक कौतुक का विषय समझा जाता है। यह सब देख-सुनकर आलेक्सी का जन-साधारण की सेवा करने का उत्साह बहुत धीमा हो जाता है।

तथापि इनमें भी कुछ ऐसे मनुष्य भी हैं जो दूसरे प्रकार के हैं; वे अज्ञ होने पर भी ज्ञान का प्रकाश चाहते हैं। छिप-लुककर ये लोग बहुत दूर-दूर के गाँवों से रोमास के पास आते हैं। गुप्त रूप में आलोचनाएँ चलती हैं और दल का सङ्गठन भी होता है। परन्तु ये चेष्टाएँ पुलिस से छिपी नहीं रहतीं। आस-पास में ख़ुफ़िया पुलिस के लोग घूमते-फिरते हैं। इधर जो लोग धनी हैं, ज़मींदार हैं वे भी रोमास के ऊपर क्रुद्ध होने लगते हैं। इसी कारण रोमास और उसके अनुगत थोड़े से लोगों के ऊपर ग्राम के लोगों की क्रोधाग्नि बरसने लगती है।

अभिज्ञ रोमास को यह मालूम हो जाता है। वह आलेक्सी को सचेत कर कहता है, रात को अकेला न निकलना। परन्तु आलेक्सी इन बातों की परवाह नहीं करता। रात को नदी के किनारे बगीचे में उइलो वृक्ष की छाया में बैठकर अन्धकार में नदी की ओर ताकने में उसको बहुत अच्छा लगता है। वाल्गा नदी निःशब्द गति से प्रवाहित होती है और दूर पर विस्तीर्ण प्रान्तर और उसके बाद और भी दूर पर कृष्ण-पर्वत-माला दिखाई देती है। युवा आलेक्सी अन्धकार में दूर की ओर आँख गड़ाकर बैठा रहता है; कितने अगणित, अकथित स्वप्न और कल्पनाएँ उस वाल्गा के प्रवाह के साथ बहती जाती हैं उसका कोई ठिकाना नहीं। कभी-कभी नदी के ऊपर चन्द्रमा का उदय होता है, नदी-वक्ष पर इस पार, उस पार शीर्ण म्लान चाँदनी छा जाती है। आलेक्सी को चाँदनी अच्छी नहीं लगती; उसकी ओर ताकने से न जाने क्यों उसका हृदय विषाद से आच्छन्न हो जाता है और एक आर्त क्रन्दन से उसकी छाती फटने लगती है। एक दिन इस प्रकार नैश भ्रमण करते समय रास्ते पर मार खाकर वह घर लौटता है; बलिष्ठ आलेक्सी का इससे विशेष कुछ नहीं होता।

इसी के बाद एक दिन रोमास की दुकान पर आग लगती है; अवश्य इस बार आग से विशेष क्षति नहीं हुई। अद्भुत क्षमाशील रोमास! वह कहता है, ये लोग अत्यन्त निर्बोध हैं इसी लिए ऐसा करते हैं। परन्तु इसके दो महीने बाद ही जुलाई के महीने में गाँव के लोग रोमास के प्रिय एक मछुवाहा को मार डालते हैं। अद्भुत रोमास! हत्याकाण्ड की खबर सुनकर वह कहता है, जो मनुष्य अच्छे हैं उनके प्रति इन लोगों की यह भीति मेरे लिए कुछ नवीन नहीं है। दुख तो इसी बात पर है कि जाति अपने श्रेष्ठ मनुष्यों को ही मार डालती है। या तो ये लोग दूसरों के पैरों के नीचे पड़े रहेंगे, अथवा क्षिप्त होकर अपने उपकारियों की ही हत्या करेंगे। अच्छे पुरुषों के साथ रहने की, उनके अनुकरण करने की न तो इनमें कोई शक्ति है, न चेतना ही है; और शायद—इनमें इसकी प्रवृत्ति भी नहीं है।

रोमास के शत्रुओं की संख्या बढ़ती जाती है। तिस पर भी हेमन्त ऋतु में, अगस्त के प्रारम्भ में, रोमास काजान से दुकान के लिए नाना प्रकार के

माल-असबाब ले आता है। रोमास का यहाँ से भागने का विचार नहीं है। परन्तु उसी दिन रात को रोमास की दुकान में आग लगती है। प्राण-पण चेष्टा करने पर भी अग्नि देवता के ग्रास से कुछ भी बचाया नहीं जा सकता। रोमास की बड़ी प्यारी पुस्तकें थीं। आलेक्सी अपने को विपन्न कर जलते हुए घर में घुस जाता है और उन पुस्तकों की रक्षा करने की चेष्टा करता है। परन्तु उससे कुछ विशेष लाभ नहीं होता। किसी प्रकार से जान बच जाती है। परन्तु इतने से ही छुटकारा नहीं मिलता। एक गरोह बनाकर गाँव के लोग रोमास को मारने आते हैं और कहते हैं कि यह आग रोमास ने स्वयं लगाई है। किसी ने इन लोगों को ऐसा समझाया है कि यह सब रोमास की बदमाशी है, असल में माल-असबाब कुछ भी जला नहीं है, सब कहीं पर छिपाकर रख दिया गया है। खैर, रोमास इससे डरता नहीं है। रोमास को प्रतिरोध करने के लिए दृढ़ सङ्कल्प देखकर भीरु ग्रामवासी डरकर चले जाते हैं।

रोमास ने उस मारिया डेरेंकोभ के साथ प्रेम किया था। उसके मन में यही आशा थी कि उसके साथ यहाँ आकर घर बनाएगा। परन्तु अब रोमास समझता है कि यहाँ पर रहना असम्भव है। घर बनाने का स्वप्न टूट जाता है। गाँव के दुकानदार को अपनी दुकान बेचकर रोमास फिर निरुद्देश यात्रा करता है। परन्तु इसके लिए रोमास के मन में मूर्ख गाँववालों के ऊपर क्रोध नहीं है। क्रुद्ध आलेक्सी से वह कहता है, तुम गाँववालों पर क्रुद्ध हो रहे हो? यह क्रोध अकारण है; ये लोग निर्बोध हैं, बस् और कोई बात नहीं है। निर्बुद्धिता ही ने इन्हें ईर्ष्यातुर कर रक्खा है। मनुष्य को दोष देना बहुत आसान है, ऐसा मत करना। शान्त होकर सब देखने और समझने की कोशिश करो। सब बदल जायगा, ऐसा नहीं रहेगा; धीरे-धीरे सब अच्छा होता जा रहा है। अच्छी तरह प्रत्येक विषय को समझने की चेष्टा करना, दोष लगाने के लिए चञ्चल न होना।

## ११

गाँव के ज़मींदार की इच्छा है कि आलेक्सी को रखकर उसके द्वारा दुकान चलायी जाय। परन्तु रोमास के चले जाने के साथ-साथ ही मानो

आलेक्सी का जीवन शून्य हो गया है। क्या लेकर, किस आशा से वह यहाँ रहेगा? जिस आदर्श के स्वप्न और साधना में उसके दिन बीत रहे थे अब उसका अन्त हो गया है। जिस जन-समूह को अन्धकार से प्रकाश में लाने की आशा से वह प्रफुल्ल हुआ था, आज वह देख रहा है कि वह कृषक सम्प्रदाय आज मनुष्यत्व के कितने नीचे के स्तर में पड़ा हुआ है। निराशा से उसका चित्ताकाश अँधेरा हो जाता है। रोमास की तरह कल्याण-कारियों को ये लोग पहचान नहीं सकते, 'समिति' बनानेवाला है ऐसा समझकर यही लोग रोमास को उस दिन आग में जलाकर मारने के लिए दलबद्ध होकर आये थे।

तथापि आलेक्सी को कुछ दिन यहीं पर रहना पड़ता है। धनी किसानों के खेतों में मजदूरी करके उसे जिन्दगी बसर करना पड़ता है। एक दिन बारिनौभ नामक एक किसान उससे कहता है, चलो, निकल पड़ें यहाँ से। वहाँ रहना उसको भी अच्छा नहीं लगता। कास्पियन समुद्र का स्वप्न बारिनौभ को उतावला कर रहा है। इसलिए ये दोनों मिलकर एकदिन एस्ट्राखान जानेवाली स्टीमर पर सवार हो जाते हैं। आलेक्सी फिर उसकी प्यारी वाल्गा नदी के ऊपर से रवाना हुआ है। बारिनौभ बहुत बकवादी है, बहुत सी बातों को बढ़ा-चढ़ाकर बोलने में उसे आनन्द मिलता है। उसकी बात-चीत सुनकर उन दोनों के ऊपर मल्लाह लोगों का एक प्रकार सन्देह उत्पन्न हो जाता है, जैसा रोमास के ऊपर ग्रामवासियों का हुआ था। इसलिए सिम्बिर्स्क पहुँचने पर वे इन लोगों को उतार देते हैं। अब बिना टिकट के यात्री बनकर रेल से ये दोनों सामारा आते हैं। वहाँ से फिर नाव में काम कर पाँच-सात दिन के बाद वे वाञ्छित कास्पियन समुद्र के तट पर पहुँचते हैं। यहाँ आकर वह एक दल मछुवाहों के साथ काम करना शुरू करता है।

परन्तु आलेक्सी स्थिर नहीं रह सकता, कुछ दिनों के बाद ही मछुओं का काम छोड़कर वह अलग रास्ता पकड़ता है। यह उसको स्वयं भी मालूम नहीं है कि यह कौन-सी बेचैनी है जिससे चञ्चल होकर वह देश देशान्तर में

घूम रहा है। केवल पथ उसे खींचता हुआ ले जा रहा है, उसका मन उसे कह रहा है, "यहाँ नहीं यहाँ नहीं, चलना है और कहीं।"

## १२

घूमते-घूमते वाल्गा प्रान्त के एक ब्रांच रेलवे लाइन पर डौबरिंका स्टेशन में क्लान्त आलेक्सी चौकीदार बना है। शाम छः बजे से सुबह छः बजे तक हाथ में लाठी लिए आलेक्सी गोदाम के चारों ओर घूमता रहता है; खासकर जिस दिन तूफ़ानी हवा बहती है, तुपार झञ्झा चलती है, उस दिन उसको और भी अधिक सचेत रहना पड़ता है। कोसाक लोग आटा चुराने आते हैं; पकड़े जाने पर रोना-पीटना शुरू कर देते हैं। घूस देना चाहते हैं। कभी-कभी यही लोग सुन्दरी लिओस्का को भेजते हैं। रात्रि के अन्धकार में लिओस्का आती है; पूर्ण युवती लिओस्का निर्लज्ज होकर अपने दैहिक सौन्दर्य को अनावृत कर स्टेशन के चौकीदारों को दिखलाती है और कामना-स्रोत में कूद पड़ने के लिए उनको प्रलुब्ध करती है। बहुत से चौकीदार इस दुरन्त प्रलोभन के हाथ आत्मसमर्पण करते हैं; इसी तरह लिओस्का आटा का बोरा संग्रह करती है। लिओस्का की यह जघन्य वृत्ति कोसाकों को अन्यायसंगत नहीं मालूम होती परन्तु उन लोगों के सामने लिओस्का का सिगरेट पीना वे बरदाश्त नहीं कर सकते। आलेक्सी के पास आकर भी लिओस्का रङ्ग जमाने की कोशिश करती है, उसके कानों में प्रलोभन की बाँसुरी बजाती है। परन्तु आलेक्सी कुछ नहीं कर सकता, उसका हृदय बाधा देता है। लिओस्का विस्मित होती है, असन्तुष्ट भी होती है। इस प्रकार से और कोई उसकी उपेक्षा नहीं करता; सभी तो उसे पाना चाहते हैं। आलेक्सी यथाशक्ति नरमी के साथ उससे इस घृणित निर्लज्जता की बात कहता है। लिओस्का अपने मन में लज्जित होती है, कहती है, कदर्य वैचित्र्य-हीनता ही ने मुझको निर्लज्ज बनाया है। थोड़ी देर चुप रहकर बहुत दूर के एक अज्ञात मठ का नाम लेकर आलेक्सी से उसका पता पूछती है, कहती है वहाँ पर प्रार्थना करने जाऊँगी। तुम पुरुषों के लिए ही तो मैं ऐसी पापिष्ठा बन गई हूँ। क्या करूँ, मेरा क्या दोष है? निःशब्द

होकर वह बैठी रहती है, इसके बाद ठण्ढी साँस लेकर वह उठ जाती है, कहती है, स्टेशन मास्टर के पास जाती हूँ। लिओस्का अन्धकार में अदृश्य हो जाती है, आलेक्सी विषण्ण नेत्रों से उसकी ओर ताकता रहता है। जीवन की उदासीनता और वैचित्र्यहीन शून्यता मनुष्य को अधःपतन की ओर ले जाती है। आलेक्सी इस बात को आज भी अच्छी तरह समझता नहीं।

बीच-बीच में आलेक्सी को रात के समय छुट्टी देकर स्टेशन मास्टर अपने घर बुलाता है। वहाँ एक विचित्र मजलिस बैठती है। पुलिस का दारोग़ा, पादरी महाराज, और भी इसी प्रकार के सङ्गी-साथी वहाँ आकर जुटते हैं; और कुछ नारियाँ भी आती हैं। हाँ, लिओस्का भी आती है। यहाँ का आनुष्ठानिक क्रिया-कर्म बड़ा ही विचित्र है। पहले तो मद्य-भोजन चलता है, इसके बाद नाच-गान शुरू होता है। आलेक्सी अपने मधुर कण्ठ से एक के बाद दूसरा गाना गाता जाता है। नृत्य और सङ्गीत से ये लोग विह्वल हो जाते हैं; कोई-कोई भावावेश में रोने लगते हैं। नशे में इन लोगों के हृदय का द्वार उन्मुक्त हो जाता है। बहुत देर तक नृत्यगीत के पश्चात् स्टेशन मास्टर पेट्रौभ्स्की एक अद्भुत हुक्म करता है। कहता है, औरतों के कपड़े उतारो। एक पुरुष आगे बढ़ आता है और वहाँ की नारियों को बड़ी सावधानी के साथ नङ्गी करने लगता है। इस आदमी को देखकर मालूम होता है मानो वह कोई गम्भीर धार्मिक अनुष्ठान कर रहा है। सभी के चेहरे पर एक गम्भीर प्रतीक्षा का भाव दिखाई देता है। इसके बाद वहाँ के उपस्थित सभी पुरुष नङ्गी नारी-देहों को घेरकर, उन्हें नाना प्रकार से निरीक्षण करते हैं और बीच-बीच में आनन्द-विह्वल होकर भिन्न-भिन्न अङ्गों की जी खोलकर प्रशंसा करते हैं। थोड़ी देर पहले इन लोगों ने जिस प्रकार से नृत्य संगीत का सम्भोग किया है, उसी प्रकार शिल्प-रसिकों की तरह वे दैहिक सौन्दर्य का भी आस्वादन करते हैं।

इसके बाद वे फिर दूसरे कमरे में शराब पीने और भोजन करने जाते हैं। मद्यपान और भोजन के पश्चात् वहाँ पर जो बीभत्स और उत्कट काम-लीला का प्रारम्भ होता है वह अवर्णनीय है। सुनने पर भी विश्वास करना कठिन होता

है। आलेक्सी द्रष्टा की तरह यह कामोत्सव देखता है। स्टेशन मास्टर के हुक्म से बाध्य होकर ही वह वहाँ जाता है यह बात नहीं है; उसका अदम्य कौतूहल उसे वहाँ पर खींच ले जाता है। यह विचित्र अनुष्ठान आलेक्सी को असह्य मालूम होता है। इन्द्रिय-सम्भोग का दृश्य आलेक्सी की आँखों में कुछ नया नहीं है। इस अनुष्ठान की आनन्दहीनता ही अद्‌भुत और असह्य है; इन लोगों के इस व्यापार में न तो हँसी है, और न पाशविक आनन्द ही है। असभ्य जातियों के धार्मिक अनुष्ठानों की तरह ही यह अनुष्ठान है।

## १३

अद्‌भुत वातावरण में इस प्रकार से तीन-चार महीने बीत गये। आलेक्सी का मन परित्राण के लिए चञ्चल हो उठता है। और भी एक कारण से आलेक्सी का यहाँ रहना कठिन हो उठता है। स्टेशन के काम के अलावा स्टेशन मास्टर के घर पर भी उसको काम करना पड़ता है। वहाँ पर रसोई बनानेवाली का एक प्रेमी है। एक दिन अकस्मात् असतर्कता में आक्लेसी उस प्रेमी के बारे में कुछ कटु शब्द कह बैठता है; बस, इसी से वह बृहदाकार स्थूलाङ्गिनी आलेक्सी से असन्तुष्ट हो जाती है। हुक्म पर हुक्म करके वह आलेक्सी के जीवन को असह्य कर देती है; कहती भी है; तुझे यहाँ से भगा-कर छोड़ूँगी।

यहाँ रहना असह्य हो जाने से आलेक्सी गद्यपद्य में एक अद्‌भुत आवेदन अधिकारियों के पास भेजता है; सम्भवतः यह आवेदन बहुत ही हास्यकर और करुण था। बदलकर आलेक्सी बोरिसोग्लेब्स्क स्टेशन पर आया। यहाँ पर तिरपाल, बोरा इत्यादि की मरम्मत और देखभाल करने का काम करना पड़ता है। बहुत दिनों के बाद यहाँ पर फिर एक बुद्धिजीवी दल के साथ आलेक्सी का परिचय होता है; इस दल के सदस्य प्रायः साठ हैं। इनमें से प्रायः सभी राजनीतिक अपराधी हैं; कुछ जेल से निकलकर आये हैं और कुछ निर्वासन-दण्ड भोगकर आये हैं। इनमें से अनेकों ने पर्याप्त लिखा-पढ़ा है; बहुत-से सदस्य विदेशी भाषा भी जानते हैं। इनमें से प्रायः सभी शिक्षित

हैं; नौविभाग और सामरिक विभाग के दो चार अफसर भी इसके सदस्य हैं। इस दल का नेता एडाडुरौभ है।

एक काम हाथ में लेकर उसमें सफलता दिखलाकर एडाडुरौभ के दल ने थोड़ा नाम भी कमाया है। यहाँ के रेलवे लाइन में माल-असबाब की चोरी होती है; स्टेशन मास्टर और अन्य रेलवे के अफसर भी इस अपकर्म में सहायता करते हैं। इस प्रकार की चोरी इत्यादि बन्द करने का काम इन लोगों ने अपने हाथ लिया है। इन लोगों का लक्ष्य भी गण-मानव की सेवा करना है; परन्तु और अन्य प्रकार के काम अपराध समझे जाते हैं इसी लिए ये लोग अब यही काम कर रहे हैं। लेकिन आलेक्सी देखता है कि साधारण लोग इस दल से डरते हैं और घृणा भी करते हैं। कई बार आलेक्सी साधारण लोगों के निदारुण कुसंस्कार और उसके भयानक परिणाम के बारे में इन शिक्षित लोगों से कुछ कहने की चेष्टा करता है; परन्तु वह देखता है कि ये जनता के सेवक जनसाधारण की अज्ञता के कारण विशेष व्यथित नहीं हैं। इनकी इस उदासीनता को देखकर वह समझ जाता है कि बुद्धिजीवी दल कितना भी आदर्शवादी और सेवानुरागी क्यों नहो, वह कभी जनसाधारण के साथ मिल नहीं सकेगा। क्योंकि जनता के सुख-दुख, उसके यथार्थ अभाव-अभियोगों के प्रति इन लोगों की निबिड़ आन्तरिक सहानुभूति नहीं है।

## १४

आलेक्सी चौकीदार का काम करता है और स्वप्न देखता है। वह नहीं जानता है कि वह शुभदिन कब और कैसे आवेगा, तथापि उसका हृदय स्वप्नचित्र खींचता जाता है। इस स्वप्न ही ने तो उसे इस दीर्घ काल तक बचा रखा है। इसी लिए आज भी जब वह किसी ओर परित्राण का रास्ता नहीं देखता है तब वह असम्भव स्वप्न देखकर दिन बिताता है। कवि हाइने और शेक्सपीयर उसके बहुत प्यारे हैं। ये उसके हृदय में नवीन आशा सञ्जीवित रखते हैं। तथापि कभी-कभी रात्रि के निःशब्द निःसीम अन्धकार में अकस्मात् उसके चारों ओर का वास्तविक जीवन सुस्पष्ट रूप धारण

कर उसके सामने खड़ा होता है। चारों ओर जीवन के दुस्सह अपचय को देखकर आलेक्सी उद्भ्रान्त हो जाता है। घण्टों स्तब्ध होकर रहता है और शून्य दृष्टि को फैलाकर वह लेटा या बैठा रहता है।

घृणा करना तो वह भूल जाता है। वह किससे घृणा करेगा? जीवन-विश्वविद्यालय के कौतूहली छात्र आलेक्सी ने एक सत्य का सन्धान पाया है। उसने यह समझा है कि गम्भीर दृष्टि से देखा जाय तो सभी मनुष्य बराबर हैं। जिसको किसी कारण से हम घृणा करते हैं उसके अन्दर भी ऐसी मानवता है जिसपर श्रद्धा करना पड़ता है। वह जो व्यभिचारिणी लिओस्का है उसके अन्दर भी मनुष्य के प्रति सुन्दर समवेदना है। विश्व-विद्यालय से निकाला हुआ छात्र बाजेनौभ भी यही कहता है; उसने भी जीवन का अपरिमित अपचय देखा है, तथापि रूस के लोगों के ऊपर उसकी भी अद्भुत श्रद्धा है; इसी बाजेनौभ को वह पसन्द करता है।

मई महीने के मध्यभाग में क्रुटाया स्टेशन पर आलेक्सी की बदली होती है। थोड़े ही दिनों के बाद उसके पास यह खबर आती है कि बाजेनौभ ने गोली मारकर आत्महत्या कर ली है। वह यह लिखकर गया है कि उसकी पुस्तकों में से दो पुस्तकें आलेक्सी पियेश्कौभ को दी जायँ हर्बर्ट स्पेन्सर की पुस्तक और वाभेल की हिस्ट्री आफ़ इंडक्टिव सायन्सेज़। जिसके प्रति उसकी श्रद्धा थी, जिस पर वह यथार्थ श्रद्धा करता था, जिसके साथ बैठकर उसने कितने दिन कितनी आलोचनाएँ सुनी हैं, देश के प्रति जिसकी गम्भीर ममता थी, वह मित्र जीवन के प्रति वीतराग होकर इस धरती से बिदा हो गया है। चिरबिदा लेने के समय उसने आलेक्सी को स्मरण किया था। आलेक्सी ने भी तो एक दिन इसी तरह प्रयाण करने की चेष्टा की थी।

बहुत हो गया है। रेल की चौकीदारी और अच्छी नहीं लगती। उम्र भी बीस साल की हुई है। अब आलेक्सी को अपनी जन्मभूमि निजनी-नौभगोरोट में उपस्थित होना। होगा सम्राट् के सेना विभाग के लिए वह योग्य है या नहीं इसकी परीक्षा देनी होगी। इसी लिए मई महीने में, एक वसन्त-प्रभात में, आलेक्सी जारिटसिन शहर—वर्तमान स्टालिनग्राड—से

निजनी के लिए रवाना होता है। आशा है कि क़रीब सात महीने में वह निजनी को पहुँच सकेगा।

## १५

फिर रास्तों पर घुमक्कड़ आलेक्सी के दिन बीतने लगे। कभी-कभी माल-गाड़ी पर सवार होकर भी वह कुछ आगे बढ़ जाता है, परन्तु अधिकांश पथ पैदल ही चलना पड़ता है। तातारों के छोटे-छोटे शहर, ग्राम और मठों में थोड़ा-बहुत काम कर वह अपने भोजन का प्रबन्ध कर लेता है। डॉन नदी के प्रान्त में से होकर, टैम्बौभ और रियाजान प्रदेश को पार कर, ओका नदी के तट से यात्रा करता हुआ आलेक्सी मास्को की ओर अग्रसर हो जाता है। रास्ते ही में टॉलस्टॉय का घर मिलता है; आलेक्सी उस महान् पुरुष का दर्शन करने जाता है, परन्तु दर्शन नहीं मिलता है। टॉलस्टॉय की पत्नी ने कहा कि वे किसी मठ में गये हैं।

अन्त में आलेक्सी सितम्बर के अन्तिम भाग में मास्को पहुँचता है। हेमन्त की वर्षा के कारण वनस्थली में विचित्र वर्णों की शोभा दिखाई देती है क्योंकि साल में हेमन्त का समय ही सुन्दर है। परन्तु आलेक्सी के लिए यह सुन्दर नहीं है। ठण्डी हवा बहने लगी है, इधर पैर के जूते के तले घिस गये हैं; ऐसी अवस्था में पैदल चलने में कुछ भी आराम नहीं है। ख़ैर, गार्ड साहब से कहकर एक पशुओं के डब्बे में कुछ बैलों के साथ उसने मास्को की ओर यात्रा की। रास्ता भर बैलों को घास खिलाने का भार उसी पर पड़ा। निजनी के क़साईख़ाने के यात्री, इन बैलों ने आलेक्सी को तङ्ग कर मारा। प्रायः डेढ़ दिन इनके साथ बिताकर क़रीब दो साल के पश्चात् आलेक्सी चिरपरिचित निजनी को लौट आया।

आलेक्सी साईबीरिया के निर्वासन से लौटे हुए सोमोभ के डेरे पर आ ठहरा। सोमोभ के साथ काज़ान शहर में उसके साथ परिचय हुआ था। आलेक्सी के लिए सोमोभ के यहाँ आकर आश्रय लेना अच्छा नहीं हुआ। सोमोभ के साथ ही एक भूतपूर्व ग्राम्य शिक्षक भी है। उसका नाम चेकिन है।

राजनीतिक कारणों से पुलिस की नज़र उस पर भी है। काज़ान में रहते समय आलेक्सी ने भी पुलिस की दृष्टि को आकर्षित किया था क्योंकि डेरेंकोभ का कारख़ाना सरकार के विरुद्ध आन्दोलन करनेवालों का एक केन्द्र है ऐसा करने के लिए पुलिस को ज़्यादा दिमाग़ ख़र्च नहीं करना पड़ा। इसलिए एक ही डेरे पर के ये तीन व्यक्ति पुलिस के बड़े अफ़सर जेनरल पौजनान्स्की के नज़रबन्द होकर रहेंगे इसमें विस्मित होने की कोई बात नहीं है! इतने ही में अक्तूबर के महीने ( १८८९ ई० ) में सेंटपीटर्सबर्ग से यह हुक्म मिला कि सोमोभ को गिरफ़्तार कर लो। जेनरल ख़ुश हो उठते हैं। परन्तु जब पुलिस सोमोभ को पकड़ने के लिए आई तो देखा गया कि सोमोभ और चेकिन दोनों चिड़ियाँ उड़ गई हैं। पर ठीक उसी समय आलेक्सी वहाँ पर आ पड़ा; पुलिस उससे उसके साथियों के बारे में पूछ-ताछ करने लगी। उसके नाना प्रकार के प्रश्नों के उत्तर में आलेक्सी ने जो कुछ कहा उससे पुलिस का ख़ुश न होना ही सम्भव है। इसलिए जब तक काज़ान से सोमोभ की गिरफ़्तारी की ख़बर न आई तब तक आलेक्सी को जेल में क़ैद रहना पड़ा।

जेल के अन्दर रहने के समय ही जेनरल के साथ आलेक्सी की भेंट हुई। आलेक्सी के काग़ज़ों में उसकी रचित कविता देखकर उन्होंने कहा—"तुम कविता लिखते हो? अच्छा है। कोरोलेंको को पहचानते हो? नहीं? वे बहुत बड़े लेखक हैं; टुर्गेनिएभ् की तरह हैं। यहाँ से छूटने के बाद उनको अपनी रचनाओं को दिखलाना; समझे?" जेनरल ऐसे कुछ ख़राब आदमी नहीं हैं; उनको एक शौक़ है—ऐतिहासिक घटना और ऐतिहासिक चरित्रों के स्मारक मेडलों का संग्रह करना। जेनरल ने आलेक्सी को अपना संग्रह दिखलाया और बड़े उत्साह के साथ उनका परिचय देने लगे। इसके बाद पत्नियों के बारे में आलोचना शुरू हुई। आलेक्सी को इस विषय में बहुत कुछ मालूम है देखकर जेनरल उस पर ख़ुश हो उठते हैं और अन्त में स्नेह के साथ ही उन्होंने कहा—"तुम्हें लिखना-पढ़ना चाहिए; हाँ, अवश्य ही लिखोगे, परन्तु देखो यह सब काम मत करना।"

## १६

आलेक्सी के लिए कोरोलेंको का नाम नया नहीं है। मास्को और पीटर्सबर्ग में अध्ययन करते समय ही गुप्त राजनीतिक समितियों में सम्मिलित होने के कारण, अध्ययन समाप्त करने के पहले ही विद्यालय से वे निकाल दिये गये थे। क़रीब दस साल पहले गिरफ़्तार होकर कोरोलेंको साइबीरिया में निर्वासित हुए थे। रोमास के साथ वहीं पर उनका परिचय हुआ था। कई साल निर्वासन में बीतने के बाद अब क़रीब चार साल हुए कि उन्हें निजनी-नौभगोरोट में आने की सम्मति प्राप्त हुई है। तब से आप यहीं पर हैं; साहित्य-जगत् में उनकी प्रतिभा-दीप्ति थोड़े ही समय के अन्दर फैल गई है। निजनी में साहित्यिक के रूप में कोरोलेंको का नाम सुपरिचित है। निर्वासन से लौटने के बाद जिस कहानी को लिखकर उन्होंने ख्याति प्राप्त की है, उसका नाम 'माकार का स्वप्न' है। परन्तु इसे पढ़कर आलेक्सी को विशेष तृप्ति नहीं मिली है। जेल मे जाने के पहले, एक बरसात के दिन रास्ते पर से जाते समय आलेक्सी के एक मित्र ने पास ही से गुज़रते हुए पैंतीस-छत्तीस वर्ष के एक महाशय को दिखलाकर कहा कि आप ही कोरोलेंको हैं। जेल से निकलकर जेनरल के उपदेश पर भी न जाने क्यों उसने उनके साथ भेंट करने की कोई कोशिश नहीं की।

जेल से निकल कर, सेनाविभाग में भरती होने की योग्यता की जाँच कराने के लिए, आलेक्सी को सरकारी डाक्टर के पास जाना पड़ता है। एक विशेष उम्र के प्रत्येक रूसी युवक को यह परीक्षा देनी पड़ती है। परीक्षा के बाद डाक्टर ने आलेक्सी को छोड़ दिया। कहा—"अयोग्य है, एक फेफड़े में बिलकुल आर-पार छेद हो गया है; इसके अतिरिक्त पैर की एक नस भी अस्वाभाविक रूप से फूली हुई है। परन्तु फ़ौज के एक अफ़सर कहते हैं—'कुछ परवाह नहीं; आलेक्सी, तुम गोलागोली के विभाग में स्वयंसेवक के रूप में काम करना चाहते हो इस प्रकार का एक आवेदन कर दो, मैं सब ठीक कर दूँगा। आवेदन स्वीकृत होने पर तुम्हें बहुत दूर, पामीर में जाना पड़ेगा।' यह सुनते ही आलेक्सी के अन्दर जो घुमक्कड़ है वह अधीर, चञ्चल

हो उठता है। एक बार वह फ़ारस जाते-जाते फिर न जा सका। अब पामीर, अफ़ग़ानिस्तान प्रभृति दूर के देशों में जाने के इस अवसर को वह किसी तरह हाथ से निकलने न देगा।

परन्तु अबकी बार मामा नहीं बल्कि पुलिस की रिपोर्ट ने उसका जाने का रास्ता बन्द कर दिया। सर्कार के काले रजिस्टर पर जिसका नाम चढ़ जाता है, भला उसके लिए जहाँ मन चाहे वहाँ जाना किस प्रकार सम्भव हो सकता है? इसलिए आलेक्सी को निजनी में ही अपना दिन बिताना पड़ता है और जीवन-पोपण के लिए कुछ काम भी करना पड़ता है। एक शराब के कारख़ाने में केरानी होकर कुछ दिन बीते; इसके पश्चात् वहाँ की गृहिणी के बदचलन कुत्ते को घूसा मारकर मार डालने के कारण वह तुरन्त उस काम से बरख़ास्त हो गया। इसके बाद शराब की आढ़त में काम मिला; वहाँ पर शराब के पीपों को ढकेलकर ले जाने से लेकर बोतल धोना, उनमें शराब भरना इत्यादि सभी काम करने पड़ते हैं और दिन भर घोर परिश्रम करना पड़ता है।

## १७

मास्को से बैलों के डिब्बे में बैठकर आने के समय आलेक्सी के पास एक कापी थी: उसमें उसकी लिखी हुई बहुत-सी कविताएँ थीं। उनमें ख़ासकर गद्य और पद्य में लिखा हुआ एक काव्य था। उसका शीर्षक 'बूढ़े ओक वृक्ष का गान' था। आलेक्सी को मालूम है कि मैं लिखा-पढ़ा नहीं हूँ; अपने बारे में उसके दिल में कोई झूठा घमण्ड भी नहीं है। परन्तु यह लेख उसका बड़ा ही प्रिय है; इसमें उसने विगत दस वर्षों के विचित्र जीवन की भावनाओं को लिपिबद्ध किया है। उसके मन में यह विश्वास है कि इस लेख के अन्दर ऐसा कुछ नयापन है जिसे देखकर लोग विस्मय से अभिभूत हो जायँगे। और इसके अन्दर जो आदर्शवाद है वह मनुष्य को एक पवित्र, सुन्दर और मङ्गलमय जीवन की ओर ले जायगा। इसी से प्रेरित हो मनुष्य ऐसे एक नवीन जगत् की सृष्टि करेगा जिसके स्वप्न ने आज तक आलेक्सी को जीवित रक्खा है।

निजनी आने के बाद लेखक कारोनिन के साथ आलेक्सी का परिचय हुआ है, परन्तु आज तक उसने इस प्रिय रचना को किसी के सामने रखने का साहस नहीं किया है। अब आलेक्सी ने निश्चय किया है कि कोरोलेंको को यह लेख दिखलाऊँगा। समसामयिक लेखकों में आप ही सबसे अधिक लोकप्रिय और प्रभावशाली लेखक हैं। केवल राजनीतिक कार्यकर्ता और लेखक के रूप में ही आपने बहुतों की दृष्टि को आकर्षित किया है ऐसी बात नहीं है। सबसे ऊपर आपका विशाल हृदय और लोक-सेवा के लिए अद्भुत तत्परता हैं।

टॉलस्टॉय और डास्टयेभ्स्की की वाणी दूसरे प्रकार की है; इन दोनों के मतवादों का मूल मन्त्र भगवद्विश्वास और निर्विरोध आत्मसमर्पण है। परन्तु रूस अब धीरे-धीरे कर्मपरता की ओर जाग्रत् हो रहा है, निष्क्रिय आत्म-समर्पण के विरुद्ध विप्लवी मनोवृत्ति का सक्रिय प्रतिरोध जाग्रत् हो रहा है। कोरोलेंको ने अपनी रचनाओं में मनुष्य के ऊपर विश्वास और आशा का प्रचार किया है। भगवान् जो कुछ करते हैं वह सभी हमारे कल्याण के लिए है ऐसा विश्वास और ऐसी आशा नहीं। इस प्रेमिक भावुक की रचनाओं में यही विश्वास ज्वलन्त हो उठा है कि एक दिन आवेगा जब मनुष्य वर्तमान की दीनता और हीनता का अतिक्रमण कर जायगा और उसके जीवन में कल्याण बुद्धि का, 'सत्यम् शिवम्' रूप का, विकास होगा।

रूस में प्रचलित मत और पथ की समालोचना विपज्जनक और दुस्साहसिक काम है। दो-एक पत्रों में सुधार-पन्थी लोगों ने रूसी समाज और राष्ट्र के सम्बन्ध में थोड़ा-बहुत लिखना प्रारम्भ किया है, यह तो सच है, परन्तु प्रायः इन रचनाओं को छद्मरूप में अपनी भावनाओं का प्रचार करना पड़ता है। रूपकात्मक कहानियों के द्वारा अथवा विदेशी मामलों के उपलक्ष में ये लेखक अपने हृदय के गुप्त अभिप्राय को केवल इशारे के द्वारा व्यक्त करने की चेष्टा करते हैं। कोरोलेंको के समसामयिक सांवादिक और साहित्यिक लोग इसी तरह रूसी जनमत को तैयार करने का काम कर रहे हैं। कोरोलेंको और उनके सहकर्मी माइखेलौभ्स्की 'रूस-सम्पद' ( Russkoye Bogatstvo ) शीर्षक जो पत्रिका निकाल रहे हैं उसकी प्रभाव-

समवेदनापूर्ण स्वर में वह पूछते हैं—"तुम्हारा जीवन बड़ी कठिनाई से चल रहा है न ?"

आलेक्सी की पहली रचना ! कौन ऐसा लेखक है जो अपनी प्रथम रचना को आश्चर्यजनक नहीं समझता ? इसी लिए नाना प्रकार की भूलों को देखकर उसका हृदय निराशा से भर जाता है। और अच्छी तरह देखने के लिए कोरोलेंको उस लेख को रख देते हैं। कई रोज़ बड़ी निराशा में बीतने लगे। परन्तु कोरोलेंको की बातों की सत्यता ने उसको चकित कर दिया। इन्हीं ने सबसे पहले शैली के प्रति, शब्दचयन के प्रति उसकी दृष्टि को आकर्षित किया। उनका एक कहना आलेक्सी को बहुत अच्छा लगा है; उन्होंने उस दिन कहा था कि कहानी ऐसी होनी चाहिए जो कि पाठक के हृदय पर लाठी की तरह आघात करे। पाठक को चेतना हो जाय कि वह कितना भारी पशु है !

लगभग पन्द्रह दिन के बाद आलेक्सी को अपना लेख वापस मिला। उसमें से दो पन्नों की कविता रख दी गई है। कोरोलेंको ने लिखा है, 'गान' से तुम्हारी शक्ति के सम्बन्ध में कुछ निश्चय करना कठिन है, परन्तु मालूम होता है कि तुममें कुछ शक्ति है। अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर कुछ लिखकर मुझे दिखलाना। मैं कविता का विचारक तो नहीं हूँ, परन्तु तुम्हारी रचना अर्थहीन मालूम हुई, यद्यपि कहीं-कहीं स्वच्छ और ज़ोरदार पंक्तियाँ हैं।

अब उसके साहित्यिक होने का स्वप्न चूर्ण हो गया है। अपनी अत्यन्त प्रिय रचना को उसने सर्वभुक् वैश्वानर को उत्सर्ग कर दिया है। नहीं, लेखक होने का दुःस्वप्न टूट गया है। आलेक्सी लिखना छोड़ देता है। विप्लवियों के साथ उसका मिलना-जुलना चलता रहता है। बुद्धिजीवियों की सभा-समितियों में वह सम्मिलित होता है, उत्तेजनापूर्ण आलोचना और तर्क-वितर्क भी सुनता है। रास्तों पर, सभा-समितियों में कोरोलेंको की गम्भीर मूर्ति उसके सामने नहीं आती ऐसी बात नहीं है। परन्तु आलेक्सी उनसे दूर ही रहता है।

आलेक्सी यह जानता है कि विप्लवी बुद्धिजीवी लोगों में अनेकों की धारणा ही ग़लत है, परन्तु वह तब भी उनकी आन्तरिकता का सम्मान करता है। कोरोलेंको को केन्द्र करके एक आदर्शवादी दल की सृष्टि हुई है; व्यङ्ग से लोगों ने उसका नाम रक्खा है—'विज्ञ दार्शनिक-समाज'। बहुत-से स्वार्थान्वेषी लोग कोरोलेंको के शत्रु बन गये हैं, परन्तु वह उन लोगों से बहुत ऊँचे हैं। कोरोलेंको का प्रभाव समाज की उच्च श्रेणियों में भी फैलने लगता है। कोरोलेंको अन्याय और अविचार के भयङ्कर शत्रु हैं, उनकी तीव्र और तीक्ष्ण समालोचना के लिए वे सर्वदा ही उद्यत रहते हैं। नारौडनिक होने पर भी गण-मानव के बारे में उनके मन में कोई अन्ध-धारणा नहीं है। अवश्य इसी लिए बहुत से लोग उन्हें कुछ सन्देह की दृष्टि से देखते भी हैं।

इस समय धीरे-धीरे नारौडनिकों में से बहुत-से मार्क्स पन्थी होने लगते हैं। मार्क्स के ऐतिहासिक-निर्णयवाद ( Historical Determinism ) का विकृत अर्थ करते हुए कुछ लोग ऐसा कहने लगते हैं कि जो होने को है वह जब इतिहास के अलंघ्य नियम से होगा ही, तब फिर हम लोगों की चेष्टा का क्या प्रयोजन है ! पहले जो आतङ्कवादी देश के उद्धार के लिए निःस्वार्थ भाव से प्राण देने को तैयार थे, वे भी इस मतवाद के मोह से धीरे-धीरे अपने आदर्श से गिरने लगते हैं। आलेक्सी की नस-नस में आदर्शवाद भरा है, इसी लिए जनता की सेवा में जिन नारौडनिकों ने जीवन उत्सर्ग किया है उनके सामने उसका हृदय श्रद्धा से झुक जाता है। गण-मानव की सेवा में अग्रगण्य कोरोलेंको के प्रति इसी लिए उसके मन में बहुत ही श्रद्धा है, यद्यपि वह अब स्वयं मार्क्स-पन्थ की ओर आकृष्ट हो रहा है।

## १९

प्रायः दो साल निजनी में बीत चुके हैं। जीवन के विषय में जो उत्सुकता, जो प्रश्न उसे चञ्चल कर ले चला है, उसी के कारण उसने बहुविचित्र मनुष्यों को देखा है। ज्यों-ज्यों दिन बीत रहे हैं, उसका मन उतना ही अधिक प्रश्नों से जर्जरित होता जा रहा है। जीवन का यथार्थ लक्ष्य क्या है, उसकी

परिपूर्ण सार्थकता किसमें है, इस प्रश्न का उत्तर उसे कहीं नहीं मिला। वह सोचता है, सम्भवतः दर्शन शास्त्र पढ़ने से इस प्रश्न का उत्तर मिल सके। कोई-कोई लायल और लबक की पुस्तकों को पढ़ने की सलाह भी देते हैं। एक व्यक्ति उसे लिउइस का दर्शन शास्त्र का इतिहास देता है। वह उन पुस्तकों को पढ़ता है, परन्तु ये उसको अत्यन्त नीरस मालूम होती हैं। वह जिस समस्या को हल करना चाहता है, उसका समाधान इनसे बिलकुल नहीं होता। हममें से प्रत्येक के जीवन की जो जीवन्त समस्या है, भला उसका समाधान किसी पुस्तक में या किसी के वाक्यों में मिलना सम्भव है ?

संयोगवश एक छात्र के साथ उसकी मित्रता होती है, उसका नाम निकोलाइ है। रसायन शास्त्र का छात्र होते हुए भी दर्शन शास्त्र के प्रति उसका गहरा अनुराग है; हेगेल, स्वेडेनबोर्ग, नीट्शे—इनके अध्ययन में वह मग्न रहता है। अपने शरीर के ऊपर नाना प्रकार के रासायनिक प्रयोग भी करता रहता है। इस प्रकार प्रयोग करते हुए एक बार तो मरते-मरते बच गया। इसी कारण उसके दाँत भी सब गिर गये हैं। विचित्र स्वभाव का युवक है ! कुईनीन लगाकर तृप्ति के साथ वह रोटी खाता है; कहता है कि इससे यौनकामना की निवृत्ति होती है। [ भावीकाल में कीएभ् विश्वविद्यालय में वह सहकारी अध्यापक होता है और वहाँ पर रासायनिक परीक्षा करते हुए उसकी मृत्यु भी होती है। ] आलेक्सी निकोलाइ के पास अपनी समस्याओं की बात कहता है और उसी सिलसिले में निकोलाइ भी उसको नाना प्रकार के दार्शनिक मत समझाता है। एक दिन निकोलाइ उसे कहता है—देखो, मैंने तुमसे जो कुछ कहा है वह सब पाँच शब्दों में कहा जा सकता है—'अपने मस्तिष्क पर निर्भर रहो।' किसी भी मतवाद को चरम सत्य न समझना और न किसी भी मनुष्य की तरह होने की चेष्टा करना। कौन कह सकता है कि मैं ग़लती पर नहीं हूँ ? ये बातें आलेक्सी को बहुत अच्छी लगती है। परन्तु निकोलाइ ने जब यह समझाया कि बाहरी किसी भी मतवाद को स्वीकार करने का उपाय नहीं है, तो वह और भी उद्भ्रान्त और विचलित हो जाता है। उसके पाँव तले से वास्तविक जीवन की नींव खिसकने लगी। उसे ऐसा प्रतीत होने लगा कि मैं एक असत्य छाया के राज्य में प्रवेश कर रहा हूँ।

इसी तरह आलेक्सी की मस्तिष्क-विकृति का आरम्भ होता है। निकोलाइ की बात सुनते-सुनते मानो आलेक्सी एक दूसरे जगत् में आ जाता है। उसके सामने नाना प्रकार की उद्भट विभीषिकाएँ दिखाई देने लगती हैं। मुख नहीं है, आँख नहीं है, इस प्रकार मनुष्य के मस्तक, विच्छिन्न हाथ-पैर उसकी आँख के सामने से गुज़रने लगते हैं, उसके साथ-साथ बड़ी-बड़ी मकड़ियाँ चलती हैं, छोटे-छोटे प्राणी शैतानों के रूप धारण कर उसके सामने खड़े होते हैं। इसी प्रकार की अजस्र विभीषिकाएँ उसे घेर लेती हैं। उसके इस अद्भुत मानसिक विकार के समय निकोलाइ भी मास्को चला जाता है। कई दिनों तक उसके अर्धोन्मत्त मस्तिष्क के अन्दर से अविराम विभीषिकाओं का प्रवाह चलने लगता है। किसी-किसी दिन रात के समय कमरे के भीतर वह चिल्ला उठता है। एक दिन उसकी इस अस्वस्थ अवस्था को देखकर कई पुलिस के आदमी उसे पकड़कर डेरे पर पहुँचा जाते हैं। अब इस जाग्रत्-स्वप्न की दशा में कौन सच है और कौन झूठ, यह भी उसकी समझ में नहीं आता है।

परन्तु ऐसी अवस्था में भी आलेक्सी को रोज़ी कमानी पड़ती है। घर बैठे रहने से कैसे चल सकता है? लानिन नामक एक एटॉर्नी का वह कर्मचारी है। यह लानिन बड़े ही अच्छे आदमी हैं, वे आलेक्सी को बहुत ही प्यार करते हैं, उसके लिखने-पढ़ने में भी पर्याप्त सहायता देते हैं। परन्तु इस मानसिक विकार की अवस्था में एक दिन आलेक्सी उनके जरूरी काग़ज़ात के ऊपर अपने अनजान में अपने जीवन की कहानी को लिख रखता है। ग़ुस्सा किसको नहीं आता। लानिन क्रुद्ध होते हैं, कहते हैं, तुम्हारा दिमाग़ ख़राब हो गया, या मेरे साथ दिल्लगी कर रहे हो? आलेक्सी विस्मित दृष्टि से देखता है कि अदालत के काग़ज़ात पर उसने कविता लिख रक्खी है। उसे ख़ुद भी मालूम नहीं कि उसने कब ऐसा लिखा है। सन्ध्या के समय लानिन ने स्निग्ध स्वर से कहा—तुम्हें क्या हुआ? तुम तो तन्दुरुस्त नहीं मालूम होते हो। कुछ दिनों से तुम बहुत दुबले मालूम हो रहे हो। आलेक्सी कहता है—हाँ, रात को नींद नहीं आती। लानिन कहते हैं—डाक्टर के पास जाओ।

## २०

सचमुच में आलेक्सी को नींद नहीं है। मानसिक विकार के प्रारम्भ के बहुत पहले से वह उन्निद्र रोग से पीड़ित है। यौवन के उन्मेष से उसके शरीर और मन में प्रबल उद्दीपन की सृष्टि हुई है। वह अपने जीवन को नाना प्रकार के कर्मों में विकसित करना चाहता है। उसने तरह-तरह की किताबें पढ़ी हैं; नाना प्रकार के आदर्शवादियों के साथ रहने के कारण उसके हृदय में भी आदर्शवाद का जागरण हुआ है। उसने एक सुन्दर स्वप्न को अपने अन्तरासन में प्रतिष्ठित कर उसकी पूजा की है। परन्तु आज तक उसने उस स्वप्न को अपने जीवन में सत्यरूप में नहीं पाया है। कितनी रात जागकर ही बीत जाती हैं; एक विकट प्रश्न लेकर निःशब्द वेदना से वह विह्वल रहता है।

ऐसी ही एक ग्रीष्म की रात को वह वाल्गा के तट पर अटकस नामक एक ऊँचे टीले पर बैठा था। वृक्षों के बीच में से वाल्गा नदी दिखाई दे रही थी। नदी के उस पार विस्तीर्ण प्रान्तर था। रात में क़रीब दो बज रहे थे। कोरोलेंको कब उसके पास आकर खड़े हुए उसको पता भी न चला। कोरोलेंको ने कहा—स्वप्न में इतने डूब गये हो? इतनी रात तक बाहर क्यों? आलेक्सी ने उत्तर दिया—आप भी तो वैसे ही हैं। 'हाँ, बात ठीक है' कहकर कोरोलेंको उसके पास बैठ जाते हैं और नाना प्रकार की बातें होने लगती हैं। कोरोलेंको ने सुना है कि हाल में आलेक्सी स्क्वर्टसोभ् ( Skvortsov ) नामक एक मार्क्सपन्थी के दल में सम्मिलित हुआ है। कोरोलेंको उससे पूछते हैं कि वह किस प्रकार के आदमी हैं। आलेक्सी कहता है कि स्क्वर्टसोभ् ने एक लड़की के सामने यह साबित किया है कि कोरोलेंको एक ख़राब आदर्शवादी दार्शनिक हैं और वे नारौडनिक दल के मृत शरीर को जिलाने की चेष्टा कर रहे हैं।

थोड़ी देर तक चुप रहकर कोरोलेंको कहते हैं—किसी भी मतवाद को जल्दबाज़ी से ग्रहण न करना।

इसके बाद आदर्शवादी कोरोलेंको कहने लगते हैं कि मनुष्य का जीवन कैसा विचित्र और जटिल है, उसे किसी सरल नियम के अधीन करना असाध्य है। इसलिए सभी प्रकार के मतों को ध्यानपूर्वक श्रद्धा के साथ सुनना चाहिए। कहते-कहते ये आश्चर्यजनक मनुष्य विषण्ण हो उठते हैं, कहते हैं, मनुष्य के विचित्र विभेदों का—उनके भिन्न-भिन्न सम्बन्धों का - समन्वय करना भी कितना कठिन है! यह कहकर कोरोलेंको जाने को उद्यत होते हैं। अब आलेक्सी अपने अन्तर्जीवन की द्विधा-द्वन्द्व-समस्याओं की बातें करने लगता है; कुछ दूर पर खड़े रहकर बड़े ध्यान से वे उसकी बातें सुनते हैं। इसके बाद वे कहते हैं—तुम्हारी बातें बहुत कुछ सही हैं, तुम्हारी पर्यवेक्षण करने की शक्ति तीक्ष्ण है। मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि तुम इन प्रश्नों को लेकर परेशान हो। आलेक्सी के कन्धे पर हाथ रख, हँसकर वे कहते हैं—मैंने सुना था कि तुम कुछ और ही प्रकार यानी तरल प्रकृति के हो, और बुद्धिजीवियों को शत्रु समझते हो।

फिर कोरोलेंको विस्तार के साथ मानव सभ्यता में बुद्धिजीवियों के पर्याप्त दान की बातें करने लगते हैं। उन लोगों की किताबी विद्या की ओर झुकाव और जीवन के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध के अभाव को मानते हुए कोरोलेंको उनके गुणों की ओर आलेक्सी की दृष्टि को आकर्षित करते हैं।

बातचीत करते-करते पूर्व आकाश में उषा का अविर्भाव होता है। दोनों घर की ओर रवाना होते हैं। चलते हुए अकस्मात् वे आलेक्सी से पूछते हैं—हाँ, लिख तो रहे हो न? उत्तर आता है—'नहीं'। 'क्यों?' 'समय नहीं है।' कोरोलेंको कहते हैं—"बड़े अफ़सोस की बात है। अगर चाहो तो समय मिल सकता है। सचमुच मैं समझता हूँ कि तुममें शक्ति है।"

## २१

और भी कितनी रातें इसी तरह निद्राहीन होकर बितानी पड़ी हैं कौन जानता है?

आलेक्सी डाक्टर के पास जाता है। डाक्टर कहते हैं—'दोस्त, पुस्तक पढ़ना बन्द करो। ऐसा तन्दुरुस्त और बलिष्ठ शरीर रहते भी इस प्रका

की बीमारी लज्जा की बात है। शारीरिक परिश्रम की बहुत ही आवश्यकता है। इसके अलावा औरतों के साथ...कोई सम्बन्ध अब तक नहीं है? ओः इसी लिए ऐसा हो रहा है। देखो, ब्रह्मचर्य दूसरों के लिए है। तुमको ऐसी एक औरत चाहिए जो तुमसे मुहब्बत करे। समझे? उसी से यह सब बीमारी अच्छी हो जायगी।' कहकर डाक्टर ने नुस्ख़ा लिख दिया।

उनकी बातें अप्रिय और ख़राब लगती हैं, आलेक्सी को अच्छी नहीं लगतीं। लेकिन अन्त की बातें उसके दिल के अन्दर घुस जाती हैं। अपने से वह आज इस बात को छिपा नहीं सकता कि उसके हृदय में नारी के लिए तृष्णा प्रबल रूप में जाग उठी है। उसके आदर्शवाद ने, उसके 'रोमैन्टिक' प्रेम के आदर्श ने ही इतने दिनों तक उसे नारी के साथ स्थूल दैहिक सम्पर्क से दूर रक्खा है। नारी के साथ यथेच्छ व्यभिचार उसने पर्याप्त देखा है, परन्तु वह कभी नारी को स्थूल कामना की सामग्री के रूप में नहीं देख सका। वह अपने मन ही मन नारी से हृदय के सुन्दर प्रेम की याचना करता आया है; इसी लिए अवसर पाने पर भी वह दैहिक लालसा को प्रथम स्थान नहीं दे सका।

शरीर को अस्वीकार करना निरापद नहीं है। इसी लिए उसकी अवरुद्ध कामना ने उसके मस्तिष्क पर आक्रमण किया है। दीर्घ काल तक उसने यौवन-क्षुधा को दबा रक्खा है। उसका दुर्भाग्य है कि उसके प्रथम यौवन का प्रेम एक ऐसी नारी पर आश्रित है जिसे वह कभी पाने की आशा नहीं कर सकता है। उस विक्षुब्ध प्रेम ने ही उसके मानसिक विपर्यय को और भी प्रबल कर दिया है। कैसे विचित्र उपाय से भाग्य ने उसे उस नारी के सामने उपस्थित किया है!

## २२

अधिक दिन की बात नहीं है। आलेक्सी के मित्रों ने निश्चय किया कि ओका नदी पर सैर करने जायँगे। फ़्रांस से आये हुए राजनीतिक कारणों से प्रवासी पोलैंड देश के मि० बोलेस्लाभ कौसीक को भी उनकी

पत्नी के साथ न्यौता देने की बात उठी। उन अपरिचित दम्पति को निमन्त्रण देने के लिए आलेक्सी ही को जाना पड़ा।

अनमने होकर, न जाने क्या सोचते हुए कोई भी सूचना न देकर आलेक्सी ने उनके कमरे में प्रवेश किया। असंवृत अवस्था में अस्त-व्यस्त अपने कपड़ों को सँभालते हुए बोलेस्लाभ क्रुद्ध होकर बोल उठे—"क्या चाहते हो ? कमरे के अन्दर आने के पहले दरवाज़े पर खटखटाना चाहिए।" पीछे से एक तरुणी नारी कौतुक के साथ बोल उठी—"ख़ासकर विवाहित दम्पति के कमरे में आने के पहले।" आगे आकर युवती ने विचित्र पोशाक पहने हुए आलेक्सी को हाथ पकड़कर आदर के साथ कुर्सी पर बैठाया, फिर पूछा—"आपका यह विचित्र वेश क्यों है ?" सचमुच विचित्र ही था! पहनने में पुलिस की तरह नीले रङ्ग का पैजामा, कमीज के बदले रसोइयों का सफ़ेद रङ्ग का कोट, पैरों में शिकार का बूट जूता ( वह भी दूसरे का ! ), सिर पर इटालियन हैट। आलेक्सी ग़ुस्सा हो जाता है। कहता है—"विचित्र कैसे ?" युवती ने तुरन्त कहा—"अहा, ग़ुस्सा न कीजिए !" विचित्र है यह युवती। इसके ऊपर क्रोध करना भी मुश्किल है ! उसका डाढ़ी-वाला पति बिस्तरे पर बैठकर सिगरेट पी रहा था। उस व्यक्ति की ओर इशारा करके आलेक्सी फिर एक अद्भुत प्रश्न कर बैठा—आपके पिता हैं या भाई ? उस व्यक्ति ने दृढ़ और गम्भीर स्वर में भूल को सुधार कर कहा—"पति।" युवती ने प्रश्न किया—"क्यों बताइए तो ?" पति के उत्तर को सुनकर आलेक्सी तुरन्त कोई जवाब न दे सका; थोड़ी देर चुप रहकर बोला—"माफ़ कीजिएगा।"

निमन्त्रण देकर आलेक्सी जब निकल आया तब उसे ऐसा मालूम होने लगा मानो उस तरुणी नारी की मधुर हास्यच्छटा से उसका सारा हृदय उद्भासित हो उठा है। सारी रात उसने इसी आनन्द में घूमते हुए बिता दी। इतने दिनों बाद उसने आनन्द को पाया है; ऐसी ही हँसी का उसके लिए एकान्त प्रयोजन है। आलेक्सी का हृदय समवेदना से पूर्ण हो उठता है, और बार-बार उसके मन में यही ख़याल होने लगता है कि वह डाढ़ीवाला मनुष्य उसके बिलकुल लायक़ नहीं है।

## २३

इसके बाद का दिन आलेक्सी के जीवन का उज्ज्वलतम दिन था। एक नाव पर श्रीमान् बोलेस्लाभ और दूसरी नाव पर श्रीमती बोलेस्लाभ। ओल्गा कामिन्स्की उस युवती का असल नाम था। श्रीमती की नाव का डाँड़ आलेक्सी के हाथ में था। 'पिकनिक' के स्थान पर पहुँचकर आलेक्सी ने ओल्गा को अपनी गोद में लेकर उतार दिया। उसकी उस समय की अनुभूति अपूर्व थी, उसके जीवन में नारी के प्रति प्रेम की पहली पुलकपूर्ण अनुभूति यही थी। ओल्गा को भी अच्छा लगा, उसने कहा—आपके शरीर में इतनी ताक़त है। आलेक्सी गर्व के साथ कहता है कि सात मील क़रीब तो मैं आसानी से ही आपको ले जा सकता हूँ। [ अवश्य यह उसकी अत्युक्ति थी यह कौन नहीं समझता !...तथापि...ऐसे मुहूर्तों में मिथ्याभाषण शास्त्रा-नुसार भी ग्राह्य ही है ! ] उत्तर सुनकर युवती ने आलेक्सी को अपनी मीठी हँसी की धारा से अभिसिञ्चित कर दिया।

एक ओर से एक विचित्र युवक को जानने का कौतूहल और दूसरी ओर से आलिङ्गन-तृषार्त युवक के प्रथम प्रेम की सुतीव्र कामना— ऐसी हालत में उन दोनों के परिचय का अन्तरङ्ग घनिष्ठता में परिणत होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। आलेक्सी को मालूम हुआ कि यह युवती उससे दस साल बड़ी है और वह कालेज में भी पढ़ी हुई है। पेरिस में उसने चित्र कला और धात्री-विद्या का भी अध्ययन किया है। अवश्य, दाई के काम में वह चार जगह गई थी और एक ही जगह उसे सफलता प्राप्त हुई थी। इस-लिए उसने यह काम करना छोड़ दिया है।

आलेक्सी का यह गहरा प्रेम आनन्द के साथ ही साथ तीव्र वेदना का भी कारण होता है। प्रेम के बारे में उसके मन में बहुत ऊँची कल्पना रहने के कारण इसे वह मामूली दैहिक व्यापार में परिणत नहीं कर सकता है। उसकी यह धारणा है कि जिस दिन वह यथार्थ प्रेमालिङ्गन प्राप्त होगा, उस दिन वह एक नवीन मनुष्य में परिणत होगा।

नदी में नहाने के समय आलेक्सी पानी में कूदता है और छाती पर चोट खाकर अस्पताल में जाता है। ओल्गा उसे देखने जाती है। जो बात दोनों के मन में प्रकाश के लिए संग्राम कर रही थी, अब वह प्रकट हो जाती है। दोनों परस्पर प्रेमासक्त हैं, दोनों को यह बात माननी पड़ी। परन्तु कई दिन के बाद ओल्गा ने आलेक्सी को समझाकर कहा कि उन दोनों के मिलन में कठिनाई है। पहले तो उसकी उम्र आलेक्सी की उम्र से बहुत अधिक है; इसके अलावा आलेक्सी को अब भी और पढ़ना-लिखना चाहिए, अभी इस उम्र में शादी कर सन्तानों का दायित्व अपने ऊपर लेना ठीक नहीं है। ये बातें कुछ झूठ नहीं हैं। माता की तरह ओल्गा उसे सब समझाकर कहती है। ओल्गा के प्रति उसकी श्रद्धा और प्रीति और भी गहरी हो जाती है। अपने मन में वह प्रतिज्ञा करता है कि इस दया का प्रतिदान वह अवश्य ही किसी-न-किसी तरह देगा।

ओल्गा ने कहा कि अपने पति से सब कहकर तब वह अपना कर्तव्य निर्णय करेगी। अन्त में ओल्गा रोती हुई आलेक्सी से कहती है कि मिलन असम्भव है। ओल्गा के छोड़ देने से उसका बेचारा पति वृन्तच्युत फूल की तरह सूखकर मर जायगा। ओल्गा ने अपने पति को सब हाल बताया है; बोलेस्लाभ के हृदय में भयानक कष्ट हो रहा है। आलेक्सी कहता है, मुझको भी तो कष्ट हो रहा है। ओल्गा कहती है—तुम युवक हो, कष्ट सहने की शक्ति तुममें है।

आलेक्सी विदा लेता है। इस जगत् में जो दुर्बल है उसके प्रति असीम घृणा होती है। अर्धोन्माद की तरह मानसिक अवस्था लिये आलेक्सी निजनी छोड़कर चला, क्योंकि यहाँ रहकर स्मृति के असह्य दंशन को वह बरदाश्त नहीं कर सकेगा। जीवन में पहली बार उसने समग्र हृदय से जिस नारी की कामना की, उसे उसने पाया नहीं। दुर्बल, असहाय स्वामी के प्रति करुणा ने एक दुर्लंघ्य प्राचीर की तरह उसे उसकी एकान्त-प्रार्थिता से अलग कर रक्खा! उसका जीवन व्यर्थ हो गया!

## २४

१८९० ई० का वसन्तकाल। आलेक्सी निजनी छोड़कर सिम्बिर्स्क की ओर रवाना हुआ। उसने सुना है कि कुछ टॉलस्टाय-पन्थी वहाँ पर एक उपनिवेश स्थापित कर जीवन की एक नवीन साधना में प्रवृत्त हुए हैं। उन्होंने जीवनयापन का कौन-सा सीधा रास्ता निकाला है यही देखने के लिए वह जा रहा है। आलेक्सी वाल्गा की तटभूमि से नदी के भाटे की ओर जारिटसन तक जाता है। वह कहीं भी स्थिर नहीं रह सकता। हृदय की शून्यता और व्यर्थता उससे केवल यही कह रही हैं—"चलो, दूर चलो, और भी दूर!" मई के महीने में वह डॉन नदी की तटभूमि में आ पहुँचता है; वहाँ से यूक्रेन पार होकर बेस्साराबिया में से वह रूमानिया में घुसने की चेष्टा करता है। फिर लाचार होकर वह क्रिमिया की ओर चलता है।

कुछ दिन ओडेसा बन्दरगाह पर उसने मज़दूरी करके बिताये। यहीं पर एक आवारा जार्जिया-निवासी युवक के साथ उसकी भेंट होती है। उसका घर काकेशिया के तिफ़लिस शहर में है। उसने बताया कि मेरा रुपया-पैसा सब चोर ने ले लिया है, अब मैं नहीं जानता कि कैसे सुदूर मातृभूमि को लौट सकूँगा। इसलिए मैं बेकार ओडेसा के बन्दरगाह पर घूम रहा हूँ। मैं धनी का लड़का हूँ, कुली का काम नहीं कर सकता; काम करने की इच्छा भी नहीं है। आलेक्सी को दया आती है; सम्भवतः दूर देश में जाने का बहाना मिलने के कारण घुमक्कड़ आलेक्सी की अन्तरात्मा मन ही मन प्रसन्न भी होती है। इस कारण उस युवक को साथ लिये वह सुदूर तिफ़लिस के लिए पैदल ही रवाना होता है।

अद्भुत वह युवक, मनुष्य कहलाने के अयोग्य है। मज़दूरी कर आलेक्सी उसे खिलाता है और वह निःसङ्कोच उसे केवल स्वीकार ही नहीं करता, बल्कि आलेक्सी को इस दया के कारण बेवक़ूफ़ समझ दिल्लगी भी करता है। परन्तु आलेक्सी ने अपने घुमक्कड़ जीवन में बहुत-सी असम्भव और अप्रत्याशित बातों को सच निकलते देखा है। उसने घुमक्कड़, गृहहीन

और कङ्गालों में दुःख के साथ संग्राम करने का असामान्य साहस देखा है; और उन्हीं में कल्पनातीत नीचता, क्रूरता, हृदयहीनता, स्वार्थपरता और विश्वासघात भी देखा है। उसके स्मृति-भाण्डार में इस प्रकार की अपूर्व, अति विचित्र और परस्पर-विरोधी अनुभव-राशि सञ्चित होती जाती है; आलेक्सी पियेश्कौभ के तीव्र-तिक्त जीवन में भावी लेखक गोर्की का चित्रोपकरण सञ्चित होता जाता है।

काले सागर के प्रान्त से होकर बहुत दुःखपूर्ण अनुभवों को प्राप्त करता हुआ, १८९१ ई० के अन्तिम भाग में, आलेक्सी जार्जिया की राजधानी तिफ़लिस में आ पहुँचा। साथी युवक ने उसे यह भरोसा दिया था कि मेरा धनी पिता तुम्हें पर्याप्त पुरस्कार देगा। शहर में लौटकर वह युवक टूटी-फूटी पोशाक में दिन में घर लौटना नहीं चाहता, उसे लज्जा आती है; इसलिए वह रात को आलेक्सी से कुछ भी न कहकर चल दिया। आलेक्सी को फिर उसका पता नहीं लगता; उसे खोजने की प्रवृत्ति भी नहीं होती।

## २५

प्राकृतिक वैचित्र्य की दृष्टि से तिफलिस का दृश्य रूस के दिगन्त-विस्तृत प्रान्तरों से सम्पूर्ण भिन्न प्रकार का है। आलेक्सी के पारस जाने का जो सङ्कल्प था वह पूरा नहीं हुआ; उसके पामीर देखने की आशा भी अंकुर ही में विनष्ट हुई है। इतने दिनों बाद वह काकेशिया प्रान्त में आया है। यहाँ पर निविड़ घन अरण्य, खरस्रोता पार्वत्य निर्भरिणी, तुषार-नदी और श्यामला प्रकृति का अजस्र विकास है। पहले के परिचित माइखेल नाचालौभ नामक रेल के एक कर्मचारी की कोशिश से आलेक्सी को एक केरानी का काम मिल जाता है। बहुत दिनों के बाद आलेक्सी को फिर पढ़ने का अवसर मिलता है।

धीरे-धीरे वह फिर अपने कर्म-जीवन में लौट आता है। लगभग दो सौ सदस्यों का एक कम्यून (Commune) या सङ्घ क़ायम होता है। इस संघ की बैठकों में नारौडनिक साहित्य की आलोचना ही प्रधान है परन्तु कभी-कभी

यहाँ पर सामाजिक और राजनीतिक आलोचनाएँ भी होती हैं। आलेक्सी यहाँ पर बहुत ही जनप्रिय हो उठता है; उसके बहुत ही विचित्र अनुभवों का वर्णन सुनकर श्रोता लोग मुग्ध हो जाते हैं। आज वह तेईस वर्ष का युवक है। उसकी दीर्घ और बलिष्ठ मूर्ति सभी की दृष्टि को आकर्षित करती है; उसके सिर पर लम्बे-लम्बे बाल हैं। उसके चेहरे पर आनन्द की प्रफुल्लता नहीं है; उसके दुःख-दग्ध चेहरे पर दृढ़ सङ्कल्प और आँखों में मननशीलता का चिह्न स्पष्ट हो उठा है। यौवन उसे सुगन्धित पुष्पकाननों में से नहीं ले चला है। उसे देखने से तो यह प्रतीत होता है कि वह सहारा मरुपथ का यात्री है, जहाँ पर उसके सिर के ऊपर प्रचण्ड मार्तण्ड की ज्वाला भभक रही है, उसके पैरों के नीचे तप्तबालू का दाह है और चारों ओर विपाक्त झञ्झा है।

१८९२ ई० के ग्रीष्मकाल में 'कम्यून' टूट जाता है। इसलिए सङ्घ छोड़कर आलेक्सी विप्लवी (Will of the People) दल के एक सदस्य के डेरे पर रहने लगता है। इनका नाम अलेकज़ेंडर कालिउज्नी है। साइबीरिया की 'कारा' खान में छः साल कठोर कारादण्ड के बाद इन्हें तिफ़लिस में निर्वासित किया गया है। कालिउज्नी का पुस्तकालय काफ़ी बड़ा है। वह आलेक्सी को फिर अध्ययन की ओर प्रोत्साहन देते हैं, विशेष कर गल्प-साहित्य की ओर। एक दिन आलेक्सी ज़बानी इन्हें एक कहानी सुनाता है; कहानी सुनकर कालिउज्नी मुग्ध हो आलेक्सी को एक कमरे में बन्द कर उस कहानी को लिखने के लिए कहते हैं। कहानी का नाम 'माकार चद्रा' है। इस कहानी को लेकर वह जब 'काकेशस' नामक स्थानीय दैनिक समाचार-पत्र के आफ़िस में गया तो उससे अपना नाम देने को कहा गया। शायद अपने जीवन के दुर्भाग्य और तिक्त अनुभवों को स्मरण कर उसने उस लेख के नीचे अपना उपनाम 'मैक्सिम गोर्की' रक्खा क्योंकि 'गोर्की' शब्द का अर्थ 'तिक्त' और 'अभागा' है। उस दिन उसने स्वप्न में भी यह न सोचा होगा कि एक दिन मेरा यह 'तिक्त' और 'अभागा' नाम ही समग्र विश्ववासियों का अत्यन्त प्यारा नाम होगा! १८९२ ई० के २४ सेप्टेम्बर के 'काकेशस' पत्रिका में आलेक्सी की—'मैक्सिम गोर्की' की—प्रथम रचना प्रकाशित हुई।

शिल्पी गोर्की के आविर्भाव के लिए जगत् तिफ़लिस के पास, विशेषकर कालिउज्नी के पास ऋणी रहेगा। इन्हीं को प्रायः अर्ध शताब्दी के बाद (२५ अक्टोबर, १६२५ ई० ) 'मित्र और शिक्षक' सम्बोधन कर, सेरेंटो से गोर्की ने लिखा था—"यह कहना ही पड़ेगा कि आप ही ने सबसे पहले मुझको अपने बारे में गम्भीर होने की शिक्षा दी थी। गत तीस वर्षों से मैंने रूसी कला की जो सेवा सम्मान के साथ की है, उसके लिए आपकी प्रेरणा के पास मैं ऋणी हूँ—आलेक्सी पियेश्कौभ।"

## २६

आलेक्सी पियेश्कौभ निजनी से भागकर बहुत दूर तिफ़लिस शहर में आया है। कठोर मानसिक संग्राम के कारण पागल होकर लक्ष्यहीन घुमक्कड़ की तरह वह देश-देशान्तर में घूम रहा है। जिस नारी के साथ उसने अपने जीवन में सर्वप्रथम समग्र आत्मा की व्याकुलता से प्रेम किया था, उसे न पाकर उसका जीवन विधाता के एक निष्ठुर व्यङ्ग में परिणत हुआ है। दो साल तक वह चञ्चल होकर देश-देश फिरता रहा है। कितने ग्राम और कितने शहर पार होकर वह आया है। सत्य क्या है जानने के लिए शान्ति पाने की व्याकुलता से उसने कितने मठों में साधुओं के पास भी चक्कर लगाया है। परन्तु कुछ भी मिला नहीं! अन्त में भाग्य ने उसे इस सुदूर काकेशिया के नगर में उपस्थित किया है।

अन्त में यहाँ आकर एक घुमक्कड़ मज़दूर लेखकों की महिमान्वित मण्डली में प्रवेश किया है। मानो इतने दिनों के बाद उसको एक पथ का सन्धान मिला है। सम्भवतः एक गल्प-लेखक के रूप में ही वह अपनी जाति के पास अपने हृदय की वाणी को—सर्ववञ्चित मनुष्यों के परित्राण की प्रार्थना को—उपस्थित कर सकेगा।

रहस्यमय भाग्य-विधाता सम्भवतः और भी एक कारण से उसको यहाँ पर लाया है। उसकी पहली कहानी निकलने के बाद ही आलेक्सी को यह मालूम हुआ कि मेरी प्रणय-पात्री, ओल्गा कामिन्स्की तिफ़लिस में आई है।

तेइस वर्ष का बलिष्ठ युवक इस समाचार को सुनकर मूर्च्छित हो जाता है। जिस नारी ने उसके मर्मस्थल में अपना आसन बना लिया है, जिसे प्राप्त न होने की दु:सह वेदना से उन्मत्त की तरह वह देश-देशान्तर में घूमता फिरा है, दीर्घकाल के पश्चात् वह नारी अकस्मात् इस सुदूर काकेशिया में उपस्थित हुई है यह सुनकर मूर्च्छित होना कोई विचित्र बात नहीं है। तथापि उसके साथ भेंट करने का साहस उसका नहीं है। अन्त में ओल्गा ने ही उसे बुला भेजा।

ओल्गा यहाँ अकेले आई है; उसके साथ केवल उसकी छः साल की लड़की है। उसका पति फ्रांस में ही है। ओल्गा अभी देखने में वैसी ही सुन्दरी युवती की तरह है। उसके कपोल वैसे ही सुन्दर हैं और उसकी सुन्दर आँखों से वैसी ही कोमल ज्योति विकीर्ण हो रही है। घोर घन-वर्षण के समय आलेक्सी ओल्गा के पास आया। बादल की गरज के भय से ओल्गा की लड़की ने अपने मुँह को बिस्तरे में छिपा लिया। आलेक्सी और ओल्गा खिड़की के पास खड़े रह गये। कुछ देर तक बाहर की ओर चुपचाप देखती हुई ओल्गा ने अकस्मात् कहा—"मुझे प्यार करने की बीमारी इतने दिनों में तो छूट गई होगी?" गम्भीर स्वर से आलेक्सी ने उत्तर दिया,—"नहीं।"

ओल्गा विस्मित होती है, हृदय के अन्तस्तल में शायद आनन्द का भी सञ्चार होता है। फुसफुसाकर वह कहती है—"तुम कैसे बदल गये हो! मालूम होता है कि दूसरा कोई है।" बगल की कुर्सी पर बैठकर वैसे ही अस्फुट स्वर से वह कहने लगी—"यहाँ पर तुम्हारे बारे में ख़ूब चर्चा होती है। यहाँ कैसे आये? क्या कर रहे हो?"

बाहर प्राकृतिक विपर्यय का प्रबल आलोड़न चल रहा था। आलेक्सी अपने जीवन के कठोर दु:ख की कहानी कहने लगा—सुनकर ओल्गा ने कहा—कैसा भयानक!

इसके बाद दोनों में मिलना-जुलना शुरू होता है।

एक दिन ओल्गा स्वप्न-विह्वल-सी कहती है—"इतने सालों तक मैंने तुम्हारे बारे में बहुत सोचा। मेरे ही लिए तुमको इतना दु:ख भोगना पड़ा है!"

"तुम्हारे रहने से मुझे कोई दुःख नहीं है" थोड़ी देर बाद आलेक्सी फिर धीरे-धीरे कहता है—"मेरे साथ रहो, ओल्गा। रहोगी न ?"

ओल्गा सलज्ज और कोमल हास्य के साथ कहती है—"तुम निजनी जाओ, मैं लिखकर बतलाऊँगी।"

आशा से उसका हृदय भर जाता है; नमस्कार कर वह वहाँ से निकल जाता है।

ठीक ऐसे ही समय पर निजनी से लानिन ने आलेक्सी को टेलिग्राम करके उनके सेक्रेटरी बनने के लिए बुलाया। तुरन्त ही आलेक्सी निजनी-नौभगोरोट के लिए रवाना हो जाता है। वहाँ पहुँचकर आलेक्सी अधीर हो डाकिया की राह देखता है। थोड़े ही दिनों के बाद शीत ऋतु में एक दिन ओल्गा अपनी लड़की को लेकर आलेक्सी के साथ मिलती है।

बहुत दिनों के बाद आलेक्सी के ऊपर प्रसन्न होकर भाग्य-देवता हँसते हैं।

इसके बाद अब निजनी में जिनका साक्षात् प्राप्त करेंगे वह मैक्सिम गोर्की हैं। इसलिए अब हम आलेक्सी पियेश्कौभ से बिदाई ले रहे हैं।

———

द्वितीय खण्ड

# साहित्य-साधना

## १

१८९२ ई० का अवसान आसन्न हो रहा है। गोर्की निजनी नगरी में लौट आये हैं। बहुत दिनों के प्रयत्न पर आज स्वल्प सफलता की उज्ज्वल किरण फूट पड़ी है। उनकी सृष्टि-प्रतिभा ने आज अपना पथ ढूँढ निकाला है। इसके अतिरिक्त, यौवन की सुतीव्र प्रेमतृष्णा भी कठोर दुःखमय तपस्या के पश्चात् शान्त हुई है। ओल्गा कामिन्स्की इतने दिनों के बाद अपनी छोटी लड़की को लेकर गोर्की के पास आ गई है। जो गोर्की ओल्गा के प्रेम से वञ्चित होकर पागल की तरह इधर-उधर भटकता रहा, अब की बार वह उससे अलग न रह सका।

एक उद्यान-वाटिका के अति साधारण स्नानगृह के अन्दर इन दोनों के प्रथम प्रेम के सुन्दर दिन व्यतीत होते हैं। क्या किया जाय! प्रेम ने जिसे सम्राट् बनाया है, कुबेर ने उसी को दीन-दरिद्र कर रक्खा है; थोड़ी-सी आमदनी से जीविका निर्वाह करना पड़ता है। लानिन के यहाँ नौकरी से जो कुछ मिलता है उसके अलावा कहानी लिखकर भी कुछ थोड़ी-सी आमदनी होती है। वह दो रूबल से अधिक भाड़ा नहीं दे सकता। स्नानगृह का प्रधान कमरा बहुत खराब नहीं है; इसमें गोर्की ने अपनी प्रेमिका और उसकी लड़की को स्थान दिया और उसी के बग़ल में एक छोटे कमरे में स्वयं स्थान लिया। यह कमरा बहुत ही ठण्ढा है, शीतलवायु उसके अन्दर से बड़े ज़ोरों से चलता है। जो कुछ जाड़े के कपड़े हैं वे सब लपेट लेने पर भी जाड़ा रोका नहीं जाता। उसके ऊपर दरी को भी ओढ़ना पड़ता है। थोड़े ही दिनों के अन्दर गोर्की जैसे असाधारण बलशाली युवक को भी बाई की बीमारी पकड़ती है। नाना प्रकार के दुःखों को सहकर उनके मन में यह धारणा हो गई थी

कि मेरे शरीर का कुछ नहीं हो सकता। घुमक्कड़ जीवन में कितने दिन और रात उन्हें बर्फ़ और पानी में बिना नींद और बिना भोजन के बिताना पड़ा है। परन्तु इतने दिनों बाद अब यहाँ पर उनके स्वास्थ्य का बिगड़ना शुरू हुआ।

अकेले होते तो ग़रीबी से उनको कुछ भी दुःख न होता। परन्तु आज पग-पग पर दारिद्रय उनको सताने लगा। जिसके प्रति प्रेम है उसे अपने इच्छानुसार आराम न दे सकना बड़ी ही लज्जा और दुःख की बात है। एक दिन जब यही ओल्गा अपने पति बोरेस्लाभ के घरेलू काम करती थी, वह देखकर गोर्की को असह्य मालूम होता था। आज वही प्रिया अपने पास किस सुख में दिन बिता रही है! कुलीन घर की लड़की ओल्गा, उसकी शिक्षा-दीक्षा ने उसे इस प्रकार से, जीवनयापन करने में अभ्यस्त नहीं किया। यह सब सोचते हुए गोर्की को ऐसा दुःख होता है!

परन्तु ओलगा को ज़रा भी दुःख नहीं है। जो प्रेम उसको प्राप्त हुआ है, उसकी मर्यादा देना वह जानती है। किसी भी असुविधा से उसके चेहरे पर असन्तोष की कालिमा नहीं छाती। वह ख़ुद भी छोटा-मोटा काम कर कुछ कमाती है; चित्रों की नक़ल कर, नक़्शा खींचकर, लड़कियों के लिए पैरिस के नये फ़ैशन की टोपियाँ बनाकर वह अपने प्रिय के बोझ को कुछ हल्का करने की चेष्टा करती है।

आर्थिक अभाव दुःखदायी है इसमें सन्देह नहीं है, तिस पर भी दोनों के पारस्परिक प्रेम के आनन्द में पहले-पहले दिन अच्छी तरह से ही बीत रहे हैं। किन्तु......हाय, विधाता का परिहास बड़ा ही कठोर होता है!

ज्यों-ज्यों दिन बीतता जाता है, मिलन के अन्दर प्रच्छन्न विरोध का बेसुरापन प्रकट होने लगता है। प्रथम परिचय का आनन्दपूर्ण 'रोमान्स' ( romance ) जब मिट जाता है तब धीरे-धीरे गोर्की को यह मालूम होने लगता है कि ओलगा और उनके मानसिक गठन में कैसा दारुण प्रभेद है। पैरिस से आई हुई युवती ओल्गा बुद्धिमती, चतुर और रसिक है; वार्तालाप में नागरिक अर्थात् 'कलचर्ड' है गोर्की को भी ये सब गुण अच्छे ही लगते हैं।

परन्तु जो सहृदयता, परदुःखकातरता गोर्की की अस्थि-मज्जा में प्रवाहित है, जिसके लिए उन्होंने छोटी अवस्था से कितनी बार भीषण मार खाई है, मनुष्य के प्रति वह सहानुभूति ओल्गा में कहाँ है? घाट-बाट में किसी भी मनुष्य के प्रति अन्याय, अविचार और निष्टुर बर्ताव देखकर गोर्की स्थिर नहीं रह सकते, अत्यन्त उत्तेजित और व्यथित होकर वे घर लौटते हैं और ओल्गा से सब कहते हैं। ओल्गा को विस्मय होता है, वह कहती है—"क्या जी, इसके लिए तुम इतने ख़फ़ा हो रहे हो! ओहो, तुम्हारी स्नायु इतनी कमज़ोर!" गोर्की चकित होकर उस परिहास-वक्र मुँह की ओर ताकते हैं। ओल्गा के सहानुभूति-शून्य हृदय के इस परिचय से गोर्की के हृदय पर सूक्ष्म लेकिन बड़ी गहरी चोट लगती है। परन्तु यह तो कहने की बात नहीं है!

## २

ओल्गा अकेले समय बितानेवाली नहीं है। उसका गत जीवन भी नाना प्रकार की विचित्रताओं के अन्दर से गुज़रा है। सतीत्व उसके लिए कोई बहुत भारी चीज़ नहीं है। कभी-कभी निस्सङ्कोच भाव से वह पैरिस की अपनी प्रेम-कहानियों को बताती भी है। इन विषयों में गोर्की का मन भी बहुत संस्कारमुक्त है; तिस पर भी यह सब सुनते समय गोर्की को अच्छा नहीं लगता। ओल्गा ने प्रेम को लेकर पुरुषों के साथ खेल खेला है और गोर्की ने पङ्किल जीवन के बीच रहते हुए भी कभी नर-नारी के प्रेम को साधारण और तुच्छ नहीं माना। गोर्की जब प्रेम के बारे में अपने आदर्श का बयान करते हैं, ओल्गा को सुनकर सचमुच दुःख होता है। वह जानती है कि मैं उस आदर्श के कण-मात्र भी योग्य नहीं हूँ। गोर्की जैसा एकनिष्ठ और शुद्ध प्रेम चाहते हैं मैं उसे नहीं दे सकती। रुलाई से उसकी आँखों में आँसू भर आते हैं, छाती फटना चाहती है। बालिका अवस्था में अगर वह गोर्की को पाती तो सम्भवतः उसका जीवन भिन्न प्रकार का हो सकता। परन्तु जीवन ने उसे सम्पूर्ण भिन्न रास्ते पर खींच लिया है; अब फिर रास्ता बदलकर नये रास्ते पर चलना सम्भव है?

इसी लिए ओल्गा कहती है, मेरे साथ जीवन को प्रारम्भ कर तुमने अच्छा नहीं किया। किसी छोटी उम्र की लड़की से तुम्हारी शादी होती तो अच्छा होता। फिर भी क्या तुम यह समझते हो कि तुमसे प्रेम कर मैं कितनी सुखी हूँ? हाय, अगर मैं आज बालिका बन सकती!

ओल्गा की खेद-भरी बातों को सुनकर गोर्की सब भूल जाते हैं। फिर दिन बीतता जाता है। काज़ान के 'वाल्गा वार्तावह' नामक दैनिक समाचार-पत्र में लिखकर गोर्की को कुछ ऊपरी आमदनी होती है—लाईन पीछे दो 'कोपेक' मिलता है। परन्तु सञ्चय करना गोर्की के स्वभाव में नहीं है। ज्यों ही कुछ 'रूबल' हाथ लगते हैं, बस फिर क्या बात है! भविष्य के बारे में कुछ परवाह ही नहीं, घुमक्कड़ गोर्की के जीवन में वस्त्र-विहीन दिन भी गुज़रे हैं, दिन तो रुके नहीं। और सम्भवतः गोर्की क्यों, हरएक रूसी जन्म से ही अदृष्टवादी है। इसी लिए पैसा हाथलगने के साथ ही साथ ख़ूब मदिरा पान भोजन का आयोजन शुरू होता है। आमन्त्रित होकर ओल्गा और गोर्की के इष्ट-मित्र सब वहाँ जुटते हैं। प्रायः दस-बारह अतिथि आते हैं। परिहास-प्रिय ओल्गा इस दल का नाम रखती है—भुक्खड़ सङ्घ।

इन पुरुषों के साथ रस-रङ्ग करने में—अँगरेज़ी में जिसे फ्लर्ट करना कहते हैं—ओल्गा को अच्छा लगता है। ओल्गा को ऐसा करने में ज़रा भी सङ्कोच नहीं है। इसमें उसे कुछ भी दोष नहीं मालूम होता। वह कहती है मर्दों को ज़रा हिलाकर देखने में मुझे तो प्रचण्ड कौतूहल होता है। ओल्गा के रङ्ग-ढङ्ग से पुरुषों का थोड़ा-सा विह्वल होना कुछ विचित्र बात नहीं है। इसलिए इनमें से कोई-कोई ओल्गा के पास प्रेम-पत्र लिखना भी शुरू करते हैं। ओल्गा उन पत्रों को पढ़कर गोर्की को सुनाती है; पुरुष-चित्त को चञ्चल करने का प्रमाण पाकर उसे पर्याप्त कौतुक मालूम होता है। कभी-कभी ओल्गा किसी-किसी बेचारे के प्रति सहानुभूति भी प्रकट करती है और गोर्की से पूछती भी है—"क्या जी, तुम्हें डाह तो नहीं हो रही है!" नहीं, डाह सम्भवतः नहीं होती है, परन्तु यह सब अच्छा भी नहीं लगता। कभी-कभी एक-आध आदमी दिमाग़ ठीक नहीं रख सकते, अपने को

सँभालने में असमर्थ हो जाते हैं; तब गोर्की को थोड़ी-बहुत शारीरिक शक्ति की चर्चा के द्वारा उनका होश दुरुस्त करना पड़ता है। दिन-दिन पुरुषों का गोलमाल बढ़ता ही जाता है। उन्हें देखकर ऐसा मालूम नहीं होता कि ये मनुष्य हैं, मालूम होता है कि एक झुण्ड में बकरे, भेड़ और साँड़ इकट्ठे हुए हैं। परन्तु ओल्गा अपने विजय के आनन्द से स्वच्छन्द होकर इन लोगों के बीच समय बिताती है!

गोर्की के यह जीवन दुर्वह और दुस्सह हो उठता है। उनकी रुचि अन्य प्रकार की है। उन्हें लिखना-पढ़ना पड़ता है। शोर-गुल में, चित्त की विक्षिप्त अवस्था में अध्ययन असम्भव हो जाता है। गोर्की समझते हैं कि इस प्रकार जीवन-यापन करने से साहित्य-जगत् में स्थान मिलना असम्भव है। परन्तु लड़ाई-झगड़ा करना गोर्की के लिए असम्भव है; ओल्गा भी उस प्रकार की लड़की नहीं है। और जो कुछ हो, वह सभ्य है, 'कलचर्ड' है। किन्तु जीवन दिन-प्रति-दिन गम्भीर उदासी से मलिन होता जाता है। गोर्की का हृदय एक प्रकार के अवसाद से आच्छन्न हो जाता है। गोर्की के सच्चे, शुभाकांक्षी बन्धु-बान्धव भी इशारे से उनके इस प्रकार के अवाञ्छित पारिवारिक जीवन के बारे में कुछ कहते हैं। ओल्गा के इस प्रकार की, पुरुषों को विक्षिप्त करने की, बातें शहर में नाना प्रकार की विकृत कहानियों के रूप में प्रचारित होने लगती हैं; अनेकों को ये कहानियाँ सच भी प्रतीत होने लगती हैं। इसके कारण किसी-किसी के साथ गोर्की की भिड़न्त भी हो जाती है।

जीवन असह्य-सा हो उठता है।

## ३

इसी प्रकार से दो बरस बीत गये। कहानी लिखकर साहित्य-जगत् में गोर्की ने थोड़ा-बहुत नाम भी कर लिया है। परन्तु बड़ी-बड़ी साहित्यिक पत्रिकाओं में अभी तक गोर्की को स्थान नहीं मिला है। निजनीनौभगोरोट में कोरोलेंको और माइखेलभ्स्की के द्वारा सम्पादित 'रूस-सम्पद्' ( Russkoye Bogatstvo) ही सब से अधिक प्रतिष्ठा रखनेवाली पत्रिका है। इस पत्रिका

में स्थान प्राप्त करना किसी भी लेखक के लिए परम सौभाग्य की बात है। बृहत्तर साहित्य-जगत् में प्रवेश करने का पास-पोर्ट यही पत्रिका दे सकती है।

कोरोलेंको केवल साहित्यिक रूप में ही समादृत नहीं हैं। आपकी असाधारण मानव-सेवा ने भी आपको लोकसमाज की श्रद्धा के आसन पर प्रतिष्ठित किया है। आपने १८९१-९२ ई० के भयङ्कर दुर्भिक्ष में आर्त-त्राण के काम में किस प्रकार से तन-मन लगाया था वह भी जनसाधारण को अच्छी तरह विदित है। कोरोलेंको एक असाधारण हृदयवान् व्यक्ति हैं; ऐसे मनुष्य के साथ क्वचित् हमारी भेंट होती है।

निजनी में इधर दो साल बीत चुके हैं, तब भी गोर्की एक बार के लिए भी कोरोलेंको से मिलने नहीं गये। परन्तु कोरोलेंको को पता लग गया कि आलेक्सी पियेश्कौभ ही 'गोर्की' उपनाम रखकर कहानी लिखते हैं। 'वाल्गा-दूत' (Volgar Vesntnik) पत्रिका के सम्पादक राइनहार्ट गोर्की के अनुरागी हैं, कोरोलेंको को इन्हीं से गोर्की का पता मिला। राइनहार्ट केवल गोर्की की प्रशंसा ही नहीं करते, परन्तु लेखों का यथाशक्ति मूल्य देकर उनकी सहायता भी करते हैं। बहुत दिनों बाद न जाने क्या सोचकर गोर्की कोरोलेंको के यहाँ मिलने चले।

भेंट होते ही कोरोलेंको कहते हैं—तुम्हारी ही रचना पढ़ रहा था। सुनकर गोर्की के हृदय में आनन्द होता है। तब तो वे उपेक्षित नहीं हैं। गोर्की की रचना जिस पत्रिका में निकल रही है उसका उल्लेख करते हुए कोरोलेंको गोर्की को सहर्ष अभिनन्दित करते हैं। सरल और अकपट आचरण से गोर्की मुग्ध हो जाते हैं। कोरोलेंको पूछते हैं—'कोई लेख लाये हो?' "नहीं"। सुनकर वे दुःखित होते हैं। फिर कहते हैं, तुम्हारी रचना रूखी और बीच-बीच में असम्बद्ध होती है, फिर भी दिल को खींचती है। इसके पश्चात् कोरोलेंको गोर्की के भ्राम्यमान जीवन की कहानी को ध्यान से सुनने लगते हैं।

इसी प्रकार से फिर दोनों में बातचीत जमने लगती है। कोरोलेंको केवल मीठी-मीठी बातों से तुष्ट करनेवाले व्यक्ति नहीं हैं। जिसके अन्दर वे शक्ति का सन्धान पाते हैं, उसे शाबाशी देकर नष्ट नहीं कर सकते। गोर्की की रचना की प्रशंसा के साथ ही साथ उसके दोष-त्रुटियों को भी

वे साफ़-साफ़ बतलाते हैं। कहते हैं—तुम्हारी कहानी में रोमान्टिसिज़्म (Romanticism ) अत्यन्त अधिक है, ऐसा तो उचित नहीं है। रूपक लिखने की ओर अधिक झुकाव देखता हूँ। अवश्य, अच्छा रूपक लिखना बुरा नहीं है परन्तु उसमे विशेष कुछ अच्छा नहीं होगा, फिर जेल में जाना पड़ेगा। मालूम होता है तुमने अभी तक अपनी शैली को नहीं पाया। वास्तव में तुम यथार्थ-वादी हो, रोमान्टिस्ट नहीं। लेकिन "बुड्ढी" गल्प अच्छी लिखी है। अच्छा उसमें जो एक पोल (Pole) के बारे में लिखा है, उसके साथ तुम्हारे व्यक्तिगत जीवन का कुछ सम्बन्ध है। है न? वास्तव में इस कहानी में गोर्की ने ओल्गा के पति बोलेस्लाभ के विषय में ही लिखा है। लेकिन साफ़-साफ़ इस बात को स्वीकार न कर, गोर्की जवाब देते हैं—"हो सकता है।" कोरोलेंको कहते हैं, 'रचना में व्यक्तिगत इतिहास का वर्जन करना होगा; लेकिन मैं इस बात को सङ्कीर्ण अर्थ में कह रहा हूँ।' इतना कहकर, कुछ हिचकिचाहट के बाद अकस्मात् कोरोलेंको कहते हैं—अच्छा, निस्संकोच एक बात पूछ सकता हूँ? यह कहकर गोर्की के परिवारिक जीवन की ओर इङ्गित करते हुए कहा—मेरी राय में इस जगह से तुमको चला जाना चाहिए और एक अच्छी और बुद्धिमती लड़की से शादी कर लेनी चाहिए।

गम्भीर स्वर में गोर्की कहते हैं—मैं विवाहित हूँ।

कोरोलेंको कहते हैं—नहीं, यह तुम्हारी ग़लती है।

गोर्की असन्तुष्ट होकर कहते हैं—इस विषय में मैं कोई चर्चा करना नहीं चाहता।

परन्तु गोर्की की अन्तरात्मा अपने मन में कहती है—'हाँ ग़लती ही है।'

कोरोलेंको तुरन्त क्षमा माँगते हैं और हँसकर दूसरे विषय की चर्चा शुरू कर देते हैं। गोर्की से कहते हैं, ऐसी ख़बर है कि रोमास पकड़ गया है। कोरोलेंको रोमास के विप्लव-पन्थ का समर्थन नहीं करते हैं; कहते हैं कि स्वेच्छाचारतन्त्र को इतनी आसानी से नहीं हटा सकते; उसकी जड़ को कमज़ोर करने के लिए बहुत दिन चाहिए; एक पीढ़ी में यह नहीं होगा।

४

एक दिन कुछ रुपये की ज़रूरत से गोर्की फिर कोरोलेंको के पास आए। रुपया तो मिला, पर कोरोलेंको ने अच्छी तरह बात-चीत नहीं की। मन में गोर्की अत्यन्त विक्षुब्ध होकर लौट गये।

थोड़े दिनों के बाद सारी रात शहर के बाहर बिताकर खूब सबेरे गोर्की डेरे पर लौट रहे हैं। इतने में रास्ते पर कोरोलेंको से भेंट होती है। इतने दिन हो गये गोर्की मिले नहीं यह कहकर कोरोलेंको आक्षेप करते हैं। गोर्की भी उस दिन की बात का उल्लेख कर न मिलने का कारण बतलाते हैं। कोरोलेंको चुप होकर सोचते हैं; कहते हैं, मुझको तो कुछ याद नहीं आ रहा है, पर तुम जब ऐसा कहते हो तो अवश्य ही मैंने वैसा अशिष्ट आचरण किया होगा। मेरी उस उपेक्षा को क्षमा करना। आज-कल प्रायः मेरा मिजाज ठीक नहीं रहता; ऐसा मालूम होता है कि मैं एक अन्धकूप में गिर गया हूँ, कुछ न देखने में ही आता, न सुनने में ही। सरल और कातर दोष-स्वीकृति से गोर्की का सारा दुःख और अभिमान मिट जाता है। 'वाल्गा-दूत' दैनिक पत्र में प्रकाशित और एक कहानी की उच्च प्रशंसा करते हुए कोरोलेंको कहते हैं—तुम्हारी यह कहानी किसी भी मासिक पत्र में निकल सकती। छापने के—पहले मुझको दिखलाया क्यों नहीं? और भी अन्यान्य बातें करते हुए कोरोलेंको आगे बढ़ जाते हैं, देखते हैं कि गोर्की पिछड़ रहे हैं, तुम्हारा हुआ क्या?

गोर्की कहते हैं, बाई की बीमारी।

प्रकृति के हाथों से बलिष्ठ गोर्की भी नहीं बच सकते। उस ठण्डे कमरे में रहने से उनका स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा है। इतनी आमदनी नहीं है कि कुछ अच्छे कमरे किराये पर ले सकें, किसी प्रकार से जीवन-निर्वाह हो रहा है। लौटते समय क़रीब नौ बजे कोरोलेंको कहते हैं—अब एक बहुत अच्छा लेख चाहिए। 'लेख ज़रूर चाहिए' कहकर कोरोलेंको बिदा होते हैं।

इसी के पश्चात् गोर्की ने 'चेलकाश' शीर्षक कहानी लिखी और उसकी पाण्डुलिपि कोरोलेंको के पास भेज दी।

कई दिन बाद ही एक मामले के उपलक्ष में कोरोलेंको लानिन के आफ़िस में आये। गोर्की की कहानी की ख़ूब प्रशंसा करते हुए आपने कहा, तुम चरित्र-सृष्टि कर सकते हो, सब चरित्र अपने स्वभाव-वैशिष्ट्य के साथ प्रकटित होते हैं, यह मामूली शक्ति का काम नहीं है। मनुष्य ठीक-ठीक जैसा है उसी रूप में चित्रित कर तुम उसे सम्मानित करते हो। मैंने कहा था कि नहीं कि तुम यथार्थवादी हो?

इतनी देर में गोर्की चार सिगरेट पी चुकते हैं। मित्रकी तरह कोरोलेंको गोर्की का तिरस्कार करते हैं। इसके पहिले कोरोलेंको के पास यह भी जनरव पहुँच चुका था कि गोर्की ख़ूब शराब पीते हैं और उनके घर पर नाना प्रकार के घृणित व्यापार होते हैं; इसके बारे में भी कोरोलेंको गोर्की से पूछते हैं। गोर्की बतलाते हैं कि वह सब सरासर झूट है।

कोरोलेंको ने अपनी पत्रिका के सम्मानित स्थान पर सबसे पहिले 'चेलकाश' छापने का निश्चय कर लिया है। गोर्की से यह कहकर, फिर कहते हैं, कई व्याकरण की अशुद्धियाँ थीं, उन्हें ठीक कर दिया है और कुछ भी मैंने बदला नहीं। फिर भी देखना चाहो तो देख सकते हो। गोर्की कहते हैं, नहीं, नहीं, उसकी कोई आवश्यकता नहीं है। गोर्की की इस सफलता से कोरोलेंको को अत्यन्त आनन्द होता है, बार-बार गोर्की को अभिनन्दित करते हैं। इतना हार्दिक आनन्द गोर्की ने अपने जीवन में बहुत कम देखा है।

थोड़ी देर चुप रहने के पश्चात् वे कहते हैं—देखो, तुम यहाँ से चले जाओ। सामारा जाओगे? वहाँ पर तुम्हारे लिए एक नौकरी का प्रबन्ध कर सकता हूँ। जाओगे?

गोर्की कुछ असन्तुष्ट होकर कहते हैं—क्यों, क्या मैं किसी को यहाँ सता रहा हूँ?

'नहीं, तुम अपने को ही नष्ट कर रहे हो'।

इससे स्पष्ट मालूम होता है कि गोर्की के बारे में जो जनरव फैला है, उसमें कोरोलेंको का थोड़ा-बहुत विश्वास हो गया है; इसी लिए शुभाकांक्षी बन्धु की तरह वह गोर्की की रक्षा करना चाहते हैं। असन्तुष्ट होने पर भी, कोरोलेंको हार्दिक प्रीति ही के कारण बार-बार सलाह दे रहे हैं यह स्मरण कर गोर्की का हृदय उद्वेलित हो उठता है और तब अकपट भाव से वह अपने जीवन का उस समय का सारा वृत्तान्त बतलाना शुरू करते हैं। सब सुनकर व्याकुल होकर कोरोलेंको बोल उठते हैं—नहीं, नहीं, इस प्रकार का जीवन तुम्हारे लिए नहीं है। यहाँ से जाना तुम्हारे लिए अत्यावश्यक है; पियेश्कौभ, तुमको अपने जीवन की चाल-ढाल बदलनी ही पड़ेगी!

चुप रहकर गोर्की कहते हैं, अच्छा।

## ५

कोरोलेंको की प्रसिद्ध पत्रिका रूस-सम्पद् के प्रथम पत्र पर 'चेलकाश' प्रकाशित हुई; १८९४ ई० का जून का महीना था। इसके बाद गोर्की ने 'समुद्र-तट पर' शीर्षक एक दूसरी कहानी उसी पत्रिका के पास भेजी। पत्रिका के दूसरे सम्पादक माइखेलभ्स्की विशेष उद्देश्य-मूलक लेख चाहते हैं, इसलिए वे इस कहानी को छापने में असम्मत हुए। न जाने क्यों माइखेलभ्स्की गोर्की की कहानी पसन्द नहीं करते हैं। ऐसी कहानी नहीं चलेगी, चाहे लिखने की शैली कितनी भी अच्छी क्यों न हो।

गल्प लिखकर मिलता ही क्या है! गोर्की की आर्थिक अवस्था कुछ भी अच्छी नहीं है। अक्टूबर के महीने में गोर्की ने कोरोलेंको के पास अपनी आर्थिक दशा के बारे में लिखा, भाड़ा न दे सकने के कारण डेरा छोड़ना पड़ा है, पैर और छाती में दर्द भी हो रहा है। कोरोलेंको ने माइखेल-भ्स्की के पास 'समुद्र तट पर' गल्प के बारे में लिखा, पर कुछ भी फल न हुआ। माइखेलभ्स्की ने जवाब दिया कि इस प्रकार की उद्देश्य-विहीन गल्प उस पत्रिका में नहीं छापी जा सकती।

दीर्घकाल तक गोर्की ने जो दुःख पाया और शरीर पर जो अत्याचार हुए, उससे एक स्थायी व्याधि उत्पन्न हो गई। उनके अनजान में जीवनव्यापी क्षय की बीमारी हो गई।

इधर पारिवारिक जीवन भी असह्य-सा हो गया। बाहर और भीतर संग्राम करना उनके लिए असम्भव हो उठा।

एक दिन गोर्की धीरता के साथ ओल्गा से सारी बातें कहकर बोलते हैं—शायद मेरे लिए यहाँ से चला जाना ही अच्छा है।

ओल्गा चुप होकर सोचती है, फिर धीरे-धीरे जवाब देती है—हाँ जी, तुमने ठीक ही कहा है। मैं समझ गई, यह जीवन तुम्हारे लिए नहीं है।

भीतर भीतर दोनों विषण्ण, व्यथित हैं। बहुत देर तक आलिङ्गन बद्ध हो प्रेमिक-प्रेमिका चुप बैठे रहते हैं। कोई उपाय नहीं है; उनका प्रेम उनके जीवन को सार्थक न कर सका। इसी लिए वे विच्छेद ही को स्वीकार कर लेते हैं। वे परस्पर घृणा नहीं करते, परस्पर अभिशाप भी नहीं देते। वे जानते हैं कि हमने परस्पर निस्सङ्कोच प्रेम किया है, परस्पर विश्वास किया है। लेकिन इतने ही से जीवन को पूर्ण सफलता नहीं मिली। उभय पक्ष की स्वतन्त्र शिक्षा-दीक्षा और आदर्श उन्हें अनिवार्य विच्छेद की ओर ले चला है। केवल प्रेम ही में जीवन की सम्पूर्णता और सफलता नहीं है।

जीवन की सफलता की खोज में गोर्की आगे बढ़ना चाहते हैं। आपने यह समझ लिया है कि इस प्रकार से दोनों एक साथ रहने से चाहे और जो कुछ हो, पर उनके जीवनव्यापी आदर्श की खोज और उनकी साहित्य-साधना, ये सब व्यर्थ हो जायँगी। इसी लिए सकृतज्ञ नमस्कार के साथ गोर्की ओल्गा से बिदा होना चाहते हैं। ओल्गा भी समझती है कि एकमात्र विच्छेद ही दोनों के परित्राण और कल्याण का पथ है। नान्यः पन्था!

१८९५ ई० के फ़रवरी के महीने में, कोरोलेंको के निर्देशानुसार गोर्की सामारा चले आये।

ओल्गा भी एक थियेटर में भर्ती हो गई।

गोर्की के जीवन का पहला प्रेम इसी प्रकार विच्छेद में समाप्त हो गया।

जीवन ऐसा ही विचित्र है ! आज जिसको न पाने के कारण जीवन व्यर्थता की निराशा से अन्धकारमय हो जाता है, एक दिन फिर पाने के बाद उसी को कूड़ाखाने में फेंककर वह चला जाता है। उसकी यात्रा किधर है, कौन जानता है !

## ६

सामारा भी वाल्गा नदी के तट पर है, शहर कुछ बड़ा नहीं है। यहाँ के रहनेवाले कुछ रूसी हैं और कुछ मङ्गोल। जीवन का उन्माद, उत्तेजना और चाञ्चल्य अर्थात् बड़े शहर के जो कुछ लक्षण हैं, यहाँ पर उसका अत्यन्त अभाव है। यह एक बिलकुल कसबा-सा है। प्राचीन और कुसंस्कारों से आच्छन्न वणिक-श्रेणी ही यहाँ का प्रभावशाली सम्प्रदाय है। यहाँ के जीवन की चाल बहुत ही धीमी है; स्रोतविहीन जीवन की जो ग्लानियाँ होती हैं उन अवगुणों से—स्वार्थपरता और नीचता से—यहाँ का जीवन परिपूर्ण है। निम्न श्रेणी के कुली-मज़दूर और आवारों की यहाँ कुछ कमी नहीं है, इनका जीवन सभी जगह एक प्रकार का है। इसके अलावा थोड़े बहुत बुद्धिजीवी भी यहाँ हैं, परन्तु उन लोगों में मानस-चर्चा अधिक नहीं है। चारों ओर के इस अचल और अवरुद्ध जीवन की ओर ताककर जीवन की कटुता और भी बढ़ जाती है।

यहाँ से दो सामयिक पत्र निकलते हैं—'सामारा गज़ेट' और 'सामारा वार्ता-वह'। वास्तव में हो चाहे न हो, बाहर से सामारा वार्तावह अपने को मार्क्स-पन्थी कहता है, और व्यापार की ग़रज़ से उसको सामारा गज़ेट के साथ प्रतिद्वंद्व भी करना पड़ता है। गोर्की सामारा गज़ेट में नौकरी करते हैं। 'यहूदी खलामिदा' इस नाम से आपने स्थानीय छोटी-छोटी घटनाओं को लेकर कड़ा मन्तव्य निकालना शुरू किया है। स्थानीय शासकवर्ग और उनके अनुगत धनी शोषक सम्प्रदाय के अविचार, बेईमानी और शोषण के ऊपर आपका कटाक्ष तीव्र होता जा रहा है। विरुद्ध-पक्ष को आत्मसमर्थन का कोई रास्ता नहीं दिखाई देता। इसलिए उसने भी सामारा वार्तावह के सहारे गोर्की के

पूर्वपरिचय और व्यक्तिगत चरित्र के बारे में नाना प्रकार की विकृत और झूठी बातों का प्रचार करना प्रारम्भ किया है। इसी प्रकार से दिन-दिन गोर्की सामारा-निवासियों के अप्रिय होते जा रहे हैं।

विरुद्ध पक्ष के असत्य आक्रमण से गोर्की की समालोचना और भी तिक्त और तीव्र होती जाती है, भाषा का असंयम भी बढ़ता जाता है, प्रायः शिष्टाचार की मात्रा का उल्लङ्घन होता है। जिस बात का कहना अनावश्यक है वह भी कहनी पड़ती है। कोरोलेंको दूर से इसका प्रतिवाद कर गोर्की को सतर्क करते हैं। गोर्की स्वयं भी समझते हैं कि उनकी सांवादिक द्वन्द्वयुद्ध की भाषा क्रमशः तृतीय श्रेणी की भाषा में परिणत हो रही है। यह साहित्य-साधना के प्रतिकूल है। और यह सब लिखना भी किसके लिए! जिस जनता को उद्बोधित करना है वह तो बिलकुल निरक्षर और अज्ञ है; समाचारपत्रों की समालोचना न तो वह पढ़ती ही है, न सुनती। सामारा का सांवादिक जीवन निरर्थक-सा प्रतीत होता है।

परन्तु सामारा में जीवन का अध्ययन करने का कोई भी अवसर नहीं है ऐसी बात नहीं है। कौतूहली शिल्पी की दृष्टि सभी जगह कुछ न कुछ देख पाती है। गोर्की यहाँ पर विशेष रूप से यहाँ के वणिक-सम्प्रदाय के जीवन का अध्ययन करते हैं; यहाँ का अनुभव उनके लिए भावी काल का एक अमूल्य सञ्चय होता है। यहाँ आने से आपका एक लाभ तो अवश्य ही हुआ है। यहाँ पर बहुत-सी कहानियाँ लिखने का अवकाश मिला है। 'पतझड़ के एक दिन', 'बाज़ पक्षी का गीत', 'बेड़े पर', 'व्यभिचारिणी' इत्यादि प्रायः बीस कहानियाँ लिखी गई हैं और प्रकाशित हुई हैं। यहाँ के लोग सांवादिक गोर्की के विरुद्ध चाहे जो कहें, लेकिन शिल्पी गोर्की की रचना ने सबके अनजाने एक नवीन पाठक-मण्डली की सृष्टि की है। जीवन की सङ्कीर्णता, नीरस वैचित्र्य-विहीनता और उसके कुसंस्कारों के विरुद्ध—पूर्वगामी साहित्य के निराशापूर्ण और बेपरवाह जीवनादर्श के विरुद्ध—एक नवीन आशा का, विद्रोह और प्रबल प्रतिवाद का सुर गोर्की की रचना में ध्वनित हो उठा है। सम्भवतः अभी तक यह नवीनता लोगों के सामने स्पष्ट रूप में नहीं है, तथापि

लोगों की अवचेतना में इस लेखक के इस नवीन स्वर ने एक चाञ्चल्य की सृष्टि करना प्रारम्भ किया है।

७

बहु-निन्दित यहूदी ख्लामिदा के बारे में कुछ युवकों को कौतूहल होता है। सामारा-वार्तावह ने जिस व्यक्ति को एक गुण्डा कहकर परिचय दिया है, उसी के साथ जब वे मिलते हैं तो वे एक आश्चर्यजनक, उदार-हृदय आदर्शवादी युवक को पाते हैं। अतिथि-अभ्यागत के आदर-सत्कार करने में गोर्की सदा से अमितव्ययी हैं, इसलिए उनका दैन्य पहले जैसा था अब भी वैसा ही है। नहीं तो यहाँ पर आमदनी बहुत ख़राब नहीं है, परन्तु गोर्की के हाथ में कुछ भी नहीं रहता। आख़िरी कौड़ी तक दान देने में गोर्की ज़रा भी आनाकानी नहीं करते। आगन्तुक युवक-मण्डली गोर्की के निष्कपट आचरण से ही केवल मुग्ध नहीं होती, उनके विशाल अध्ययन को देखकर भी विस्मित हो जाती है। शेक्सपीयर, ह्यूगो, बायरन, ग्येटे, शिलर, मँपासाँ, डिकेन्स, थैकरे प्रभृति विदेशी लेखकों और टॉलस्टॉय, डास्टयेभ्स्की, चेकभ प्रभृति देशी लेखकों की रचनाओं के साथ गोर्की के घनिष्ठ परिचय को देखकर वे आश्चर्यान्वित हो जाते हैं। इन्हीं के पास वे युवक स्टेन्डाल, मेरिमे, गॉतिये, फ्लोबेयर, बालजाक, बोदलेयर, एलेनपो, भेयरलेन इत्यादि साहित्यिकों की खोज पाते हैं। रूस के उदीयमान प्रतीकवादी सम्प्रदाय का सन्धान भी गोर्की ही से मिलता है।

नहीं, गोर्की का मन जड़ता को प्राप्त नहीं हुआ है। उनका सदा जाग्रत् और प्रश्न-मुखर मन व्याकुल होकर सर्वत्र जीवन-समस्या को हल करने के मन्त्र को ढूँढ़ रहा है; परन्तु समस्या-बहुल जीवन की कुञ्जी आज भी गोर्की के हस्तगत नहीं हुई है।

यहाँ के यहूदी न्यायाधीश याकभ टाइटेल के घर पर चिरिकभ, गारिन-माइखेलभ्स्की जैसे सामारा के बड़े-बड़े लेखक और अन्य अनेक मनीषी प्रायः आया करते हैं; इसे सामारा के बुद्धिजीवियों का अड्डा कहा जा सकता

है। गोर्की भी यहाँ आते हैं और तल्लीन होकर यहाँ के तर्क-वितर्क सुनते हैं। कभी-कभी बहस काफ़ी गरम हो जाती है; परन्तु याकभ-पत्नी के मधुर आतिथ्य से सब झगड़ा शान्त हो जाता है। कभी-कभी गोर्की भी दो-चार शब्दों से सबको शान्त कर देते हैं।

इसी मकान में कुलीन, शिक्षिता और सुन्दरी काटेरिना पाभलोभ्ना भोलजिना के साथ गोर्की का परिचय होता है। वह भी सामारा गज़ेट ही में प्रूफ़-रीडरी करती है। परिचय धीरे-धीरे घनिष्ठता में परिणत होता है। कुछ दिन बाद १८९६ ई० के प्रारम्भ में नियमानुसार गोर्की के साथ काटेरिना का विवाह होता है।

## ८

यहूदी ख्लामिदा के तीव्र आक्रमण के विरुद्ध प्रतिवाद भी दिन-दिन तीव्र हो उठता है; गज़ेट के अधिकारी लोग चिन्तित हो उठते हैं। श्रोता और पाठकों को असन्तुष्ट करना समीचीन नहीं है; क्योंकि इसमें 'वार्तावह' की सुविधा है। इसलिए गोर्की जैसे कर्मचारी को रखना असम्भव हो जाता है।

गोर्की अपनी स्त्री के साथ मई के महीने में निजनी में लौट आते हैं और दैनिक 'निजनीनौभ्गोरोट पत्रिका' ( Nizhegorodsky Listok ) में काम भी कर लेते हैं। यह वाल्गा-प्रदेश की सबसे प्रगतिशील पत्रिका है; कोरोलेंको और उनके दल के लेखक इस पत्रिका के सहायक हैं। गोर्की प्रायः नित्य नियमित रूप से इस पत्रिका के दफ़्तर में आना-जाना और यहाँ सब प्रकार की आलोचनाओं में भाग लेना शुरू करते हैं। यहाँ के सभी कर्मचारी आदर्श-वादी हैं; स्वल्प पारिश्रमिक से सन्तुष्ट रहकर, सेंसर के चंगुलों से यथासम्भव आत्मरक्षा करते हुए प्रगतिपन्थी रैडिकल मतवाद का प्रचार करने में ये लोग लगे हुए हैं।

अपनी रुचि के अनुकूल पत्रिका पाकर गोर्की इसके स्तम्भों में बड़े उत्साह के साथ लिखना शुरू कर देते हैं।

शासन-तन्त्र के अनियन्त्रित स्वेच्छाचार, शासकों की दुर्नीति, बुद्धिजीवियों के वाग्विलास, वणिक् सम्प्रदाय के जड़-प्राय बद्ध जीवन, दरिद्र शिशु और मज़दूरों की दुर्दशा इत्यादि अगणित विषयों के बारे में जनसाधारण को सचेत करने के उद्देश्य से गोर्की की लेखनी बड़े ज़ोरों से चलने लगती है। धीरे धीरे गोर्की के परिचित मार्क्सपन्थी लेखक चिरिकभ, स्किटालेट्स, लिओनिड आन्द्रेयेभ् भी इस पत्रिका का साथ देने लगते हैं।

केवल कहानी और किताब लिखकर लेखकों को जो आमदनी होती है वह पर्याप्त नहीं है, इसलिए बहुत-से लेखकों को बाध्य होकर समाचार-पत्रों में 'स्तम्भ'-लेखक बनना पड़ता है। नाना प्रकार की सामयिक घटनाओं की आलोचना के द्वारा पत्रिका के स्तम्भ भरना पड़ता है। यह आलोचना सहज काम नहीं है। अत्याचारी शासकों की प्रखर दृष्टि से बचकर विप्लवानुकूल विचारधाराओं का प्रचार करना अत्यन्त दुस्साध्य काम है। प्रधानतः इसी लिए गोर्की रूपक का आश्रय लेते हैं। कोरोलेंको गोर्की का रूपक लिखना पसन्द नहीं करते। परन्तु शासकों के सन्देह से न बचने पर भी, कम से कम क़ानून के फन्दों से बचने के लिए रूपक न लिखकर और कुछ करना भी सम्भव नहीं है। क़ानून से रूपक के ऊपर राजद्रोह का जुर्म लगाना बहुत ही कठिन है; परन्तु पाठक सम्प्रदाय रूपक के अन्तराल में लेख का जो मूल वक्तव्य है उसे समझ लेते हैं। इसी प्रकार से साहित्य के द्वारा रूस की अवरुद्ध आशा, आकांक्षा और वेदना मानवहृदय की गुप्त गुहा से छोटी-छोटी धाराओं में निकलकर भविष्य के भाव-प्लावन का आयोजन करने लगती हैं।

गोर्की की रचनाओं में नीरस, सङ्कीर्ण जीवन की निरुद्यम निरापत्ता के विरुद्ध विद्रोह दिन-दिन प्रबल और सुस्पष्ट होने लगता है, उनमें विद्रोही की संग्रामशील वीरता की जयध्वनि सुनाई देने लगती है। चेकभ की रचनाओं में जो निराशापूर्ण निष्क्रियता पाई जाती है, गोर्की के कण्ठ में उसके विरुद्ध एक नवीन आशा से उद्बोधित विद्रोह की वार्ता घोषित हो रही है, पाठक सम्प्रदाय भी इस बात को समझने लगे हैं। लिओनिड आन्द्रेयेभ् मास्को से गोर्की की इस विशेषता का उल्लेख करते हैं। परन्तु गोर्की चेकभ की

रचनाओं से मुग्ध हैं, चेकभ की कहानियों में जो मनुष्य के प्रति आश्चर्यजनक सहानुभूति है वह गोर्की की दृष्टि से छिपी नहीं है। चेकभ की कठोर निराशा में भी, मनुष्य-जीवन का जो अपव्यय हो रहा है उसके प्रति उनका जो दुःखभरा तिरस्कार है वह गोर्की को बहुत ही अच्छा लगता है।

'पत्रिका' के दफ़्तर में कभी-कभी उसकी कर्मनीति के विषय में ज़ोरदार बहस होती है। सावधानी के साथ यथासम्भव क़ानून से बचाकर पत्रिका चलाना अच्छा है, अथवा वीर की तरह युद्ध घोषणा कर अख़बार का अन्त कर देना अच्छा है, इस विषय पर घोर वितर्क होता है। गोर्की भी जी-जान से विद्रोही हैं; परन्तु विप्लववादियों के गुप्त क्रिया-कलाप के प्रति उनकी उतनी सहानुभूति नहीं है। कोरोलेंको के ही आप समर्थक हैं; इसी लिए दो-चार बार विद्रोहात्मक रचना लिखकर पत्रिका का अन्त कर देना उनको पसन्द नहीं है। पत्रिका चलाने के पक्ष में ही गोर्की कोरोलेंको प्रभृति लोगों के साथ एक इक़रारनामे पर हस्ताक्षर करते हैं।

९

१८९६ ई० के अन्तिम भाग में अत्यधिक परिश्रम के कारण गोर्की बीमार पड़ते हैं। परीक्षा के बाद डाक्टर कहते हैं कि गोर्की के फेफड़े में क्षय का आक्रमण हुआ है। दीर्घकाल तक नाना प्रकार के दुःख भोगने के कारण अत्यन्त बलशाली गोर्की का भी स्वास्थ्य नष्ट हो गया है। एक फेफड़े में तो पहले ही से छेद रहा, इसके अलावा दो बार अत्यधिक मार खाने के कारण भी सम्भवतः फेफड़े पर चोट लगी थी। इस भयानक रोग का बीज कौटुंबिक रूप से भी उनके शरीर में छिपा हुआ था; इतने दिनों बाद वह अब आत्म-प्रकाश कर रहा है। गोर्की की शारीरिक अवस्था आशङ्कापूर्ण हो जाती है। इसके प्रतिकार के लिए अच्छा इलाज और जगह बदलने की आवश्यकता है। डाक्टर की राय है कि दक्खिन रूस के स्वास्थ्य-केन्द्र में जाना चाहिए। परन्तु सबसे पहले जिस वस्तु की ज़रूरत है वह धन कहाँ है?

पर, सम्भव है अदृष्ट का खेल केवल एक कल्पना की बात ही नहीं है। इसी लिए, ठीक इसी समय सेन्टपीटर्सबर्ग के विश्वविद्यालय के ग्रैजुएट और

मार्क्स-भक्त भ्लाडिमिर पॉस 'अनुशीलन' (Obrazovaniye) पत्रिका में गोर्की की 'चेलकाश' और 'हृदय-वेदना' शीर्षक कहानियों की बड़ी प्रशंसा करते हैं और गोर्की के दारिद्रय का अनुमान कर यह मन्तव्य करते हैं कि यदि अवसर न पाने के कारण ऐसी प्रतिभा का विकास न हो सके तो यह बहुत ही दुःख की बात होगी। निजनी से एक डाक्टर पॉस को लिखते हैं कि आपका अनुमान सही है, किन्तु गोर्की क्षय से पीड़ित हैं।

यह सुनकर पॉस का उदार हृदय व्याकुल हो उठता है और अपने प्रभावशाली बड़े भाई की सहायता से सरकारी 'साहित्यिक फ़एड' से गोर्की के लिए ८०० रूबल के ऋण का प्रबन्ध कर देते हैं। मार्क्सपन्थी पत्रिका 'नव-वाणी' (Novoye Slovo) में प्रकाशनार्थ गोर्की की 'कॉनोभालोभ' शीर्षक कहानी लेकर वह और भी डेढ़ सौ रूबल अग्रिम दिला देते हैं। इसी प्रकार से अप्रत्याशित संयोग से १८९७ ई० के प्रारम्भ में गोर्की स्वास्थ्य सुधारने की आशा से क्रिमिया को रवाना हो जाते हैं।

कई महीने क्रिमिया में रहने के पश्चात् गोर्की यूक्रेन के पोल्टाभा प्रदेश में एक गाँव में आ ठहरते हैं। यहाँ पर गोर्की का स्वास्थ्य बहुत कुछ अच्छा होता है। इसके अलावा यहाँ के ग्रामीण लोगों के साथ मित्रता होने से और यूक्रेन के प्राकृतिक सौन्दर्य के दृश्यों से गोर्की का मन आनन्द से सञ्जीवित हो उठता है। यहीं पर गोर्की 'गोल्ट्भा मेला' नामक पुस्तक लिखते हैं; जीवन की प्रशंसा से यह रचना समुज्ज्वल है।

जाड़े की ऋतु ट्वयर (Tver) प्रदेश में रहकर कुछ स्वस्थ हो गोर्की निजनी में लौट आते हैं।

## १०

कोरोलेंको की पत्रिका में 'चेलकाश' निकलने के बाद बहुत सी पत्रिकाओं ने बड़े आदर के साथ गोर्की की रचनाओं को छापना शुरू किया है। निजनी-नौभगोरोट पत्रिका में तो वे नियमित रूप से लिखते ही हैं, इसके अतिरिक्त अन्य पत्रिकाओं में उनको लिखना पड़ता है। किसी विशेष दल के अनुगत रहना गोर्की के स्वभाव के विरुद्ध है; जो व्यक्ति सभी मनुष्यों के दुःख तथा

वेदना के पुरोहित हैं उनके लिए किसी विशेष दल का एकान्त अनुगत भक्त होकर रहना सम्भव नहीं है।

तथापि गोर्की नारोडनिक आदर्शवाद के प्रति ही विशेष अनुरक्त हैं। उस दल के अनुयायियों के साथ ही उनकी विशेष घनिष्ठता है। मार्क्सवाद के प्रति कुछ थोड़ा-सा अनुराग तो है, परन्तु मार्क्सपन्थियों के साथ वे अधिक अन्तरङ्ग होना नहीं चाहते। पॉस मार्क्सपन्थी हैं, बड़ी चेष्टा से आपने इसके पहले गोर्की की एक कहानी अपनी पत्रिका में प्रकाशित की है। वे और उनके दल के लोग इस बात को भली भाँति जानते हैं कि गोर्की जैसे लेखक को अपने दल में पाना कम सौभाग्य की बात नहीं है। इसी लिए दूसरी बार जब पाँस ने गोर्की की कहानी 'भूतपूर्व मनुष्य' को उस पत्रिका के लिए पाया तो उनके दल के लोगों को बहुत ही आनन्द हुआ और उन्होंने गोर्की की इस सहानुभूति के लिए अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

परन्तु १८६७ ई० के अन्त ही में 'नव-वाणी' पत्रिका उठ गई। जनवरी '६८ के महीने में इस पत्रिका के भूतपूर्व सम्पादकों ने गोर्की से यह प्रार्थना की कि आपकी कहानियों को पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जाय। गोर्की के भक्त पॉस भी अनेक लोगों के उपहास की परवाह न कर प्रकाशक की खोज करने लगे। परन्तु बहुत से प्रकाशक उस समय भी गोर्की की जनप्रियता के बारे में सन्दिग्ध रहने के कारण उनकी कहानियों को छापने के लिए राज़ी न हुए। अन्त में दो विप्लववादी डोरोभाटोभ्स्की और चारुश्निकभ् गोर्की की कहानियों को पुस्तक रूप में प्रकाशित करने को राज़ी हुए। मार्च के महीने में गोर्की की गल्प-पुस्तक दो खण्डों में निकली। साल का अन्त भी न हुआ कि दोनों खण्डों के साढ़े तीन हजार का पहला संस्करण बिक चुका। फिर तृतीय खण्ड के साथ दूसरा संस्करण निकला और वह भी एक साल ही के अन्दर-अन्दर ख़तम हो गया। रूस के पुस्तक-प्रकाशकों के लिए इतना सौभाग्य इसके पहले और कभी न हुआ। रूस के स्वल्प-शिक्षित लोगों में गोर्की का इतना समादर आश्चर्यजनक और आशातीत है।

गोर्की के डेरे की तलाशी ली और उन्हें तिफ़लिस के मेटेख दुर्ग में ले जाकर क़ैद कर लिया।

इस विपत्ति में काटेरिना पाम्लोम्ना ने पाँस के पास ख़बर भेज दी। पाँस के बड़े भाई एक प्रभावशाली पुरुष थे और बड़े-बड़े राजकर्मचारियों के साथ उनका बड़ा मेल था, इसलिए यह मामला अधिक आगे न बढ़ सका। उनकी चेष्टा से इम्पीरियल कौंसिल के सदस्य टागान्ट्सेभ ने गोर्की को तुरन्त मुक्त करने का उपाय किया। गोर्की मुक्त होकर निजनी को लौट आये परन्तु पुलिस ने उन पर निगाह रक्खी। पुलिस ने छोड़ दिया, लेकिन गोर्की के ऊपर उनका क्रोध रह गया। पुलिस भावी अवसर की ताक में रह गई।

## १२

तीस वर्ष की अवस्था में गोर्की अपने बारे में निस्सन्दिग्ध हैं, रास्ते का सन्धान उनको मिल गया है; इस जीवन में उनको क्या करना है, उनका लक्ष्य क्या है इस विषय में वे हृदय में अनिश्चित नहीं हैं। गोर्की की रचना ने रूस-साहित्य में जो नवजीवन का स्पन्दन और नवीन भावना का आलोड़न उत्पन्न किया है वह केवल उनकी पुस्तक की माँग से ही नहीं मालूम होता। एक दिन बङ्गाल में जिस प्रकार से महाकवि रवीन्द्रनाथ की भाषा, उनके हस्ताक्षर, वेष-भूषा और कथोपकथन का अनुकरण होने लगा था, उसी प्रकार रूस के भी भिन्न-भिन्न स्थानों में गोर्की का अनुकरण होने लगा है।

इसी गोर्की को कितने दिन दाने-दाने को तरसना पड़ा है। गृहहीन, आवारा होकर उनको देश-देशान्तर में लक्ष्यहीन होकर भटकना पड़ा है, कुली मज़दूर बनकर उन्हें किसी प्रकार से जीवन धारण करना पड़ा है और रहने के उपयुक्त स्थान के अभाव से उन्हें असाध्य व्याधि से ग्रस्त होना पड़ा है। कितनी उपेक्षा और कितना अनादर! जब उसी गोर्की के हाथ में उनकी कहानियों के पहले संस्करण के लिए एक हज़ार रूबल आ पड़ा तब उनको वह एक अचम्भा-सा मालूम पड़ा। आज गोर्की का इतना ही आदर है।

अब से गोर्की के धनागम में कमी नहीं, परन्तु गोर्की के पास धन रहता कहाँ? कोई भी अभावग्रस्त मनुष्य जब उनके सामने आकर खड़ा होता है

गोर्की की जेब ख़ाली हो जाती है। इसके अलावा वैप्लविक कार्यों में भी उनका बहुत-सा धन ख़र्च होता है।

गोर्की के पाठक अगणित हैं, परन्तु उनके समालोचकों में विरोधवादियों की संख्या भी कम नहीं है। यह विरोध विशेषकर मतवाद के आधार पर ही जाग्रत् हुआ है। किन्तु प्रतिकूल समालोचना के होने पर भी, विरोधियों को भी स्वीकार करना पड़ता है कि आप एक शक्तिशाली लेखक हैं, जीवन सम्बन्धी विचारों में प्रचण्ड मतभेद रहते हुए भी उन्हें स्वीकार करना पड़ता है कि साहित्यक्षेत्र में गोर्की की गणना न करना असम्भव है। कट्टर 'नारौडनिक' माइखेलोभ्स्की भी गोर्की को एक 'महान् शिल्प-प्रतिभा' कहकर उनका सम्मान करते हैं। गोर्की के चरित्र की तीव्र समालोचना करते हुए भी अन्त में मेन-शिकोभ् को कहना पड़ा कि 'तथापि इनकी बातें सुनने योग्य हैं।'

गोर्की के सच्चे मित्र हैं कोरोलेंको। अब गोर्की को एक दूसरे मित्र मिलते हैं। ऐसा मित्र दुनिया में क्वचित मिलता है! नवम्बर ('९८) में गोर्की प्रसिद्ध गल्प लेखक चेकभ को अपनी पुस्तक भेजते हैं। कई दिन के बाद ही उच्छ्वसित प्रशंसापूर्ण पत्र आता है—"अपनी कहानियों के बारे में आप मेरा मत जानना चाहते हैं? मेरा मत? आप एक शक्तिशाली लेखक हैं इसमें कोई सन्देह नहीं है। आपको एक यथार्थ और प्रचण्ड शक्तिशाली लेखक कहना पड़ेगा। जैसे लीजिए अपनी कहानी 'स्टेप्स में'; इसमें इतनी शक्ति का परिचय है कि मुझे भी यह सोचकर ईर्ष्या हो रही है कि मैं इस कहानी का लेखक नहीं हूँ। आप शिल्पी हैं, आपकी दृष्टि स्वच्छ है।" इसके पश्चात् चेकभ गोर्की की रचना में जो त्रुटियाँ हैं उनका भी बड़ी धीरता के साथ उल्लेख करते हैं। विशेष कर गोर्की की रचना में जो शब्द-बाहुल्य है उसकी ओर वे ध्यान दिलाते हैं।

इसके बाद मार्च के महीने ही में गोर्की कई हफ़्तों के लिए क्रिमिया जाते हैं और वहीं पर चेकभ के साथ उनकी भेंट होती है। यहाँ बड़े ही आनन्द से दिन बीतते हैं। दोनों क्षय से पीड़ित हैं। साक्षात्कार के बाद दोनों में मित्रता और भी गहरी, और भी अनुराग से उज्ज्वल हो उठती है। चेकभ गोर्की से आठ साल बड़े हैं। गोर्की के निजनी लौट आने के बाद चेकभ बार-

बार गोर्की से यह अनुरोध करने लगे कि आप निजनी छोड़कर मास्को अथवा पीटर्सबर्ग जाकर रहिए। चेकभ को यह दृढ़ विश्वास है कि मास्को अथवा पीटर्सबर्ग के साहित्यिक वातावरण में रहने से गोर्की को महान् लाभ होगा। परन्तु गोर्की किसी तरह निजनी छोड़कर जाना नहीं चाहते। क्या बाल्य और यौवन की स्मृति उन्हें रोकती है? अथवा मास्को और पीटर्सबर्ग के अभिजात साहित्यिकों की उपेक्षा-दृष्टि की छिपी आशङ्का उन्हें जाने नहीं देती?

जो कुछ हो, गोर्की निजनी ही में रह जाते हैं। यहाँ नाना प्रकार की शुभ प्रचेष्टाओं में गोर्की को सहानुभूति और सहयोगिता अनायास मिलती है। विशेष कर, निम्न श्रेणी के दरिद्र छात्रों की सहायता करने मे गोर्की मुक्तहस्त हैं। सम्भवत: गोर्की को अपनी बाल्यवस्था में विद्या प्राप्त करने की जो उग्र व्याकुलता थी उसकी याद आती है।

शिशुओं के प्रति, ख़ासकर दीन-दरिद्र, गृहहीन शिशुओं के प्रति गोर्की की ममता असाधारण है। अपने बाल्यजीवन की स्मृति लेकर जब वे उन शिशुओं की ओर ताकते हैं, तब इस सहृदय मनुष्य का हृदय वेदना से आतुर हो जाता है। इसी लिए जब सम्भव होता है, इन शिशुओं को धन, वस्त्र और खाद्य देकर परितृप्त करने में गोर्की कुछ भी उठा नहीं रखते। साल में एक बार बड़े दिन के आनन्द उत्सव के अवसर पर अपने धनी मित्रों की सहायता से गोर्की प्राय: एक हज़ार बालक-बालिकाओं को अन्न-वस्त्र दान करने का आयोजन करते हैं। यहाँ के नाना प्रकार के जनहित के कार्यों में भी गोर्की का अस्तित्व सुप्रकट होता है। यहाँ के पुस्तकालयों को भी गोर्की पर्याप्त पुस्तकें दान करते हैं।

## १३

लगभग सात वर्ष पहले रूस में जो भयानक अकाल पड़ा था उस समय से बुद्धिजीवी दल देश की शोचनीय अवनत अवस्था के बारे में विशेष रूप से सचेत हो उठा है। वे समझ गये हैं कि स्वेच्छाचार शासनतन्त्र ही देश की इस दयनीय दशा के लिए उत्तरदायी है। वे यह भी समझने लगे हैं कि शासक-वर्ग के देश के शिल्प वाणिज्य की उन्नति के विरोधी होने के कारण ही देश

की यह दशा है। इसी लिए नारौडनिक सम्प्रदाय के साथ-साथ मार्क्सपन्थी समाज-तन्त्रवादी भी धीरे-धीरे युवक-सम्प्रदाय के मन पर अधिकार करने लगा है। विशेष रूप से छात्र-सम्प्रदाय ही में वैप्लविक चेतना फैल रही है। सम्प्रति छात्र-सम्प्रदाय की सहानुभूति श्रमिकों के साथ सहयोग करने के लिए अग्रसर हो रही है। स्वभाव से विप्लवी गोर्की इसी लिए और भी अधिक छात्र-सम्प्रदाय की ओर आकृष्ट हो रहे हैं। गोर्की की रचना भी तरुण सम्प्रदाय को मन्त्रमुग्ध-सा कर रही है।

मास्को में गोर्की-भक्त नवयुवकों का एक दल बन गया है जिसका नाम 'बुधवार का दल' है। उदीयमान साहित्यिकों की यह गोष्ठी वेश-भूषा और बाल बनाने के फैशन में भी गोर्की का अनुकरण करती है। चिरिकोभ, बुनिन, आन्द्रेयेभ, स्किटालेट्स, गायक चालियापिन ये सभी इस सङ्घ के सदस्य हैं। कोरोलेंको, चेकभ, गोर्की इन सबों की इसके प्रति सहानुभूति है। जब कभी आप लोग मास्को पधारते हैं, इस साहित्य-सङ्घ में आनन्द की लहर बह जाती है।

'नव-वाणी' पत्रिका बन्द हो जाने के बाद मार्क्सपन्थी लोगों ने फिर पीटर्सबर्ग से 'जीवन' ( Zhizn ) नाम की एक पत्रिका निकाली है। यह पत्रिका निकलने के थोड़े ही दिन बाद गोर्की ने पहली बार पीटर्सबर्ग में पदार्पण किया। 'जीवन' के दफ़्तर में ही गोर्की को अभिनन्दित करने के लिए पॉस ने एक साहित्यिक सभा का आयोजन किया। अनेक बड़े-बड़े लेखक वहाँ पर आये; माईखेलभ्स्की, कोरोलेंको प्रभृति गोर्की का सादर स्वागत करते हैं शिक्षित व्यक्तियों की इस सभा में गोर्की को बेचैनी-सी मालूम पड़ती है। उनके मन में यह सन्देह होता है कि सम्भवत: समाज के निम्न स्तर से आये हुए इस लेखक के प्रति वे लोग करुणा-मिश्रित आदर कर रहे हैं। इस धारणा के वशीभूत होकर गोर्की ने जो रूढ़ उत्तर दिया उससे बुद्धिजीवी दल के 'ऊँचे' साहित्यिकों के हृदय में क्षोभ उत्पन्न होता है। बहुत दिनों तक ये लोग इस असौजन्य के लिए गोर्की को क्षमा नहीं करेंगे।

मार्क्सपन्थियों के साथ बिलकुल एक राय के न होने पर भी, उनके ऊपर गोर्की बहुत असन्तुष्ट भी नहीं है। इसलिए अब से गोर्की 'जीवन' पत्रिका

के साहित्य-विभाग के सम्पादक होते हैं और उसी के साथ 'ज्ञान पब्लिशिंग हाउस' ( Znaniye ) के हिस्सेदार बनकर सत्साहित्य का प्रचार करना शुरू करते हैं।

किसी भी मामले के साथ गोर्की का नाम लगा रहना साधारण बात नहीं है। इसी लिए गोर्की के उत्साह और उद्योग से थोड़े ही दिनों के अन्दर यह प्रकाशक-मण्डली साहित्य-प्रचार के काम में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त करती है। स्वदेशी और विदेशी साहित्य की श्रेष्ठ रचनाओं को प्रकाशित करने से पर्याप्त आमदनी होने के कारण लेखकों को भी पर्याप्त पुरस्कार देना सम्भव हुआ। इसके अलावा लाभ का बचा हुआ हिस्सा भीतर ही भीतर वैप्लविक कार्यों में ख़र्च होने लगा।

## १४

१६०० ई० का वसन्तकाल—पॉस के साथ गोर्की मास्को में टॉलस्टॉय के साथ मिलने आये हैं। गोर्की टॉलस्टाय से अपने नव प्रकाशित उपन्यास 'फोमा गॉर्डियेभ' के बारे में पूछते हैं। टॉलस्टॉय कहते हैं, पढ़ना शुरू किया था, पर ख़तम नहीं कर सका। बड़ा नीरस है और सारी कहानी कृत्रिम है। जो बातें लिखी गईं हैं न तो वे कभी हुई हैं, न हो ही सकती हैं। बुरा न मानना, यह पुस्तक मुझको अच्छी नहीं लगी। परन्तु तुम्हारी 'गोल्टभामेला' की कहानी बहुत अच्छी लगी—सरल और यथार्थ है। फिर पढ़ी जा सकती है। गोर्की के जाने के बाद टॉलस्टॉय को मालूम होता है कि गोर्की को विक्षोभित किया गया है। इसी से वह दूसरे दिन पॉस से कहते हैं,—जो कहना था वह तो रह ही गया। डास्टयेभ्स्की ने जैसा अपराधियों के अन्दर दिखलाया है गोर्की ने भी वैसा ही आवारों में भी जीती-जागती अन्तरात्मा को दिखलाया है। परन्तु बहुत कुछ वह बनावटी लिखता है यही एकमात्र दोष है। [ इसके साल भर बाद टॉलस्टॉय अपनी डायरी में लिखते हैं—हम सभी यह जानते हैं कि आवारा भी मनुष्य है, हमारा भाई है, परन्तु यह जानना असत्य है; पर गोर्की ने प्रेम के साथ उनके चित्र खींचे हैं और उस प्रेम को हमारे अन्दर संक्रामित किया है। ]

पहली भेंट बिलकुल आशानुरूप नहीं हुई। गोर्की के साथ बातचीत करते समय टॉलस्टॉय उस ग्रामीण भाषा का प्रयोग करते हैं जिस भाषा में शहर के लोग अशिक्षित गँवारों के साथ बातचीत करते हैं। गोर्की को ऐसा प्रतीत होता है कि वे उनके साथ अनुग्रह कर बातें कर रहे हैं। दूसरों की अनुकम्पा की दृष्टि गोर्की को असह्य है। 'मैं समाज के निम्नस्तर से आ रहा हूँ इसी लिए टॉलस्टॉय ने मेरे साथ इस प्रकार का आचरण किया,' कुछ दिनों के लिए गोर्की के मन में यही वेदनादायक भ्रान्त विश्वास बना रहता है। अवश्य उसके बाद एक दिन आवेगा जब गोर्की को मालूम होगा कि यह धारणा कितनी भ्रमपूर्ण है और टॉलस्टॉय कितने महान् पुरुष हैं।

---

# विप्लवी-चारण

## १

उन्नीसवीं शताब्दी का अन्तिम पाद रूस के एक आश्चर्यजनक नवजागरण का युग है। बुद्धिजीवी सम्प्रदाय इस जागरण का अग्रदूत है। युग-युगान्त-व्यापी मोहान्धकार से रूस के निद्रित जन-साधारण ने उस समय जागना प्रारम्भ किया है। क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियों ने नाना प्रकार के गुप्त प्रतिष्ठानों के द्वारा भिन्न-भिन्न दलों में विभक्त होकर अज्ञ, अन्ध कृषक और श्रमिकों की आँखों में ज्ञानाञ्जन का प्रयोग कर उनकी दृष्टि को खोल देने के काम में जान की बाज़ी लगाकर आगे बढ़ना शुरू किया है। धीरे-धीरे विप्लव का स्रोत प्रबल होने लगा है और रूस के शासक-सम्प्रदाय शङ्कित दृष्टि से उसी को देख रहे हैं। इस सहस्रफण नाग के फण पर कभी-कभी छुरे की चोट भी पड़ रही है परन्तु इससे अनन्त नाग की मृत्यु नहीं होती। धीरे-धीरे विश्वविद्यालयों के छात्र-सम्प्रदाय में नवयुग की पुकार आ पहुँची है। वे भी विप्लव की बाँसुरी सुनकर मुग्ध हो रहे हैं। वे भी अनागत विप्लव की साधना में प्रवृत्त हुए हैं। सभा, समिति और पुस्तकालयों के सहारे वे हृदय की नवीन आशा और आकांक्षाओं की पुष्टि कर रहे हैं। निर्यातन से वे डरते नहीं हैं; भावी विप्लव को सम्भव बनाने के लिए वे अपने को अत्याचारी की बलिवेदी पर आत्मोत्सर्ग करना चाहते हैं। १८९९ ई० में छात्रों ने इसका पहला प्रमाण दिया है। सेन्ट पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय के छात्रों के उत्सव में सरकार ने बाधा दी। छात्र लोगों ने इसका प्रतिवाद किया और इसके फलस्वरूप बहुत से छात्र हताहत हुए। इसी की प्रतिक्रिया रूस में सर्वत्र दिखाई देने लगी और देश भर में हड़ताल फैलने लगी। २५,००० विद्यार्थी स्कूल-कालिजों से निकाले गये। कठोर दमन-नीति से क्षणिक काल के लिए बाहरी शान्ति प्रतिष्ठित हुई।

परन्तु इस प्रकार से युवक सम्प्रदाय की जाग्रत् चेतना को कभी सुलाया नहीं जा सकता। दो साल के बाद फिर १६०१ ई० के प्रारम्भ ही में 'किसान मुक्ति-दिवस' के उपलक्ष में सम्राट् द्वितीय अलेकज़ेंडर की स्मृतिपूजा करने के लिए सेन्टपीटर्सबर्ग के छात्र गिरजा में आकर एकत्र हुए। फिर पुलिस का नृशंस आक्रमण होता है और छात्रों की पीठ पर बेत पड़ने लगता है। इस घटना के प्रतिवाद में ४ मार्च को हज़ारों नर-नारी काज़ान-गिरजा के सम्मुख एकत्र हुए। फ़रवरी के महीने में लेखक-सङ्घ में भाग लेने के लिए गोर्की आये थे, वे भी इस प्रतिवाद-सभा में उपस्थित हुए। यहाँ पर अपनी आँखों से गोर्की ने निरीह जनता के ऊपर नृशंस पुलिस-वाहिनी के अत्याचार को देखा। जलूस के ऊपर सशस्त्र आक्रमण के बारे में जो सरकारी इश्तहार निकाला गया उसमें जनता ही के ऊपर दोष लगाया गया। इससे विप्लवी गोर्की का ख़ून उबल उठा और गोर्की की लेखनी से एक तीव्र ज्वालामय प्रतिवाद निकल आया। विप्लवियों ने इस प्रतिवाद को बेनाम छपवाकर सर्वत्र बाँट दिया। पुलिस को मालूम होता है कि यह गोर्की का लिखा हुआ है, परन्तु प्रमाण न मिलने के कारण उसे चुप्पी साधनी पड़ती है।

सोलह वर्ष की अवस्था से गोर्की विप्लव के सेवक हैं। इसी लिए शिल्पी गोर्की की सभी रचनाओं में विप्लवी गोर्की की अन्तर्ज्वाला भभकती हुई दिखाई देती है। चिराचरित, गतानुगतिक बद्ध जीवन के प्रति गोर्की की तीव्र घृणा उद्यत है। साहसिक जीवन की प्रशंसा में उनकी वाणी उच्छ्वसित है। गोर्की की रचनाओं में वैप्लविक उक्तियों की भरमार है। परन्तु ये उक्तियाँ रूपकात्मक रचनाओं में होने के कारण पुलिस अब तक कुछ नहीं कर सकी, सेंसर के अफ़सरों की कलम भी इनके विरुद्ध नहीं चलती। परन्तु जिनके लिए ये उक्तियाँ हैं, वे अनायास उन्हें समझ लेते हैं और तरुण युवक-सम्प्रदाय इन्हें अपनी अन्तरतम वाणी समझकर कण्ठ कर लेता है।

रवीन्द्रनाथ के 'यदि तोर डाक शुने केउ ना आसे' गान की तरह गोर्की का 'बाज पक्षी का गान' है; इस गीत के—'हम साहसिक पागलपन का गीत गाते हैं' या 'साहसिक पागलपन में ही तो जीवन का यथार्थ ज्ञान है' जैसे वाक्यों की आवृत्ति करते हुए युवकों का हृदय उद्दीप्त हो उठता है

इसी लिए युवक सम्प्रदाय में और विप्लव की इच्छुक जनता में गोर्की एक प्रिय बन्धु की तरह परिचित और समादृत हैं। केवल लिखकर और व्याख्यान देकर ही वे तृप्त नहीं हो सकते। छात्र-आन्दोलन-समिति की सहायता के लिए गोर्की ने दो हज़ार रूबल दिया और श्रमिक-मुक्ति के लिए जो संग्राम-सङ्घ है उसको भी दो हज़ार रूबल दिया। इसके अलावा और भी कितने प्रकार के वैप्लविक अनुष्ठानों और प्रतिष्ठानों की आप मुक्तहस्त होकर सहायता करते हैं जिसका कोई ठिकाना नहीं। सांवादिक गुरेभिच पुलिस को यह सब ख़बर देता है, परन्तु गोर्की को पकड़ने के लिए पुलिस को कोई भी बहाना नहीं मिलता; उसका निष्फल क्रोध पुञ्जीभूत होता जाता है।

अनेकों विप्लवियों को खुली अदालत के सामने हाज़िर किये बिना ही रूस सरकार ने क़ैद कर लिया है और उन्हें जेल भेज दिया है, परन्तु गोर्की के अत्यन्त जनप्रिय होने के कारण रूस सरकार को उनके साथ भी ऐसा करने में भयानक बाधा पड़ती है, नहीं तो गोर्की इतने दिन किसी तरह जेल के बाहर नहीं रह सकते। इसी लिए गोर्की के अपराध को खुली अदालत में निस्संशय रूप में प्रमाणित किया जा सके ऐसे अवसर की ताक में बहुत दिनों तक पुलिस को रहना पड़ता है; क्योंकि यह काम इतना सहल नहीं है। विप्लवी-चारण गोर्की विप्लवियों के परम प्रिय हैं; गोर्की किसी तरह फँस न जायँ इस-लिए वे भी बहुत ही सावधान रहते हैं। गोर्की को ऐसी बातों में किसी तरह पड़ने ही नहीं देते जिससे उन्हें खुली कचहरी में अभियुक्त बनाया जा सके।

किन्तु मार्च ही के महीने में एक ख़बर पाकर पुलिस की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहता। सम्भव है कि इतने दिनों की प्रतीक्षा के बाद अब...! यह ख़बर है कि गोर्की और स्किटालेट्स ने पीटर्सबर्ग में एक मिमिओग्राफ प्रेस खरीदा है और इसके द्वारा छापकर निजनी शहर के उपकण्ठ में स्थित सार्मभो के मज़दूरों में घोषणापत्र बाँटना इसका उद्देश्य है। परन्तु यह प्रेस इतनी सावधानी से निजनी में लाया गया कि पुलिस के बहुत ही सचेत रहने पर भी प्रेस का कुछ भी पता न मिला। तिस पर भी अप्रैल के महीने में निजनी को लौटने के बाद ही पुलिस ने गोर्की और उनके दल के और भी कुछ लोगों को गिरफ़्तार कर लिया।

## २

गिरफ़्तारी के ठीक पहले 'जीवन' पत्रिका में 'तूफ़ानी चिड़िया का गीत' (Song of the Stormy Petrel) प्रकाशित हुआ और इसी के लिए पत्रिका को बन्द कर दिया गया। परन्तु थोड़े ही दिनों के अन्दर यह गीत सारे रूस के लोगों में फैल गया। फ़रवरी के महीने में 'जीवन' पत्रिका के दफ़्तर में लेखकों की सभा में चिरिकोभ की किसी रचना की आलोचना हो रही थी। ऐसे समय गोर्की 'अभी आता हूँ' कहकर बग़ल के कमरे में घुस गये। चालीस मिनट के बाद आँसू-भरी आँखों को पोंछते हुए वे निकल आते हैं और शिशु की तरह बोल उठते हैं—'यह गीत अच्छा हुआ है'। इस गीत में उन्होंने लिखा था—"तूफान! टूट पड़ेगा तूफ़ान, उसमें देर नहीं है, प्रचण्ड तूफ़ान आ रहा है।" अनागत विप्लव के वैतालिक उस दिन इसी प्रकार रूपक की आड़ में रहकर जनसाधारण की सुप्त विप्लव-कामना को जाग्रत् कर रहे थे।

गिरफ़्तारी के कुछ दिन पहले टॉलस्टॉय के साथ फिर गोर्की की भेंट हुई थी। पकड़े जाने की ख़बर सुनते ही इस शक्तिशाली महान् पुरुष ने राजकर्मचारियों से यह अनुरोध किया कि निजनी के अस्वास्थ्यजनक कारागार से गोर्की को तुरन्त मुक्ति दे दें। परन्तु गोर्की के विरुद्ध एक-आध अभियोग नहीं हैं, बहुत-से अभियोग हैं; प्रमाण देना सम्भव न होने पर भी पुलिस जानती है कि काज़ान गिरजावाली घटना की सरकारी विवृति के तीव्र प्रतिवाद करनेवाले गोर्की हैं, निजनी में सरकार के विरुद्ध जलूस के आयोजनकर्ता गोर्की हैं, वाल्गा नदी में नाव पर वैप्लविक रचना इत्यादि छापने के बारे में चर्चा करनेवाले भी गोर्की हैं। परन्तु सरकारी लोगों के ऊपर टॉलस्टॉय के असाधारण प्रभाव के कारण पुलिस को एक महीने के अन्दर गोर्की को जेल से मुक्त करना पड़ा। गोर्की को निजनी के पास ही 'आर्जामास' गाँव में दो-तीन पुलिस का नज़रबन्द होकर रहना पड़ा। गोर्की ने टॉलस्टॉय को धन्यवाद देकर पत्र लिखा और टॉलस्टॉय को जो इस गोलमाल में घसीट लाना पड़ा उसके लिए अफ़सोस ज़ाहिर किया।

लेकिन दुस्साहसिक गोर्की को कौन रोक सकता है ? थोड़े ही दिनों बाद निजनी के समाजतन्त्री साम्यवादी दल के प्रचार-कार्य के लिए उन्होंने एक छापाख़ाना ही ख़रीद लिया और उस प्रेस का काम भी एक सरकारी शराब की दुकान ही के अन्दर चलने लगा। पुलिस को यह भी ख़बर लग जाती है, पर जब तलाशी लेने के लिए पुलिस वहाँ पर आती है तब व्यर्थ होकर लौट जाती है।

इसके थोड़े दिन बाद ही रूस के महान् पुरुष—टॉलस्टॉय भयानक व्याधि से ग्रस्त होते हैं। उद्वेग और आशङ्का से समग्र रूस के लोग व्याकुल और चञ्चल हो उठते हैं। जुलाई के क़रीब जब सङ्कट का अवसान हुआ, सारा देश उनकी रोगमुक्ति से प्रफुल्ल हो उठा और परमात्मा के पास सकृतज्ञ धन्यवाद निवेदन किया। निजनी के निवासी भी टॉलस्टॉय को अपना आनन्द-अभिवादन भेजते हैं; उसमें जो हस्ताक्षर होते हैं उनमें सबसे पहला हस्ताक्षर गोर्की का ही है।

## ३

व्याधिमुक्त होकर टॉलस्टॉय हवा बदलने के लिए क्रिमिया जाते हैं। इधर आर्ज़ामास में गोर्की का स्वास्थ्य भी ख़राब होने लगता है। गोर्की भी इसी लिए क्रिमिया जाने के लिए सरकार की सम्मति माँगते हैं। बहुत सोच-विचार के पश्चात् सम्मति मिलती है। गोर्की के स्वास्थ्य की ओर ताककर सरकार सदाशय हो उठती है ऐसी बात नहीं है। निजनी-प्रान्त में गोर्की का रहना सरकार के लिए अत्यन्त विपज्जनक प्रतीत होने लगता है। मज़दूरों के ऊपर गोर्की के असाधारण प्रभाव की बात सरकार से छिपी नहीं है; इस-लिए किसी भी समय मज़दूरों का विद्रोह कर बैठना कुछ भी असम्भव नहीं है। जन-साधारण के हृदय पर जिनका इतना बड़ा प्रभाव है, उनके स्वास्थ्य के लिए सरकार को भी चिन्तित होना पड़ता है। इसी लिए आगामी वर्ष ( १६०२ ई० ) के अप्रैल के महीने तक स्वास्थ्य-सुधार के लिए क्रिमिया में रहने की आज्ञा मिलती है और नवम्बर के महीने में गोर्की क्रिमिया की ओर यात्रा करते हैं।

इधर विप्लववादियों ने गोर्की की क्रिमियायात्रा के उपलक्ष में कुछ गड़बड़ी और उत्तेजना फैलाने के उद्देश्य से मास्को में यह हैंडबिल बाँटा कि सरकार अन्याय्य रूप से गोर्की को निर्वासित कर रही है। चारों ओर यह ख़बर फैल जाती है; जिस रास्ते से गोर्की के जाने की बात है उस रास्ते पर सभी जगह पर, विशेष कर छोटे-बड़े सभी शहरों में, उनका अभिनन्दन करने के लिए एक प्रबल उत्साह का सञ्चार होता है। स्टेशनों पर रेलवे-लाइन के किनारे-किनारे, सैकड़ों आदमी उन्हें देखने के लिए प्रतीक्षा करते हैं। लोग गोर्की को न देख सकें इसलिए पुलिस को तरह-तरह की चालाकी करनी पड़ती है। लोग रेलवे लाइन के किनारे खड़े रहते हैं। ट्रेन के शब्द को भी भेदकर उनकी जयध्वनि गोर्की के कानों तक न पहुँच जाय इसलिए ट्रेन का चालक सीटी को ज़ोरों से बजाकर पुलकित होता है। परन्तु इतने पर भी आज सरकार को निस्संशय रूप से यह बात मालूम हो गई है कि इस व्यक्ति के शरीर पर हस्तक्षेप करना विपत्ति का सामना करना है।

क्रिमिया में आकर गोर्की केवल पुराने मित्र चेकभ के ही दर्शन नहीं पाते, रूस के साहित्य-जगत् के एकच्छत्र सम्राट् टॉलस्टॉय को भी घनिष्ठ रूप से देखने और समझने का उन्हें अवसर प्राप्त होता है। कितनी बार टॉल-स्टॉय ने कहा है कि गोर्की की गल्पों के चरित्र सब कृत्रिम हैं। 'एक दिन जो मनुष्य थे' नामक गल्प—जिसे गोर्की ने बिलकुल सच्ची कहानी माना है—उसे भी उन्होंने 'बनावटी' और कृत्रिम कहा है। तथापि गोर्की इस विचित्र मनुष्य को वर्जन न कर सके। न जाने किस एक अदम्य आकर्षण से वे उनकी ओर आकृष्ट हुए हैं। क्रिमिया में उनके दिन आनन्द से ही बीतते हैं।

गोर्की प्रतिदिन अपनी डायरी में रूस के और जगत् के इस आश्चर्यजनक विराट् पुरुष की बात लिखते जाते हैं। इस विराट् पुरुष के दैनिक जीवन की तुच्छ से तुच्छ बातों के पर्यवेक्षण करने में भी गोर्की के कौतूहल की सीमा नहीं है। गोर्की का यह विवरण विश्व के साहित्य में अमर होकर रहेगा। टॉलस्टॉय की नाना प्रकार की विरुद्ध समालोचनाओं को सुनते हुए भी, न जाने क्यों गोर्की को ऐसा मालूम होता है कि टॉलस्टॉय परम मित्र हैं। "जितने दिन

यह व्यक्ति पृथ्वी पर जीवित रहेगा तब तक मैं अनाथ नहीं हूँ।" गोर्की सोचते हैं और विस्मय से निर्वाक् हो जाते हैं। एक जगह लिखते हैं—'ईश्वर में मेरा विश्वास नहीं, न जाने क्यों अत्यन्त सतर्क दृष्टि से मैं उनकी ओर ताकता हूँ; मैं कुछ भय के साथ ही ताकता हूँ पर मेरा मन कहता है—यह मनुष्य देवता है।'

## ४

लगभग एक साल शान्ति से व्यतीत हो जाता है। फ़रवरी के अन्तिम दिनों में इम्पीरियल विज्ञान एकाडेमी के भाषा और साहित्य विभाग के सभापति भेसिलोभ्स्की के पास से एक पत्र पाकर गोर्की विस्मित हो जाते हैं। वे लिखते हैं कि एकाडेमी ने साहित्य के लिए गोर्की को आनरेरी सदस्य निर्वाचित किया है। एकाडेमी का सभ्य बनाया जाना किसी भी साहित्यिक के लिए श्रेष्ठ गौरव है। गोगोल, पुश्किन इसके सदस्य थे; जीवित व्यक्तियों में टॉलस्टॉय, चेकभ और कोरोलेंको भी इसके सदस्य हैं। एक अशिक्षित, मज़दूर श्रेणी के घुमक्कड़ के लिए इतना बड़ा सम्मान अप्रत्याशित है। पहली पुस्तक प्रकाशित होने के चार साल के अन्दर, साधारण सामाजिक स्तर के एक विप्लवी मनोवृत्ति रखनेवाले पुरुष के लिए इतनी भारी सरकारी संस्था का सदस्य चुना जाना केवल अप्रत्याशित नहीं है, परन्तु अनेकों के लिए यह एक परम आश्चर्यजनक घटना है। अभिजात श्रेणी के कुछ सदस्यों को यह समाचार रात्रि के दुस्स्वप्न-सा प्रतीत होने लगा।

परन्तु दो हफ़्ते के बाद ही पुलिस के दबाव मे एकाडेमी के कार्यकर्त्ता अपनी भूल के बारे में सचेत हो उठते हैं। वे गोर्की को फिर लिखते हैं कि राजनीतिक कारणों से आपका नाम सदस्य-तालिका से हटाया गया है। इस अपमान-सूचक प्रस्ताव का समाचार सुनकर कोरोलेंको और चेकभ ने एकाडेमी के सदस्यपद से इस्तीफा दे दिया।

गोर्की फिर अप्रैल के महीने में आर्जामास गाँव को लौट आये। सितम्बर में थोड़े दिनों के लिए गोर्की मास्को आये। यहाँ के प्रसिद्ध "आर्ट थिएटर"

के लिए नाटक लिखने के लिए चेकभ ने गोर्की से कई बार प्रार्थना की थी। अभिनव अभिनय-रीति के प्रवर्तक प्रतिभाशाली नाट्य-प्रयोजक स्टानिस्लाभ्स्की इस आर्ट थिएटर के सञ्चालक थे; इनके द्वारा किसी नाटक का अभिनय होना साधारण बात नहीं थी। गोर्की ने स्टानिस्लाभ्स्की और उनके सहयोगियों को अपना नाटक 'पातालपुरी' (Lower Depths) पढ़कर सुनाया। आन्द्रेयेभ्, चालियापिन इत्यादि मित्र भी वहाँ उपस्थित थे। दिसंबर के महीने में आर्ट थिएटर में बड़े समारोह के साथ इस नाटक का अभिनय हुआ। गोर्की का नाटक, तिस पर स्टानिस्लाभ्स्की की प्रयोजना। व्यापार को देखकर १६०३ ई० के फरवरी में यह सरकारी हुक्म निकला कि किसी भी इम्पीरियल थिएटर में अथवा प्रादेशिक शहरों में इस नाटक का अभिनय न हो सकेगा।

इसके पहले बहुत चेष्टा के पश्चात् सेन्टपीटर्सबर्ग में गोर्की के नाटक 'आत्मतृप्त नागरिक' ( Smug Citizens ) खेलने की अनुमति मिली थी; अब की बार भी मास्को के आर्ट थिएटर के भ्राम्यमान दल ने यहाँ पर पातालपुरी का अभिनय किया। संरक्षणशील सम्प्रदाय के लोगों ने तो नाटक की निन्दा ही की परन्तु इस निन्दा का यथार्थ कारण नाटक उतना नहीं था जितना कि गोर्की स्वयं। गोर्की जैसे विप्लवी जनसाधारण के हृदय पर विजय करते जा रहे हैं यही यथार्थ भय का कारण है। परन्तु विशेष किसी दल के विरुद्ध आचरण से क्या होता है! कुछ महीने पहले भी 'आत्मतृप्त नागरिक' नाटक लिखकर उन्हें जिस प्रकार सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक ग्रिबायडोभ् (Griboyedov) पुरस्कार मिला था, अब 'पातालपुरी' के लिए फिर वही पुरस्कार मिला और साल भर के अन्दर इस नाटक के चौदह संस्करण समाप्त हो गये।

आज गोर्की साहित्य-जगत् के मध्याह्न-सूर्य हैं।

## ५

साहित्यिक के रूप में ही आज गोर्की अभिनन्दित होने लगे हैं यह बात नहीं है। देशवासियों के सम्मुख वे आज विप्लव-आन्दोलन के उद्गाता चारण हैं; गोर्की वह तूफ़ानी पक्षी है जिसके सङ्गीत में प्रलय का उन्माद है। गोर्की

ने केवल अपनी लेखनी ही को विप्लव-आन्दोलन में नियुक्त नहीं किया है वरन् अपने उपार्जन का अधिकांश भाग नाना प्रकार की वैप्लविक संस्थाओं को दे दिया है।

'जीवन' पत्रिका के बन्द हो जाने के बाद ही से गोर्की की विचारधारा समाजतान्त्रिक साम्यवादियों (Social Democratic Party) की ओर झुकती जा रही है। पाँस समाजतान्त्रिक विप्लवियों (Social Revolutionists) के प्रतिनिधि थे। 'जीवन' बन्द हो जाने के बाद गोर्की ही ने पाँस को यह सलाह दी थी कि विदेश से वह पत्रिका निकाली जाय। पाँस विदेश जाकर गोर्की को भी वहाँ आने के लिए बारम्बार लिख रहे हैं। परन्तु आर्जामास को लौटकर गोर्की पाँस के दल के प्रति पहले की तरह आकर्षण का अनुभव नहीं कर रहे हैं। अब लेनिनपन्थी समाजतान्त्रिक विचारों की ओर उनका आकर्षण बढ़ता जा रहा है। पाँस के धर्म सम्बन्धी विचार गोर्की को स्वीकार नहीं हैं; गोर्की में धार्मिक कट्टरता कभी नहीं थी।

इसी लिए गोर्की पाँस को लिखते हैं—"आपने लिखा है कि धर्म के बिना जीवन चल नहीं सकता। स्ट्रुभ (Struve) और फिख़्ते (Fichte) भाड़ में जायँ!...मेरा दृष्टिकोण ही मेरा सिद्धान्त है जिसे लोग धर्म कहते हैं।... जीवन मुझे प्रिय है। मैं जीवन को चाहता हूँ। जीवित रहने ही में आनन्द का अनुभव करता हूँ। यदि अपना धर्म आप ही सर्जन नहीं कर सकते हैं तो कोई भी प्रचलित धर्म आपका कुछ भी उपकार न कर सकेगा। आप स्वयं ही सब ज्ञान और कदर्यता के उत्स हैं, स्वयं ही देवता और कान्ट (Kant) हैं। इसी लिए अपनी सृष्टि के अलावा अन्य कुछ भी आप किस प्रकार से मान सकते हैं? यथार्थ रूप में तो केवल मनुष्य ही है, और बाक़ी सब एक दृष्टिकोण मात्र है। ईश्वर को मनुष्य अपने ही अनुरूप बनाता है।"

विदेश में जाकर वैप्लविक पत्र प्रकाशित करने के लिए पाँस गोर्की से अनुरोध कर लिखते हैं। गोर्की इनकार कर लिखते हैं–'यह जान रक्खें कि आप का साथ देने के लिए मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा। मैं उसी समय आपके पास आऊँगा जब यहाँ रहकर काम करना मेरे लिए असम्भव हो उठेगा। खेद के साथ कहना पड़ता है कि सम्भवतः उस दिन के लिए मुझे अधिक दिन

तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी।'... "बहादुरी की बड़ी-बड़ी बातें करने की सलाह मैं आपको नहीं दूँगा। आज-कल लम्बी-चौड़ी बातें ख़ूब होती हैं, यह काम बहुत ही आसान है।...मेरा आन्तरिक विश्वास यह है; हर्जेन ( Herzen रूस के एक विप्लवी लेखक ) के अनुकरण करने का ख़याल गोर्की के दिमाग़ में अगर आवे भी और उस काम में अगर गोर्की सफल भी हो जाय, तब भी यहाँ की सड़कों पर उसके लिए दङ्गा-फ़साद में मारा जाना तथा-कथित रूसी समाज के लिए अधिक लाभकारी होगा। इसलिए अब कुछ दिनों के लिए मुझको अपना काम करने के लिए छोड़ दीजिए और आप अपना काम करते रहिए। यह निश्चय विश्वास रखिएगा कि मेरा और आपका रास्ता दोनों एक ही लक्ष्य पर पहुँचेंगे।"

इसी तरह गोर्की पॉस के दल से अलग हो जाते हैं और लेनिन-सञ्चालित समाजतन्त्री साम्यवादी दल की गुप्त रूप से प्रकाशित पत्रिका 'स्फुलिङ्ग' ( Iskra) को सब प्रकार से सहायता देने का वचन देते हैं। प्रतिवर्ष कम से कम वह पाँच हज़ार रूबल देंगे और परिचित धनी वणिकों से भी धन इकट्ठा कर देंगे। गोर्की को आज मालूम हुआ है कि एकमात्र समाजतान्त्रिक कर्मपद्धति में ही जीवन-समस्या का समाधान है। इसी लिए अपने उपार्जित धन का केवल एक तिहाई अपने व्यक्तिगत व्यय के लिए रखकर बाक़ी सभी धन से वे भिन्न-भिन्न संस्थाओं की सहायता करते हैं।

इस प्रकार, गोर्की समाजतन्त्री साम्यवादी दल के एक सुदृढ़ स्तम्भ-स्वरूप बन जाते हैं।

## ६

आज गोर्की की जीवन-तरणी शिल्पी के कल्पना-सागर के ऊपर से नहीं, बल्कि रूस के जनसमुद्र की उद्वेलित तरङ्गों के ऊपर से अग्रसर हो रही है, रूसी जनता के सुख-दुःख के आवर्तों में पड़कर आवर्तित हो रही है। आज रूस के विपुल घटना-प्रवाह से गोर्की को अलग कर देखना असम्भव है।

यौवन के उन्मेष के समय लगभग उन्नीस वर्ष पहले गोर्की डेरेंकोभ के

अड्डे पर पहले-पहल विप्लव आन्दोलन के संस्पर्श में आये थे। उसी समय से रूस में राष्ट्रीय आन्दोलन और जनसाधारण की जागृति का सूत्रपात हुआ था। उन दिनों विप्लवियों के एक दल ने यह सङ्कल्प किया था कि आतङ्कवाद ( terrorism ) के द्वारा नाना प्रकार से राजनीतिक हत्या कर स्वेच्छाचारतन्त्र का उच्छेद करना पड़ेगा। एक दूसरे दल ने यह सङ्कल्प किया कि एक व्यापक गण-आन्दोलन खड़ा कर स्वेच्छाचारी शासक को लोकतन्त्र शासन-प्रणाली प्रवर्तित करने में बाध्य करेंगे। यही दल नारौड्निक (Narodnik) नाम से परिचित हुआ। इसी दल के उद्योग से किसान आन्दोलन देशभर में फैलने लगा।

कार्यक्षेत्र में किसी-किसी विषय में मतभेद होने के कारण यही दल कई भिन्न-भिन्न दलों में विच्छिन्न हो जाता है। १८९८ ई० में इसी से मार्क्स-पन्थी प्लेखानौभ के समाजतन्त्री साम्यवादी दल का उद्भव हुआ था।

एक ओर विप्लव-आन्दोलन के कारण युवक सम्प्रदाय में एक नवीन जागृति और उत्तेजना और दूसरी ओर स्वेच्छाचारी शासक के उत्कट निर्यातन और निष्पेषण : इन दोनों के सङ्घर्ष से रूस में एक प्रचण्ड दावानल की शिखा भभकने लगी। दास-प्रथा के उठ जाने के बाद ही से रूस में एक गृहहीन, भूमि-विहीन श्रमिक-सम्प्रदाय की सृष्टि होने लगी और ये लोग शहरों के कारख़ानों में आकर इकट्ठे होने लगे। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक कारख़ाना-सम्बन्धी कोई क़ानून न रहने के कारण श्रमिक मज़दूरों का स्वार्थ-संरक्षण कठिन हो गया, उनके लिए सङ्घबद्ध होना एक प्रकार का अपराध समझा जाने लगा। तिस पर भी हड़तालों की संख्या दिनों-दिन बढ़ती गई और कितने गण-सेवक अकथ्य निर्यातन, उत्पीड़न और निर्वासन वरण कर विद्रोह के रास्ते पर आगे बढ़ने लगे। छिपे-छिपे समाजतन्त्री दल के लोग उत्पीड़ित, निर्यातित लोगों के बीच राजनीतिक प्रचार-कार्य करने लगे। १९०३ ई० में समाजतन्त्री दल दो उपदलों में विभक्त हो गया। इन्हीं में से एक दल के नेता लेनिन हुए। गोर्की विशेष रूप से इसी दल के प्रति आकृष्ट होकर, बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में, समाजतन्त्री विप्लवियों से विच्छिन्न हो गये।

७

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में रूस में कल-कारख़ानों की संख्या बढ़ने लगी। सरकार भी, अवनत दीन-दरिद्र किसानों का ख़याल न कर, शिल्प-वाणिज्य के प्रसार के लिए पूँजीपति और कारख़ानों के मालिकों की सहायता करने लगी। इसका फल विपरीत हुआ। द्रव्य उत्पन्न करना ही पर्याप्त नहीं है, उसे बेचने के लिए उपयुक्त बाज़ार की भी आवश्यकता है। परन्तु रूस में अब जो द्रव्य उत्पन्न होने लगा उसे ख़रीदनेवाला कहाँ है? किसान सम्प्रदाय तो अत्यन्त धनहीन है, कर-भार से वह अत्यन्त पीड़ित है, शिल्प द्रव्य ख़रीदने का सामर्थ्य उसमें कहाँ है? इसी लिए नवीन शिल्पों की उन्नति प्रायः असम्भव-सी हो जाती है।

इसका एकमात्र प्रतिकार किसानों की आर्थिक उन्नति की व्यवस्था से ही हो सकता है; उसके लिए शिक्षा की आवश्यकता है और कृषि-कार्य में वैज्ञानिक प्रणालियों का प्रवर्तन करना भी आवश्यक है। परन्तु सरकार शिक्षा का प्रसार नहीं चाहती, वह अच्छी तरह जानती है कि धार्मिक अन्ध-विश्वास और अशिक्षा पर ही स्वेच्छाचार का शासन खड़ा है। इसी कारण जिस पथ से यथार्थ परित्राण हो सकता है उस पर सरकार क़दम बढ़ाना नहीं चाहती।

फिर भी कुछ तो करना ही पड़ता है, सङ्कट को सिर पर रखकर काम नहीं चलता। तैयार की गई वस्तुओं की खपत के लिए नया बाज़ार चाहिए। इसलिए रूस सरकार एशिया की ओर राज्यविस्तार करने की आशा से अग्रसर होती है। परन्तु थोड़े ही दिनों के बाद जापान इस अग्रगति को रोकने के लिए खड़ा होता है। बहुत दिनों से परिपुष्ट अन्ध गर्व के कारण रूस-सरकार यह समझती है कि असभ्य जापान क्या कर लेगा! क्षुद्र और असभ्य जापान के दिल में ऐसा साहस ही नहीं हो सकता। तथापि १९०४ ई० की फ़रवरी में जापान रूस के साथ लड़ाई में उतरता है और दूसरे साल के सितम्बर के महीने में इस युद्ध की समाप्ति होती है। जापान की विजय

से रूस के गर्वित चेहरे पर कालिख पुत जाती है। योरप भी समझ लेता है कि रूस कितना शक्तिहीन है।

युद्ध के साथ ही साथ देश के अन्दर भी अशान्ति फैलने लगती है। समाजतन्त्री विप्लवी बहुत-से राजकर्मचारियों की हत्या करते हैं; देश-व्यापी मज़दूरों की हड़ताल, सेनाविभाग और नौसेनाविभाग के विद्रोह और किसानों के दङ्गे-फ़सादों मे रूस अशान्तिपूर्ण हो जाता है। चारों ओर से आवाज़ उठती है, स्वेच्छाचारतन्त्र का उच्छेद चाहिए, वैधानिक शासन-व्यवस्था का प्रवर्तन होना चाहिए।

## ८

१९०५ ई०, २२ जनवरी, रविवार का दिन, मज़दूरों का एक विशाल जलूस सम्राट् के प्रासाद के सम्मुख जा रहा है। इन लोगों के "छोटे बाबा" सम्राट् के पास अपने अज्ञान, दरिद्रता और इनके ऊपर धनिकों के अत्याचार और नाना प्रकार की दुःख और दुर्दशाओं को रखकर उनके प्रतिकार की प्रार्थना करने के लिए ये लोग जा रहे हैं।

परन्तु प्रजा का आर्त आवेदन बधिर सम्राट् के कानों तक पहुँचता नहीं। उसके सैनिक कर्मचारी शान्ति और शृङ्खला के नाम पर निरस्त्र जनता के ऊपर गोलाबारी करके तुषार-शुभ्र राजपथ को ख़ून से लाल कर देते हैं। प्रायः एक हज़ार नर-नारियों के मृतदेह "पार्थिव ईश्वर" के प्रासाद के सामने पड़े रहते हैं। शान्तिपूर्ण आवेदनकारियों का यह हत्याकाण्ड गोर्की की आँखों के सामने ही होता है। ऐसी निष्ठुरता कौन मनुष्य सहन कर सकता है? गोर्की यह कैसे सह सकते हैं?

गोर्की वेदना से पागल से हो जाते हैं। रूस के जनसाधारण और पाश्चात्य देशों के जनमत के लिए गोर्की एक दीर्घ विवरण प्रकाशित करते हैं। घटना का यथासम्भव यथार्थ विवरण देते हुए गोर्की स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा करते हैं कि इसे एकमात्र हत्याकाण्ड के सिवा और कोई भी नाम नहीं दिया जा सकता। सम्राट् द्वितीय निकोलस ने जब जान-बूझकर, पहले से ख़बर

पाकर भी, अपनी प्रजा की हत्या होने दी है तब "हम उन्हें शान्तिपूर्ण लोगों को ख़ून करने के अपराध का दोषी कर रहे हैं......और उसी के साथ हम यह घोषणा करते हैं कि इस व्यवस्था को फिर किसी तरह से हम बरदाश्त नहीं कर सकते। हम रूस के समस्त नागरिकों को स्वेच्छाचारतन्त्र के विरुद्ध तुरन्त सम्मिलित होकर अविराम संग्राम करने के लिए आह्वान करते हैं।"

सेंटपीटर्सबर्ग के इस समय के उत्तेजनापूर्ण दिनों का अनुमान करना कठिन नहीं है। विवरण लिखकर ही गोर्की चुप नहीं बैठते हैं। इस घटना के क़रीब तीन दिन पहले से ही गोर्की पीटर्सबर्ग में उपस्थित थे। भिन्न-भिन्न सभा-समितियों में गोर्की ने जो व्याख्यान दिया था उसका सुर सरकारी कानों में अवश्य ही मधुर नहीं लगा होगा—विशेषकर रविवार के नृशंस रक्तोत्सव के बाद गोर्की ने सभा में जो ज्वालामयी वाणी का उद्गीरण किया उससे सरकारी मस्तिष्क अवश्य ही उत्तप्त हो उठा। सम्भवतः गोर्की इतनी जल्दी पीटर्सबर्ग न छोड़ते, परन्तु अकस्मात् उनको ख़बर मिली कि उनकी तृतीया अविवाहिता पत्नी, मॉस्को आर्ट थिएटर की अभिनेत्री मारिया फिओडोरोभ्ना आन्द्रेयेभा रीगा शहर में अत्यन्त बीमार हो गई हैं।

इसी लिए दो दिन के बाद ही मङ्गलवार को रीगा बन्दरगाह पर पुलिस ने गोर्की को गिरफ़्तार कर लिया। उनके विरुद्ध अभियोग कई थे जिनमें से राजद्रोहमूलक उस विवरण की रचना ही प्रधान थी। गोर्की ने इस बात को मान लिया कि पीटर्सबर्ग के राजपथ के ऊपर असंख्य हताहत व्यक्तियों के दृश्य ने मुझको अत्यन्त विचलित किया था जिसके कारण मैं उक्त विवरण लिखने को प्रवृत्त हुआ था।

अब तो खुले इजलास में गोर्की को राजद्रोही प्रमाणित कर दण्ड दिया जा सकेगा। रक्तलोलुप, प्रतीक्षा-अधीर सरकारी जासूसी दल अब परम उल्लसित हो उठता है।

## ९

परन्तु समय-समय पर मुँह का कौर भी गिर जाता है! उद्यत, उन्मुक्त तलवार भी संवृत होकर अपने कोष में लौट जाती है। परम शक्तिशाली के

लिए भी जो चाहे वही करना सम्भव नहीं होता। सम्पूर्ण रूप से अपना ही समझकर हम जिसका विनाश करने को उद्यत होते हैं, अकस्मात् हमें मालूम होता है कि वह हमारे क्षुद्र अधिकार की सीमा को अतिक्रम कर बहुजनों के अधिकार में चला गया है; इसी लिए उसके ऊपर हमारे सङ्कीर्ण अधिकार का प्रयोग नहीं हो सकता।

एक दिन था जब गोर्की रूस की राष्ट्रीय सीमा के ही अन्तर्भुक्त मनुष्य थे; परन्तु आज उनकी साहित्य-प्रतिभा की ज्योति समग्र यूरोप में फैल गई है। आज वे केवल रूस की सम्पत्ति नहीं हैं, उन पर आज समग्र यूरोप दावा कर रहा है।

इसी लिए गोर्की की गिरफ़्तारी की ख़बर से यूरोप के भिन्न-भिन्न स्थानों पर उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए सभाएँ होने लगती हैं। फ़्रांस, हालैंड और जर्मनी से सैकड़ों साहित्यिकों और वैज्ञानिकों ने अपने हस्ताक्षर से गोर्की की अविलम्ब मुक्ति के लिए आवेदन किया। इटली की पार्लामेंट के कुछ सदस्य इटालियन सरकार से यह प्रार्थना करते हैं कि रूस-सरकार से गोर्की की मुक्ति के लिए अनुरोध किया जाय। प्राग शहर के चेक लोग रूसी श्रमिकों के प्रति सहानुभूति प्रकट कर बोल उठते हैं—"गोर्की ज़िन्दाबाद" "ज़ार-तन्त्र का विनाश हो"!

यूरोप के इतने प्रचण्ड और विक्षुब्ध जनमत की उपेक्षा करने का साहस रूस-सरकार को भी नहीं है। उस समय जापान के साथ रूस का युद्ध चल रहा है, यूरोप से आर्थिक सहायता की आवश्यकता भी है और नैतिक सहायता का भी प्रयोजन है। ऐसी हालत में दीर्घकाल से परिपुष्ट क्रोध को भी बुद्धिमान् की तरह संवरण कर लेना पड़ता है। रहस्य-प्रिय विधाता के परिहास का ढङ्ग ऐसा ही होता है।

जेल में गोर्की 'रवि-सन्तति' ( Children of the Sun ) नामक नाटक की रचना में प्रवृत्त होते हैं। बीच-बीच में उनकी विवाहिता पत्नी काटेरिन उनके छः साल के एकमात्र पुत्र मैक्सिम को साथ लिये आती हैं। विच्छिन्न होने पर भी परस्पर प्रेम और श्रद्धा का अभाव नहीं है। जेल में गोर्की का स्वास्थ्य फिर बिगड़ने लगता है। गोर्की के वणिक-बन्धु, 'धन-कुबेर साब्भा-

मोरोसभ दस हज़ार रूबल की ज़मानत देकर मार्च के महीने में उनको छुड़ा लेते हैं, पर इस शर्त पर कि इजाज़त के बिना वे पीटर्सबर्ग छोड़कर कहीं नहीं जा सकेंगे।

इसके बाद ही रूस-सरकार के आदेश से गोर्की रीगा बन्दरगाह में नज़र-बन्द हुए। जेल में रहने के कारण उनकी क्षय की बीमारी फिर प्रकट हो गई, रक्त-वमन होने लगा। सरकारी आदेश मिलने की प्रतीक्षा न करके ही गोर्की क्रिमिया की ओर रवाना हो गये। इसके लिए कुछ भी शोर गुल न कर मई के महीने में सरकार ने पुलिस को यह निर्देश दिया कि गोर्की को क्रिमिया में रहने दिया जाय परन्तु उन्हें सख्त नज़रबन्द रक्खा जाय। और मुआयने के बहाने पर गोर्की के विरुद्ध लाया हुआ मुक़दमा भी मई के महीने तक स्थगित रक्खा गया। जनमत के भय से इसके पश्चात् रूस-सरकार गोर्की के विचार करने की बात बिलकुल भूल गई।

## १०

रूसी-इतिहास के पन्ने पर इस रविवार का नाम ख़ून के हरफ़ों से लिखा गया। इसकी प्रतिक्रिया होने लगी; समग्र देश में हड़ताल और दङ्गा-फ़सादों की भरमार हो गई। ज़मीदारों के मकान जलाये जाने लगे, कितने ही राज-पुरुषों और ज़मींदारों की हत्या भी हुई; मानो चारों ओर से एक सहस्रफण नागिनी अपने क्रुद्ध फण उठाने लगी।

५ सितम्बर को पोर्ट समाउथ बन्दरगाह पर जापान के साथ रूस के अपमानजनक सन्धिपत्र पर जब हस्ताक्षर हो गया, तब रूस के सब देश-प्रेमी क्रोध के मारे उन्मत्त हो गये। सुधार चाहनेवाले नरम-पन्थी भी इस सन्धि के कारण विक्षुब्ध हो उठे। विप्लवियों का आन्दोलन प्रबल स्रोत की तरह चारों ओर फैलने लगा। अन्त में अक्तूबर महीने में एक अभूतपूर्व हड़ताल रूस के एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त तक विस्तृत हो गई। सारा शासन-यन्त्र अचल हो गया।

ग्रीष्मकाल में गोर्की फिनलैंड में ठहरे हुए थे। वहाँ से अधीर आग्रह के साथ वह देश के इस विपुल चाञ्चल्य का निरीक्षण कर रहे थे। अक्तूबर की हड़ताल के कारण सम्राट् ने स्वेच्छाचार-तन्त्र को त्याग करने के वादे के साथ-ही-साथ वैधानिक शासनप्रणाली प्रवर्तित करने की सम्मति दी और डूमापार्लामेंट भी बनाई गई। कार्यतः कुछ न होने पर भी सम्राट् के आंशिक पराजय से जनसाधारण का चित्त उल्लसित हो उठा।

अक्तूबर की घोषणा के थोड़े ही दिनों के पश्चात् गोर्की पीटर्सबर्ग को लौट आये। आते ही वे 'नव-जीवन' ( Novaya Zhizn ) नाम से एक दैनिक पत्र का प्रचार करने का आयोजन करने लगे। बड़े-बड़े साहित्यिक भी इसमें आकर सम्मिलित हुए। इसके अलावा लेनिन, लुनाचारस्की, बाजारौभ प्रभृति साम्यवादी और विदेश के समाजतन्त्री काउट्स्की प्रभृति भी इसके पीछे आ खड़े हुए। इसके यथार्थ सम्पादक लेनिन हुए, परन्तु नाम प्रकाशित नहीं किया गया। गोर्की अब पूरी तौर से लेनिन के दल के साथ सम्मिलित हुए। परन्तु 'नवजीवन' अधिक दिन न चल सका; उग्र भावनाओं के प्रचार करने के कारण दिसम्बर ही में यह पत्रिका बन्द कर दी गई।

इधर दिसम्बर में मास्को नगरी में एक सशस्त्र विद्रोह हो गया। पुलिस से यह बात छिपी न रही कि इस विद्रोह में भी गोर्की ने गुप्त रूप से धन और अस्त्र-शस्त्र संग्रह कर विप्लवियों की सहायता की है। १९०६ ई० के जनवरी ही में पुलिस ने गोर्की के पीटर्सबर्ग के डेरे पर तलाशी भी ली। इसके पश्चात् फ़रवरी के महीने में गोर्की फिनलैंड की राजधानी हेलसिंगफोर्स को चले आये।

यहाँ आने के बाद ही गोर्की के पास ख़बर आई कि अब उनके लिए रूस में रहना निरापद नहीं है। किसी भी समय पुलिस उन्हें गिरफ़्तार कर सकती है। अब की बार पकड़े जाने से मुक्ति मिलना बहुत ही कठिन होगा यह समझकर गोर्की तुरन्त पश्चिमी यूरोप को रवाना हो गये।

अब निकट भविष्य में उनकी प्यारे रूस में लौटने की कुछ भी आशा न रह गई!

——

# प्रवास में

## १

गोर्की के देश छोड़ने की ख़बर से रूस-सरकार की मानो जान में जान आई। परन्तु तब भी सम्पूर्ण रूप से निश्चिन्त होने का उपाय कहाँ है? क्या विदेश में जाकर गोर्की दिन भर बैठे-बैठे केवल सिगरेट पिया करेंगे? रूस के अन्तस्तल में जो विप्लव-वह्नि प्रधूमित होकर नाना स्थानों में रक्तिम शिखा विस्तार कर रही है वही आग गोर्की की सहृदय आत्मा के अन्दर भी जल रही है। इसी लिए रूस-सरकार को चैन नहीं मिलता; जाग्रत् दृष्टि से इस व्यक्ति की ओर ताकना पड़ता है। सरकार जानती है कि गोर्की आज केवल एक लेखक नहीं हैं, गोर्की के सहारे आज रूस के युगयुगान्त से दलित, निष्पिष्ट मानवात्मा बोल रही है। यह भूलने का उपाय नहीं है कि एक ही वर्ष पहले गोर्की की मुक्ति के लिए रूस के बाहर, सारे यूरोप में, एक व्याकुलता का स्रोत लहरा गया था। इसी लिए राजपुरुषों को यह समझने में अधिक देर नहीं लगती कि रूस के बाहर रहकर भी गोर्की रूस-सरकार की प्रचुर क्षति कर सकते हैं और करेंगे भी। परन्तु रूस इस समय यूरोप के अन्य देशों को प्रसन्न रखना चाहता है; क्योंकि धन का विशेष प्रयोजन है। यदि गोर्की इन देशों को उत्तेजित कर रूस के विरोधी कर देंगे तो बड़ी चिन्ता की बात होगी।

जापान के साथ असम्मानपूर्ण सन्धि होने के कारण रूस की मर्यादा बहुत घट गई है; दुनिया के सामने वह आज बहुत नीचे उतर गया है। देश के भीतर उपद्रव और अशान्ति की सीमा नहीं है। विदेश में रहकर यदि गोर्की अपना प्रचण्ड विद्वेष व्यक्त करते रहेंगे तो रूस के स्वेच्छाचार-तन्त्र के विरुद्ध जो विरोधी जनमत उत्पन्न होगा वह उसके लिए लाभदायक नहीं होगा इसमें कोई सन्देह नहीं है। फिर इस काम में गोर्की अकेले भी नहीं हैं। रूसी

स्वेच्छाचार-तन्त्र के विरुद्ध प्रचार करनेवाले और भी अनेक हैं। प्रवासी, स्वदेश से निकाले हुए रूसियों को छोड़कर और भी बहुत-से लोग हैं जो आज गोर्की के इस आचरण का सहर्ष समर्थन करेंगे।

गोर्की जब बर्लिन आये उस समय वहाँ पर मास्को आर्ट थियेटर 'पातालपुरी' का अभिनय कर रहा था। इसके पहले भी इस नाटक का आश्चर्यजनक समादर हुआ था; १६०३-०४ ई० में लगातार पाँच सौ रातों से भी अधिक इस नाटक का अभिनय हुआ था। 'पातालपुरी' के लेखक हैं केवल इसी लिए गोर्की का विपुल सम्मान और स्वागत होता है यह नहीं; आज गोर्की मुक्तिसंग्राम में नवदीक्षित रूस के जाग्रत् जीवन्त विग्रह हैं। उन्हें देखने के लिए, उनकी वाणी सुनने के लिए, वहाँ की जनता में प्रबल उत्साह और उत्सुकता का सञ्चार होता है। भिन्न-भिन्न सभाओं में गोर्की का विपुल अभिनन्दन होने लगता है। जनता उनके मुँह से वह 'बाज पक्षी का गान', 'तूफ़ानी चिड़िया का गीत' सुनना चाहती है। सर्वत्र विप्लवी गोर्की की रचना के अनुवाद पढ़े जाने लगे। किसी एक सभा का कार्यक्रम शेष होते ही कार्ल काउट्स्की और कार्ल लीब्नेख्त उत्तेजित समाजतन्त्री साम्यवादियों के एक दल को लेकर सभा-मञ्च पर उपस्थित हुए; दूर से उनकी प्रशंसा-ध्वनि कर वे तृप्त नहीं रह सके।

गोर्की की इस प्रकार की विपुल अभ्यर्थना से रूस-सरकार व्याकुल होने लगती है।

## २

गोर्की को अमेरिका ले जाने की चाल पहले क्रासिन ही को सूझी। क्रासिन समाजतन्त्री साम्यवादी दल के एक विशिष्ट सदस्य हैं। उनके मन में यह आया कि गोर्की को अमेरिका ले जाने से वहाँ के लोगों को रूसी विप्लव के प्रति सहानुभूति-सम्पन्न किया जायगा और विप्लव-कार्य के लिए अर्थ-संग्रह भी हो सकेगा। इसके पहले ही रूस के जापान के साथ लड़ाई में लिप्त होने के लिए और प्रजा के मुक्ति-संग्राम के प्रति रूस-सरकार के विरोध के लिए अमेरिका के प्रेस ने असन्तोष प्रकट किया था। इसी लिए समय अनुकूल समझकर चतुर लोगों ने बोलशेविक दल की ओर से गोर्की को अमेरिका भेजने का

निश्चय किया। गोर्की के साथ बोलशेविक दल के प्रतिनिधि बुरेनिन और गोर्की की सङ्गिनी मारिया आन्द्रेयेव्ना के जाने का भी निश्चय हुआ।

१६०६ ई० के १० एप्रिल को गोर्की अमेरिका पधारे। मार्कटोयेन प्रमुख बड़े-बड़े साहित्यिकों ने जिस प्रकार से गोर्की का सादर स्वागत किया उससे एक ओर से बोलशेविक प्रतिनिधि अपने मन में जिस प्रकार उल्लसित हो उठे, दूसरी ओर उसी प्रकार अमेरिकास्थित रूसी दौत्यविभाग शङ्कित हो उठा। इसलिए रूसी दूत-विभाग ने नाना प्रकार का प्रचार शुरू किया जिसका उद्देश्य गोर्की के प्रति जनमत को विमुख करना था। गोर्की ने भी समाचार-पत्रों में निबन्ध लिखकर समस्त सभ्य जातियों से अनुरोध किया कि रूस के अत्याचारी शासक को किसी प्रकार से आर्थिक सहायता न दें।

सहृदय साहित्यिक न होकर अगर गोर्की चतुर राजनीतिज्ञ होते तो इस अवसर पर बोलशेविक विप्लवी दल की सहायता के लिए पर्याप्त धन इकट्ठा कर सकते थे। परन्तु राजनीति में अनभिज्ञ गोर्की ने जो भूल की उसके कारण उनका अमेरिका आना ही व्यर्थ हो गया।

गोर्की ने एक प्रकार खुल्लमखुल्ला ही अमेरिका के मज़दूरों का, विशेषकर हड़ताल करनेवाले खान के मजदूरों का, पक्ष समर्थन किया। इससे अमेरिकन सरकार भीतर-ही-भीतर गोर्की के इस आचरण से असन्तुष्ट हो उठी। ठीक इसी समय रूस दूत-विभाग का भी अकस्मात् अक्ल पर का परदा उठ गया और गोर्की को अपमानित करने का एक अपूर्व उपाय निकालकर उत्फुल्ल हो उठा। यह बात अगर पहले सूझती तो अमेरिका में गोर्की का कुछ भी स्वागत न होता। ख़ैर, अब भी समय नहीं बीता।

मारिया आन्द्रेयेव्ना गोर्की की विवाहिता स्त्री नहीं हैं। रूस में विवाह-विच्छेद अत्यन्त कठिन है इसी लिए गोर्की के साथ उनकी शादी न हो सकी। इसी लिए गोर्की की स्त्री ने भी बिना शादी किये ही जिस प्रकार अन्य एक पुरुष से विहाह किया है, गोर्की भी उसी प्रकार मारिया आन्द्रेयेव्ना के साथ कई सालों से दाम्पत्य-जीवन यापन कर रहे हैं। रूस में यह एक ऐसी साधारण घटना-सी है कि इससे किसी को बुरा नहीं मालूम होता। परन्तु अमेरिका में अविवाहित नारी के साथ रहना सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त अनुचित है।

रूसी दूत-विभाग इसी मामले को लेकर गोर्की के व्यक्तिगत जीवन का एक विकृत रूप अमेरिका के सम्मुख उपस्थित करने लगा और शीघ्र ही इस प्रचार-कार्य का फल भी होने लगा।

देखते-देखते गोर्की का सामाजिक बहिष्कार शुरू हो गया। गोर्की को निमन्त्रित कर जो लोग अपने को गौरवान्वित समझते थे उन्हीं लोगों ने निमन्त्रण वापस ले लिया। मार्क टोयेन तक ने गोर्की के साथ मिलना बन्द कर दिया। गोर्की के लिए यह जैसा ही अप्रत्याशित, वैसा ही मर्म-पीड़ा-दायक हुआ। अमेरिका के इस अद्भुत आचरण को गोर्की क्षमा नहीं कर सके। बड़े-बड़े होटल तक जब गोर्की को स्थान देने से इनकार करने लगे तब रूसी दूत-विभाग अपनी सफलता से कूदने लगा। क्रुद्ध और अपमानित गोर्की ने अमेरिका के ऊपर तीव्र भाषा में आक्रमण कर "पीले शैतान का शहर" नाम की एक पुस्तक लिखी।

फ़ान्स के बैंकरों ने भी ठीक इसी समय रूस-सरकार को रुपया उधार दिया। सभ्य जगत् के ऊपर गोर्की असन्तुष्ट हो उठे। अब फ़्रांस को लक्ष्य कर तीव्र भाषा में गोर्की ने 'सुन्दरी फ़्रांस' पुस्तक लिखी और इन शब्दों से उसे समाप्त किया—"तुम्हारे सोने से रूस जन-साधारण का रक्तपात होगा। तुम्हारे फूले हुए गाल सदा के लिए उस रक्त से लज्जा-रक्त होकर रहें। प्रिया मेरी, अपनी आँखों में मेरा ज्वालामय थुत्कार लो।"

फ़्रांस के लेखक-सम्प्रदाय गोर्की के इस उग्र और अशोभन आक्रमण का प्रतिवाद करते हैं और उन्हें यह समझाने की कोशिश करते हैं कि फ़्रांस-निवासी सभी इस कारण उनके तिरस्कार के पात्र नहीं हैं; फ़्रांस की जनता उनकी अनुरागिनी है। गोर्की इससे और भी क्षिप्त होकर तीव्र भाषा में उत्तर देते हैं—"महाशयो, आप लोगों से मेरा स्पष्ट निवेदन है कि बुर्जोयाओं की प्रीति एक सच्चे लेखक और समाजतन्त्रवादी के लिए अत्यन्त घृणाजनक है।" फ़्रांस के मज़दूरों के प्रति गोर्की ने यह आवेदन किया कि रूस में व्यापक विद्रोह का लग्न आसन्नप्राय है। अगर तुम यह नहीं चाहते हो कि तुम्हारे रूसी कॉमरेड ख़ाली हाथ लड़ाई में न जायँ तो धन दो, अस्त्र-शस्त्र दो। उनके मुक्ति-संग्राम में सहायता करने का यही सर्वोत्तम रास्ता है।'

## ३

इटली के नेपल्स शहर से इक्कीस मील दक्खिन में काप्री द्वीप है; शिल्पियों का यह बड़ा ही प्रिय स्थान है। उच्च शैल-शृंगों से शोभित इस द्वीप के सौन्दर्य से पुराने समय में रोमन लोग भी आकृष्ट हुए थे। अभी तक उनकी उद्यान-वाटिकाओं के ध्वंसावशेष उस बात की गवाही दे रहे हैं। दो हज़ार फ़ीट ऊँचा मंटी सोलारो का शिखर दूर से बड़ा ही सुन्दर प्रतीत होता है। इसी द्वीप के एक प्रान्त में आना काप्री भी अत्यन्त सुन्दर है; एक ध्वंसप्राप्त प्राचीन दुर्ग और दो गिरजों ने इस स्थान को रमणीय कर रक्खा है। उसी के समीप समुद्रतट पर परम सुन्दर 'नीलगुहाकुञ्ज' ( Blue grotto ) है। अक्तूबर महीने ( १६०६ ) में गोर्की स्निग्ध, शान्त और सुन्दर काप्री द्वीप को लौट आये हैं। गोर्की ने यह निश्चय कर लिया कि अब इसी सुन्दर द्वीप में रहकर अपने को साहित्य-साधना में मग्न कर देंगे।

परन्तु केवल विशुद्ध साहित्य-सृष्टि लेकर आबाल्य-विप्लवी गोर्की कैसे रह सकते हैं? यहाँ पर केवल गोर्की की रचनाओं के असंख्य भक्त ही नहीं आते बल्कि रूसी विप्लवी भी आते हैं और वे गोर्की को अपने नेता और गुरु के आसन पर बैठाते हैं। स्वदेश के दुर्भाग्य को गोर्की भूल नहीं सकते। ज़ार तन्त्र की स्मृति गोर्की की नस-नस में अग्नि-प्रवाह सञ्चारित करती है। कुछ समय के बाद गोर्की को ख़बर मिलती है कि रूसी सरकार फ़िनलैंड की स्वतन्त्रता को छीनने की कोशिश कर रही है। गोर्की यह सुनकर फ़िनलैंड के एक चित्रकार मित्र के पास लिखते हैं—"निर्बोध, पेटू और सुज़ाक से पीड़ित रोमानौभ वंशधरों ने देश की मर्यादा को नष्ट किया है, उसका सर्वनाश किया है। उनके चाटुकार भृत्य आल्टिक देश के सेनापति हज़ारों प्रजाओं का ख़ून करने के लिए, समग्र देश को लूटने के लिए तैयार हैं। वे सब निर्बोध, असभ्य अर्द्धपशु...वे निर्यातन, रक्तपात और नृशंसता की अस्वाभाविक कामना से आच्छन्न हैं। अगर मान भी लिया जाय कि ये सब मनुष्य हैं, तब भी ये व्याधिग्रस्त, पागल और सैडिस्ट ( Sadist ) हैं; इनका तो ठिकाने से इलाज होना चाहिए अथवा जिस प्रकार से भेड़िये, कुत्ते और सुअरों को हम नष्ट करते हैं उसी तरह इनको नष्ट करना चाहिए।

हृदय में इतनी घृणा लेकर गोर्की कैसे स्थिर रह सकते हैं ? जी-जान से गोर्की विप्लव को चाहते हैं; बुर्जोआ सभ्य जगत् के प्रति इसी लिए गोर्की इतने असन्तुष्ट हैं। फ्रांस की आर्थिक सहायता से इसी लिए वे इतने उत्तेजित हुए। इसी लिए ओलार ( Aulard ) के पास एक पत्र में गोर्की ने यह भविष्यवाणी की—"रूस का विप्लव धीरे-धीरे और बहुत दिनों के बाद शक्तिशाली बन उठेगा और उसकी समाप्ति जनगण की विजय में होगी।...जिस दिन जनगण के हाथ में प्रभुत्व और शक्ति होगी उसी दिन वे उन फ्रांसीसी महाजनों की ख़बर लेंगे जिन्होंने सत्य और न्याय के विरुद्ध संग्राम करने के लिए और शासनतन्त्र को अपने क़ब्ज़े में रखने के लिए उस रोमानौभ वंश की मदद की जिसकी संस्कृति-विरोधी बर्बरता यूरोप के सत्यदृष्टि और हृदयवाले मनुष्यों को भली भाँति मालूम है। मुझे ज़रा भी संशय नहीं है कि रूस की जनता ने जिस ऋण को अपने ख़ून से अदा किया है उस ऋण के रुपये फ़्रान्स को कभी भी वापस नहीं मिलेंगे, कभी नहीं।"

१९०७ ई० के वसन्तकाल में समाजतन्त्री साम्यवादी ब्रूसेल्स में एक सम्मेलन में एकत्र हुए। परन्तु पुलिस की असम्मति के कारण अन्त में वे लंदन में आकर एकत्र हुए। लेनिन, ट्रॉट्स्की, मार्टभ, प्लेखानौभ प्रभृति बड़े-बड़े नेता सभी उपस्थित थे। गोर्की भी बिना वोट के सदस्य होकर आन्द्रेयेव्ना के साथ वहाँ आये हुए थे। वोट न देने पर भी उनकी पूर्ण सहानुभूति लेनिन-दल के प्रति ही थी। लंदन में यह कॉनफरेंस स्थानान्तरित होने के कारण ऐसा आर्थिक सङ्कट उपस्थित हुआ कि सदस्यवृन्द एक प्रकार से निरुपाय हो गये। अनेकों सदस्यों का रूस लौटना अनिर्दिष्ट समय के लिए स्थगित हो गया; इसके अलावा उन लोगों को भोजन मिलना तक मुश्किल हो गया। गोर्की ने ही इस विपत्ति में एक धनी अँगरेज़ से ऋण लेकर इन लोगों का उद्धार किया।

इस कॉनफरेंस में प्लेखानौभ के अधीन मेनशेभिक और लेनिन के अधीन बोलशेविकों के बीच का प्रभेद अत्यन्त तीव्र और सुस्पष्ट हो गया। लेनिन-दल ने यह स्थिर किया कि रूस से चुने हुए श्रमिकों को बुलाकर, उन्हें विप्लव-प्रचार का काम सिखलाकर फिर स्वदेश को भेजना होगा और इस प्रकार से

देश भर विप्लववाद फैलाकर देश को सशस्त्र विद्रोह के लिए तैयार करना पड़ेगा। गोर्की ने आन्तरिक सम्मति के साथ इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और उसे क्रियान्वित करने की चेष्टा में वे लग गए।

लुनाचारस्की ने लेनिन से यह प्रस्ताव किया कि गोर्की को 'प्रोलेटारी' पत्रिका का साहित्य-सम्पादक बनाया जाय। लेनिन ने जवाब में लिखा—तुच्छ सांवादिक काम में लगाकर यदि गोर्की की उच्च कोटि की साहित्यिक प्रचेष्टाओं में रुकावट डाली जाय तो वह केवल मूर्खता ही नहीं होगी बल्कि वह भयानक अपराध होगा। रूस के भाग्य-नियन्ता, भावी रूस के स्रष्टा जानते हैं कि गोर्की का यथार्थ मूल्य क्या है और कहाँ है, इसी लिए उनकी साहित्य-साधना के प्रति यह असामान्य श्रद्धा और ममता है।

## ४

१९०५ ई० का विप्लव-प्रयास व्यर्थ हुआ और उसके फल-स्वरूप विप्लव और सुधार के चाहनेवालों के मन में हताशापूर्ण अवसाद दिखाई दिया। परन्तु मनुष्य निराशा में मग्न नहीं होना चाहता, वह अपनी अक्षमता को नाना प्रकार की काल्पनिक सफलता के मोह में रहकर भूलना चाहता है। आत्म-वञ्चना के द्वारा वह अपने को सान्त्वना देता है। गोर्की के रूस से चले आने के पश्चात् रूस के राष्ट्रीय जीवन में इस प्रकार की प्रतिक्रिया दिखाई देने लगी।

जो रूसी बुद्धजीवी सम्प्रदाय वैधानिक शासनतन्त्र की प्रतिष्ठा के लिए दुस्साहसिक संग्राम में अवतीर्ण हुआ था, उन्हीं लोगों को एक ओर से नवीन डूमा पार्लामेंट का निस्सार आडम्बर स्पष्ट रूप से मालूम हो गया और दूसरी ओर से यह भी मालूम हुआ कि जनसाधारण कैसा शक्तिहीन है। इसलिए विप्लवी दल को छोड़कर वे विजयी प्रतिक्रियापन्थी दल में शामिल होने लगे। और बहुत-से लोग निःस्वार्थ देश-सेवा के आदर्श को छोड़कर, आर्टसिवाशेभ ने सैनिन (Sanin) ग्रन्थ में जो आत्म-उपभोग के आदर्श का प्रचार किया उसी के समर्थक बनने लगे। और एक दल शिल्पी और विचार-

शील मनुय अध्यात्मिकता की ओर झुकने लगे; उन लोगों का नाम 'ईश्वर-सन्धानी ( bogoiskateli ) हुआ। मेरेज़कौभस्की के इस दल का लक्ष्य मनुष्य के साथ ईश्वर का समन्वय करना था।

गोर्की स्पष्ट रूप से कहते हैं कि प्रचलित धर्म के प्रति उनकी श्रद्धा नहीं है। १६०७ ई० में आपने 'मेरकिरध फ्रांस' पत्र में यहूदी धर्म, ईसाई धर्म और मुसलमान धर्म को मनुष्यजाति का शत्रु बतलाया। परन्तु तब भी गोर्की का हृदय अध्यात्मसाधना के प्रति सम्पूर्ण विमुख नहीं हो सकता, अभी तक उनके मन की किसी अज्ञात कन्दरा में उनके बाल्य-काल की नानी की वह प्रार्थनामग्न मूर्ति छिपी है। एक दिन नानी ने उनके मन में परम शक्ति के प्रति जिस भक्ति का सञ्चार किया था, मार्क्सपन्थी सिद्धान्तों के दबाव से भी सम्भवतः वह नष्ट नहीं हुआ। आदर्शवादी स्वप्न-पुजारी गोर्की प्रचलित धर्म-विश्वास का युक्ति से समर्थन नहीं कर सकते, परन्तु उनके हृदय में परम-समन्वय के प्रति जो आकूति और आग्रह है वह तो उनकी प्रकृति से अविच्छेद्य है। १९०३ ई० में 'मानव' प्रबन्ध में प्रथम इस प्रवणता का प्रकाश हुआ। यद्यपि मनुष्य किसी बाहरी शक्ति के सम्मुख सिर झुकावेगा इस प्रकार की कल्पना विद्रोही गोर्की के मन को क्रोधित करती है, तब भी मनुष्य के हृदय में जो विशाल देवरूप की अपरूप सम्भावना है उसे भी वह अस्वीकार नहीं कर सकते। इसी लिए गोर्की कहते हैं, अतीन्द्रिय जगत् में मनुष्य किसी भी प्रभु को स्वीकार नहीं करेगा, और वैसा ही इहलोक के राष्ट्र में भी वह किसी एक व्यक्ति के प्रभुत्व को नहीं मानेगा। परन्तु वह अपने हृदय के सम्भाव्यता-स्वप्न से अपने भगवान् की सृष्टि करेगा। इस नवीन मतवाद के आधार पर १६०८ ई० में अनवद्य भाषा में गोर्की ने 'स्वीकृति' नामक उपन्यास की रचना की।

'स्वीकृति' ( Confession ) का नायक ईश्वर-सन्धानी था, परन्तु बहुत खोज के बाद भी ईश्वर का पता न मिला; अन्त में सम्मिलित जन-साधारण के अन्दर ही उसने ईश्वर का आविर्भाव देखा, जीवन में जो परम सम्भाव्यता है उसे देखा।

मनुष्य स्वयं अपने ईश्वर की सृष्टि करेगा, इस 'ईश्वर-सृष्टि'-सम्बन्धी मतवाद ( bogostroitelstvo ) ने भिन्न-भिन्न राजनीतिक दलों के अन्दर एक प्रबल आलोड़न उत्पन्न किया। गण-देवता के पुजारी 'नारौड' ( Narod ) भक्तों के बीच गोर्की ने बहुत दिन बिताया था, इस लिए गोर्की के इस नूतन मतवाद के कारण लोग उन्हें 'नारौडनिक' समझने लगेंगे इस आशंका से लुना-चारस्की ने यह प्रमाणित करने की चेष्टा की कि गोर्की के ईश्वर 'प्रोलेटारियट' के अलावा और कोई नहीं है। इधर ईश्वर-सन्धानी दल यही प्रमाणित करने की कोशिश करने लगा कि गोर्की इसी दल के हैं। गोर्की को पीछे खोना पड़े इस भय से मार्क्स पन्थी लोग इस पुस्तक की तीव्र निन्दा तो न कर सके परन्तु वे कुछ सन्तुष्ट भी न हुए। 'ईश्वर-सन्धानी' लोगों के बारे में तीव्र मन्तव्य करते हुए प्लेखानौभ ने कहा—"मनुष्य की महिमा को अनुभव करने के लिए ईश्वर की कोई आवश्यकता नहीं है। ईश्वर का छाप न मारने पर भी मनुष्य के प्रति हम श्रद्धा प्रकट कर सकते हैं।"

## ५

लन्दन कान्फ़रेन्स के बाद से लेनिन के साथ गोर्की का सम्बन्ध दिन-दिन बढ़ता ही जा रहा है। 'स्वीकृति' पुस्तक को पढ़कर लेनिन के मन में शङ्का भी हुई, वेदना भी हुई। गोर्की की लेखनी से उसने यह कभी आशा न की थी। लेनिन का यह दृढ़ विश्वास है कि ईश्वर-सृष्टि की प्रवृत्ति असल में विप्लव-विरोधी है और यह बुर्जोआ बुद्धिजीवियों का लक्षण है। गोर्की में इसका आविर्भाव देखकर लेनिन के मन में गहरी चोट लगी; बन्धु-विच्छेद की एक अस्पष्ट आशङ्का से वे काँपने लगे। एक ओर से तो इस अद्‌भुत मनुष्य ने देश की परम संपत्ति गोर्की के साथ गाढ़ प्रेम का सम्बन्ध स्थापित किया है, फिर दूसरी ओर से उसने अपना तन-मन विप्लव की वेदी पर चढ़ा दिया है। इसी लिए जो कुछ विप्लव में देर करेगा, जो कुछ उसका बाधक होगा उसे तो लेनिन कठोर निष्करुणता के साथ निर्मूल कर डालेंगे; अपने प्रियतम सुहृद् को भी प्रयोजन पड़ने पर त्याग देंगे।

अपना असन्तोष-प्रकाशक पत्र लिखकर ही वे चुप नहीं बैठे। १६०६ ई० के जून के महीने में पेरिस के बोलशेविक केन्द्र से उन्होंने एक कान्फ़रेन्स बुलाई और उसमें ईश्वर-स्रष्टाओं की तीव्र निन्दासूचक एक प्रस्ताव भी पास किया और बोगडानोभ-लुनाचारस्की के दल वैज्ञानिक मार्क्स नीति का विरोध करते हुए समाजतन्त्री साम्यवादियों के काम को नष्ट कर रहे हैं इस बात की भी सुस्पष्ट घोषणा कर दी।

बोगडानोभ-लुनाचारस्की के दल ने लेनिन से सञ्चालित 'प्रोलेटारी' काग़ज़ के साथ अपना सम्बन्ध तोड़कर 'अग्रगामी' ( Vperyod ) नाम का एक अख़बार निकाला। कुछ साम्यवादी लोग आकर इसमें सम्मिलित हुए, 'वर्जनकारी' ( Otzovist ) दल ने भी इसका साथ दिया; इन लोगों की राय यह थी कि डूमा-पार्लामेंट जब सचमुच एक धोखे की टट्टी है तब बोलशेविक सदस्यों को उसका बायकाट करना ही उचित है। परन्तु लेनिन डूमा को एक धोखा मात्र मानते हुए भी उसे यथासम्भव काम में लाकर उसके द्वारा जनता को शिक्षित करना चाहते थे और जनसाधारण के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करना चाहते थे। इसी लिए वे इस दल के साथ घोर संग्राम में लिप्त हुए।

## ६

पेरिस में 'ईश्वर-स्रष्टा' और 'वर्जनकारी' दलों के विरुद्ध प्रस्ताव पास कर लेनिन जब इन लोगों को अपने दल से निकालने को उद्यत हुए, ठीक उसी समय गोर्की पहले सिद्धान्त के अनुसार काप्री में रूसी श्रमिकों के लिए एक शिक्षा-केन्द्र बनाने के काम में व्यस्त थे। यह निश्चय किया गया था कि गोर्की अपने पैसे से दस श्रमिकों को रूस से बुलावेंगे और विप्लव-प्रचार के लिए शिक्षा देंगे; इसमें लेनिन, लुनाचारस्की और गोर्की के भाषण होंगे, ट्राट्स्की और प्लेखानौभ के आने की भी बात थी। और बोलशेविक दल के 'अर्थ-सचिव' नामधारी क्रासिन ने यह ज़िम्मा लिया था कि मैं छल-कपट से पास-पोर्ट दिलाकर अथवा बिना किसी पास-पोर्ट के ही श्रमिकों को रूस से ले आऊँगा और शिक्षा समाप्त हो जानेपर फिर रूस में लौटा दूँगा।

लेकिन अब लुनाचारस्की आदि के साथ मिलकर काम करना लेनिन को केवल अनुचित ही नहीं मालूम हुआ परन्तु इसमें उन्होंने अपना अपमान भी समझा। इसलिए उन्होंने काप्री-स्कूल का बायकाट करने का निश्चय कर लिया। ट्राट्स्की और प्लेखानोभ का भी वहाँ जाना नहीं हुआ। इससे गोर्की का काप्री-स्कूल यथार्थ में बोगडानोभ और लुनाचारस्की का प्रचार-केन्द्र बन गया। १९०९ ई० के ग्रीष्म ऋतु मे बहुत सी बाधा-विपित्तियों का सामना करते हुए क़रीब बीस रूसी श्रमिक काप्री में आ पहुँचे। गोर्की भी विपुल उत्साह के साथ काम में लग गये। रूस की अज्ञ जनता में शिक्षा का प्रचार होगा, सभ्यता और संस्कृति के संस्पर्श मे वे भी उच्चतर जीवन का स्वाद पावेंगे, यही गोर्की की अन्तरतम कामना थी। इसी लिए वे बोलशेविकों के विभिन्न उपदलों के सूक्ष्म मतामत-सम्बन्धी विभेदों पर ज़ोर देना नहीं चाहते थे; वे भिन्न-भिन्न दलों को एक विशाल मिलनभूमि पर सम्मिलित देखना चाहते थे।

परन्तु लेनिन गोर्की के इस विचार से सहमत नहीं थे। रूस के स्वेच्छाचारतन्त्र के विनाश के लिए कृत-संकल्प लेनिन की राय यह थी कि भिन्न-भिन्न मतवालों के सम्मिश्रण से कोई काम नहीं हो सकता। उन्होंने एक ऐसा दल बनाना चाहा जो सुस्पष्ट और अभ्रान्त रूप से एक ही मत का होकर आगे बढ़े। इसलिए षड्यन्त्र-विशारद लेनिन विरोधियों के विरुद्ध एक प्रस्ताव पास करा के ही चुप नहीं बैठे। अब वे काप्री स्कूल के प्रयत्नों को भी नष्ट करने के लिए अग्रसर हुए। लेनिन की कूटनीति से काप्री-स्कूल के बहुत-से श्रमिक छात्र लेनिन के पास चले आये और बाक़ी लोग भी काप्री में पाँच महीने शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् लेनिन के पास हाज़िर हुए। लेनिन ने इस प्रकार से काप्री-स्कूल का विनाश कर डाला।

## ७

परन्तु गोर्की को समझने में लेनिन ने थोड़ी-सी ग़लती की थी। उन्होंने यह सोचा था कि गोर्की भी 'अग्रगामी' दल में शामिल हो गए हैं। थोड़े

ही दिनों के पश्चात् उनका यह भ्रम दूर हो गया। लेनिन ने समझ लिया कि उस नवीन दल की सहायता करते हुए भी गोर्की किसी दल में नहीं हैं। इसलिए गोर्की के आश्वासन और सान्त्वना देते हुए लेनिन ने एक पत्र लिखा और अपनी भूल को भी स्वीकार किया। दीर्घ पत्र में सारे मामले को समझाते हुए उन्होंने लिखा कि इन दलों के झगड़ों को विशेष महत्त्वपूर्ण न समझें। उन्होंने यह भी लिखा कि आपने रूसी जनता का बहुत उपकार किया है और मैं आशा करता हूँ कि फिर हम लोग मित्र भाव से ही मिलेंगे, शत्रुभाव से नहीं।

बोलशेभिकों के भिन्न-भिन्न दलों को सम्मिलित करने के लिए गोर्की ने बार-बार कोशिश की परन्तु लेनिन इस विषय में बिलकुल भिन्न राय के थे। उन्होंने गोर्की की आन्तरिक शुभाकाङ्क्षा और सदभिप्राय को समझा परन्तु मतवाद के क्षेत्र में केवल बाह्यिक मिलन के पक्षपाती वह नहीं थे। लेनिन ने इसी लिए गोर्की के प्रति गभीर श्रद्धा और प्रीति रखते हुए भी बार-बार उन पर आक्रमण किया। बार-बार उन्होंने गोर्की से कहा है—"सच कहता हूँ कि इस समय हम एकीकरण नहीं चाहते हैं; हम चाहते हैं विभेदीकरण। आप निश्चय समझ सकते हैं कि जब कोई मनुष्य किसी दल के मतवाद को बिलकुल ग़लत और अनिष्टकारी समझता है तब उसके विरुद्ध खड़ा होने के लिए वह बाध्य होता है। प्रियतम ए० एम०—कहिए तो, इस मामले में समझौता कैसे हो सकता है? क्या आप यह नहीं समझ रहे हैं कि इस प्रकार का प्रस्ताव हास्यकर है? यहाँ तो संग्राम बिलकुल अनिवार्य है।"

इसी लिए लेनिन विरोधियों के साथ व्यर्थ वाद-विवाद कर समय नष्ट करना नहीं चाहते। तथापि गोर्की के व्याकुल आग्रह के कारण वह काप्री आए और अपना वक्तव्य देकर चले गये।

## ८

१९१० ई० के ग्रीष्म काल में लेनिन गोर्की से मिलने के लिए आये। आपस में खूब बातचीत हुई और फिर दोनों मित्र हो गये। परस्पर जो

असन्तोष और क्षोभ का सञ्चार हुआ था वह हट गया। परन्तु उन दोनों के दृष्टिकोण में जो मौलिक प्रभेद था उसके कारण गोर्की पूरी तौर से लेनिन के दल में शामिल न हो सके। लेनिन के चले जाने के बाद ही उन्होंने एक दूसरे दल के अख़बार में नियमित रूप में लिखने की स्वीकृति दे दी। यह समाचार सुनकर लेनिन को आश्चर्य हुआ; वह यह आशा कभी नहीं कर सकते थे कि उनके साथ इतनी बातचीत होने के पश्चात् भी गोर्की फिर और किसी दल के अख़बार के साथ सहयोग कर सकते हैं। तब लेनिन ने लिखा कि १६०५ के पश्चात् मार्क्सवाद और समाजतन्त्री साम्यवाद के विषय में सुस्पष्ट धारणा लिए बिना राजनीति के बारे में किसी प्रकार की गम्भीर आलोचना करना अचिन्तनीय, असम्भव और अनुचित है। गोर्की ने इसका वही उत्तर दिया जो कि वे सदा से देते आए थे। उन्होंने कहा, साम्यवादियों के भिन्न-भिन्न दलों की एकता वाञ्छनीय है। लेनिन क्या करेंगे, किसी प्रकार से वे गोर्की को अपने रास्ते पर नहीं ला सके। १६११ ई० में गोर्की समाजतन्त्री विप्लवियों के नेता चार्नौभ के 'उत्तराधिकार' नामक पत्र में भी लिखने को राज़ी हुए। मानो गोर्की किसी भी दल से अलग नहीं रह सकते; उनके मन में तो यह भावना है कि सभी लोग भिन्न-भिन्न मत और पन्थों के द्वारा देश की सेवा कर रहे हैं; किसी का भी वर्जन करना सम्भव नहीं है। परन्तु थोड़े ही दिनों के बाद तङ्ग आकर गोर्की ने इन लोगों का साथ छोड़ दिया।

इसी समय गोर्की एक आदमी के विश्वासघात के कारण 'ज्ञान पब्लिशिंग कम्पनी' ( Znaniye ) से भी अलग हो गये। लेनिन को मालूम था कि गोर्की का बहुत-सा धन इस कारबार में फँसा था। इसलिए उन्होंने मुक़दमा दायर करने की सलाह दी, परन्तु गोर्की ने चुपचाप सब नुक़सान सहना ही पसन्द किया, प्रवञ्चक को सज़ा देने की प्रवृत्ति न हुई।

१६१२ ई० के अप्रैल के महीने में पीटर्सबर्ग से लेनिन-दल का दैनिक समाचारपत्र 'प्रवदा' ( Pravda ) प्रकाशित हुआ। रूस के साथ सम्बन्ध रखना सहज होगा और 'सत्य' ( Pravda ) पत्र का सम्पादन भी अच्छी तरह कर सकेंगे ऐसा सोचकर लेनिन ने भी पोलैंड के क्रैको शहर में आकर अपना अड्डा बना लिया। 'अग्रगामी' दल के बहुत-से सदस्य दिसम्बर के महीने में

लेनिन के दल में लौट आये, परन्तु तीक्ष्ण दृष्टिवाले लेनिन उन लोगों के इस प्रत्यावर्तन को निश्चयता के साथ स्वीकार नहीं कर सके। परन्तु गोर्की का राजनीतिक मतवाद स्थिर और सुनिश्चित नहीं है यह जानते हुए भी लेनिन उन्हें अपना सच्चा मित्र ही समझते थे और जो बात लेनिन और किसी से नहीं कहते थे, वह भी गोर्की से बिना किसी सङ्कोच के कहा करते थे। क्या जाने, सम्भवतः लेनिन को यह विश्वास था कि यह व्यक्ति एक दिन लेनिन की विचारधारा को अच्छी तरह समझेगा। कभी-कभी वे ऐसा कहते भी थे। १९१३ ई० में गोर्की ने बोलशेविक पत्रिका 'शिक्षा' ( Prosveshchiniye ) के साहित्य-विभाग के सम्पादन करने का भार लिया। और-और पत्रों में भी गोर्की के लेख निकलने लगे। इस वर्ष के अन्तिम भाग में डास्टयेभ्स्की के उपन्यास 'भूत-ग्रस्त' ( Possessed ) के नाट्यरूप के अभिनय के अवसर पर गोर्की ने एक निबन्ध लिखा और इस नाटक की भाव-धारा सामाज़िक और नैतिक दृष्टि से अनर्थकारी है ऐसी घोषणा की। इस पर प्रबल वितर्क की सृष्टि हुई। तब गोर्की ने 'कारामज़ोभिज्म के बारे में और कुछ' शीर्षक एक लेख लिखा और उसमें डास्टयेभ्स्की की विचार-धारा पर तीव्र आक्रमण किया और यह भी कहा कि धर्मोन्मत्तता रूसी चरित्र की एक भयानक दुर्बलता है।

गोर्की की ये उक्तियाँ अच्छी ही लगीं, परन्तु इस लेख में गोर्की की कुछ बातें पढ़कर लेनिन एकदम जल उठे। क़रीब चार साल पहले जिस विषय को लेकर लेनिन और गोर्की में प्रबल मतभेद का सूत्रपात हुआ था, और जिस भूल को गोर्की ने स्वीकार भी किया था; गोर्की इस लेख में फिर वही भूल करेंगे और ईश्वर-सृष्टि सम्बन्धी मतवाद का आविर्भाव फिर होगा, यह लेनिन स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकते थे। फिर भी गोर्की ने लिखा ही है कि "ईश्वर का खोजना कुछ दिनों के लिए स्थगित रखना ही सबसे अच्छा है—यह काम निरर्थक है। जो नहीं है उसे खोजना ही क्यों? जो बीज बोया ही नहीं, उसकी-फ़सल कहाँ से मिलेगी? तुम्हारे लिए कोई ईश्वर नहीं है, क्योंकि तुमने तो उसकी सृष्टि नहीं की। भगवान् को ढूँढना नहीं होता, उसका सर्जन करना पड़ता है।"

इसके जवाब में गोर्की ने यह स्वीकार किया कि "कुछ दिनों के लिए" किस तरह लिख गया मेरी भी समझ में नहीं आ रहा है। तथापि ईश्वर-सृष्टि सम्बन्धी मतवाद का समर्थन करते हुए गोर्की ने एक बड़ा पत्र लिखा। इसके जवाब में लेनिन ने विस्तृत रूप में यही समझाने की कोशिश की कि ईश्वर की कल्पना 'बुर्जोआ' मनोवृत्ति का ही फल है। लेनिन ने समझ लिया कि गोर्की के साथ मिलना असम्भव है क्योंकि दोनों के मत में एक महान् भेद है। इसलिए पत्र के अन्त में 'आपका लेनिन' नहीं लिखा गया; लेनिन ने लिखा, भी० आइ० ( भ्लाडिमीर इलिइच )। अन्तरङ्ग बन्धुत्व में एक दुर्लङ्घ्य व्यवधान आ खड़ा हो गया।

## ९

१९१३ ई० में रूस में रोमानौभ वंश के राज्यकाल का तीन सौ वर्ष पूर्ण हुआ। उस उपलक्ष में उन राजनीतिक अपराधियों को माफी दी गई जिन्होंने केवल लेखों के द्वारा अपराध किया था। यद्यपि गोर्की का स्वास्थ्य अच्छा नहीं था, तथापि वे रूस में लौटने के लिए व्याकुल हो उठे। वर्ष के अन्तिम भाग में, जाड़े के समय, उन्होंने लौटने का सङ्कल्प किया। यह सुनकर लेनिन के हृदय में बड़ा ही आतङ्क हुआ। रूसी सरकार गोर्की को और किसी अपराध से युक्त करेगी कि नहीं यह मालूम नहीं था। इसके अलावा, कुछ दिनों से गोर्की फिर क्षय रोग के आक्रमण से कष्ट पा रहे थे; ऐसा शरीर लेकर जाड़े के समय रूस में ठहरना उनके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं होगा यह सोचकर लेनिन बहुत ही चिन्तित हो उठे।

गोर्की के सङ्कल्प को सुनकर लेनिन ने लिखा, "अच्छी तरह इलाज न कराकर, काप्री में रहना क्या अच्छा हो रहा है! जर्मनों के बड़े अच्छे-अच्छे सेनाटोरियम हैं जैसा......। काप्री छोड़कर जाड़े के समय सीधे रूस को जाना चाहते हैं???? यह सोचकर मुझे बहुत ही शङ्का हो रही है कि इससे आपका स्वास्थ्य और कर्मशक्ति नष्ट न हो जाय!......आप निश्चय करके स्विट्ज़रलैण्ड में अच्छे वैद्यों के पास जाइएगा। ( मैं उनके नाम और पता

दे सकूँगा । ) अथवा जर्मनी में किसी अच्छे सेनाटोरियम ( स्वास्थ्य-निवास ) में छः महीने के लिए ठीक इलाज कराइए । मैं कहता हूँ कि स्टेट की सम्पत्ति को बरबाद करना अर्थात् अस्वस्थ रहकर अपनी कर्मशक्ति को फ़ज़ूल नष्ट करना किसी तरह नहीं होना चाहिए ।......मेरा निजी अनुरोध है कि आप अच्छी तरह इलाज कराइए । नीरोग होना सम्पूर्ण सम्भव है; परन्तु रोग की उपेक्षा करना केवल पूरी नास्तिकता ही नहीं बल्कि कानूनी अपराध भी है ।"

ऐसे समय पर एक बोलशेविक चिकित्सक ने अपनी नवीन एक्स-रे पद्धति से गोर्की का इलाज करने का प्रस्ताव किया; गोर्की भी उस पर राजी हो गये। गोर्की का विचार यह था कि अधिक से अधिक मृत्यु ही होगी, इससे बढ़कर और क्या हो सकता है ? खबर सुनकर लेनिन और भी विचलित हुए; लेनिन ने लिखा, "कॉमरेड डाक्टरों से ईश्वर हमारी रक्षा करें ! सच कहता हूँ, ९१ फ़ीसदी कॉमरेड डाक्टर गदहे हैं, एक अच्छे डाक्टर ने मुझसे यह कहा था । बोलशेविक आविष्कारों की जाँच अपने ऊपर से कराना भयानक बात है !......देखिए, जाड़े में अगर जाना ही है तो जैसे हो ज़रूर स्विट्ज़र-लैण्ड अथवा वियेना के प्रथम श्रेणी के डाक्टर से अपने को दिखाकर जाना । ऐसा न करने से आपको किसी तरह क्षमा नहीं कर सकेंगे । अब कैसे हैं ?"

लेनिन के हृदय में उनके परम प्रिय गोर्की के लिए ऐसी ही तीव्र उत्कण्ठा थी । अथच, कुसुम-कोमल यही लेनिन अपने कर्मक्षेत्र में वज्र से भी कठोर थे । इसी लिए गोर्की के मतवाद सम्बन्धी स्खलन को लेनिन क्षमा नहीं कर सकते थे; जब कभी उनकी विचारधारा में ज़रा भी त्रुटि दिखाई पड़ी, तभी लेनिन ने पत्राघात कर गोर्की को परेशान कर दिया । परन्तु अन्त में, १९१३ ई० के साथ-साथ कई सालों के लिए लेनिन गोर्की से विच्छिन्न हो गये ।

३१ दिसम्बर, १९१३ को गोर्की प्रायः सात वर्ष के पश्चात् प्रिय स्वदेश रूस में लौट आये ।

# विप्लवावर्त

## १

एक दिन जिस तरह बिना किसी पासपोर्ट के गोर्की स्वदेश से भाग गये थे, फिर एक दिन उसी तरह वे सरकार की सम्मति लिये बिना ही लौट आये। उन्हें सब प्रकार के अपराधों के लिए क्षमा नहीं मिली थी, इसलिए गोर्की की सुरक्षा के लिए लेनिन कुछ चिन्तित हुए थे। परन्तु गोर्की के ऊपर हाथ उठाते समय प्रबल राजशक्ति को इसके पहले भी काफी समझ-बूझ करनी पड़ी है। इसी लिए गोर्की के गैरकानूनी प्रत्यावर्तन के लिए किसी प्रकार का शोर-ग़ुल नहीं मचाया गया; केवल छिपे-छिपे पुलिस को उसकी लापरवाही के लिए डाँट सहनी पड़ी, क्योंकि गोर्की छिपे-छिपे पीटर्सबर्ग, मास्को होकर पुलिस के अनजाने ही फ़िनलैण्ड लौट आये हैं। गोर्की ने यहीं रहना निश्चय किया है। पहले कुछ दिनों तक पुलिस ने गोर्की के ऊपर पर्याप्त पहरा रक्खा, पर जब उन्हें यह ख़बर मिली कि गोर्की ने यहाँ साल भर के लिए एक मकान किराये पर लिया है, तब उनकी सतर्कता भी कम हो गई। इसी तरह क़रीब चार महीने बीत गये। अप्रैल महीने में पुलिस ने अपने ऊपर-वालों को भरोसा दिलाते हुए यह बताया कि गोर्की आज-कल अपराधजनक किसी बात में नहीं हैं। नवम्बर महीने में मारिया आन्द्रेयेभ्ना अभिनय के उपलक्ष में कीय़ेभ शहर में आई; गोर्की भी साथ आये। वहाँ के समाजतन्त्री साम्यवादी लोग उनके साथ मिलने आये, परन्तु उनके साथ ऐसी कोई भी चर्चा न हुई जिससे गोर्की के ऊपर किसी प्रकार राजनीतिक उद्देश्य का आरोप किया जा सके।

इसी प्रकार शान्ति के साथ और भी साल भर बीत गया। गोर्की अब विशुद्ध साहित्य-चर्चा में ही समय बिता रहे हैं। क्या राजनीतिक झगड़ों के कारण दलों के ऊपर उनकी कोई श्रद्धा नहीं है? क्या लेनिन की कर्ममय विप्लव-प्रचेष्टा की मदद करने की बात वे बिलकुल भूल गये हैं? यह तो

सम्भव नहीं मालूम पड़ता। हाँ, लेनिन के मतवाद को वे अक्षरशः स्वीकार नहीं कर सकते और इसके कारण कुछ व्यवधान की सृष्टि अवश्य ही हुई है। परन्तु और किसी दल को भी वे पूर्ण सम्मति के साथ ग्रहण नहीं कर सकते। मानो किसी प्रकार की दल-गत सङ्कीर्णता को वे स्वीकार नहीं कर सकते। सब दलों के परे जो विशाल, विराट् स्वदेश है, उसकी करुण दशा की बात ही अधिकतर उनके हृदय को व्याकुल करती है; इसी लिए भिन्न-भिन्न दलों की कर्मनीति में जो छोटी-छोटी भिन्नताएँ हैं उन्हें लेकर इतना कलह और संग्राम क्यों है, गोर्की को अच्छी तरह समझ में नहीं आता।

गोर्की ने अपने बीते हुए जीवन की कहानी लिखनी शुरू की है। बाल्य-जीवन की कहानी पूरी हो गई है। इसमें गोर्की ने अपने से अधिक अपने चारों ओर के समाज और उस समाज के मनुष्यों का ही चित्रण किया है; इसके द्वारा उन्होंने अपने देशवासियों के सम्मुख रूसी जीवन के मर्मान्तिक दैन्य को स्पष्ट रूप में धर दिया है। सम्भवतः गोर्की अपने देशवासियों को शिक्षा और सभ्यता का कितना प्रयोजन है यही बतलाना चाहते हैं और इसी लिए रूस की जनता जिस अज्ञान और कुसंस्कार के गहरे पङ्क में निमज्जित है, गम्भीर वेदना के साथ वे उसी का चित्र खींच रहे हैं।

सम्भव है किसी गूढ़ कारण से वे राजनीतिक आन्दोलन से हट आये हैं। यह भी हो सकता है कि गोर्की ने ऐसा समझा हो कि राजनीतिक आलोचना या काम करने की दक्षता उनमें नहीं है। इधर यूरोप में महायुद्ध का सूत्रपात हुआ। गोर्की के हृदय पर इसकी प्रतिक्रिया होने लगेगी इसमें आश्चर्य क्या?

## २

गोर्की तो अत्याचार से मुक्त रूस को पाश्चात्य-सभ्यता और संस्कृति के द्वारा सुन्दर और उन्नत बनाने का स्वप्न देख रहे थे। इतने में महायुद्ध के आविर्भाव से सभ्यता का कृत्रिम आवरण टूट गया है, पारस्परिक मैत्री को उसने नष्ट कर दिया है और अन्तराल में जो हिंसा और विद्वेष का हलाहल इतने दिनों से सञ्चित हो रहा था आज वह सभ्यता को ध्वंस करने के लिए

उद्यत हुआ है। इस ध्वंसलीला को देखते हुए गोर्की का चित्त निराशा से पूर्ण हो जाता है। तब मुक्ति का पथ कहाँ है? गोर्की उसी का सन्धान करते हैं।

महायुद्ध की उत्तेजना एक प्रकार की हिस्टीरिया है; इसके प्रभाव में पड़कर भिन्न-भिन्न देशों के बड़े-बड़े भावुक उग्र जातीयतावादी बन गये और शत्रुपक्षीय जातियों के प्रति घृणा और विद्वेष प्रचार करने को ही अपना धर्म समझने लगे। परन्तु गोर्की के लिए यह सम्भव नहीं है। इसलिए, 'इतिहास' ( Letopis ) पत्रिका के सम्पादक गोर्की युद्धकालीन सेंसर-शासन के होते हुए भी यथाशक्ति आन्तर्जातीयता का ही प्रचार करने लगे हैं। गोर्की सोचते हैं कि एकमात्र इसी आन्तर्जातीयतावाद के द्वारा ही एक दिन अभीष्ट शान्ति और समन्वय के जगत् की सृष्टि होगी। उग्र जातीयतावादी गोर्की की आन्तर्जातीयता को घृणा की दृष्टि से देखते हैं, वे गोर्की को देश का शत्रु समझते हैं।

यद्यपि सरकार इस पत्रिका को बोलशेविक पत्रिका समझते थे, तथापि बोलशेविकों के साथ इसका कोई भी क्रियात्मक सम्बन्ध न था। इसलिए लेनिन की बहिन 'इतिहास' के द्वारा और गोर्की के पारुस ( Parus ) नामक प्रकाशक कम्पनी के द्वारा बोलशेविक मतवाद का प्रचार करने के लिए गोर्की के साथ बातचीत करने आई। बोलशेविक प्रचारकार्य में सहायता करने के लिए राजी होने पर भी गोर्की सेंसर के कारण विशेष कुछ कर नहीं सके। इस मामले में गोर्की की सावधानता देखकर लेनिन की बहिन कुछ असन्तुष्ट ही हुई। और एक बात भी थी। गोर्की अपने अख़बार को केवल कट्टर बोलशेविकों के प्रचार का पत्र बनाना भी नहीं चाहते थे। वे अपने पत्र में विभिन्न मतों के अग्रगति-वादियों को स्थान देने लगे। लेनिन की बहिन गोर्की की इस मानसिक नमनीयता और उदार क्षमाशीलता को देखकर निराश हो गई।

तथापि विप्लवी गोर्की सब कामों से अलग होकर बिलकुल चुप नहीं रह सकते। श्रमिकों की सभाओं में गोर्की जाते हैं। एक सभा में गोर्की यह

प्रस्ताव भी कर बैठते हैं कि विप्लव के द्वारा शासन-तन्त्र को ठीक करना होगा। इससे सरकार के मन में गोर्की के प्रति भय उग्र होने लगता है। रूस में उस समय विशृंखलता का अन्त न था; नाना प्रकार की अन्दरूनी गड़बड़ियाँ, सामरिक दुर्घटनाएँ और रासेपुटिन-रूपी राहु के अत्याचार शासन-तन्त्र को भयङ्कर सर्वनाश के गड्ढे की ओर ले जा रहे थे। इधर गोर्की अपनी पत्रिका और पुस्तक-प्रकाशन-विभाग के द्वारा वाल्गा प्रान्त में ज़ोरों से प्रचार-कार्य कर रहे हैं ऐसा जनरव सरकार को आतङ्कित कर रहा था। ऐसा सुना गया कि जनता के बीच, विशेष कर, अस्त्र-शस्त्रों के कारख़ानों के कर्मचारियों में वे इस बात का प्रचार कर रहे हैं कि इँग्लैंड, फ़्रांस, जर्मनी, आस्ट्रिया और रूस के सभी 'बुर्जोआ' शासक युद्ध चाहते हैं, परन्तु किसी भी देश के प्रोलेटारियाट अर्थात् श्रमिकों को युद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं है। संत्रस्त होकर सरकार इसके बारे में जाँच-पड़ताल करने लगी और वाल्गा-प्रान्त के नौ प्रदेशों में 'इतिहास' पत्र और गोर्की का प्रभाव कितना है इस विषय में भी पता लगाने के लिए स्थानीय शासकों से प्रार्थना की गई। इतने में रासपुटिन मारा गया; रोमानौभ-शासन भी नाना प्रकार की घटनाओं से ऐसा विपर्यस्त हो गया कि गोर्की की ओर नज़र रखने का अवसर भी अब सरकार को न रहा।

गोर्की इस प्रकार बच गये, और उनकी पत्रिका भी बन्द होने से बच गई। परन्तु गोर्की की इस पत्रिका से न तो लेनिन-पन्थी और न तो बुर्जोआ-सम्प्रदाय ख़ुश थे। किसी विशेष दल का समर्थन न करने के कारण किसी भी दल ने इसका समर्थन नहीं किया। राजनीतिक चर्चा न करके, विशेष रूप में सांस्कृतिक आलोचना में गोर्की ने मन लगाया। बाहरी शत्रुओं से भी मनुष्य की अज्ञता, शिक्षा-हीनता, कुसंस्कार, अन्ध धर्मविश्वास और सांस्कृतिक पतन ही अधिक भयानक शत्रु है, इस भावना से गोर्की का हृदय विचलित होता है। और इसी लिए, राजशासन नष्ट होने से ही सब प्रकार के दुराचार भी हट जायँगे यह विप्लवी धारणा गोर्की के मन से धीरे-धीरे हट जाती है।

# ३

१९१७ ई० के फ़रवरी महीने में फिर विप्लव की शिखा भभक उठती है। इस अवसर पर समाज-तन्त्री विप्लववादी शासनतन्त्र पर अधिकार जमाने का आयोजन करते रहते हैं। डूमा के सदस्य भी समझ जाते हैं कि अब ज़ार-तन्त्र के अन्त होने का समय निकट आ रहा है। इसलिए ज़ार को गद्दी से उतारकर इन लोगों ने एक अस्थायी सरकार की स्थापना कर शासन की बागडोर को अपने हाथ में रखने की चेष्टा की। मन्त्रित्व ग्रहण करने के बाद, विप्लवकारियों की प्रतिपत्ति को नष्ट करने की आशा से केरेन्स्की शासन-प्रणाली में कुछ संस्कार की घोषणा भी करते हैं। परन्तु केरेन्स्की सरकार कैसे शान्ति लावेगी? देशवासी युद्ध का विराम और शान्ति चाहते हैं क्योंकि महायुद्ध ने देश को दुर्दशा की चरम सीमा पर उपस्थित कर दिया है। परन्तु केरेन्स्की सरकार ने जर्मनी के विरुद्ध लड़ने के लिए दृढ़ सङ्कल्प किया है। इस कारण देश के लोग असन्तुष्ट होने लगते हैं।

२ मार्च को रूस-सम्राट् गद्दी छोड़ने के लिए बाध्य किये गये। ज़ार-तन्त्र के विनाश से तो गोर्की आनन्दित हुए, परन्तु साथ ही साथ उनके मन में प्रबल शङ्का भी जाग्रत् होती है। युद्ध और विप्लव की उत्ताल तरङ्गों में अज्ञ, अशिक्षित रूसी जनता नियम और शृङ्खला की मर्यादा की कहाँ तक रक्षा कर सकेगी? क्या वे मानवता के आदर्श की रक्षा कर सकेंगे? अप्रैल के 'इतिहास' में गोर्की लिखते हैं—'स्वाधीनता के साथ रूसी जन-समूह का मिलन हुआ है। आशा करते हैं कि इस मिलन से, शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार से क्लान्त इस देश में नवीन और शक्तिमान् मनुष्यों का जन्म होगा। हम दृढ़ता के साथ यह विश्वास करें कि रूसी मनुष्यों में वह इच्छा और विचारशक्ति उज्ज्वल शिखा की तरह प्रज्वलित हो उठेगी जो युगयुगान्त के पुलिस-शासन से निष्पेषित और निर्वापित हो गई है।' गोर्की की इस आशा के अन्तराल में प्रबल आशङ्का है क्योंकि वे जानते हैं कि शासन-तन्त्र के परिवर्तन होने पर भी प्राचीन-शासन-तन्त्र का दान—अज्ञता, पाशविकता,

मूर्खता, नीचता इत्यादि सभी वर्तमान हैं। 'हम लोगों ने पुरानी व्यवस्था को नष्ट किया है परन्तु इस सफलता का कारण हमारी शक्ति नहीं है, उसका कारण वह व्यवस्था स्वयं है जिसने केवल हम लोगों को ही दूषित नहीं किया, बल्कि जो स्वयं भी पूर्णरूप से दूषित हो गई थी; यही कारण है कि एक ही धक्के से वह बिलकुल टूट गई है। देश का सर्वनाश और जनता के ऊपर अत्याचार देखते हुए भी वह धक्का देने में हम लोगों ने जो विलम्ब किया है, उस विलम्ब और हमारी दीर्घकालव्यापी दुःखभोग ने ही यह प्रमाणित कर दिया है कि हम दुर्बल हैं।'

गोर्की की इस शङ्का का प्रमाण भी शीघ्र ही मिल जाता है। चारों ओर अराजकता और नृशंसता प्रकट होने लगती है। प्रमत्त वेग से मनुष्य की पाशविकता प्रचण्ड हो उठती है। उन्मत्त जनसाधारण सभ्यता और संस्कृति के सञ्चित निदर्शनों को विनष्ट कर परम आनन्दित होते हैं। बार-बार संस्कृति की इस विपन्नता की ओर देशवासियों की दृष्टि को आकर्षित करके ही गोर्की निरस्त नहीं होते। उन्हीं की चेष्टा से 'विज्ञान की उन्नति और विस्तार के लिए स्वाधीन सङ्घ' और 'संस्कृति और स्वाधीनता' समितियों की प्रतिष्ठा होती है। परन्तु जब राजनीतिक दलों के आन्दोलन और आलोड़न से देश भर में प्रबल उत्तेजना का स्रोत बह रहा है उस समय संस्कृति-सम्बन्धी काम में कौन मन लगाना चाहता है! इसलिए थोड़े ही दिनों में ये समितियाँ बन्द हो जाती हैं।

'इतिहास' भी बन्द हो गया। परन्तु इसी के सम्पादक और लेखक-गण दैनिक 'नवजीवन' पत्रिका में आकर सम्मिलित हुए। अब ये लोग निर्दिष्ट मतवाद के प्रचार करने के लिए अवतीर्ण हुए। थोड़े ही दिनों के अन्दर 'नवजीवन' रूस के एक बहुत ही जनप्रिय अख़बार में परिणत हुआ। नव-जीवन' ने नियमित रूप से केवल केरेन्स्की गवर्नमेंट पर ही आक्रमण नहीं किया, बल्कि अन्य राजनीतिक दलों पर भी तीव्र आक्रमण करने लगा। यहाँ तक कि लेनिन के दल की शासन-तन्त्र अधिकार करने की परिकल्पना को भी आक्रमण करने से न रुका।

## ४

जून के महीने में लेनिन ने सोवियेट कांग्रेस में यह घोषणा की कि बोलशेविक लोग देश का शासन-भार लेने को तैयार हैं। इस प्रस्ताव को तो लोगों ने हँसकर ही उड़ा दिया। तथापि जुलाई के महीने में ही बोलशेविकों ने शासन-तन्त्र पर अधिकार जमाने की कोशिश की, पर उसका फल कुछ भी न हुआ। केरेन्स्की सरकार ने बोलशेविकों को राजद्रोही कहकर घोषणा कर दी जिससे लेनिन, कामेनियेभ, जिनोभियेभ सभी छिप जाने के लिए बाध्य हुए और इनकी 'सत्य' पत्रिका का प्रचार भी बन्द हो गया।

बोलशेविक लोगों ने अब विवश होकर 'नवजीवन' में अपने लेख इत्यादि प्रकाशित करने की प्रार्थना की। गोर्की इस पर राज़ी हुए लेकिन उन्होंने अन्य दलों के मतों के प्रचार में भी बाधा नहीं दी। अगस्त महीने में नवजीवन में ऐसा आवेदन भी प्रकाशित हुआ कि सोवियेट में बोलशेविकों को न चुना जाय। बोलशेविक पत्रिका 'प्रोलेटारी' गोर्की की इस अद्‌भुत उदारता की निन्दा करने लगी।

परन्तु गोर्की के लिए यह कुछ आश्चर्य की बात न थी। शुरू से ही गोर्की समन्वयवादी थे। जो कोई भी रूस के जनगण के कल्याण के लिए अग्रसर हुए, गोर्की उन सभों को स्थान देने को तैयार थे। इसलिए किसी दल के कट्टरपन के सामने वह झुकना नहीं चाहते थे। 'बुर्जोआ' दल गोर्की को लेनिनपन्थी कहकर गाली देने लगे और लेनिनपन्थी उन्हें समन्वयपन्थी कहकर व्यङ्ग करने लगे। नियम-तान्त्रिक साम्यवादी, उदारपन्थी केडेट ( Kadet ) नेता मिलिक्यूभ के आक्रमण के उत्तर में गोर्की ने लिखा, सत्तरह साल हुए मैं तो अपने को समाजतन्त्री साम्यवादी ही समझता आया हूँ और यथाशक्ति उस दल के महान् उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए सहायता भी करता आया हूँ। तथापि जो कोई भी काम आवश्यक है उसकी उपेक्षा करने की इच्छा न रहने के कारण मैंने अन्य दलों की सहायता करने से इनकार नहीं किया। जो लोग अपने मतवाद के दबाव से जड़त्व को प्राप्त हुए हैं उनके प्रति मैंने कभी सहानुभूति प्रकट नहीं की।

आन्तर्जातीयतावादी और युद्ध-विरोधी होने के कारण बहुत से लोग गोर्की के ऊपर असन्तुष्ट होने लगे। अलेकजेण्डर कुप्रिन और आन्द्रेयेभ जैसे पुराने मित्र भी इसी लिए उनके शत्रु हो गये। गोर्की एक प्रकार से मित्रहीन हो गये। अब चारों ओर से गोर्की के ऊपर नाना प्रकार के हीन अभियोग और आक्रमण होने लगे। भ्लाडिमिर बर्टसेभ गोर्की को जर्मनी का गुप्तचर और स्वदेश-द्रोही तक कह बैठे। अत्यन्त वेदनाहत होकर गोर्की ने उत्तर दिया कि, स्वदेश का अर्थ देश के लोग ही हैं। पच्चीस वर्ष से मैंने अपने देशवासियों की सेवा की है। अरे नीच, मुझ पर दोष लगाने और मेरा विचार करने के लिए तुम कौन होते हो?' सम्मिलित ट्रेड यूनियन कांग्रेस ने बर्टसेभ के इस कदर्य कुत्साप्रचार की तीव्र निन्दा की और दृढ़ता के साथ गोर्की को रूस साहित्य का गौरव और श्रमक्लिष्ट रूसी जनता का अक्लान्त सेवक बताते हुए उनका अभिनन्दन किया।

## ५

जुलाई के महीने में जो बोलशेविक विद्रोह हुआ उसके कारण केरेन्स्की सरकार रक्षणशील दल और धनिक सम्प्रदाय की समर्थन करनेवाली बन बैठी। इसलिए किसानों की उन्नति के लिए संस्कार का जो आश्वासन दिया गया था वह फिर कार्यरूप में परिणत न हुआ। एसेम्बली की होनेवाली बैठक को बार-बार स्थगित कर सरकार सुधार-सम्बन्धी कार्य को टालने लगी। इधर प्रभुत्वलुब्ध सेनानायक कार्निलौभ सेना लेकर सोवियेटों को ध्वंस करके सामरिक शासन-तन्त्र प्रतिष्ठित करने का सङ्कल्प करने लगे। परन्तु कार्निलौभ का सङ्कल्प व्यर्थ हुआ क्योंकि रूसी सेना ने उनको मानने से इनकार कर दिया।

ज्यों-ज्यों केरेन्स्की गवर्नमेंट के प्रति असन्तोष बढ़ता गया त्यों-त्यों 'सोवियेट को सभी शासनाधिकार प्राप्त हो' इस मत के समर्थकों की संख्या भी बढ़ने लगी। इससे बोलशेविकों का प्रभाव बहुत ही बढ़ने लगा। फ़िनलैंड से लेनिन अपना प्रचार-कार्य करने लगे और लेनिनपन्थी ट्राट्स्की भी पेट्रोग्राड

सोवियेट के सभापति निर्वाचित होकर बड़ी प्रबलता के साथ सङ्गठन का काम करने लगे।

अब प्रबल होने के कारण बोलशेविकों के प्रचार और सङ्गठन का काम प्रकाश्य रूप से ही चलने लगा। केरेन्स्की गवर्नमेंट के विरोधी होने पर भी, इनके विरुद्ध शस्त्र धारण करने का साहस केरेनस्की को नहीं हुआ। बोलशेविक लोग नागरिक और सामरिक कर्तृत्व प्राप्त करने के लिए सङ्गठन करने लगे। पेट्रोग्राड का वायुमण्डल आसन्न बोलशेविक विद्रोह के अस्फुट गर्जन से भर गया और सर्वत्र अकथित परन्तु सुस्पष्ट प्रतीक्षा का भाव प्रकट होने लगा।

'नवजीवन' की मनोवृत्ति भी धीरे-धीरे परिवर्तित होने लगती है। बोलशेविक ही एकमात्र शक्तिशाली दल है यह 'नवजीवन' स्वीकार नहीं करता, तथापि वह इस मत का प्रचार करता है कि गणतान्त्रिक दल के हाथ शासन-भार दे देना चाहिए। अक्तूबर महीने का भी आधा बीत गया, चारों ओर चञ्चलता छा जाती है। परन्तु बाजारौभ अभी तक यह विश्वास नहीं कर सकते कि सब गणतान्त्रिक दल सम्मिलित होने पर भी वे शासन का काम कर सकेंगे। बोलशेविक दल इन अविश्वास और संशय करनेवालों की कुछ भी परवाह नहीं करते। क्योंकि उनको मालूम है कि केवल जनसाधारण में ही नहीं बल्कि सामरिक विभाग में भी उन लोगों का प्रभाव प्रबल होता जा रहा है। बीच-बीच में बोलशेविकों ने जैसा जैसा आदेश और निर्देश दिया है, जनता ने उसी के अनुसार काम किया है। परन्तु अक्तूबर के अन्त तक 'नवजीवन' को बोलशेविकों की शक्ति के परिमाण के बारे में पर्याप्त सन्देह रहा; इसी लिए 'नवजीवन' ने बोलशेविकों को यह कहकर सावधान किया कि अन्य गणतान्त्रिक दलों से विच्छिन्न होकर उन्हें कोई भी काम नहीं करना चाहिए।

## ६

परन्तु इन सतर्क वाणियों का सुनने का अवसर ही कहाँ है?

केन्द्रीय बोलशेविक कमेटी के भी बहुत से सदस्य विप्लव का प्रारम्भ कर देना उचित नहीं समझते; कामेनेभ, जिनोभियेभ आनाकानी कर रहे हैं।

परन्तु इधर ट्राट्स्की ने सोवियेट सामरिक विप्लव कमेटी का सङ्गठन कर पेट्रोग्राड (पीटर्सबर्ग) में सेना और श्रमिकों को सङ्घबद्ध करने का काम आरम्भ कर दिया है। मार्क्सवाद के स्वनामधन्य ऐतिहासिक रियाजानौभ भी लेनिन के दल में शामिल होकर सबको आसन्न विप्लव के लिए तैयार होने को कह रहे हैं। पेट्रोग्राड के वायुमण्डल में आसन्न विप्लव का आभास सुस्पष्ट हो रहा है। चारों ओर यह जनरव फैल गया है कि २ नवम्बर को बोलशेविक विप्लव सङ्घटित होगा।

गोर्की का मन भी सन्देह और शङ्का से व्याकुल हो उठता है। उनका यह दृढ़ विश्वास है कि यद्यपि विप्लव का प्रारम्भ हो जाय तो वह सफल नहीं हो सकता। इसलिए ३१ अक्तूबर को उन्होंने केन्द्रीय बोलशेविक कमेटी की राय क्या है पूछते हुए "और चुप रह नहीं सकते" शीर्षक एक दीर्घ लेख लिखा :—

"२ नवम्बर को बोलशेविक विप्लव का अनुष्ठान होगा यह जनश्रुति दिन-दिन प्रबल होती जा रही है। इसका अर्थ यह है कि १६-१८ जुलाई के भयङ्कर दृश्य का पुनरभिनय होनेवाला है। मोटरलारियाँ भरकर लोग अपने काँपते हुए हाथों में राइफल और बन्दूक लिए फिर दिखाई देंगे और दुकानों की खिड़कियों पर, जनता के ऊपर लक्ष्यहीन गोलियाँ बरसेंगी। ये सशस्त्र मनुष्य केवल अपने भय को दबाने के लिए गोली मारेंगे। विशृङ्खलता, राजनीतिक उद्देश्य से मिथ्या और हीन प्रचार के द्वारा उत्तेजित जनता की अन्धप्रवृत्ति से ईर्ष्या, घृणा और प्रतिहिंसा उत्पन्न होगी। जनता अपनी पाशविक मूर्खता को नष्ट करने में असमर्थ होकर परस्पर हत्या करेगी। विशृङ्खल जनता अपना प्रयोजन कुछ भी न समझती हुई रास्तों पर निकल आवेगी और इनके आड़ में से हुकूमत के प्यासे चोर और पेशेदार ख़ूनियों का 'रूस विप्लव का इतिहास' रचने का प्रयास होगा।

संक्षेप में, पहले हम लोगों ने जो निरर्थक नरहत्या देखी है, जिसने सारे देश के सम्मुख विप्लव के नैतिक महत्त्व और उसके सांस्कृतिक प्रयोजन को नष्ट किया है, फिर उसी की पुनरावृत्ति होगी।

सम्भवतः अब की घटनावली और भी रक्ताक्त और भी उद्दण्डतापूर्ण होगी, विप्लव के ऊपर और भी प्रचण्ड चोट पड़ेगी।

इस विप्लव को कौन चाहता है और क्यों चाहता है? ऐसा नहीं मालूम हो रहा है कि इस सङ्कल्पित विप्लव के साथ केन्द्रीय बोलशेविक कमेटी की सम्मति है क्योंकि आज तक इस आसन्न विद्रोह की जनश्रुति का समर्थन उन्होंने नहीं किया है। यह अवश्य सच है कि इससे उन्होंने इनकार भी नहीं किया है।

यहाँ पर यह प्रश्न करना अवान्तर न होगा कि श्रेणी-चेतनायुक्त प्रोलेटारियाटों के बीच विप्लव-चेष्टा का मन्द वेग देखकर प्रभुत्व-लुब्ध लोगों ने ऐसा तो नहीं ठान लिया कि पर्याप्त खून बहाकर उस विप्लव-चेष्टा को उत्तेजित करें?

अथवा ये लोग चाहते हैं कि विप्लव-विरोधियों का आघात और भी जल्दी से हो और इसी लिए, जिन शक्तियों को बहुत मुश्किल से सम्मिलित किया गया है उन्हें विच्छिन्न करने की चेष्टा कर रहे हैं?

२ नवम्बर के विद्रोह-सम्बन्धी जनश्रुति का प्रतिवाद करना केन्द्रीय कमेटी का कर्तव्य है। यदि वास्तव में यह प्रतिष्ठान अपने को जनता के सञ्चालन करने योग्य, प्रबल और स्वतन्त्र राजनीतिक प्रतिष्ठान समझता हो, यदि वह अपने को पशुतुल्य उन्मत्त जनता की कठपुतली न समझता हो, यदि कमेटी निर्लज्ज, क्षमता-लुब्ध और विकृत-मस्तिष्क कट्टर लोगों की कठपुतली मात्र न हो तो प्रतिवाद करना उसका अवश्य कर्तव्य है।"

## ७

विप्लव का प्रारम्भ करना चाहिए कि नहीं इस पर केन्द्रीय कमेटी में मतभेद देखकर कुछ शङ्कित होने पर भी लेनिन अपने सङ्कल्प पर अटल थे। उन्होंने स्पष्ट रूप से देशवासियों से कह दिया कि अगर यह विद्रोह न होने दिया जाय तो सोवियेट के हाथों में शासनतन्त्र कभी नहीं आवेगा।

जो असम्भव बात थी वही कई दिनों के ही अन्दर हो गई; केरेन्स्की गवर्नमेंट का अवसान हो गया। बोलशेविक विद्रोहियों ने सेना को अपने दल

में शामिल कर ७ नवम्बर को शासनतन्त्र पर अधिकार जमा लिया। जादू के खेल जैसी यह घटना हो गई। परन्तु शासनतन्त्र का अधिकार कर लेना एक बात और उसे कब्जे में रखना सम्पूर्ण भिन्न बात है। लेनिन और ट्राट्स्की के मन में भी इस विषय में पर्याप्त सन्देह था कि वे अधिक दिनों तक टिक सकेंगे कि नहीं। ट्राट्स्की ने तो यहाँ तक कहा कि "हाँ, कार्यतः हम लोगों को हट जाना पड़ेगा, परन्तु जब हम हटेंगे, ऐसी आवाज कर जायेंगे जिसकी प्रतिध्वनि कई पुश्त तक सुनाई पड़ेगी।"

'नवजीवन' ने विद्रोह का समर्थन न कर उसका तीव्र विरोध किया; विद्रोह के समय उसका प्रतिवाद और भी तीव्र हो उठा। 'नवजीवन' के दल को मूर्ख समझकर लेनिन ने उसके प्रतिवाद की परवा न की। तथापि इच्छा न रहने पर भी वे अन्य समाजतन्त्री दलों के साथ आंशिक रूप में सहयोग करने को राजी हुए। परन्तु जब वे उनको कोई बड़ा अधिकार देने को राजी न हुए तब केन्द्रीय कमेटी में मतभेद उपस्थित हुआ। कामेनेभ, जिनोभियेभ आदि कई सदस्य केन्द्रीय कमेटी से अलग हो गए। समाजतन्त्री विप्लवी दल के कई सदस्यों को भी लेनिन ने स्थान दिया, पर उन्होंने भी कुछ दिनों के बाद बोलशेविक दल को छोड़ दिया। तब लेनिन का दल अपने आधिपत्य को अखण्ड और अक्षुण्ण रखने के उद्देश्य से कठोर निर्यातन नीति का आश्रय लेने को बाध्य हुआ।

एक दिन ज़ार-तन्त्र और केरेन्स्की की गवर्नमेंट ने बोलशेविक और अन्य विप्लवियों के विरुद्ध जिस दमननीति का प्रयोग किया था, आज क्षमता-प्राप्त होने के साथ ही साथ जब विजयी बोलशेविक दल ने भी अपने विरोधियों पर उसी दमन-नीति का प्रयोग करना शुरू कर दिया तब निर्यातित मानवता का चिरबन्धु गोर्की किसी तरह भी उसका समर्थन न कर सका।

केरेनस्की गवर्नमेंट के सभी मन्त्रियों को कैद कर लिया गया, केवल उनमें से जो समाजतन्त्री थे उन्हें मुक्ति मिली। बोलशेविकों के इस निर्यातन के लिए चारों ओर से गोर्की के ऊपर दोषारोपण होने लगा; विशेषकर बुद्धिजीवी श्रेणी के लोग बोलशेविक अभ्युदय के लिए गोर्की ही को दायी करने लगे और बोलशेविक अत्याचारों का प्रतिरोध करने के लिए उन्हीं

को पुकारने लगे क्योंकि वे जानते थे कि इस विप्लव के मूल में गोर्की का प्रभाव कम नहीं है।

८

विप्लवी बोलशेविकों की दमन नीति से गोर्की अत्यन्त विरूप हो जाते हैं। इसलिए इस अत्याचार के विरुद्ध वे बिलकुल अकेले खड़े होते हैं; किसी प्रकार की दण्डभीति से गोर्की का प्रतिवाद बन्द नहीं होता। बोलशेविक विजय के कई दिन पश्चात् ही २० नवम्बर को गोर्की का प्रतिवाद निकलता है।

पीटर पौल दुर्ग से लेनिन-ट्राट्स्की के द्वारा मुक्त होकर समाज-तन्त्री मन्त्री लोग अपने घर लौट गये हैं और अपने सहकर्मी बेर्नाट्स्की, कानभालौभ, टेरेश्चेंको आदि को उन लोगों के हाथ छोड़ गये हैं, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और मनुष्य के अधिकार के सम्बन्ध में जिनकी कुछ भी धारणा नहीं है।

गणतन्त्र ने जिन अधिकारों के प्राप्त करने के लिए संग्राम किया है उन अधिकारों को और बोलने और चलने-फिरने की स्वतन्त्रता को जिस निर्लज्जता के साथ सङ्कुचित किया गया है उसी से स्पष्ट मालूम हो रहा है कि लेनिन, ट्राट्स्की और उनके साथी अभी क्षमता के दुष्ट विष से आक्रान्त हुए हैं।

अन्ध कट्टरपन से उन्मत्त, विवेक-बुद्धि-रहित और क्षमता-लुब्ध होकर ये लोग सामने की ओर अन्धवेग से दौड़ रहे हैं। वे सोच रहे हैं कि हम समाज-विप्लव के रास्ते पर जा रहे हैं, परन्तु वास्तव में वे अराजकता के रास्ते से प्रोलेटारियाट और विप्लव को ध्वंस करने की ओर चले जा रहे हैं।

इस रास्ते पर चलते हुए लेनिन और उनके अनुचर लोगों ने किसी भी प्रकार के अपराधजनक अनुष्ठान को ठीक समझ लिया है, जैसा पेट्रोग्राड के निकट नर-हत्या, मास्को के ऊपर गोलों की बौछार, मत प्रकट करने की स्वतन्त्रता का अधिकार छीनना, निरर्थक गिरफ्तारियाँ—अर्थात् सब प्रकार के दुष्कर्म जो कि किसी समय स्टाइलोपिन और प्लेह्वे ने किया था।

यह निश्चय है कि स्टाइलोपिन और प्लेहे ने जो कुछ किया था वह सब गणतन्त्र के विरुद्ध, रूस में जो कुछ अच्छा और प्राण-मय था उसके विरुद्ध था, परन्तु लेनिन कम से कम कुछ दिनों के लिए बहुत-से श्रमिकों के नेता हैं।......

श्रमिक लोग अवश्य ही समझ सकेंगे कि लेनिन उनके खून पर, उनके चमड़े पर, यह एक प्रयोग-परीक्षा कर रहे हैं। वे यह देखना चाहते हैं कि प्रोलेटारियाट की वैप्लविक मनोवृत्ति को अत्यन्त तीव्र कर देने से उसका फल कैसा होता है।

यह निश्चय है कि वर्तमान स्थिति में रूस में प्रोलेटारियाट की विजय की सम्भावना पर उनका विश्वास नहीं है; परन्तु असम्भव को सम्भव करने की आशा उनके मन में जाग्रत् हुई है।

श्रमिकों को यह जानना चाहिए कि वास्तव जीवन में असम्भव सम्भव नहीं होता। उन्हें तो अनाहार, पण्यशिल्प की सम्पूर्ण विशृङ्खल और विध्वस्त अवस्था, यानवाहनों का विनाश, दीर्घकालव्याप्त रक्ताक्त अराजकता और उसके पश्चात् फिर वैसी ही रक्ताक्त और निराशापूर्ण प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

प्रोलेटारियाट के वर्तमान नेता उन्हें उसी ओर ले जा रहे हैं। हम लोगों को यह समझना चाहिए कि लेनिन कोई सर्वशक्तिमान् जादूगर नहीं हैं; वे हृदयहीन प्रतारक हैं, प्रोलेटारियाट के जीवन और सम्मान की कुछ भी वे रक्षा नहीं करेंगे।

क्षमता-लुब्ध पागलों को प्रोलेटारियाट के सिर पर लज्जास्पद, निरर्थक, रक्ताक्त अपराधों का बोझ लादने देना श्रमिकों के लिए किसी तरह भी उचित नहीं है। इसके लिए लेनिन को दण्ड नहीं भोगना पड़ेगा, प्रोलेटारियाट को ही इसका दण्ड भोगना पड़ेगा।

मेरे ये प्रश्न हैं :—

क्या यह स्मरण है कि रूस गणतन्त्र ने राजतन्त्र के स्वेच्छाचार के विरुद्ध जो संग्राम किया है वह किस आदर्श की विजय के लिए?

क्या ऐसा मन में होता है कि उस संग्राम को क़ायम रखने की शक्ति उसके पास है ?

क्या यह भी स्मरण है कि रोमानौव की पुलिस ने जब नेताओं को क़ैद कर लिया था और सश्रम कारादण्ड से दण्डित किया था उस समय उसने उस संग्राम-पद्धति को नीच बताया था ?

मत प्रकट करने की स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में लेनिन का जो अभिप्राय देखा जा रहा है, स्टाइलोपिन और प्लेहे प्रमुख अर्धमानवों के अनुरूप अभिप्राय से वह किस प्रकार भिन्न है ?

रोमानौव गवर्नमेंट ने जैसा किया था, क्या लेनिन गवर्नमेंट भी ठीक उसी तरह अपने विरोधियों को पकड़कर क़ैद नहीं कर रही है ? कोअलिशन ( सम्मिलित ) गवर्नमेंट के बेर्नाट्स्की, कानभालौभ और अन्य सदस्य दुर्ग में क्यों बन्द हैं ? क्या वे अपने समाजतन्त्री सहकर्मियों से ( जिनको लेनिन ने मुक्ति दे दी है ) अधिक अपराधी हैं ?

इन मन्त्रियों के और अन्य निर्दोष कैदियों की मुक्ति के लिए और विचार प्रकट करने की पूर्ण स्वतन्त्रता के लिए दावा करके ही इन सब प्रश्नों का यथार्थ उत्तर प्राप्त करना होगा।

इसके अतिरिक्त, गणतान्त्रिकों में जिनके दिमाग़ ठण्ढे हैं उन्हें और एक विषय में सिद्धान्त करना चाहिए : उन्हें यह निश्चय करना चाहिए कि षड्यन्त्रकारी और एनार्किस्ट लोगों का पथ ही उनका पथ है या नहीं।

## ९

परन्तु गोर्की के इन तीव्र प्रतिवादों को उस समय कौन सुनता है ? देशव्यापी विपुल विशृङ्खला के बीच शान्ति-स्थापना असम्भव-सी बात प्रतीत होती है। ऐसी स्थिति में निर्ममता के साथ समस्त विरोधियों के दमन के द्वारा बोलशेविक शासन और आदर्श की रक्षा करने के अतिरिक्त और कोई भी रास्ता लेनिन के सामने नहीं है। दमन-नीति का प्रत्यक्ष और आशुफल मन को आश्वस्त करता है क्योंकि भय के प्रभाव से यह नीति दलित मानव

को सामयिक रूप से निष्क्रिय और नीरव कर देता है और इससे दमनकारी समझता है कि शान्ति की स्थापना हुई है। इसलिए लेनिन की कठोर और निर्मम दमननीति को भी प्रायः सभी लोग चुपचाप, समर्थन न कर, बरदाश्त करते हैं : केवल विद्रोही गोर्की ही निर्भीकता के साथ मनुष्य के आत्मिक और गणतान्त्रिक अधिकारों के ऊपर इस अत्याचार का तीव्र विरोध करते हैं।

लेनिन चुप रह गये, परन्तु उनके अनुयायी इस आक्रमण को बरदाश्त न कर सके। उन लोगों ने यह घोषणा की कि गोर्की प्रोलेटारियाट के प्रति विश्वास-घातकता के अपराधी हैं।

एक दल के प्रति दूसरे दल के इस अत्याचार का समर्थन गोर्की के लिए असम्भव था : इसलिए मानव प्रेमिक गोर्की ने लिखा :—

"मेरी राय में गण-तन्त्र के विरोधी हैं केवल इसी लिए बुर्जोआ पत्रिकाओं का जबर्दस्ती कण्ठरोध करना गणतन्त्र के लिए अपमानजनक है। क्या गणतन्त्र ने अपने कामों को अन्याय समझा है और इसी लिए शत्रु की समालोचना से डर रहा है ? क्या 'काडेट' दल की विचारधारा इतनी प्रबल है कि केवल बाहुबल से ही उसे परास्त किया जा सकता है ? समाचार-पत्रों की स्वतन्त्रता नष्ट करना बलप्रयोग और जबर्दस्ती का ही रूपान्तर-मात्र है, यह गणतन्त्र के लिए उचित काम नहीं है।

"रूस के ध्वंस-स्तूप के ऊपर म० ट्राट्स्की के इस उन्मत्त नृत्य में जो शरीक होना नहीं चाहते उन्हें आतङ्कवाद और हत्या का भय दिखलाना लज्जाजनक अपराध है।"

जन्म से गोर्की का यही स्वभाव है। माता की छाती पर लात मारते देखकर जो बालक मैक्सिमौभ को छुरा लेकर खून करने के लिए कूद पड़ा था, शैशव में जो बालक रास्तों पर नृशंस अत्याचारों का प्रतिरोध करते हुए बहुत मार खाकर क्षत-विक्षत हो घर लौटता था, जिस गोर्की ने जार के शासनकाल में विप्लवियों के ऊपर अत्याचार के विरुद्ध प्रतिवाद करने में कुछ भी द्विधा न की, वही गोर्की आज फिर उन्हीं विप्लवियों के विरुद्ध, उनके अत्याचारों के विरुद्ध वैसे ही निर्भीक हो खड़े हुए हैं। जो वर्टसेव कुछ दिन पहले गोर्की को विदेशियों के गुप्तचर बतलाने में जरा भी हिचका

न था, आज वह वर्टसेव भी लेनिन-पन्थियों के क्रोध से कैदखाने में पड़ा है। लेकिन इसी वर्टसेव ने विप्लवात्मक कार्यों के लिए जार के समय कितना निर्यातन सहा था! व्यक्तिगत शत्रुता को भूलकर गोर्की ने वर्टसेव के प्रति इस अन्याय के विरुद्ध भी प्रतिवाद किया। दल-प्रीति से अन्ध लेनिन के साथी लोग चिल्ला उठे कि गोर्की दल-द्रोही हैं परन्तु वे इस बात को भूल गये कि गोर्की ने कभी किसी खास दल की तरफ से अन्य दल का दमन करना नहीं चाहा। क्या लेनिन भी इस बात को भूल गये?

## १०

विरोधी दल के ऊपर अत्याचार की बात को बोलशेविक पत्रिका 'सत्य' ( प्राभ्दा ) ने भी स्वीकार किया, लेकिन तब भी उन लोगों ने गोर्की की कठोर समालोचना को पक्षपातपूर्ण और एकदेशीय बताया और कहा कि गोर्की केवल दोषों को ही अत्यन्त बढ़ा-चढ़ाकर देख रहे हैं परन्तु हज़ारों वर्षों के शासन तन्त्र को तोड़ते समय थोड़ा-बहुत अत्याचार का होना अनिवार्य है। यदि आज गोर्की अधीर होकर दल छोड़ जायेंगे तो जिस दिन समग्र मानव जाति सम्मिलित प्रीतिभोज में बैठेगी क्या उस दिन गोर्की को कोई भी बुलावेंगे? इसके उत्तर में गोर्की ने कहा कि जिस उत्सव में अर्धशिक्षित अत्याचारी गणमानव अपनी सहज विजय को अभिनन्दित करने के लिए सम्मिलित होंगे और व्यक्ति के ऊपर निर्यातन चलाते रहेंगे, उस उत्सव के प्रति मेरा कुछ भी आकर्षण नहीं है, मेरे लिए तो वह उत्सव ही नहीं है। और, उस 'आनन्दमय उत्सव' को देखने के लिए न वे लेखक रहेंगे और न मैं ही रहूँगा।

'नवजीवन' के द्वारा बोलशेविकों की कठोर समालोचना चलने लगी। गोर्की ने स्पष्ट कह दिया कि शासन-भार चाहे जिसके पास हो, मनुष्य होने के नाते उसकी समालोचना करने का अधिकार मेरा है। रूसी प्रोलेटारियाट की शासक बनने की योग्यता के बारे में गोर्की के मन में जो सन्देह है वह बहुत पहले ही से है। जो जनगण सैकड़ों वर्षों से दासत्व

करता आया है आज कुछ भी शिक्षा-दीक्षा न पाकर वह अकस्मात् आदर्शवादी शासक में परिणत हो जायगा और परस्पर के प्रति अत्याचार नहीं करेगा, दीर्घजीवन की अभिज्ञता के कारण गोर्की इस पर किसी तरह विश्वास नहीं कर सकते हैं। इसी लिए गोर्की सोचते हैं कि लेनिन प्रत्यक्ष रूप से रूसी किसानों को नहीं जानते हैं इसी लिए केवल पुस्तक में पढ़े हुए आदर्शवाद को लेकर वह एक पंगु सम्प्रदाय को एकाएक खड़ा करने की चेष्टा कर रहे हैं; ऐसी चेष्टा व्यर्थ होगी। गोर्की यह विश्वास करते हैं कि यह गवर्नमेंट अधिक दिन नहीं टिकेगी और बोलशेविकों के इस अत्याचार का प्रायश्चित्त एक दिन रूस को ख़ून की नदी बहाकर करना पड़ेगा।

लेनिन के सहयोगियों के लिए उभय सङ्कट उपस्थित हो गया। एक ओर देश भर में घोर विशृङ्खलता थी; अकस्मात् बन्धन-मुक्त जनता ने देश भर में अराजकता की सृष्टि की; बोलशेविक-विरोधी दल भी नाना प्रकार से बोलशेविक शासन को विपन्न और विपर्यस्त करने की चेष्टा करने लगे। एक प्रकार से वाध्य होकर लेनिन को कठोर दमननीति का आश्रय लेना पड़ा। इधर फिर एक और विपत्ति उपस्थित हुई। रूसी सेना की चरम दुर्दशा हो गई थी, विदेशी आक्रमण के विरुद्ध लडने की शक्ति कुछ भी नहीं थी; इसके अलावा देशवासी भी युद्ध बन्द करने के लिए व्याकुल हो उठे थे, ऐसे समय जर्मन सेना भी मौका समझकर रूस पर चढ़ाई करने को अग्रसर होने लगी। लेनिन निरुपाय हो गये; बोलशेविक शासन-तन्त्र को कायम रखने के लिए वैदेशिक सङ्घर्ष को बन्द कर देश के भीतरी शासन और नियन्त्रण की यथोचित व्यवस्था करने का आशु प्रयोजन था। इसी कारण लेनिन ने दिसम्बर के मध्य में जर्मनी के साथ ब्रेस्टलिटौभ्स्क सन्धि कर ली। बहुत से समाजतन्त्रियों ने इस सन्धि को एक घोर आदर्श-विरुद्ध काम समझकर इसका प्रतिवाद किया। केवल 'नवजीवन' में बाजारौभ और सुखानौभ ने ही इसकी प्रतिकूल समालोचना नहीं की, परन्तु राडेख और बुखारिन जैसे पुराने और ज़बर्दस्त बोलशेविक भी लेनिन की इस नीति का समर्थन नहीं कर सके।

बोलशेविकों का एक सिद्धान्त यह था कि शासनतन्त्र प्रोलेटारियाट के हाथों में होगा अर्थात् यथार्थ लोकमत के द्वारा देश का शासन होगा: प्रचलित-

गणतान्त्रिक शासन-पद्धति की तरह वह झूठा न होगा। जब कभी किसी महत्वपूर्ण प्रश्न की मीमांसा की जरूरत होगी अथवा शासनतन्त्र का स्वरूप निर्णय करना होगा, तभी जनमत जानने के लिए निर्वाचक मण्डली की परिषद् ( Constituent Assembly ) का आह्वान किया जायगा। इस उद्देश्य से १९१८ ई० के जनवरी महीने में गण-परिषद् ( Constituent Assembly ) बुलाई गई और उसमें समाजतन्त्री विप्लवी सदस्य ही अधिक वोट से चुने गये। लेनिन ने देखा कि उनके दल की प्रचेष्टा और प्रयास से प्राप्त क्षमता लोकमत के द्वारा अन्य लोगों के हाथों में चली जा रही है। तब लेनिन ने बोलशेविकों की प्रचारित नीति की कुछ भी परवाह न करके परिषद् को तोड़कर अल्पसंख्यक बोलशेविकों के हाथ में ही हुकूमत रखने के लिए दृढ़ सङ्कल्प कर लिया। इस तरह लोकमत का दमन किया गया और शक्तिमान लेनिन की विजय हुई। जब तक लोकमत बोलशेविक मत के अनुयायी न हो तब तक के लिए डिक्टेटर-तन्त्र की प्रतिष्ठा की गई। गण-परिषद् तोड़ने के विरुद्ध प्रतिवाद प्रकट करने के लिए जलूस निकाला गया; लेनिन ने शस्त्र के सहारे उस जलूस को तोड़ दिया।

१९०५ ई० के 'रक्तिम-रविवार' ( Red Sunday ) के साथ इस घटना की तुलना करते हुए गोर्की ने तीव्र आक्रमण किया। बोलशेविक लोग आक्रमणकारी गोर्की के ऊपर दिन-दिन असन्तुष्ट और क्रुद्ध होने लगे। जिनोभियेभ नाना प्रकार से गोर्की को नीचा दिखलाने की कोशिश करने लगे। परन्तु उनके विगत दीर्घ जीवन के इतिहास को जनगण के मन से मिटा देना सहल बात नहीं है। गोर्की ने जिस प्रकार दीर्घकाल से तनमन से विप्लव आन्दोलन की सहायता की है वह बात जनसाधारण को भी अज्ञात नहीं है। इसी लिए जनप्रिय गोर्की के ऊपर किसी प्रकार अत्याचार करने का साहस बोलशेविकों को भी नहीं होता : नहीं तो कभी 'नवजीवन' का अन्त हो जाता।

फिर भी प्रभुता प्राप्त होने के बाद बोलशेविक लोग धीरे-धीरे विरुद्धमत वालों का कण्ठावरोध करने लगे; दमन-नीति की कठोरता के कारण सत्य-भाषण बन्द होने लगा। केवल एक ही दल का प्रचार प्रबल रूप से होने

लगा। 'सत्य' पत्रिका ने असत्य का आश्रय लेकर 'नवजीवन' के ऊपर झूठे देशद्रोह का अपराध लगाना शुरू कर दिया। 'सत्य' के प्रचारक यह कहने लगे कि गोर्की विदेशी शत्रु के धन से 'नवजीवन' चलाते हैं, यह पत्रिका देश की शत्रु है, बोलशेविकों की शत्रु है। जब एक पक्ष जोरों के साथ लगातार किसी मत का प्रचार करता रहता है और उसके विरुद्ध पक्ष को निर्वाक् रहना पड़ता है उस समय धीरे-धीरे वह मत जनगण के मन में संक्रामित होने लगता है चाहे वह मत बिलकुल झूठ भी क्यों न हो। 'सत्य' ने जब गोर्की पर देशद्रोह का अपराध लगाया, तब गोर्की ने 'नवजीवन' की आर्थिक दशा का विवरण प्रकाशित किया और दुखी हृदय से कहा, " 'नवजीवन' के विरुद्ध इस कदर्य आक्रमण से नवजीवन का अपमान नहीं हो रहा है, अपमान तुम्हारा है।"

जिस गोर्की ने केवल अपना सर्वस्व देकर ही देश की सेवा नहीं की, बल्कि समाज-तन्त्री दल के लिए बहुत से बुर्जोआ सम्प्रदाय के व्यक्तियों से भी अजस्र धन संग्रह किया, वही गोर्की आज विदेशियों के गुप्तचर और विदेशियों के पैसा खानेवाले बनाये जाने लगे। 'नवजीवन' के छापनेवाले भी बोलशेविकों के विरुद्ध प्रचार से प्रभावित होकर 'नवजीवन' छापने में असम्मत हुए, इस तरह देश-सेवक को अपना पुरस्कार मिला और 'नवजीवन' भी नीरव हो गया।

राजनीति के क्षेत्र से गोर्की को बाध्य होकर हटना पड़ा। सम्भव है कि राजनीति-क्षेत्र में मिथ्या का अस्त्र-प्रयोग ग्राह्य है, परन्तु गोर्की को ऐसा अस्त्र हाथ से उठाने में भी घृणा मालूम हुई।

— —

# संस्कृति और मानवता

## १

केरेन्स्की गवर्नमेंट के ही समय से देशभर में अराजकता होने के कारण कृषि और वाणिज्य में अत्यन्त गड़बड़ी हो रही थी। किसान सम्प्रदाय ने उच्छृंखल होकर भिन्न-भिन्न स्थानों में मालिक ज़मींदारों पर नाना प्रकार के अत्याचार और उत्पीड़न किये। १९१७ ई० के नवम्बर महीने में प्रोले-टारियाट अर्थात् श्रमिकदल के शासनतंत्र की घोषणा हुई परन्तु उससे विशाल देश के अन्दर विपुल अन्तर्विरोध की निवृत्ति नहीं हुई। अज्ञ और कुसंस्कार से आच्छन्न जनता निर्विचार ध्वंसलीला में प्रवृत्त होने के कारण कृषि-वाणिज्य की घोर दुर्दशा हुई और दूसरी ओर महायुद्ध के कारण देश में आर्थिक अभाव की सीमा हो गई। युद्ध के अवसान के लिए देश के लोग उस समय व्याकुल हो उठे थे। लेनिन को इसी लिए अनेकों की इच्छा के विरुद्ध जर्मनी के साथ सन्धि करनी पड़ी। परन्तु उन्होंने जैसा सोचा था वैसा नहीं हुआ। एक ओर से तो श्वेत रूसी लोग ( White Russians ) बोलशोविकों के विरुद्ध संग्राम करने के लिए उद्यत हुए और देश में खून की नदी बहने लगी; दूसरी ओर से जर्मन-विरोधी शक्तियाँ रूस को खाद्याभाव से शक्तिहीन करने का संकल्प कर बैठीं। इस प्रकार से रूस कराल दुर्भिक्ष की ओर अग्रसर होने लगा।

बोलशोविक आन्दोलन का विरोध करने के कारण प्रोलेटारियाट की निगाह में बुद्धिजीवी सम्प्रदाय विप्लव-विरोधी शत्रु के रूप में परिचित हो आया था। इसलिए अब प्रोलेटारियाट का क्रोध इन्ही लोगों के ऊपर पड़ा। बोलशेविकों ने धनिकों की जायदाद जब्त करने की और उसे जातीय सम्पत्ति में परिणत करने की नीति की घोषणा की और इसके कारण भी नाना प्रकार की विपत्तियाँ होने लगीं। अन्ध-क्रोध से उन्मत्त होकर जनता पूर्व शासक और धनिक सम्प्रदाय के साथ जो कुछ भी सम्बन्ध रखता था उन सब वस्तुओं को

निर्विचार नष्ट करने लगी। अशिक्षित, मूढ़, संस्कृति-वर्जित पशु-तुल्य जनता जाति के बहुत दिनों की सञ्चित बहुमूल्य सांस्कृतिक सम्पत्ति का विनाश करने लगी। घृणा-विक्षुब्ध जनगण उन्हें अत्याचारी शासकों की सम्पत्ति समझकर मूल्यवान् पुस्तकालयों के दुष्प्राप्य ग्रन्थों को और ऐतिहासिक काग़ज़ों को जलाकर उससे सिगरेट जलाने में भी संकुचित न हुआ। नाना प्रकार के शिल्प के निदर्शन, चित्र और भास्कर्य को वे निस्सङ्कोच ध्वंस करने लग गये।

१९१९ ई० की एक घटना है। कुछ बाद की घटना होने पर भी इससे विप्लव के बाद रूसी जनसाधारण की संस्कृति-विध्वंसी मनोवृत्ति का प्रकृष्ट परिचय मिलता है। किसान कान्फरेन्स के उपलक्ष में कई हजार ग्रामवासी पेट्रोग्राड में आकर एकत्र हुए थे। कई सौ ग्रामवासियों को रोमानौभवंशीय राजाओं के शीतकालीन प्रासाद में ठहराया गया। इन लोगों से यह तो कहा ही गया था कि अब देश के मालिक तुम्हीं हो। अब 'मालिक' शब्द का इन लोगों ने विचित्र अर्थ लगा लिया। राजप्रासाद में प्राचीन शिल्पियों के बनाये हुए क़ीमती पात्रों को देखकर उनके मन में ध्वंस करने की शुभकामना जाग्रत् हुई; और दूसरा प्रबन्ध रहने पर भी उन लोगों ने इन्हीं बरतनों में मलमूत्र त्याग करके अत्याचारी सम्राट् के ऊपर बदला लेने का आनन्द प्राप्त किया।

विप्लव के बाद इस प्रकार की कितनी घटनायें होने लगीं। गोर्की के लिए मूर्ख जनता की ऐसी करतूतें अप्रत्याशित नहीं हैं। आपने अपने सुदीर्घ जीवन में बहुत दफ़ा उन लोगों में सुन्दर वस्तु को नष्ट और विकृत करने की प्रवृत्ति को देखा है। सम्भवतः सभी देशों में उन्मत्त जनता क्षिप्त वन्य-पशुओं की तरह आचरण करती है। रूस की सांस्कृतिक सम्पत्तियों पर इस आसन्न विपत्ति को देखकर गोर्की शङ्कित हो उठते हैं। आपको यह मालूम है कि मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति ही उसकी असली सम्पत्ति है। उसका यथार्थ गौरव तो उसके साहित्य, शिल्प और सभ्यता में ही है। इसी लिए राजनीतिक स्वतन्त्रता को बहुत ही आवश्यक समझते हुए भी गोर्की ने उसे सबसे बड़ा आसन नहीं दिया। गोर्की जानते हैं कि किसी भी शासन-तन्त्र से बड़ा मनुष्य है। इस कारण राजनीतिक क्षेत्र से हटकर भी इस

आसन्न विपत्ति में से जातीय सांस्कृतिक सम्पत्तियों की रक्षा करने के लिए गोर्की ने दुस्साध्य सङ्कल्प कर लिया। उन्होंने जातीय शिल्प-सम्पत्ति की रक्षा के लिए केवल कातर विनती ही नहीं की, परन्तु उसके लिए वे भिन्न-भिन्न प्रतिष्ठान भी कायम करने लगे।

इसके अलावा, गोर्की ने यह भी समझ लिया कि यदि देश के जनगणों को शिक्षा न दी जाय, यदि उनके कुसंस्कारों से आच्छन्न मन में संस्कृति और सभ्यता का आलोक न पहुँचाया जाय तो कोई भी शासन-तन्त्र क्यों न देश में कायम हो, उसका सारा शुभ उद्देश्य व्यर्थ हो जायगा। इसलिए प्रौढ़ और निरक्षर जनगणों को शिक्षित करने की आवश्यकता को वह कभी भी नहीं भूल सके।

## २

१९१८ ई० के ३० अगस्त को अपने विरोधी दल की गोली से लेनिन ज़ख़्मी हुए। यह समाचार सुनकर गोर्की चुप न रह सके; तुरन्त लेनिन के साथ मिलने गये। प्राय: पाँच साल के विच्छेद के पश्चात् दोनों में भेंट हुई।

गोर्की को देखकर लेनिन की दृष्टि में प्रीति के साथ ही साथ विषाद भी प्रकट होता है। सम्भवत: लेनिन को यह याद आता है कि गोर्की जैसे प्यारे मित्र आज उनके विरोधी हैं, विपथगामी हैं। अतीत दिनों की कितनी स्मृतियाँ, कितनी व्यर्थ आशा और कल्पनाएँ मन में जाग्रत् हो उठती हैं। एक ओर प्रेम का प्यासा, बन्धुत्वकामी लेनिन का कोमल हृदय और दूसरी ओर राजनीतिक संग्राम में दृढ़-मत लेनिन का वज्र-सा कठोर मन, इन दोनों में संग्राम होता है। कई मिनट चुपचाप बीतते हैं; इसके बाद लेनिन के स्वर में उत्तेजना जाग्रत् होती है। लेनिन कहते हैं, "जो हम लोगों के साथी नहीं हैं, वे हमारे शत्रु हैं। ऐतिहासिक सम्बन्धरहित मनुष्य एक कल्पना मात्र है। अगर ऐसा मान भी लिया जाय कि किसी जमाने में ऐसे मनुष्य भी थे, तब भी अब तो वे नहीं हैं,—ऐसे मनुष्य अब हो नहीं सकते। उन्हें

कोई नहीं चाहता। प्रत्येक मनुष्य, एक दम आखिरी आदमी तक सब कोई वास्तविकता के भँवर में पड़ा हुआ है; पहले से आज वह बहुत अधिक वास्तविकता में फँसा हुआ है।

"आपका कहना है कि मैंने जीवन को बहुत ही सरल रूप में ग्रहण किया है। इस सरलता से संस्कृति नष्ट होने का भय है, यही न? हुँ:!" लेनिन के कण्ठस्वर में व्यङ्ग का आभास मालूम होता है। उनकी दृष्टि और भी तीव्र तीक्ष्ण हो उठती है। इसके पश्चात् निम्न स्वर में आप फिर कहने लगते हैं, "अच्छा, क्या आप ऐसा सोचते हैं कि लाखों राइफेलधारी 'मुजिकों' (Muzhik) का अस्तित्व संस्कृति के लिए ख़तरनाक नहीं है? क्या आपका यह ख़याल है कि गण-परिषद् (Constituent Assembly) उन लोगों की अराजकता का दमन कर सकता? आपने तो ग्रामवासियों की अराजकता के बारे में इतने ज़ोर के साथ (और ठीक ही) घोषणा की है, पर क्या आपके लिए यह उचित नहीं था कि हमारे काम को भी और अच्छी तरह समझने की कोशिश करें? रूसी जनता को एक सरल पथ बतलाना होगा, ऐसा कुछ बतलाना होगा जो कि उसके मस्तिष्क में प्रविष्ट हो सके। सोवियेट और कम्यूनिज्म वैसी वस्तु हैं क्योंकि ये सहज बोध्य हैं।

"श्रमिक और बुद्धिजीवी सम्प्रदायों का मिलन? यह तो ख़राब नहीं है, बिलकुल ख़राब नहीं है। आप कहिए न बुद्धिजीवियों को हमारे पास आने के लिए! आपकी राय में वे न्याय और धर्म की आन्तरिक सेवा करते हैं न? तब वे दूर हटे हुए क्यों हैं? आवें न। जनगण को अपने पैरों पर खड़े होने में सहायता देने के लिए, जगत् और जीवन के बारे में बिलकुल सच्ची बातें बतलाने के लिए तो हमीं लोग खड़े हुए हैं। हमीं लोग तो सारी जाति को मानवता का सीधा रास्ता दिखला रहे हैं, हमीं तो उस रास्ते को बतला रहे हैं जिस पर से चलने से दासता, दरिद्रता और दीनता के कष्ट से मुक्ति मिल सकती है।"

विद्वेष-रहित स्वर में हँसते हुए लेनिन कहते हैं, "इसी लिए तो बुद्धि-जीवी ने मेरी गर्दन पर यह गोली मारी है!"

वार्तालाप का तापक्रम स्वाभाविक हो आता है, लेनिन दु:खित और अप्रसन्न स्वर में कहने लगते हैं, "बुद्धिजीवियों का प्रयोजन हम लोगों को है, क्या मैं इस बात को इनकार करता हूँ? लेकिन क्या आप यह नहीं देख रहे हैं कि वे किस प्रकार शत्रु की तरह काम कर रहे हैं? इस मुहूर्त के प्रयोजनों को वे कुछ भी समझ रहे हैं? वे यह नहीं समझ रहे हैं कि हमारे बिना वे असहाय हैं, जनता के साथ वे हमारे बिना मिल ही नहीं सकते। अगर हम लोगों ने प्रयोजन से अतिरिक्त कुछ नष्ट किया हो तो उन्हीं लोगों का दोष है।"

## ३

गत कई वर्षों से गोर्की ने लेनिन का विरोध किया है; लेनिन ने भी गोर्की के मतवाद पर निर्मम और कठोर आक्रमण किया है। 'नवजीवन' ने १६ ८ ई० में जब लेनिन की नीति पर भयानक आक्रमण करना शुरू किया उस समय लेनिन ने 'नवजीवन' का प्रचार बन्द करना ही निश्चय किया, परन्तु उस समय भी विद्वेषाच्छन्न होकर लेनिन ने गोर्की के साथ बोलशेविकों के घनिष्ठ सम्बन्ध को अस्वीकार नहीं किया। सम्भवत: लेनिन दिल में ऐसा अनुभव करते थे कि गोर्की कभी भी उन्हें छोड़कर नहीं रहेंगे। इसी लिए 'नवजीवन' को बन्द करते समय उन्होंने कहा, "अवश्य 'नवजीवन' को हमें बन्द करना ही पड़ेगा। वर्तमान स्थिति में विप्लव की रक्षा के लिए जब हमें समग्र देश को तैयार करना है ऐसे समय पर बुद्धिजीवियों की निराशा का प्रचार अत्यन्त अनिष्टकारक होगा। तथापि गोर्की हममें से ही एक हैं। श्रमिक सम्प्रदाय और श्रमिक आन्दोलन के साथ आपका सम्बन्ध बहुत ही गहरा है। वे स्वयं भी 'निम्न' श्रेणी से आ रहे हैं। वे निश्चय हम लोगों के पास लौट आवेंगे। गोर्की के जीवन में ऐसी घटना पहले भी हुई है, जैसा कि १६०८ ई० में वर्जनकारियों ( Otzovist ) के समय हुई थी। राजनीतिक मामलों में इस प्रकार का विसदृश आचरण उन्होंने पहले भी किया है।"

तीव्र सङ्घर्ष के मुहूर्त में भी लेनिन यह नहीं भूल सकते हैं कि गोर्की देश की कितनी बड़ी सम्पत्ति हैं इसी लिए राजनीतिक झगड़ों को छोड़कर गोर्की ने जब संस्कृति सम्बन्धी कामों में आत्मनियोग किया तब लेनिन को बड़ा ही आनन्द हुआ। गोर्की को बड़ी-बड़ी सभाओं में उपस्थित करने के लिए लेनिन ने आग्रह के साथ बोलशेविकों से अनुरोध किया। उन्होंने यह भी प्रार्थना की कि गोर्की के व्याख्यानों को 'रेकार्ड' के द्वारा सर्वत्र सुनाना चाहिए। कभी-कभी गोर्की पेट्रोग्राड से मास्को आते थे : गोर्की के आगमन से लेनिन उल्लसित हो उठते थे। गोर्की के प्रति लेनिन का इतना गहरा प्रेम था इसी लिए गोर्की संस्कृति-मूलक अनुष्ठान और प्रतिष्ठानों में इतनी सफलता प्राप्त कर सके थे।

## ४

केवल देश के पुरानी सांस्कृतिक सम्पत्तियों की रक्षा करने के काम में ही गोर्की ने आत्मनियोग नहीं किया; इससे भी गुरुतर दायित्व उनके ऊपर आ पड़ा।

बुद्धिजीवी सम्प्रदाय के बहुत से लोग बोलशेविकों के विरोधी थे और नाना प्रकार से शत्रुता भी की थी। इसी लिए बोलशेविक लोग निर्विचार समग्र बुद्धिजीवी सम्प्रदाय को अपना दुश्मन समझने लगे थे। अथच रूस के बड़े-बड़े चिन्तावीर, वैज्ञानिक, साहित्यिक और शिल्पी इसी श्रेणी के थे। रूस के विप्लव आन्दोलन का जन्म भी इसी श्रेणी के मनुष्यों से हुआ था। परन्तु घटना ऐसी हुई कि वही लोग बोलशेविकों के विरोधी बन बैठे और इसलिए बोलशेविकों की असीम घृणा इस श्रेणी पर आ पड़ी। लाखों बुद्धिजीवी रूस छोड़कर यूरोप के भिन्न-भिन्न देशों में भागकर जान बचाने लगे और जो लोग भाग न सके उनकी दुर्दशा की तो हद हो गई।

गोर्की यह जानते थे कि बुद्धिजीवियों को छोड़कर, केवल रूस ही नहीं, बल्कि कोई भी देश प्रगति के रास्ते पर चल नहीं सकता। परन्तु जब किसी दल के प्रति मोह प्रचण्ड होता है, उस समय हम लोग बिना किसी सोच-

विचार के विरोधी दल को नष्ट करने के लिए उद्यत होते हैं। गोर्की को अकेला ही इस भयङ्कर दल-विरोध का सामना करना पड़ा। वह देश के जीवित वैज्ञानिकों, शिल्पियों, साहित्यिकों और नाट्यकारों की रक्षा करने के आग्रह से आगे बढ़ आये। उन्होंने कहा कि देश के इन गुणियों की भी ( जो कि बोलशेविक नहीं हैं ) रक्षा करनी ही होगी।

यूरोप के अन्य सरकारों की 'बायकाट' नीति के कारण उस समय रूस में भयानक खाद्याभाव हो रहा था; इधर बोलशेविकों ने भी यह घोषणा कर दी थी कि सभी को शारीरिक परिश्रम के द्वारा ही भोजन प्राप्त करना पड़ेगा। जो लोग बुद्धिजीवी थे, शारीरिक परिश्रम करने में जो अभ्यस्त नहीं थे, वे भला कैसे अब भोजन प्राप्त कर सकते ? पहले ही से तो बुद्धिजीवी सम्प्रदाय के ऊपर बोलशेविक असन्तुष्ट थे; इसलिए बोलशेविकों ने अब इन बुद्धि-जीवियों की रक्षा करना अपना कर्तव्य ही न समझा, उन लोगों ने तो केवल अपनी रक्षा ही अपना कर्तव्य समझ लिया। इस प्रकार के विरोध के सामने गोर्की विपन्न बुद्धिजीवियों के लिए कितनी सहायता कर सकते थे !

## ५

इस समय कितने लोग अनाहार और अल्पाहार से मरने लगे इसका ठिकाना नहीं। जो बड़े-बड़े वैज्ञानिक, शिल्पी और साहित्यिक थे उनकी जीविका बन्द हो गई। जो सारा जीवन मानसिक चर्चा के द्वारा जीविका अर्जन करते आये, अब उन्हें शारीरिक परिश्रम करने के लिए बाध्य किया गया। इससे केवल अवर्णनीय शारीरिक कष्ट ही नहीं हुआ बल्कि मानसिक निर्यातन उससे भी अधिक हुआ। बुर्जोआ और बोलशेविक विरोधी होने के कारण बोलशेविकों की घृणा इन लोगों पर पड़ी और अन्नाभाव के कारण ये लोग मृत्यु की ओर अग्रसर होने लगे। केवल इतना ही नहीं, इनकी मानस वृत्ति की चर्चा भी बन्द हो गई। लेखकों को लिखने के लिए काग़ज़-कलम और स्याही नहीं मिली, शिल्पी लोगों को शिल्प-सृष्टि के लिए उपकरण नहीं मिला। १९१९ ई० में केवल एकाडेमी के सभ्यों में से ही पचास व्यक्ति

परलोक सिधारे। बोलशेविक निर्ममता से एकाडेमी के बाहर के कितने शिक्षित, बुद्धिजीवियों के जीवन का अन्त हो गया उसका तो कोई हिसाब ही नहीं था।

तथापि इस गहन दुःख के समय भी ये शिल्पी और साहित्यिक सत्य और सुन्दर की साधना को छोड़ नहीं सके। पुड़िया बनाने के काग़ज़ के टूटे-फूटे टुकड़ों को लेकर, लिखे हुए काग़ज़ की ख़ाली जगहों में वे अपनी रचना लिखते गये। वाणी देवी के प्रति इस निष्ठा का मूल्य अशिक्षित जन क्या समझ सकते? उन लोगों ने तो बुद्धिजीवियों को अपना शत्रु समझ लिया था और उन लोगों का नाना प्रकार से निर्यातन करना ही कर्तव्य कर लिया था। परन्तु जाति के मस्तिष्क-स्वरूप इस मननशील सम्प्रदाय के लोप होने से जाति की कितनी भारी क्षति होगी यह वे नहीं समझ सकते थे।

इस मार्मिक कष्ट की बात सोचकर गोर्की पागल-से हो जाते हैं। बुद्धि-जीवियों के ऊपर क्रुद्ध प्रोलेटारियाट को वे कैसे समझावें कि मनीषा का विनाश जाति के लिए 'महती विनष्टि' है? क्या शासन-तन्त्र की कठोर समालोचना के द्वारा वे इन असहाय संस्कृतिसेवकों की रक्षा कर सकेंगे? असम्भव!

## ६

बोलशेविकों ने जब निर्विचार होकर सभी को दैहिक परिश्रम करने के लिए बाध्य किया, उनके अनादर से और अवहेला से जब मस्तिष्कजीवियों का अस्तित्व विपन्न हो उठा, तब गोर्की ने 'विज्ञान क्या है?' लिखकर देश—वासियों को सचेत करने की चेष्टा की। उसमें उन्होंने लिखा—

कोई जाति जिस परिमाण में मानस शक्ति का पोषण और सञ्चय करती है, उतनी मानस शक्ति और उतना मस्तिष्क ही जाति की असली सम्पत्ति है।... जनगणों में वैज्ञानिक कर्मियों की संख्या अधिक होना अत्यन्त आवश्यक है और जिससे इन मनुष्यों का जीवन निरर्थक नष्ट न हो उस ओर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है। यदि एक सुदक्ष धातु-शिल्पी को पनाला साफ़ करने

के लिए बाध्य कया जाय, स्वर्णकार से लंगर बनवाया जाय, रसायनविद् से खाई खोदवाई जाय तो उससे हम केवल अपनी मूर्खता का ही प्रमाण नहीं देंगे, बल्कि वह हमारा एक अपराध भी होगा। यह समझनाचाहिए कि पण्डितों के परिश्रम की जो सम्पत्ति है वह समग्र मानव-जाति की सम्पत्ति है और विज्ञान का क्षेत्र, श्रेष्ठतम निःस्वार्थपरता का क्षेत्र है। वैज्ञानिक कर्मियों को जाति की सबसे अधिक उत्पादन करनेवाली और सब से क़ीमती शक्ति समझनी चाहिए और इसलिए ऐसी परिस्थिति की सृष्टि करनी चाहिए जिससे सब तरह से इस शक्ति का विकास और उन्नति स्वाभाविक रूप से हो सके। एक पण्डित की असामयिक अकर्मण्यता अथवा मृत्यु जाति के लिए भयानक क्षति है। श्रमिक शासनतन्त्र को विशेष रूप से इस बात को समझना चाहिए।

गत कई महीनों के अन्दर जिन विद्वान् पण्डितों की मृत्यु हुई है उनकी सूची दी जा रही है। आप लोगों को मालूम होगा कि हमारे देश में वैज्ञानिक शक्ति की कितनी भारी क्षति हुई है। अगर पण्डितों का विनाश इस प्रकार तेज़ी से होता चलेगा तो हमारा देश निःशेष रूप से मस्तिष्कहीन हो जायगा। इस दुस्समय में वैज्ञानिकों का जीवन शारीरिक दृष्टि से भयानक है और नैतिक दृष्टि से भी कष्टदायक है क्योंकि जो व्यक्ति यह समझता है कि मैं एक पहाड़ पर चढ़ सकता हूँ उसे एक मुट्ठी बालू तक उठाने न देना यातनादायक है। जो वैज्ञानिक अपने आविष्कारों से जाति को समृद्ध कर सकता है, जनगण को आनन्द दे सकता है, उसके आविष्कार के रास्ते में यदि काम करने के लिए आलोक का अभाव, शीत और क्षुधा बाधा देने के लिए खड़े हो जायँ तो यह अपराध है। इससे सर्जनशील वैज्ञानिक प्रचेष्टाओं की निस्संशय उपयोगिता और गहरे तात्पर्य को समझने की शक्ति का अभाव ही सूचित होता है।"

७

केवल अख़बारों में आवेदन, निवेदन और निबन्ध लिखकर ही गोर्की निश्चिन्त नहीं रह सके। बुद्धिजीवियों की रक्षा के लिए वे बोलशेविक शासकों के शरणागत हुए। पण्डित श्रेणी को उनके मानसिक श्रम के बदले

उनके योग्य विशेष भोजन पाने की अनुमति गोर्की ही की चेष्टा से मिली। इन्हीं की ऐकान्तिक चेष्टा से इन लोगों के लिए शयनागार, वक्तृतागृह, स्वास्थ्य-निवास की व्यवस्था और विद्वत्-निवास की स्थापना हुई। इन लोगों को कपड़े, जूते इत्यादि देने के लिए कई दुकानें भी खोली गईं। लेखक और शिल्पियों के लिए भी भवन की स्थापना हुई, परन्तु सरकार इन लोगों के विषय में बहुत अधिक सावधान हुई क्योंकि लेखकों के ऊपर ही सरकार का असन्तोष सब से अधिक था।

लेखक-सम्प्रदाय की सहायता के लिए गोर्की ने और भीकई उपाय निकाले। गोर्की ही की चेष्टा से विश्वसाहित्य की चुनी हुई पुस्तकों के रूसी अनुवाद प्रकाशित करने के लिए बोलशेविक सरकार ने एक पुस्तक-विभाग खोल दिया और गोर्की इस विभाग के सञ्चालक बनाये गये। गोर्की की उदारता से कितने लेखक इस विभाग में काम कर अनशन से बचे। नाना श्रेणी की नर-नारियों की सहायता के लिए गोर्की को कितनी प्रकार की चालें चलनी पड़ीं। बोलशेविक लोग गोर्की की बातों की अवहेलना नहीं करेंगे यह जानते हुए अनशन से क्लिष्ट कितनी नर-नारी गोर्की के पास भोजन की आशा से आती थीं। गोर्की किसी के बहिन, किसी को अपनी सन्तान और किसी को अपनी स्त्री बताकर परिचय-पत्र लिख देते थे जिसमे बोलशेविक उन्हें खाने को दें।

परन्तु एक व्यक्ति की चेष्टा से कितना ही हो सकता है! गोर्की के प्राणपण से चेष्टा करने पर भी बुद्धिजीवियों को हालत दिन-दिन अत्यन्त शोचनीय होने लगी। कुछ लोगों को प्राण रक्षा तो हुई। परन्तु उनसे कहीं अधिक मनुष्य क्षुधार्त नेत्रों से दिन-रात गोर्की को घेरे रहे। चारों ओर की दुर्दशा से आहत गोर्की अपनी अक्षमता को देखकर विक्षिप्त जैसे हो उठते थे और उस दुःख की कठोरता कभी-कभी उनकी बातचीत में उबलती हुई निकल आती थी। और लोग उनके इन कड़े शब्दों को ही पकड़ते थे और उनके नाम पर नाना प्रकार के अपवाद भी लगाते थे। किसी-किसी ने यह भी कहना शुरू कर दिया कि इस कठिन खाद्याभाव के समय में भी गोर्की भूरिभोजन कर दिन बिता रहे हैं। प्रत्येक जनसेवक के भाग्य में इस प्रकार की निन्दा अपरिहार्य है।

८

जिन बुद्धिजीवियों के दुःख दूर करने के लिए बोलशेविक लोग गोर्की के ऊपर असन्तुष्ट हो रहे थे, वही लोग गोर्की की विशेष निन्दा करने लगे। क्योंकि जो गोर्की कुछ दिन पहले भी बोलशेविकों पर भयानक आक्रमण किया करते थे. आज वही गोर्की बोलशेविकों का साथ दे रहे हैं, यह उन लोगों को बरदाश्त न हुआ। वे गोर्की को विश्वासघातक और शक्तिमान् के पैर चाटनेवाला तक कहने में संकुचित न हुए। नवम्बर विप्लव के बाद कवि ब्रियुसौव (Bryusov) जब शिक्षा-क्षेत्र में बोलशेविकों के साथ सहयोग करने लगे तब ये लोग कहने लगे कि ब्रियुसौव ने स्वार्थवश होकर बोलशेविकों के हाथ अपने को बेच दिया है। इम्पीरियल सेनेट का ७५ वर्ष का वृद्ध कोनी (A.F.Koni) जब बोलशेविक सेना (Red Army) को शिक्षा देने को सम्मत हुआ तब उस पर भी इन लोगों ने यही अपवाद लगाया। अलेकज़ण्डर ब्लॉक, आन्द्रेबेली, आलेक्सी टालस्टाय इत्यादि अनेकों के भाग्य में इस प्रकार की निन्दा मिली। गोर्की की निन्दा होगी इसमें फिर विचित्रता क्या?

बोलशेविकों के विरोध से निवृत्त होकर आज गोर्की क्यों उनके साथ आंशिक सहयोग कर रहे हैं, उसका कारण वे लोग समझ नहीं सकते जिन्होंने हमदर्द गोर्की के हृदय का परिचय नहीं पाया है। वे तो केवल उनकी बाहरी असङ्गतियों को ही बड़ा करके देखेंगे! गोर्की ने दिल व जान से रूस को प्यार किया है, इसी लिए उनका यह प्रेम सब दलों के परे है। इसी लिए जब उन्होंने यह देखा कि जिनके मस्तिष्क और मनीषा से रूस इतना बड़ा हुआ है और और भी बड़ा होगा उन्हीं लोगों का अस्तित्व तक विपन्न हो रहा है उस समय वे तुच्छ दलबन्दी को भूलकर उनकी रक्षा करने को अग्रसर हुए। यह देखकर बहुत-से लोगों ने गोर्की को अवसरवादी कहकर निन्दा की है और कदर्य गालियाँ भी दी है, परन्तु मानवता का चिरन्तन मित्र महाप्राण गोर्की सब बाधा-विपत्तियों के अन्दर अपने हृदय की व्याकुल कामना के

निर्देश का ही अनुसरण कर रहे हैं। कितने बन्धु-विच्छेद, प्रियजनों के कितने अपमान और लाञ्छन सहकर गोर्की अपने हृदय के निर्देश का पालन करते जा रहे हैं।

गोर्की जिस समय बोलशेविकों के साथ सहयोग करने के लिए अग्रसर हुए थे उस समय उन्हें बोलशेविकों की विरोधी बहुत-सी शक्तियों के साथ संग्राम करना पड़ा था; और बोलशेविकों का भविष्य भी उस समय तक अत्यन्त अनिश्चित था। यदि वे अवसरवादी (Opportunist) होते तो कभी उस समय उन लोगों के साथ सहयोग करने के लिए कदम न बढ़ाते। यह वह समय था जब लेनिन काप्लान की गोली से आहत हुए थे। समाज-तन्त्री विप्लवी लोग लेनिन और उनके दल के ऊपर क्षिप्त हो गये थे और उधर से यूरोप के शत्रुवर्ग रूस को नाना प्रकार से विपन्न करने का सङ्कल्प किये हुए थे। देश के अन्दर अराजकता, अनैक्य, अनाहार और अभाव चरमसीमा पर था, विशृंखलता का चूड़ान्त था; प्रतिक्रियापन्थी लोग (Reactionaries) बाहरी शत्रु की सहायता से फिर पुरानी शासन-व्यवस्था को लौटा लाने का मौक़ा ढूँढ़ रहे थे। विपन्न बोलशेविक निरुपाय होकर अपनी राजधानी मास्को शहर में हटा ले गये थे। स्वार्थवश होकर बोलशेविकों का साथ देने का समय यह बिलकुल नहीं था।

९

परन्तु गोर्की यह जानते थे कि बोलशेविक शासन कितना भी ख़राब क्यों न हो, पुरानी शासनपद्धति की पुनः प्रतिष्ठा इसकी तुलना में और भी भयानक होगी। इसके अलावा, बोलशेविक शासन के परिवर्तन होने पर देश में फिर ख़ून की नदी बहेगी। इसी लिए उन्होंने यह सोचा कि यदि देश की रक्षा करनी है तो बोलशेविकों को ही अब मौक़ा देना होगा। चाहे और जो कुछ हो, यह तो मानना ही पड़ेगा कि बोलशेविक लोग समाजतान्त्रिक आदर्श की प्रतिष्ठा के लिए लड़ रहे हैं। इसलिए नाना प्रकार के अप्रिय अनुष्ठान होने पर भी बोलशेविकों ने देश के प्रोलेटारियाट के कल्याण के लिए एक साल के अन्दर जो कुछ किया है उसे गोर्की बिलकुल तुच्छ नहीं कह सकते। विशेषकर

जब गोर्की देखते हैं कि शत्रुओं से परिवेष्टित बोलशेविकों को कितनी बाधाओं का सामना करते हुए आगे बढ़ना पड़ रहा है तब गोर्की उनके प्रति सहानुभूति प्रकट किये बिना नहीं रह सकते। इसीलिए वे बोलशेविकों से मिलकर उनके साथ अच्छे कामों में हाथ ही नहीं बटाते, बल्कि सारे बुद्धिजीवियों को भी पुकारकर कहते हैं "हमारे साथ चलो" (Follow us)

"थोड़े दिन पहले भी मैं सोवियेट गवर्नमेंट का शत्रु था, अब भी उसकी नीति के साथ मैं पूरा-पूरा सहमत नहीं हूँ। तथापि मैं यह कह सकता हूँ कि रूसी श्रमिक इस एक साल के अन्दर जो कुछ कर सके हैं भविष्य के ऐतिहासिक जब उसका निर्णय करेंगे तब वे वर्तमान रूस की इस सांस्कृतिक प्रचेष्टा की विशालता को देखकर अवश्य ही विस्मित होंगे।"

प्रेसीडेंट विलसन भी जो गण-तन्त्र और भिन्न-भिन्न जातियों की स्वतन्त्रता के समर्थक थे, विप्लवी रूस में पुराना शासनतन्त्र पुनः स्थापित करने के लिए शक्तिशाली सेनादल का सङ्गठन कर रहे थे। इस विपत्ति का समाचार देते हुए गोर्की ने रूस की रक्षा के लिए बुद्धिजीवियों को पुकारा और कहा "प्रत्येक बुद्धिजीवी श्रमिक का यह अवश्य कर्तव्य है कि वह उन लोगों के विरुद्ध प्रतिवाद करे जो प्राचीनतन्त्र को पुनः प्रवर्तित करने का आयोजन कर रहे हैं जो रूसियों के खून बहाकर रूस-विप्लव का ध्वंस करने की चेष्टा कर रहे हैं जो बाद को शोषण करने के उद्देश्य से रूस को पददलित करना चाहते हैं जैसा वे अब तुर्की और चीन का शोषण कर रहे हैं और जर्मनी का भी शोषण करने का आयोजन कर रहे हैं।"

## १०

१६२० ई० है। रूस में खाद्य द्रव्य का अभाव प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। श्रमिकदल अपना अभाव ही मिटा नहीं सकते, वे क्यों बुद्धिजीवी श्रेणी की सहायता करेंगे! बुद्धिजीवियों को भी अगर जीना है तो शारीरिक परिश्रम कर खाद्य संग्रह करना पड़ेगा यही बोलशेविक नीति है। इभान पाभ्लौभ जैसे बड़े शरीर-तत्त्वविद् को भी रोज़ छः घण्टे दरवान का काम करना पड़ रहा है इस प्रकार निर्बुद्धिता के कारण इस साल भी रूस को बहुत से बुद्धिजीवियों को

खोना पड़ा है। गोर्की की समझ में नहीं आता कि वे किस तरह इन संस्कृति-साधकों की रक्षा करेंगे। गोर्की ने सब देशों के बुद्धिजीवी सम्प्रदाय के पास एक करुण आवेदन भेजा है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक बायकाट के होते हुए भी, स्वयं अनाहार से क्लिष्ट जर्मनी से और शत्रुस्थानीय अमेरिका से भी सहायता आती है। गोर्की इस विपत्ति में अपने को बिलकुल असहाय पाते हैं।

शत्रुओं ने यह घोषणा कर दी है कि गोर्की बोलशेविकों के साथ मित्रता स्थापित कर परम आनन्द में दिन बिता रहे हैं, उनके खाने-पहनने का कोई दुःख नहीं है। परन्तु इतने सुख में (!!) रहते हुए भी गोर्की का स्वास्थ्य टूट जाता है। गोर्की के लिए व्याकुल भक्तों की कमी नहीं थी, और वे उनके लिए अच्छा भोजन भी भेजते थे यह भी सच है। परन्तु रात-दिन विपन्न, आर्त और क्षुधातुर नर-नारी गोर्की को घेरे रहते थे; उनकी क्षुधाक्लिष्ट, लुब्ध और तृषित दृष्टि के सामने वह उस भोजन को कैसे खा सकते? क्षुधा की भयङ्कर ताड़ना से निपीड़ित होकर बड़े-बड़े मनस्वी भी असहाय पशुओं की तरह बन गये हैं देखकर गोर्की की छाती फट जाती थी।

शरत्चन्द्र की 'श्रीकान्त' पुस्तक में इन्द्रनाथ एक जगह पूछता है, "मुर्दे की फिर जाति क्या है?" गोर्की ने भी जान लिया था कि आर्त की भी कोई जाति नहीं है। जब कभी कोई विपन्न होकर गोर्की के पास आता है, वे यह नहीं पूछते हैं कि तुम किस दल में हो? इन लोगों की रक्षा का आवेदन लेकर वे स्थानीय और केन्द्रीय कर्ताओं के पास पहुँचते हैं। गोर्की की प्रार्थना मञ्जूर करनी पड़ती है, परन्तु वे गोर्की के ऊपर असन्तुष्ट होते हैं; क्योंकि उनलोगों की राय में जाति या दल का विचार न करके सहायता करना अन्याय है; वे कहते हैं विप्लवी का हृदय इतना कोमल नहीं होना चाहिए; बोलशेविक-विरोधी लोगों पर फिर दया किस बात की?

कितनी बार और कितने प्रकार की प्रार्थनाएँ लेकर गोर्की लेनिन के पास भी गये हैं। कभी-कभी लेनिन के साथ विरोध हुआ है, प्रार्थना अनुचित समझ कर लेनिन ने उसे मञ्जूर करना न चाहा। लेनिन ने यह समझाने की चेष्टा की है कि निर्विचार होकर उपकार करने से श्रमिक और कॉमरेड लोग

आप पर असन्तुष्ट हो जायेंगे। परन्तु गोर्की ने कब किसी के सन्तोष और असन्तोष की परवाह की है?

एक दिन इसी प्रकार दरिद्र पण्डितों की सहायता का आवेदन लेकर गोर्की लेनिन के पास उपस्थित हुए। सहायता करने में लेनिन की अनिच्छा देखकर गोर्की अपने को सँभाल न सके; पागल की तरह क्षिप्त होकर मेज़ पर हाथ पटकते और चिल्लाते हुए गोर्की बेहोश हो गये। यही तो गोर्की हैं। इन्हीं को शत्रुपक्ष ने यह गाली दी थी कि गोर्की सुविधावादी हैं, देशद्रोही हैं और हृदयहीन हैं! परन्तु गोर्की ने उसकी ज़रा भी परवाह न की। करुणा भरे हृदय की व्याकुलता से अधीर होकर पग-पग पर वे दलबन्दी को तुच्छ कर, नाना मतों की सङ्कीर्णता को अतिक्रम कर चले हैं। लोगों ने यह कहा कि गोर्की की मति स्थिर नहीं है; गोर्की ने उसे निस्संकोच स्वीकार कर लिया है। गोर्की ने यह ज्ञान प्राप्त किया है कि मतों के, दलों के, और जातियों के जो घेरे हैं, इन सब से परे मनुष्य है; यदि वे इस मनुष्य की सेवा कर सकेंगे, इस मनुष्य का प्यार कर सकेंगे तो उन्हें और कोई भी दुःख न होगा चाहे कोई भी कुछ कहे। महामानवता की सेवा में उनकी सब असङ्गतियाँ सार्थक होंगी।

## ११

कठोर दैहिक और मानसिक कष्ट से गोर्की का स्वास्थ्य ख़राब होता गया है। फेफड़े की क्षय की बीमारी फिर ज़ोर पकड़ने लगी है। कदर्य और स्वल्प भोजन के कारण गोर्की को स्कर्वी (Scurvy) की बीमारी हुई है, उनके दाँत प्रायः सभी नष्ट हो गये हैं। खड़े होने में भी अब तकलीफ़ मालूम होती है। किसी प्रकार से नीचे भोजन-कक्ष में प्रवेश कर वह देखते हैं कि जाड़ा और क्षुधा से पीड़ित दो-तीन दर्जन आदमी उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। यही प्रतिदिन की घटना है। फिर भी उन्हें निकलना पड़ता ही है, सब की खबर लेनी पड़ती है। कहीं जाते हैं तो सुनते हैं कि कुछ प्राचीन शिल्प के निदर्शन गायब हो गये हैं, कहीं से यह ख़बर आती है कि लोगों ने सब तोड़-ताड़ दिया है। सुनकर गोर्की का चित्त दुःख से भर जाता है, स्तब्ध

यहाँ से आप चले जाइए, आप नीरोग हो जाइए। आपसे मेरी विनती है, जिद न करिए।—आपका लेनिन।"

परन्तु इतने अनुरोध और विनती के बाद भी रूस के जनगणों के इस घोर दुर्दिन में गोर्की का जाना नहीं होता। अन्त में जब गोर्की के जीवन की आशा नहीं रही तो एक प्रकार जबरदस्ती से गोर्की की जर्मन सेनाटोरियम में भेजा गया। एक प्रकार निश्चित मृत्यु की प्रतीक्षा लेकर गोर्की अपने प्राण से भी प्यारे स्वदेश को छोड़ चले। १६२१ ई० के अन्तिम भाग में गोर्की जब बर्लिन में आ पहुँचे उस समय उनका शरीर एक कंकाल मात्र हो गया था। एक्स-रे फोटो उतारने पर देखा गया कि उनका एक फेफड़ा तो नष्ट हो ही गया, दूसरे का भी एक तिहाई अवशेष है। हृदय की हालत भी बहुत ख़राब है। परन्तु फेफड़े की इस दशा में हृदय का इलाज भी असम्भव हो गया।

इसलिए नाउहाइम (Nauheim) नामक स्थान पर न जाकर हवा बदलने के लिए आप दो-तीन महीने के लिए कृष्ण-जङ्गल (Black forest) नामक स्थान पर गये। परन्तु यह जाना भी बहुत ही अनिच्छावश था। पत्र में गोर्की ने लिखा—"इन सब व्यवस्थाओं से मैं प्रसन्न हूँ ऐसा मैं नहीं कह सकता। क्योंकि मैं काम करने के लिए व्याकुल हूँ। अत्यन्त व्याकुल हूँ!" मृत्यु के दरवाज़े पर खड़े होकर भी मानव-प्रेमिक, आर्त बन्धु गोर्की काम करने के लिए व्याकुल हैं!

---

# अस्ताचल की ओर

फ़ीबर्ग के पास 'कृष्ण-जङ्गल' में एक छोटी-सी उद्यानवाटिका है। यहीं पर गोर्की प्रकृति के संजीवन स्पर्श से नष्ट-स्वास्थ्य को पाने के लिए आये हैं। क्षय का रोग तो आपके दीर्घजीवन का साथी है। कितनी बार इस बीमारी ने उन पर भयानक आक्रमण किया है। परन्तु आपकी जीवनी-शक्ति अद्भुत है। उसी के कारण मौत की घाटी से आप बार-बार लौट आये हैं। गोर्की के शत्रु लोग इसलिए उनकी कठिन व्याधि को भी केवल बहाना बताने से भी बाज़ न आये। निर्वासित (Emigre) बोलशेविक-विरोधी लोग अब की बार भी कहने लगते हैं कि यह व्याधि बहाना मात्र है; रूस में दुःख बरदाश्त न होने के कारण इस बहाने वे भाग आये हैं। महान् व्यक्ति को हीन प्रतिपन्न करने के लिए मनुष्यों का ईर्ष्यातुर मन कितनी कोशिश करता है!

कुछ दिनों बाद गोर्की थोड़ा अच्छा होते हैं; डाक्टर के लगातार देखभाल करने की अब आवश्यकता नहीं है।

इटली गोर्की को बड़ा ही प्यारा है। यूरोप के ठण्डे मुल्कों के लोग इटली में आकर मानों एक नवीन जगत् का दर्शन करते हैं। इटली की समुद्र-बेला, उसका स्वच्छ नीलाकाश, उज्ज्वल धूप, घनश्याम वनाञ्चल उनकी आँखों में एक चिरवसन्त का स्वप्न जाग्रत् कर देते हैं। वसन्त के स्पर्श से वृद्ध के ख़ून में भी जैसी उष्ण मादकता जाग उठती है, उसी प्रकार इटली की प्रकृति भी ठण्डे मुल्क के ख़ून में यौवन के मदिर आवेग को जगा देती है। प्रकृति-प्रेमिक कविप्राण गोर्की इटली के प्रति आकृष्ट होंगे इसमें आश्चर्य ही क्या है!

प्राय: पन्द्रह वर्ष पहले आप कापरी द्वीप में आकर ठहरे थे। कापरी से तीन-चार मील की दूरी पर इटली की तटभूमि पर भ्रमणकारियों का अति प्रिय सुरम्य सोरेन्तो है। सोरेन्तो-उपद्वीप में एक ड्यूक की उद्यान-वाटिका में गोर्की ने आश्रय लिया है।

यहाँ का अपूर्व आकाश, प्राकृतिक सौन्दर्य की अजस्रता, ज्वालामुखी विसुवियस के चरण-लग्न उपसागर में सुन्दर द्वीप-मालिका, यहाँ के निवासियों की विचित्र रीति-नीति और सङ्गीत ने केवल गोर्की के रोग-विध्वस्त शरीर को ही संजीवित नहीं किया, बल्कि उनके अन्तरवासी शिल्पी को नवीन सृष्टि की प्रेरणा से चञ्चल कर दिया। शिल्पी की सृष्टि-प्रेरणा वेगवान् झरने की तरह अजस्र धाराओं में उपन्यास, कहानी, स्मृति-कथा, समालोचना, प्रबन्ध, सम्पादकीय टिप्पणी और असंख्य पत्रों के रूप में उत्सारित होने लगी। यहाँ से गोर्की केवल सामयिक पत्रों का सम्पादन अथवा पाश्चात्य साहित्य के अनुवादों का सम्पादन ही नहीं करते हैं। गोर्की के पास देश-विदेश के ज्ञात और अज्ञात कितने व्यक्तियों से असंख्य चिट्ठियाँ आती हैं, उनके उत्तर देने में रवीन्द्रनाथ की तरह वे कदाचित् चूकते हैं। इसके अलावा कितने यशःप्रार्थी नवीन लेखकों की रचनावली आपको पढ़नी पड़ती है, उसका तो हिसाब ही नहीं है।

नवीन लेखकों की बाधा-विपत्तियों को गोर्की से अधिक और कौन जानता है? शक्ति रहने पर भी नवीन लेखक को थोड़े ही लोग स्वागत करना चाहते हैं। नवीन लेखक की अंकुरित शक्ति को सहानुभूति और ममता से लालन करके बड़ा करने के काम में उत्साह दिखलाने की उदारता कितना ही दुर्लभ है! गोर्की नवीन लेखकों की वेदना अच्छी तरह जानते हैं। इसी लिए गोर्की नवीन लेखकों के सच्चे मित्र हैं। परन्तु झूठी प्रशंसा से वे किसी लेखक को ख़ुश करने की चेष्टा नहीं करते। किसी के भय से अथवा लोकप्रिय बनने की इच्छा से झूठी बातों को बना-बनाकर बोलने की प्रकृति गोर्की की नहीं है। इसलिए जहाँ वे उदीयमान शक्ति का कुछ भी आश्वासन पाते हैं वहाँ पर उपदेश और उत्साह देने में गोर्की ज़रा भी कार्पण्य नहीं करते। परन्तु जहाँ पर वे धृष्टता और अशोभन स्पर्धा देखते हैं वहाँ पर शासनदण्ड उद्यत करने में भी उन्हें कुछ संकोच नहीं है। रूस में

आज ऐसा कोई लेखक मिलना कठिन है जो किसी न किसी प्रकार से गोर्की का ऋणी नहीं है।

२

दो बजे तक गोर्की अपने पढ़ने-लिखने के काम में लीन रहते हैं। उनके अध्ययन का परिमाण देख कर आश्चर्य मालूम होता है। केवल रूसी लेखकों की रचनाओं के साथ ही उनका परिचय नहीं है। अनुवादों के सहारे वे यूरोप के सभी देशों के श्रेष्ठ साहित्यिकों के साथ भी अच्छी तरह परिचित हैं। केवल गल्प-साहित्य नहीं, दर्शन, विज्ञान, समाजतत्त्व, मनस्तत्त्व प्रभृति के आधुनिकतम सिद्धान्तों के साथ उनका परिचय है। आप इतना अध्ययन कैसे करते हैं सोचकर विस्मय होता है।

दो बजे के बाद वे विश्राम करते हैं। पढ़ने के कमरे में बैठकर तब विश्रम्भालाप चलता है अथवा उद्यान में बैठकर वे चारों ओर की जीवन-लीला देखते रहते हैं। इसके पश्चात् चाय पीने का समय होता है; गोर्की अपने बैठके में लौट आते हैं। प्रायः दस-बारह अतिथि अभ्यागत उपस्थित रहते हैं; नेपल्स से, रोम से, रूस से, अमेरिका से, यूरोप के नाना देशों से कितने लेखक और शिल्पी रूस के इस अद्भुत मनुष्य को देखने के लिए, उनकी बातों को सुनने के लिए आते हैं। रूस में टॉलस्टॉय का मकान, इयास्नाया पालियाना जैसा लेखक शिल्पियों का तीर्थस्थान था, सोरेन्तो भी वैसा ही एक तीर्थस्थान बन गया है; जब सन्ध्या होती है गोर्की सब को साथ लेकर सान्ध्यभोज में बैठते हैं। सङ्गीत और साहित्य-पाठ आदि होते हैं; फिर कभी-कभी थोड़ा घूमने भी जाते हैं।

इटली के सुन्दर परिवेष्टन में गोर्की के दिन शान्ति में ही बीतते हैं। रूस के कठिन दुःख और अशान्ति में गोर्की की साहित्य-साधना में विघ्न उपस्थित हुआ था; यहाँ, दूर रहने के कारण उनका चित्त उतना विक्षिप्त नहीं होता। तथापि कभी कभी रूस के राजनीतिक समाचार से गोर्की विचलित हो जाते हैं और कभी-कभी ऐसी बातें भी प्रकाशित करते हैं जिससे बोलशेविक कुछ हैरान हो जाते हैं।

बोलशेविकों के विरुद्ध षड्यंत्र करने के लिए १६२२ ई० में एक दल समाजतन्त्री विप्लवी पकड़ गये। गोर्की को यह ख़बर मिली कि यह अभियोग निराधार है; बोलशेविक लोग असहिष्णु होकर अन्य दल को नष्ट करने के लिए इन विप्लवियों को प्राणदण्ड देने की तैयारी कर रहे हैं। उस दल के नेताओं की प्ररोचना से प्रेरित होकर विशेष अनुसन्धान किये बिना ही गोर्की ने बोलशेविकों के विरुद्ध एक लेख प्रकाशित किया। सहानुभूति की प्रेरणा से असावधानी में गोर्की ने ऐसी भूल पहले भी की थी; अब की बार भी बाद को उन्होंने देखा कि मेरा अनुयोग सच नहीं है, वास्तव में विप्लवी लोग बोलशेविक सरकार के विरुद्ध आतङ्कवादी कार्य में लिप्त हुए थे, इसका प्रमाण मिल गया। विपन्न और प्रताड़ित लोगों के लिए बलवान् के विरुद्ध प्रतिवाद करने की व्यग्रता से गोर्की ऐसी भूल कर बैठते हैं।

परन्तु गोर्की अपनी भिन्न-भिन्न रचनाओं में एक बात को बार-बार दुहराते रहते हैं। रूस के किसान सम्प्रदाय के प्रति गोर्की की कुछ भी श्रद्धा नहीं है। नारौडनिकों के समय से आजतक आपने यही देखा है कि किसानों की प्रशंसा करना बिलकुल ग़लत है। इसलिए १६२२ ई० में 'रूसी किसान' पुस्तिका में आपने उस बात की फिर जोरों से घोषणा की।

गोर्की ने अपने जीवन भर किसानों की अज्ञता, मूर्खता और अकारण नृशंसता और अत्याचार देखा है; गत विप्लव के समय भी इन लोगों की ध्वंसात्मक प्रवृत्ति के विकट प्रदर्शन से गोर्की परेशान हो गये थे। इसी से गोर्की का हार्दिक विश्वास यह है कि अज्ञान और कुसंस्कारों से आच्छन्न किसान सम्प्रदाय का अस्तित्व बोलशोविक जीवनादर्श के लिए ख़तरनाक है। एशियानिवासियों के अन्धविश्वास और ईश्वर पर अलस निर्भर को गोर्की उन्नति के घोर परिपन्थी समझते हैं। इसलिए गोर्की के मन में सदा यह शङ्का है कि रूस के अति विपुल किसान सम्प्रदाय अपेक्षाकृत अधिक उन्नत और शिक्षित श्रमिक बोलशेविकों को अभिभूत न कर दे।

## ३

यूरोप की ज्ञान-विज्ञान-मूलक सभ्यता और संस्कृति को गोर्की रूस के लोगों की उन्नति का एकमात्र पथ समझते हैं। १९२४ ई० में लेनिन की मृत्यु के अवसर पर लिखित विवृति में भी उसी की प्रतिध्वनि सुनाई देती है। "राजनीति के प्रति मेरा विराग स्वाभाविक है। असल में मैं मार्क्सपन्थी हूँ या नहीं इसमें मुझे सन्देह है क्योंकि साधारण रूप में जनगण की और विशेषरूप में किसान सम्प्रदाय की विचार-शक्ति पर मेरी आस्था बहुत कम है।..........अधिकतर स्पष्टता के लिए मैं कहना चाहता हूँ कि रूस के लिए यूरोपीय भाव में दीक्षित और सभ्य होने में असल बाधाएँ निरक्षर ग्रामों की अधिक संख्या, किसानों के पशुतुल्य व्यक्तित्व और उनमें सामाजिक अनुभूति का प्रायः सम्पूर्ण अभाव है। मेरी राय में बुद्धिजीवियों के साथ दृढ़ रूप से सम्मिलित राजनीतिक शिक्षा-प्राप्त श्रमिकों का डिक्टेटर तन्त्र ही इस कठिन परिस्थिति से परित्राण का एकमात्र सम्भव पन्थ है। इस परिस्थिति की जटिलता लड़ाई के कारण और भी बढ़ गई है क्योंकि युद्ध के कारण गाँवों में अराजकता और भी अधिक हुई है।

रूसी विप्लव में बुद्धिजीवियों ने जो काम किया है उसके बारे में कम्यूनिस्टों की जैसी क्षुद्र धारणा है मेरी वैसी नहीं है। बुद्धिजीवियों ने ही विप्लव का आयोजन किया था। उनमें वे बोलशेविक भी शामिल हैं जिन्होंने सैकड़ों श्रमिकों को सामाजिक वीरत्व और उन्नत मानसिकता की शिक्षा दी थी। रूसी इतिहास की इस प्रकाण्ड गाड़ी को रूसी बुद्धिजीवी श्रमिक और वैज्ञानिक दोनों खींचते जा रहे हैं और और भी दीर्घकाल तक खींचते चलेंगे। बहुत घात-संघात की अभिज्ञता होते हुए भी अब भी, गण-मन की शक्ति को बाहर से नियंत्रण करने की आवश्यकता है।"

एशिया की कर्मविमुखता से गोर्की बहुत डरते हैं। इसी लिए मङ्गोलीय सोवियेट गणतन्त्र को सलाह देते समय उन्होंने कहा कि "मेरी राय में सब से ज़रूरी काम आप लोगों के देश में कर्मनीति का प्रवर्तन करना है। यूरोप कर्म के भीतर जीवनको देखता है और यही नीति उसकी सब भलाई का

कारण है। अन्य जातियों को भी इस नीति को अपनाने के लिए कहा जा सकता है।

बुद्ध ने यह शिक्षा दी थी कि वासना ही दुःख के भोगने का कारण है। विज्ञान, शिल्प और 'टेकनिक' अर्थात् प्रयोगरीति के क्षेत्र में यूरोप ने अन्य महादेशों से बहुत अधिक शक्ति को प्राप्त किया है और ऐसा इसी लिए सम्भव हुआ है कि यूरोप कभी दुःख से डरा नहीं है और उसने सर्वदा जो कुछ है उससे भी अच्छी बातों की कामना की है।

जनगणों के बीच न्याय और स्वाधीनता की प्रेरणा किस प्रकार जाग्रत् करना पड़ता है यूरोप को वह मालूम है और केवल इसी के लिए यूरोप के बहुतेरे पाप और अपराधों को हमें क्षमा करना पड़ेगा।"

## ४

बोलशेविक शासन प्रवर्तन के पश्चात् प्रायः छः सात वर्ष तक रूस में घोर विपर्यय चल रहा था। १९२०-२१ में कराल दुर्भिक्ष ने रूस को बिध्वस्त कर दिया था। उस मृत्यु-ताण्डव के बीच वास्तविक गठनमूलक काम करने का अवसर ही कहाँ था ? १९२२ ई० से रूस ने नवीन अर्थनीतिक-नीति (Nep) का प्रवर्तन करके धीरे-धीरे प्रकृतिस्थ होना शुरू किया।

साहित्यक्षेत्र में भी इतने दिन उग्र बोलशेविकों का डिक्टेटर तन्त्र चला आया। इतने दिन उन लोगों ने यह कहा कि साहित्य को केवल एक ही उद्देश्य को लेकर अग्रसर होना पड़ेगा। वह उद्देश्य बोलशेविक नीति का प्रचार है। जो साहित्य जनगण को बोलशेविक मतवाद की दीक्षा देने के काम में आत्मनियोग नहीं करेगा उसे 'बुर्जोआ' समझकर वर्जन करना पड़ेगा। इस नीति के कारण बहुत से समालोचकों ने प्राचीन साहित्यिक रीति को भी बुर्जोआ कहकर उसे वर्जन करने के लिए अपनी लेखनी का प्रयोग किया है। परन्तु कई सालों के अनुभव का फल यह हुआ कि साहित्यक्षेत्र में भी उन्हें बोलशेविक उग्र नीति को छोड़ना पड़ा। अब उन्होंने यह समझ लिया कि प्राचीन साहित्य जाति की अमूल्य सम्पत्ति है और बुर्जोआ बतलाकर उसका वर्जन करना मूर्खता है। कम्यूनिस्ट लोगों ने पहले साहित्य को

बोलशेविक नीति के अधीन करना चाहा, उन लोगों ने साहित्य में केवल इसी तत्त्व का प्रचार करना चाहा कि मनुष्य एक सामाजिक जीव है और समाज-सत्ता के लिए ही उसका प्रयोजन है; उन लोगों ने मनुष्य को समाज-सम्बन्ध निरपेक्ष व्यक्ति सत्ता के रूप में प्रकटित करना नहीं चाहा। सामाजिक प्रयोजनों से परे भी मनुष्य की सत्ता है इस बात को न मानने के कारण साहित्यिकों की सृष्टि प्राण-हीन और कृत्रिम हो जाती है। इतने दिनों के बाद उन लोगों ने इस बात को समझा है।

इसलिए १९२२ ई० में साहित्य में भी उदार नीति का प्रवर्तन किया गया। उग्र बोलशेविकों के प्रति-क्रियात्मक अतिचार (Reactionary excess) दूर हो जाने से फिर नये-नये लेखकों ने अपनी सृष्टि-प्रेरणा को सहज और स्वाभाविक रूप में आत्मप्रकाश के काम में नियुक्त किया। साहित्य में एक विपुल सृष्टि प्रेरणा आई और साहित्य-सृष्टि का परिमाण प्रबल वेग से बढ़ने लगा। स्टेट पबलिशिंग हाउस ने भी इसमें प्रचुर सहायता की। बहुत-से लेखकों के आत्मप्रकाश से भाषा में भिन्न-भिन्न साहित्यिक प्रयोगों का जन्म होने लगा। लेखकों के पढ़ने के साथ-साथ शिक्षा-विस्तार होने से पाठकों की संख्या भी आश्चर्यजनक रूप में बढ़ने लगी। रूसी मन की इस विपुल जागृति को देखकर गोर्की का हृदय आशा, आनन्द और गौरव से भर गया।

रूस से भागे हुए, निर्वासित, प्रवासी (Emigre) बोलशेविक-विरोधी लोग तथापि यूरोप में इस बात का प्रचार करने लगे कि रूस में साहित्य और साहित्यिकों के ऊपर अत्याचार की सीमा नहीं है। जब १९२७ ई० में इस प्रकार की एक विवृति प्रचारित हुई। रूस की सब जगहों से इसका प्रतिवाद तो हुआ ही, फ्रान्स के परमपूज्य विश्वप्रेमिक रोम्याँ रोलाँ के अनुरोध से गोर्की ने भी एक विवृति प्रकाशित की।

विश्ववासियों के सामने उन्होंने यह स्पष्ट घोषणा की कि बोलशेविक विरोधियों का अभियोग सम्पूर्ण झूठ है। गोर्की ने प्रमाणों के साथ यूरोप को यह बतलाया कि रूस में प्राचीन लेखकों का समादर दिन-दिन बढ़ रहा है और सरकारी प्रकाशन-विभाग से भी बड़े-बड़े अ-बोलशेविक ग्रन्थकारों की ग्रन्थावली अच्छी तरह सम्पादित होकर प्रकाशित हो रही है। अवश्य लज्जावश

वे कह नहीं सके कि रूस में सब से अधिक जनप्रिय लेखक गोर्की स्वयं हैं। रूस में साहित्य-सृष्टि का स्रोत अवरुद्ध है इस अभियोग के उत्तर में गोर्की ने बहुत-से नवीन लेखकों का दृष्टान्त दिया और कहा कि नवजाग्रत् रूस में लेखकों का अभाव है ऐसा न कहकर ज़ोरों से उसके विपरीत कहना ही उचित है।

५

परन्तु यह भी सत्य है कि बोलशेविकों में एक दल के लोग प्रोलेटारियाट साहित्य के नाम से एक सङ्कीर्ण वस्तु की सृष्टि करना चाहते थे और गोर्की को भी वे प्रोलेटारियाट साहित्यिक कहना नहीं चाहते थे। गोर्की के साहित्यिक-जीवन के ३५वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर १९२७ ई० के अक्टूबर महीने में मास्को के कम्यूनिस्ट एकाडेमी के साहित्य विभाग के अधिवेशन में गोर्की के बारे में प्रशस्ति-सूचक प्रस्ताव पास हुआ और उनके बारे में आलोचना भी हुई। इसी समय गोर्की से ही पूछा गया कि आप प्रोलेटारियाट साहित्यिक हैं या नहीं। उत्तर में गोर्की ने कहा—

"प्यारे कॉमरेडगण, मैं प्रोलेटारियाट हूँ अथवा नहीं, समालोचकों के इस तर्क-वितर्क में व्यक्तिगत रूप में मेरा जरा भी औत्सुक्य नहीं है। यूनियन के कोने-कोने से श्रमिक लोग मुझको जो अगणित अभिनन्दन भेज रहे हैं, उनमें उन्होंने मुझको एक स्वर से "हमारे आत्मीय", "प्रोलेटारियान" और 'कॉमरेड' कहकर सम्बोधन किया है। अवश्य ही मैं समालोचकों की बातों से श्रमिकों की राय को अधिक महत्त्वपूर्ण मानता हूँ। श्रमिक लोग मुझको 'अपने लोगों में से एक' समझते हैं, इससे मैं अपने को परम गौरवान्वित समझता हूँ। यह मेरे लिए परम सम्मान है और इसी में मेरा यथार्थ गौरव है।" गोर्की की राय में वही प्रोलेटारियाट साहित्यिक है जो क्रियात्मक रूप में प्रत्येक वस्तु से घृणा करता है जो बाहर से और भीतर से मनुष्य पर निपीड़न करती है, जो कुछ मनुष्य की वृत्तियों के स्वाधीन विकास में बाधा देती है; आलसी, परान्नभोजी, नीच और ख़ुशामद करनेवालों के प्रति और

सब प्रकार के बदमाशों के प्रति जिनकी निर्मम घृणा है, मनुष्य को जो सृष्टि-प्रेरणा का केन्द्र और पृथिवी के सब पदार्थ और सब विस्मयों का स्रष्टा समझकर श्रद्धा करता है; प्रकृति की आदिम शक्ति के विरुद्ध योद्धा के रूप में जो मनुष्य की श्रद्धा करता है; जो सब प्रकार की शारीरिक शक्तियों के अपचय से अपने को मुक्त करने के लिए, श्रमविज्ञान और यन्त्रविद्या की सहायता से मनुष्य की प्रकृति का एक नवीन रूपान्तर करने की आशा रखता है; मनुष्य के ऊपर मनुष्य का प्रभुत्व और उसकी शोषणनीति के अवसान के लिए जीवन के नवरूपान्तरकारी सामूहिक श्रम का जो प्रशंसा-गान करता है; नारी को जो केवल दैहिक आनन्द का ही कारण न समझकर उसे कठोर जीवन-व्यापार में विश्वस्त सहकर्मिणी समझता है; जो यह समझता है कि हमारे प्रत्येक कर्म के लिए हम लोग अपने बच्चों के प्रति उत्तरदायी हैं; पाठक के साथ जीवन में क्रियात्मक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए जो सब तरह से कोशिश करता है; मनुष्य के मन में उसकी शक्ति की अमोघता के ऊपर जो विश्वास उत्पन्न करता है; श्रम के विशेष प्रयोजन और आनन्द के सम्बन्ध में, जीवन के महान् उद्देश्य के बारे में सचेत होने में जो कुछ भीतर और बाहर से मनुष्य को बाधा देती हैं उन सबको जीतने की शक्ति मनुष्य की है जो इस विश्वास की सृष्टि करता है, गोर्की की राय में श्रमिक जगत् में उसी लेखक की आवश्यकता है।

## ६

बोलशेविक शासन के दस साल हो गये। दस साल पहले जिस गोर्की ने बोलशेविक शासन की घोर निन्दा की थी आज वही इस शासन-तन्त्र का नतीजा देखकर उसी का स्तुतिवाद कर रहे हैं!

"रूस का नवीन मनुष्य, नवीन राष्ट्र का निर्माता मेरे आनन्द और गर्व का कारण है।

इस छोटे, अथच महान् मनुष्य को मेरा नमस्कार है जो कि देश के सुदूर कोणों में, साइबीरिया के जाड़े से जम गई हुई दलदल भूमि और स्टेप्स

के अज्ञात गाँवों और फैक्टरियों में, काकेशस पर्वत में और उत्तर के टुण्ड्राओं में हैं। मेरा नमस्कार उस अकेले मनुष्य को जो उन सब लोगों में काम कर रहे हैं, जिन्हें वे अभी अच्छी तरह पहचान नहीं रहे हैं। नमस्कार राष्ट्र के उस निर्माता को जो नम्रता के साथ तुच्छ सा काम कर रहे हैं लेकिन जिस काम का ऐतिहासिक गुरुत्व विपुल है।

कॉमरेड, यह जानना और मानना कि पृथिवी में तुम सबसे जरूरी मनुष्य हो। अपने क्षुद्र कर्म के द्वारा वास्तव में तुमने एक नवीन जगत् की सृष्टि करना शुरू कर दी है।

सीखो और सिखाओ !

तुम्हारे हाथ पर प्रेम के साथ मैं अपना हाथ रखता हूँ, कामरेड !"

गोर्की ने रूस के गण-मानव के बीच एक नवीन मनुष्य का आविर्भाव देखा है। मनुष्य के अन्दर देवता का सन्धान करने के कारण लेनिन ने एक दिन गोर्की का तीव्र तिरस्कार किया था, परन्तु गोर्की का वह विश्वास, ईश्वर-सृष्टि की वह कामना कभी नष्ट न हुई। गोर्की का यह आन्तरिक विश्वास है कि साधारण और तुच्छ मनुष्यों के अन्दर ही आदर्श मानव का विकास हो रहा है। प्रकाशमान यह आदर्श मानवता ही गोर्की का देवता है। बोलशेविक राष्ट्र में इस मानवता का प्रकाश देखकर गोर्की का हृदय आशा और आनन्द से परिपूर्ण है। इसी लिए उन्होंने उस मानवत के उद्देश्य में सप्रेम नमस्कार प्रेरण किया।

बोलशेविक-विरोधी प्रवासी ( Emigre ) रूसी लोग गोर्की की बोलशेविक-स्तुति पढ़कर अत्यन्त क्रुद्ध हुए और आपकी बोलशेविक-प्रीति के हीन उद्देश्य का भी प्रचार करने लगे। सरकारी अखबार 'इज़वेस्तिया' ( Izvestia ) और ग़ैरसरकारी बोलशेविक दल की पत्रिका 'सत्य' में गोर्की की यह विवृति छापने के साथ ही साथ रूस के बाहर इसकी तीव्र समालोचना होने लगी। उत्तर में गोर्की ने स्पष्ट रूप में यह स्वीकार किया कि बोलशेविक सरकार के बारे में दस साल पहले मेरी जो धारणा थी वह ग़लत थी। बोलशेविक सरकार को निर्दोष न मानते हुए भी आपने उसके थोड़े दिनों के कृतित्व को असाधारण बतलाया। मुक्तकण्ठ होकर गोर्की ने घोषणा की

कि रूस के नाना प्रकार के दोष होते हुए भी उसके जीवन की बुनियाद में एक आश्चर्यजनक रूपान्तर सङ्घटित हो रहा है।

७

गोर्की के जन्म-दिवस का उत्सव रूस के जातीय उत्सव में परिणत हुआ। १६२८ ई० के २८ मार्च को विपुल समारोह के साथ सारे देश में उनके षष्टितम जन्मोत्सव का अनुष्ठान हुआ। सोवियेट यूनियन की ओर से, बोलशेविक दल की ओर से, लेनिन इन्स्टीट्यूट, एकाडेमी आफ़ फ़ाइन आर्ट्स, एकाडेमी आफ़ सायन्सेज़ और निखिल रूसी श्रमिक और पेशेवर सङ्घ की ओर से ही केवल उनको ससम्मान अभिवादन नहीं भेजा गया; बल्कि देश के साहित्यिक, असाहित्यिक, छोटे-बड़े हज़ारों प्रतिष्ठानों से उनके ऊपर अजस्र धारा में अभिनन्दन की वर्षा होने लगी। इस अवसर पर, गोर्की ने १९१८-२० ई० में वैज्ञानिकों को अनाहार के कराल गाल से रक्षा करने के लिए जो प्राणपण प्रयास किया था, सकृतज्ञ हृदय से उस बात को स्वीकार करते हुए एकाडेमी आफ़ सायन्सेज़ के सेक्रेटरी प्रसिद्ध अध्यापक ओल्डेनबर्ग ने उनका अभिनन्दन किया। गोर्की ने केवल उन वैज्ञानिकों के विशेष भोजन का प्रबन्ध ही नहीं किया था, परन्तु उन्होंने उन लोगों की विज्ञान-साधना के सामान तक इकट्ठा करने का भार लिया था।

समग्र जाति से ऐसा विपुल और व्यापक अभिनन्दन रूस के और किसी साहित्यिक को नहीं प्राप्त हुआ। परन्तु गोर्की ने जो सम्मान पाया वह केवल साहित्यिक होने के नाते नहीं। आप एक श्रेष्ठ मनुष्य हैं और रूस के मुक्तिसंग्राम में आप एक बड़े योद्धा हैं, देशवासियों ने उस दिन इसी बात को आनन्द और गौरव के साथ स्वीकार किया।

गोर्की की जन्मदिवस-प्रशस्ति लेकर मासिक और सामाहिकों के विशेषाङ्क निकलने लगे। चारों ओर से, स्वदेश और विदेश से आनन्द अभिनन्दन आने लगे, पृथिवी के नाना देशों के सन्तानों ने प्रीति और श्रद्धापूर्ण नमस्कार भेजा। सोरेन्तो में, प्रवास-निवास में बैठे आनन्द से उद्वेलित हृदय से गोर्की ने

देशवासियों का समादर ग्रहण किया। बुढ़िया नानी, बुड्ढा काशिरिन—क्या ये लोग लोकान्तर से उनके आलेक्सी का यह सम्मान देख पाये ? जिनके साथ गोर्की ने मजदूरी की है, पावरोटी के कारख़ाने में, जूते की दुकान में, स्टीमर में जिनके साथ गोर्की ने काम किया है, विद्यामन्दिर के द्वार से जिन लोगों ने एक दिन उन्हें भगा दिया था, यदि उन्हें मालूम हो कि यह गोर्की वही आलेक्सी पियेश्कौभ है, तो उन्हें कैसा लगेगा ? पहचानें अथवा न पहचानें, श्रमिक लोग जानते हैं कि गोर्की उन्हीं लोगों के हैं; इसलिए गर्व से छाती फुलाकर इन लोगों ने गोर्की को 'हमारे आत्मीय' कहकर सम्बोधन किया है।

इसके बाद देश भर के छोटे-बड़े सभी लोगों से गोर्की के पास यह व्याकुल आह्वान आने लगा, "हे देशप्रिय, लौट आओ ! तुम्हारी अनुपस्थिति में हम लोगों ने तुम्हारे कांक्षित आदर्श को कितना वास्तव में रूपान्तरित किया है, आकर देख जाओ।" बुखारिन ने खेद के साथ कहा, "अभी तक हम लोगों ने इस युग का बड़ा चित्र नहीं पाया...इस प्रकाण्ड शून्यता को एकमात्र गोर्की ही पूर्ण कर सकते हैं। हमारा सोवियेट यूनियन, हमारे श्रमिकवर्ग, हमारा दल जिसके साथ गोर्की का अनेकों वर्षों का सम्बन्ध है, सभी गोर्की को आत्मीय शिल्पी समझते हैं। इसी लिए हम उनके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। काम करने के लिए, एक महान्, सुन्दर, गौरवमय काम के लिए उन्हें हमारे पास आना ही होगा।"

देश भर में यह ध्वनि उठने लगी कि गोर्की लौट आवें।

८

सात वर्ष की बात है कि गोर्की रूस छोड़ आये थे। आपको यह आशा थी कि मेरा स्वास्थ्य सुधर जायगा और रूस लौट आऊँगा। समग्र देश ने जब आपके जन्मदिवस का उत्सव मनाया उस दिन भी आप सोरेन्तो ही में बैठे रह गये। परन्तु अब और नहीं, वसन्त के प्रारम्भ होते ही आप स्वदेश को लौट जायँगे।

गोर्की के आने पर सारा रूस आनन्द-मुखरित हो उठता है। किसी सम्राट् ने भी कभी ऐसे स्वागत की कल्पना न की। चारों ओर गोर्की-स्ट्रीट, गोर्की स्कूल, गोर्की-उपनिवेश, गोर्की-'कार'—मानो सारे देश ने गोर्की-नामाङ्कित नामावली पहन ली है! गोर्की यह सब देखते हैं और देशवासियों की प्रीति का निदर्शन देखकर उनकी आँखों से आनन्दाश्रु की धारा बहती है, उनके हृदय में आनन्द का प्लावन आता है।

कई सालों के अन्दर रूस में जो अद्भुत परिवर्तन हुए हैं उन्हें देखकर गोर्की विस्मय से अभिभूत हो जाते हैं। यह परिवर्तन केवल बाहर के आयोजनों में ही नहीं है; मनुष्यों के रङ्ग-ढङ्ग में भी वे एक विचित्र परिवर्तन देख पाते हैं। एक सभा में गोर्की कहते हैं :

"देश के अन्दर रहकर आप लोग समझ नहीं सकते कि यहाँ कैसा विशाल कार्य सम्पन्न हुआ है। इस विराट् कर्म का प्रमाण मैंने प्रत्येक सड़क में देखा है। इन दस सालों में मास्को के पथचारियों का ढङ्ग तक बदल गया है।......हाँ, मैं आशावादी हूँ, यह मेरे जीवन की एक विशेषता है।"

गोर्की ने देखा कि अति साधारण मनुष्य भी अपने अति प्राचीन और अभ्यस्त औदासीन्य और विकास-रहित बद्धता से जागकर नवीन उद्यम के साथ नव-नव कर्म-प्रचेष्टा में लग गये हैं। फ़ैक्टरियों में क्लब और थिएटर, गाँव-गाँव में रेडियो और पाठागार—ये सब देखकर गोर्की का मन आशा से भर जाता है। गोर्की के मन में यह धारणा हुई कि रूस के मनुष्यों ने यूरोप की सभ्यता के संस्पर्श से नवीन चेतना पाई है।

समग्र देश में गोर्की घूमते हैं क्योंकि आप रूस के सब श्रेणियों के मनुष्यों को अपनी आँखों से देखना चाहते हैं। इसलिए कालेज, स्कूल, फ़ैक्टरी, शराब की दूकान कुछ भी आप नहीं छोड़ते। गोर्की ने "क्लिम सामगिन" नाम का एक विशाल उपन्यास लिखना प्रारम्भ किया है; इसमें लेनिन के मृत्युकाल तक रूस के जीवन का क्रम-विकास दिखलाया जायगा; क्लिम साम्गिन के जीवन को केन्द्र कर प्रायः चालीस वर्ष की जीवन-धारा की क्रमपरिणति दिखलाई जायगी। इसी लिए गोर्की रूस को बहुत अच्छी तरह देखने का ऐसा आग्रह कर रहे हैं। गोर्की सर्वत्र जीवन-प्रवाह में एक विस्मयकारी

परिवर्तन देखते हैं और भावावेग से गोर्की अश्रुपात करते हैं। मेनशेविक पत्र व्यङ्ग करते हुए लिखता है, गोर्की आ रहे हैं, सावधान! उनके अश्रुजल से वाल्गा नदी में बाढ़ न आ जाय।

परन्तु ऐसे व्यङ्ग से क्या होता है? गोर्की ने सारा जीवन यही स्वप्न देखा है और यही व्याकुल कामना की है कि वञ्चित, दीन-दरिद्र, हतभाग्य कुली मज़दूरों के जीवन में भी सभ्यता और संस्कृति का आविर्भाव होगा; उनकी सम्मिलित चेष्टा से समग्र मनुष्य-जाति कल्याण के मार्ग पर अग्रसर होगी, मनुष्य-मनुष्य कहलाने के योग्य होगा। आज उनका वह स्वप्न वास्तव में आत्म प्रकाश कर रहा है यह कम आनन्द और तृप्ति की बात नहीं है। जीवन के प्रान्तशिखर पर खड़े होकर गोर्की अपने को धन्य मानते हैं।

## ९

१९२८ ई० के अन्तिम भाग में गोर्की का स्वास्थ्य फिर बिगड़ने लगा। जाड़े का समय उनको बरदाश्त न होता था। इसलिए डाक्टरों ने उन्हें फिर इटली जाने की सलाह दी। गोर्की फिर चले आये। गोर्की की साहित्य-सृष्टि के लिए इटली ही अच्छा है। यहाँ के प्राकृतिक परिवेष्टन में शिल्पी के मन को सृष्टि की प्रेरणा मिलती है। 'क्लिम सामगिन' की रचना चल रही है। इस उपन्यास में रूस-विप्लव का सजीव इतिहास-चित्र खींचने की इच्छा है। गोर्की के देशवासी उनसे आधुनिक रूस के जीवन-चित्र की आशा कर रहे हैं। परन्तु जिनके जीवन का अधिकांश ही प्राचीन रूस के वातावरण में बीता है उनके लिए रूस के नवीन जीवन का चित्र देना कहाँ तक सम्भव है कौन जाने! रूस छोड़कर, विशेष कर नवीन रूस को छोड़कर, रहना गोर्की के लिए कठिन है; इसी लिए फिर जब वसन्त आया तो वे रूस में लौट आये।

इसी समय रूस में फिर विरुद्ध मतवालों के प्रति असहिष्णुता की मात्रा बढ़ने लगी। राजनीति के क्षेत्र में स्टालिन के विरोधियों का रूस में रहना दिन-दिन कठिन होने लगा। नवीन अर्थनैतिक नीति ( Nep ) के प्रवर्तन

के साथ-साथ १६२१ ई० में साहित्य में भी जो उदार नीति का ग्रहण किया गया था, उसके कारण साहित्य का प्रचुर प्रसार होने पर भी कट्टर कम्यूनिस्टों के भिन्न-भिन्न दलों के समालोचकों की विशेष प्रतिपत्ति नहीं हुई। १६२८-२६ ई० में अर्थनीति के क्षेत्र में पञ्चवार्षिक योजना ( Five year Plan ) के साथ-साथ साहित्य के ऊपर भी नई विपत्ति की उत्पत्ति हुई। साहित्य को भी उस योजना में शामिल करते हुए बोलशेविक पत्र कहने लगे कि साहित्य को भी इस पञ्चवार्षिक योजना की सहायता करनी पड़ेगी।

१६२५ ई० में रूस-कम्यूनिस्ट दल की केन्द्रीय कमिटी ने यह प्रस्ताव किया था कि साहित्य के क्षेत्र में नाना दलों के भिन्न-भिन्न मत के लेखकों को मत प्रचार की स्वतन्त्रता देनी होगी। केवल साहित्य में विप्लव-विरोधी मनोवृत्ति को ही निर्मम रूप से आक्रमण करना होगा। इसके अलावा, बुर्जोआ और बुद्धिवादियों को भी सहयोग और सहानुभूति के द्वारा प्रोलेटारियाट दल में शामिल कर लेने की उदार नीति भी उस समय स्वीकृत हुई थी। साहित्य में किसी विशेष दल को एकाधिपत्य न देकर, यहाँ तक कि प्रोलेटारियाट को भी विशेष अधिकार न देकर, सभी दलों को स्वाधीन प्रतियोगिता के क्षेत्र में बुलाया गया था।

परन्तु पञ्चवार्षिक योजना के ग्रहण के साथ ही साथ कम्यूनिस्टों के कट्टर दल ने साहित्य-क्षेत्र में डिक्टेटर तन्त्र का प्रवर्तन किया। भिन्न-भिन्न पत्र और पत्रिकाओं के सम्पादन का भार इन्हीं लोगों के हाथ में आ गया और रूस प्रोलेटारियान लेखक-समिति ( RAPP ) ने लेखकों का नेतृत्व ग्रहण किया और समालोचक आभेरबाख ( Averbach ) साहित्यक्षेत्र के डिक्टेटर बन गये।

साहित्यिक वाम-मार्गियों ने यह घोषणा कर दी कि सोवियेट साहित्य का एकमात्र लक्ष्य पञ्चवार्षिक योजना को चित्रित करना होगा; सामयिक जीवन का चित्र अर्थात् कल-कारख़ानों के जीवन, गाँवों के सामूहिक कर्मजीवन, धनी-किसान कुलाकों के संग्राम और लाल फ़ौज का चित्र खींचना ही साहित्य का उद्देश्य होगा; इसके अतिरिक्त और किसी विषय के बारे में कोई भी नहीं लिख सकेगा। साहित्य जगत् में आभेरबाख का दल मिलिटरी पुलिस की

तरह कठोर रूप से अन्य सब लेखकों को विप्लव-विरोधी बताकर दमन करने को उद्यत हुआ। लेखकों को दल बद्ध होकर साहित्य-रचना करने के लिए कहा गया। कोई लिखेगा तेल की खान के विषय में, कोई सामूहिक खेती (Collective Farming) के विषय में और कोई लिखेगा कोयले की खान से कोयला निकालने के बारे में। इन विषयों को लेकर अखबारों की रिपोर्ट नहीं, काव्य, गल्प और उपन्यास लिखने का निर्देश हुआ। कारखाने में जिस तरह पूर्व-निर्दिष्ट कल्पना के अनुसार सबको वस्तु-उत्पादन और निर्माण करना पड़ता है, साहित्यिकों को उसी तरह एक कल्पना के अनुयायी होकर साहित्य-सृष्टि करनी होगी—यही रूस प्रोलेटारियान लेखक-समिति का निर्देश हुआ।

## १०

इस प्रकार के उन्मत्त कट्टरपन का फल दो-तीन साल में ही प्रकट होने लगा। साहित्य का यथार्थ आदर्श और लक्ष्य मतवाद-प्रचार की उग्र-कामना के द्वारा दलित होने लगे। जाड़े में गोर्की रूस में नहीं रहते, वसन्त में वे लौटते हैं। परन्तु दूर रहने पर भी रूस के संस्कृति सम्बन्धी काम के साथ उनका सम्बन्ध शिथिल नहीं होता। 'हमारी कृति' नामक पत्र के सम्पादक गोर्की हैं। एकदल प्रवासी ( Emigre ) बोलशेविक-विरोधी रूस-विदेशियों के सम्मुख रूस-साहित्य की अवनति प्रमाणित करने के लिए सदा सचेष्ट रहते हैं। उनकी अपचेष्टाओं को व्यर्थ करने के उद्देश्य से गोर्की इस पत्र के द्वारा रूसी जीवन की बाह्यिक और आभ्यन्तरिक, वैषयिक और सांस्कृतिक प्रगति का विवरण प्रचार करते हैं। परन्तु पञ्चवार्षिक योजना के अत्याचार से जब साहित्य की अवनति और अधोगति शुरू हुई तो गोर्की चुप नहीं रह सके। देश के लेखक-सम्प्रदायों ने भी सभा-समितियों के द्वारा भिन्न-भिन्न स्थानों में इस डिक्टेटरी नीति का घोर प्रतिवाद करना शुरू कर दिया। गोर्की लेखक-सम्प्रदाय की रक्षा के लिए आगे बढ़ आये।

कला और साहित्य के क्षेत्र में कम्यूनिस्ट डिक्टेटरी का जो विषमय फल हुआ, स्टालिन को भी वह मालूम होने लगा। इसलिए १९३२ के २३ एप्रिल को निखिल रूस कम्यूनिस्ट दल की केन्द्रीय कमिटी के निर्देश से रूस प्रोलेटा-

रियान लेखक समिति ( RAPP ) और इस प्रकार की अन्य कट्टर प्रोलेटारियान लेखक समितियों को बन्द कर दिया गया और साहित्य में डिक्टेटर तन्त्र का अवसान कर दिया गया। और चरमपन्थी दल की समझौता-रहित नीति की निन्दा करते हुए सोवियेट लेखकों से एक साधारण सोवियेट लेखक संघ में शामिल होने के लिए अनुरोध किया गया। कम्यूनिस्ट लेखकों को उसी के अन्दर एक उपदल के रूप में रहने के लिए कहा गया। मतवाद की उग्रता और उसे प्रचार करने की तीव्र कामना के कारण यथार्थ साहित्य और साहित्यकों का कण्ठरोध होते देखकर, उस अत्याचार से साहित्यिकों को मुक्त कर साहित्य के विकास को अबाध करने में गोर्की का बहुत कुछ हिस्सा था यह कहना ही एक प्रकार का बाहुल्य मात्र है। वार्धक्य की सीमा पर पहुँचकर भी अत्याचार और अविचार के विरुद्ध खड़ा होने में गोर्की कभी भी हिचकनेवाले नहीं हैं।

इसी लिए समग्र रूस की आन्तरिक कामना, सारे संसार की कामना है गोर्की और भी दीर्घकाल तक जीवित रहें। सोवियेट की यही कामना है कि रूस का नवीन समाज जिस नवीन आदर्श, आशा और आकांक्षाओं को क्रियात्मक रूप दे रहा है उसे गोर्की अपने साहित्य में चिरन्तन रूप में चित्रित करें। कौन जानता है कि गोर्की के लिए यह सम्भव होगा कि नहीं ? गोर्की उसका चित्र दे सकें या नहीं, उस महान् और शुभ दिवस को देखने का सौभाग्य उनके जीवन में आवेगा अथवा नहीं ? जिस परम आदर्श के स्वप्न का अनुसरण करते हुए वे साठ वर्ष के प्रान्त पर आ पहुँचे है, क्या उस स्वप्न को वे अपने सामने वास्तव रूप में आविर्भूत होते देखेंगे अथवा केवल दिगन्त पर उसका आभास मात्र देखकर वे पुलकित होंगे ! रूस के जीवन-प्रभात की अरुण-दीप्ति से दिगन्त उद्भासित हो उठा है; चारों दिशाओं में सहस्र विहङ्गों की अस्फुट मधुर काकली सुनकर वृद्ध की आँखें अपूर्व आनन्दाश्रु से सिक्त हो गई हैं। गोर्की का यह आनन्द कितना अपरिसीम है, कौन समझेगा !

*  *  *

तथापि गोर्की ने जो कुछ देखा है वह भी कुछ कम नहीं है। साहित्य-क्षेत्र में उन्होंने जो अद्भुत जागरण देखा है उसके लिए वे अपने को धन्यवाद

दे सकते हैं। गोर्की रूस के नवजागरण के अग्रदूत हैं, नवयुग के गौरवान्वित चारण हैं। उन्हीं के गीतों में विप्लव ने अपने को प्रकट किया था। नहीं, गोर्की का जीवन निरर्थक नहीं है।

## ११

गोर्की की मृत्यु अत्यन्त ही रहस्यपूर्ण है। आगे कभी इस रहस्यपूर्ण मृत्यु का यथार्थ कारण किसी को मालूम होगा कि नहीं हम नहीं कह सकते। जिन लोगों को स्टालिन के शासनकाल का कुछ भी इतिहास मालूम है वे जानते हैं कि स्टालिन ने अपने शासनकाल में रूस के पुराने बड़े-बड़े विप्लवियों को प्राणदण्ड दिया है। १९३६ ई० के २४ अगस्त को ट्राट्स्की-षड्यन्त्र नाम से प्रसिद्ध मामले की राय निकली और उसमें जिनोभियेभ और कामेनियेभ जैसे बड़े-बड़े लेनिन के साथियों और प्रसिद्ध विप्लवियों को प्राणदण्ड हुआ। ये लोग रूस राष्ट्र को नष्ट करने के लिए चेष्टा कर रहे थे यह तो विश्वास करना बहुत ही कठिन मालूम होता है। सन्देह तो यही होता है कि स्टालिन अपनी हुकूमत को क़ायम रखने के लिए किसी न किसी बहाने बड़े-बड़े लोगों को मरवा रहे थे। दिन-दिन स्टालिन की निर्दयता बढ़ती गई और नृशंस सहचरों की सहायता से वे ख़ून की नदी बहाने लगे। परन्तु राष्ट्रशक्ति अपने हाथ में होने के कारण उन्होंने सत्य को प्रकट होने नहीं दिया। गोर्की ने कभी स्टालिन के विरुद्ध प्रतिवाद भी किया, परन्तु सम्भव है गोर्की को भी यथार्थ बात मालूम नहीं होती थी! इसमें कोई सन्देह नहीं है कि स्टालिन की इस ख़ूनी नीति से गोर्की अत्यन्त दुखी थे और बार-बार वे स्टालिन से इस नीति को छोड़ने के लिए कहा भी करते थे। परन्तु स्टालिन की प्रकृति तो और ही कुछ थी।

स्टालिन के विरुद्ध ट्राट्स्की का दल गुप्त रूप से नाना प्रकार की चेष्टाएँ कर रहा था इसमें अविश्वास करने का कारण नहीं है। परन्तु ट्राट्स्की दल पर गोर्की की हत्या का जो अपराध लगाया जाता है इसका कारण समझना अत्यन्त कठिन मालूम होता है। स्टालिन सरकार ने यही प्रमाणित करने

की कोशिश की है कि ट्राट्स्की ने बुखारिन को निर्देश दिया था कि गोर्की की हत्या की जाय। बुखारिन की सलाह से स्टालिन के पुलिस विभाग के अध्यक्ष यागोडा ने गोर्की को मारने का भार लिया।

यह भी कहा जाता है कि गोर्की के एकमात्र पुत्र की मृत्यु भी इसी षड्यन्त्र से हुई। गोर्की १९३५-३६ के जाड़े के समय क्रिमिया में ठहरे थे। उसी समय से उनके स्वास्थ्य को बिगाडने की कोशिश होने लगी। गोर्की के सेक्रेटरी भी इसमें शामिल थे। वे गोर्की को घूमने के लिए बहुत दूर ले जाते थे जिससे उनको सर्दी लग जाय। उसके बाद लौटने पर खुली जगह में उन्हें खड़ा रखने के लिए आतशबाज़ी का इन्तज़ाम किया जाता था। क्योंकि गोर्की को आग देखने का बड़ा शौक़ था। इतने में मास्को में गोर्की के मकान पर जब किसी को इनफ्लुएञ्जा की बीमारी हुई तो यागोडा ने टेलिग्राम के द्वारा गोर्की को उसी मकान में लाने का प्रबन्ध किया। बड़ी जल्दी से गोर्की को वहाँ लाया गया ताकि उन्हें भी यह बीमारी हो जाय। ६८ साल के बूढ़े गोर्की क्षय रोग से तो पीड़ित थे ही, अब उनको न्यूमोनिया हो गया। कई डाक्टरों ने अब दवा देना शुरू किया; दवा क्या देना था। दवाई के नाम से उन लोगों ने अधिक मात्रा में 'दवा रूपी ज़हर देना प्रारम्भ किया। अन्त में १९३६ ई० के १८ जून को शैतानो का उद्देश्य सफल हुआ। मानवता का मूर्त अवतार गोर्की का ऐहलौकिक, नहीं नहीं, उनके दैहिक जीवन का अवसान हो गया। किन्तु इस लोक में गोर्की का अवसान नहीं हो सकता!

प्रति युग के, अनागत काल के प्रत्येक विप्लवी के अन्दर वे अमर होकर विराजेंगे। जहाँ कहीं मनुष्य की दुर्दशा में मनुष्य रोता होगा, मनुष्य के अत्याचार से मनुष्य विद्रोह करता होगा वहीं पर हम आलेक्सी पियेश्कौभ का, विश्वसाहित्य में वेदना-यज्ञ के पुरोहित गोर्की को याद करेंगे!

समाप्त